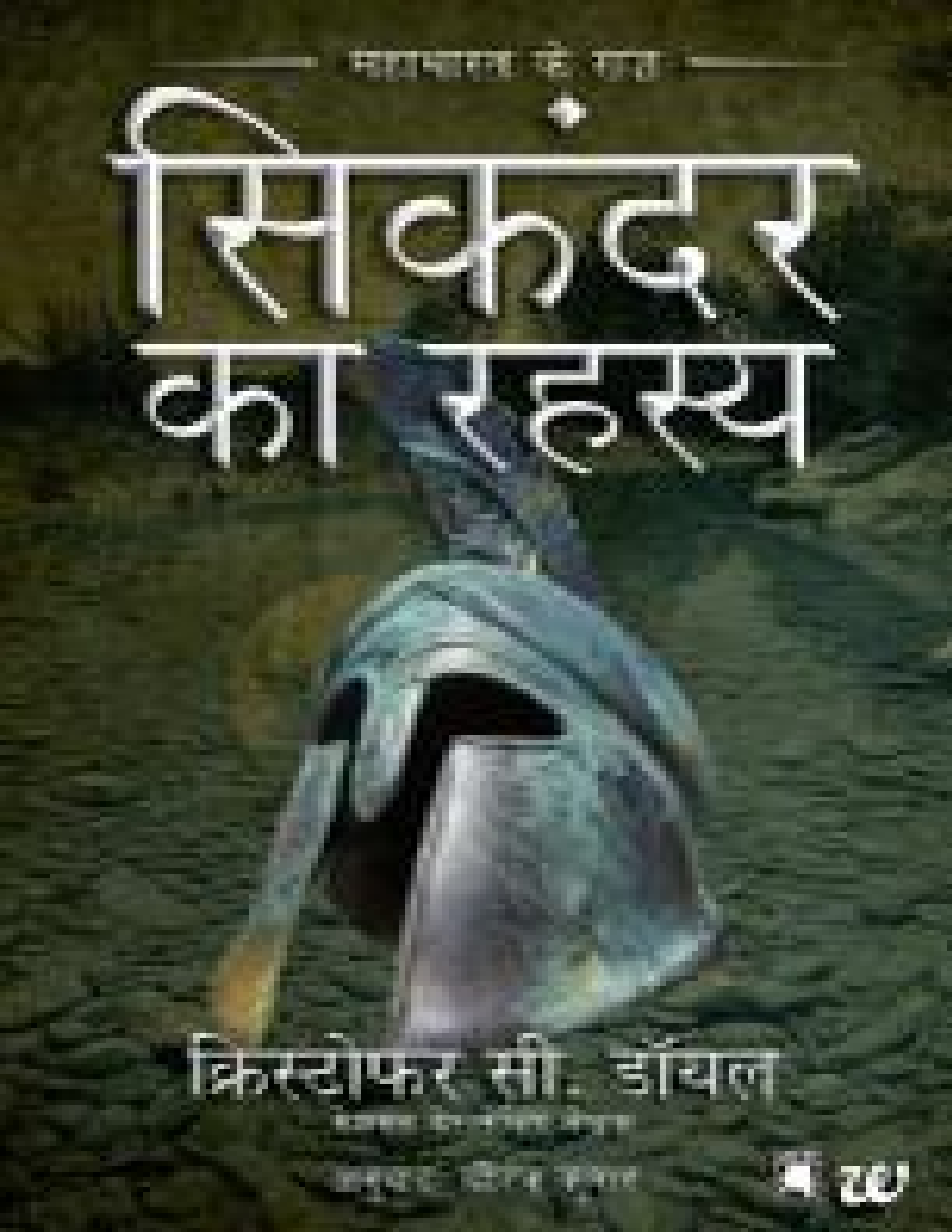
सिकंदर का रहस्य
क्रिस्टोफर सी. डॉयल

वैस्टलैंड

सिकंदर का रहस्य

क्रिस्टोफ़र सी. डॉयल अपने पाठकों को एक ऐसी चमत्कारी दुनिया में ले जाते हैं, जहां किस्से—कहानियों में छिपे प्राचीन रहस्य विज्ञान और इतिहास के साथ मिलकर एक अविस्मरणीय कथा बनाते हैं।

शास्त्रीय साहित्य से लेकर विज्ञान गल्प और फैंटेसी तक की किताबों में गहरी रुचि रखने वाले क्रिस्टोफ़र को स्कूली दिनों से ही लिखने का शौक रहा है। बचपन से ही उन्होंने अपने साहित्यिक गुरुओं के तौर पर जल्स वर्न, एच जी वेल्स, आइजैक असिमोव और रॉबर्ट हेनलेन, जे आर आर टॉकिन, रॉबर्ट जॉर्डन और टेरी ब्रुक्स जैसे लेखकों को देखा है।

अपने पहले उपन्यास, द सीक्रेट ऑफ़ महाभारत प्रकाशित करने से पहले क्रिस्टोफ़र का कॉरपोरटे जगत में एक शानदार करियर रहा है। उन्होंने दिल्ली के सेंट स्टीफंस कॉलेज से अर्थशास्त्र में स्नातक की डिग्री ली है और आईआईएम कलकत्ता से बिजनेस मैनेजमेंट की पढ़ाई की है। अपने कॉरपोरटे करियर के दौरान उन्हानें दिग्गज बहुराष्ट्रीय संस्थाओं में सीनियर एग्जीक्यूटिव और सीईओ के तौर पर काम किया है और इसके बाद एक अमेरिकी कंसल्टिंग फर्म के साथ मिलकर भारत में स्ट्रैटेजिक कंसल्टेंसी बनाई।

अपने कॉरपोरेट करियर के दौरान क्रिस्टोफ़र ने कई भारतीय और अतंर्राष्ट्रीय प्रकाशकों के लिए मैनेजमेंट और बिजनेस पर लेख लिखे और वो नियमित तौर पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में वक्ता के तौर पर आमंत्रित किए जाते हैं। वो एक सर्टिफाइड एग्जीक्यूटिव कोच हैं और फिलहाल सीनियर एग्जीक्यूटिव्स के साथ मिलकर उनकी कंपनियों में कामयाबी और बेहतर नतीजे लाने के लिए काम करते हैं।

क्रिस्टोफ़र एक संगीतकार भी हैं और संगीत के इस शौक को वो अपने क्लासिक रॉक बैंड मिड लाइफ क्राइसिस के जरिए पूरा करते हैं।

क्रिस्टोफर अपनी पत्नी शर्मिला, बेटी शयनया और अपने दो प्यारे कुत्तों, जैक और कोडी के साथ गुड़गांव में रहते हैं।

फेसबुकः www.facebook.com/authorchristophercdoyle

वेबसाइटः www.christophercdoyle.com

धीरज कुमार नेटवर्क 18 में सीनियर प्रोड्यूसर हैं और इस संगठन से 10 वर्षों से अधिक से जुड़ें हैं। पत्रकार के तौर पर आपकी दिलचस्पी सामाजिक मुद्दों में हैं, साथ ही बिजनेस, कॉरपोरेट, शिक्षा, स्वास्थ्य से जुड़ें कई प्रोग्राम का हिस्सा रहें हैं।

महाभारत के राज़
सिकंदर का रहस्य

क्रिस्टोफ़र सी. डॉयल

अनुवाद
धीरज कुमार

westland ltd
61, II Floor, Silverline Building, Alapakkam Main Road, Maduravoyal, Chennai 600095
93, I Floor, Sham Lal Road, Daryaganj, New Delhi 110002
www.westlandbooks.in

First Published in English as The Alexander Secret by Westland ltd 2014 First published in Hindi as Sikandar Ka Rehasya by Westland ltd, in association with Yatra Books, 2016

Copyright © Christopher C. Doyle 2014

All rights reserved

Christopher C. Doyle asserts the moral right to be identified as the author of this work.

ISBN: 978-93-86036-92-6

DISCLAIMER
This book is work of fiction and all characters in the book are fictional. Any resemblance to real life characters, living or dead, is purely coincidental.

No part of this book may be reproduced or transmitted in any form by any means, electronic or mechanical, including photocopying and recording, or by any information storage and retrieval system, except as may be expressly permitted in writing by the publisher.

आभूषण, प्रकाशमान, उसके हाथों में चमक रहा था;
खिज़्र ने नीचे देखा; जो चाहा, उसने पाया।
वो झरना चांदी के समान प्रतीत होता था,
चांदी की धारा की तरह जो चट्टान के मध्य से छनकर आती हो।
झरना नहीं,——जो इस उक्ति से दूर था;
लेकिन यदि, सचमुच, यह होता,——यह प्रकाश का झरना था।
प्रातः काल में तारा कैसा होता है?
जैसे भोर का तारा भोर में होता है,——ऐसा ही था यह।
रात में पूरा चंद्रमा कैसा होता है?
तो यह वैसा ही था, यह चंद्रमा से भी बड़ा था।

पद्य अनुच्छेद 69—इसकंदर नामा

अजय मागो और दीपा चौधरी
को समर्पित
मेरे लेखन में उनके विश्वास के लिए
मेरी पहली किताब लिखने वक्त दिशा—निर्देश के लिए
और, लेखक के तौर पर मुझे पहला मौका देने के लिए

आभार

यह किताब कई लोगों की मदद से अस्तित्व में आ पाई है। इस किताब को लिखे जाने में मदद के लिए मैं हर व्यक्ति का कृतज्ञ हूं। सबसे पहले, मेरी पत्नी शर्मिला और बेटी शयनया, जिन्हें एक साल से ज्यादा समय तक मेरे बिना रहना पड़ा, जब तक मैं इस किताब को लिख रहा था और इस पर शोध कर रहा था। मैं इसे बिना उनके सहयोग और समझ के नहीं लिख सकता था। शयनया ने मुझे इस किताब के लिए भी शोध में उसी तरह मदद की, जिस तरह मेरी पिछली किताब के लिए की थी, विशेष रूप से माइथोलॉजी और इतिहास में।

अर्तिका बक्शी, आशा मिशिगन और मेरी पत्नी शर्मिला ने किताब के अंतिम ड्राफ्ट को पढ़ा और मुझे अमूल्य सुझाव दिए ताकि किताब अपने वादे पर खरी उतरे।

डॉ. राजेश भाटिया, डायरेक्टर——डिपार्टमेंट ऑफ़ कम्युनिकेबल डिसीजेज, डब्ल्यू. एच.ओ. रीजनल ऑफिस, साउथ ईस्ट एशिया, जिन्होंने किताब में शामिल विज्ञान से जुड़े मेरे सभी सवालों और सिद्धांतों को धैर्य से सुना। उन्होंने ना सिर्फ ड्राफ्ट को आलोचनात्मक दृष्टि से पढ़ा, बल्कि मेरी समझ की कई खामियों को दूर भी किया, उनके सहयोग से ही मैं किताब में वैज्ञानिक और मेडिकल तथ्यों, सिद्धांतों और सबूतों को सही तरीके से पेश कर पाया हूं। कई अवधारणाओं और अनुमानों को अंतिम रूप देने में उन्होंने काफी मदद की है और उनके पक्ष में वैज्ञानिक प्रमाण भी दिए हैं, लेकिन इसका ये अर्थ नहीं निकाला जाना चाहिए कि वो इस किताब में पेश किए गए सभी सिद्धांतों, अवधारणाओं या व्याख्या से सहमत हैं।

श्रीमती ज्योति त्रिवेदी और श्रीमती आशा मिशिगन, जिन्होंने ना सिर्फ संस्कृत भाषा को समझने में मेरी मदद की, बल्कि धैर्यपूर्वक मूल संस्कृत श्लोकों की व्याख्या से जुड़े सभी सवालों के जवाब भी दिए, और इस बात की पुष्टि की कि संस्कृत के कुछ शब्दों का जो अर्थ मैं निकाल रहा हूं, वो सही हैं।

आनंद प्रकाश, जिन्होंने इस किताब का शानदार आवरण तैयार किया और इन पन्नों में लिखी कहानियों को जीवन दिया।

मैं अपने राइटर्स रिसर्च ग्रुप के साथी लेखकों, गेराल्ड नॉर्डली, जैकलीन शुमैन, फ़िलीस इरीन रेडफ़ोर्ड, केविन एंड्रयू मर्फ़ी, क्रिस्टी मार्क्स, पैट मैकइवन, बैरिट फ़िर्थ और डेव ट्रोब्रिज का कृतज्ञ हूं, जिन्होंने मेरे उन सभी सवालों के जवाब दिए जिन्हें ढूंढ़ना आसान नहीं था और जिस वजह से किताब की सत्यता सुनिश्चित हो सकी है।

मयंक मेहता, जिन्होंने इस किताब में उस रास्ते का नक्शा बनाया जो सिकंदर ने दो

हजार साल पहले लिया था, साथ ही उन जगहों का भी, जिनका वर्णन इस किताब में किया गया है। प्रियांकर गुप्ता, शानदार रेखाचित्रों के लिए जिनसे मेरे विवरण में जान आ गई।

वेस्टलैंड के सभी लोगों का बहुत—बहुत धन्यवाद, ख़ासतौर पर गौतम पद्मनाभन का, जिन्होंने इस कहानी की अंतिम पांडुलिपि को पढ़ा और कीमती सलाह दी। और मेरी संपादक संघमित्रा बिस्वास का, जिन्होंने मेरे लेखन को निखारा और कहानी कहने के अदांज को प्लॉट के अनुसार बनाया।

मैंने रिसर्च के दौरान जितनी किताबें, लेख, ब्लॉग्स या वीडियो देखे, उन सबका नाम यहां देने पर अपने आप में वो एक किताब बन जाएगी। लेकिन मैं हर उस संदर्भ सामग्री का शुक्रगुज़ार हूं जिसका इस्तेमाल मैंने इस किताब को लिखने में किया है। मैंने इस किताब में जिस तरह के अनुमान पेश किए हैं, उन्हें बिना प्रमाण और शोध की कसौटी पर परखे सामने रख पाना बेहद मुश्किल होता और ये काम मेरे लिए आसान बनाया इतिहास और विज्ञान के बारे में मौजूद विपुल जानकारी ने।

अंत में मैं उन सभी को धन्यवाद देना चाहूंगा, जिन्होंने इस किताब को सामने लाने में मेरा सहयोग किया। साथ ही, इस किताब में तथ्य या विवरण से जुड़ी किसी भी भूल—चूक के लिए सिर्फ मैं जिम्मेदार हूं।

विषय-सूची

आभार
प्रस्तावना
1 वर्तमान: पहला दिन
2 आर.के. पुरम, नई दिल्ली
3 आसमान से गिरे...
4 मदद की पुकार
5 शिकार
6 मदद की पुकार
7 थेसालोनिकी, ग्रीस के पास, ई75 पर
8. जौनगढ़ किला
9. थेसालोनिकी, ग्रीस
10. आर्यन लेबारेट्रीज, नई दिल्ली
11. दूसरा दिन
12. तीसरा दिन
13. जौनगढ़ किला
14. हाथी दांत में एक पहेली
15. कई पहेलियां
16. जौनगढ़ किला
17. टास्क फोर्स की बैठक
18. गुड़गांव
19. एक रोचक खोज
20. 334 ईसा पूर्व
21. वर्तमान: तीसरा दिन
22. गुप्त डायरी
23. मंडराता हुआ संकट

24. एक टूटी कड़ी
25. गंदे मंसूबे
26. नई दिल्ली
27. संग्रहालय में एक रात
28. एक नया रहस्य
29. खतरे का आभास
30. क्या योजना काम करेगी?
31. फंदे में फंसे
32. 334 ईसा पूर्व
33. वर्तमान: तीसरा दिन
34. नई दिल्ली
35. अस्पताल में
36. सितंबर, 328 ईसा पूर्व समरकंद, वर्तमान उज्बेकिस्तान
37. वर्तमान: तीसरा दिन
38. कैदी...
39. कड़ी मिल गई
40. अदला—बदली का प्रस्ताव
41. चौथा दिन आशा की किरण
42. कैदी
43. पहेली का एक हिस्सा
44. पहला सुराग
45. जवाबी प्रस्ताव
46. जुआ
47. जलालाबाद, अफगानिस्तान
48. सिकंदर का सच
49. पांचवां दिन रहस्य की एक झलक
50. 328 ईसा पूर्व बाल्ख, वर्तमान अफगानिस्तान
51. वर्तमान: पांचवां दिन
52. अमरत्व
53. सिकंदर की राह पर

54. जलालाबाद, अफगानिस्तान
55. एक कैदी के विचार
56. पहाड़ों में
57. पहला कदम
58. राधा के अभियान की शुरुआत
59. मदद के हाथ
60. शुक्र ने मार्ग दिखाया
61. शिव का दंड
62. उम्मीद का एक टुकड़ा
63. तलाश की शुरुआत
64. दूध का महासागर
65. जयपुर, राजस्थान
66. छठा दिन
67. सर्वश्रेष्ठ योजना के जोखिम
68. सांप की मुहर
69. अमृत और रत्न
70. 327 ईसा पूर्व: वर्तमान अफगानिस्तान
71. वर्तमान: वर्तमान
72. गोलाबारी
73. तनावपूर्ण स्थिति
74. पहला आक्रमण
75. हताश और विफल
76. खुफिया ब्यूरो मुख्यालय, नई दिल्ली
उपसंहार
लेखक की टिप्पणी

प्रस्तावना

316 ईसा पूर्व

गैबीन, पर्शिया, मौजूदा ईरान

यूमेनीज उस तंबू में, जिसमें उसे कैद किया गया था, बिस्तर पर लेटा था और अपने भाग्य को कोस रहा था। वह जानता था कि वह हार चुका है। वह एंटीगोनस, जो काना था, का कैदी था और जिसके साथ वो पहले भी लड़ चुका था। इस बार आखरी युद्ध में उसे धोखा दिया गया था। उसके अपने क्षत्रपों ने उसे काने जनरल को सौंप दिया था, सामानों से लदी उस गाड़ी के बदले जिसे एंटीगोनस ने जब्त कर रखा था। यूमेनीज की गिरफ्तारी को एंटीगोनस सार्वजनिक तौर पर एक लंबी और तीखी दुश्मनी के अंत के जश्न की तरह मना रहा था। लेकिन सूर्यास्त होने पर एंटीगोनस अकेले में यूमेनीज से मिलने आया। तब यूमेनीज को पता लगा कि एंटीगोनस सिंधु की भूमि की तरफ सिकंदर के कूच करने के फैसले की असली वजह जानता है, साथ ही यह भी कि सिकंदर को वहां क्या मिला। और वह जानता है कि किस वजह से उस महान विजेता को सिर्फ दो साल बाद मृत्यु के मुख में जाना पड़ा।

यूमेनीज ने पहले सिकंदर के पिता फिलिप के साथ एक दोस्त और सचिव के रूप में काम किया था। फिलिप की मौत के बाद वह सिकंदर का मुख्य सचिव बना था। यूमेनीज ही था जो राजा के दस्तावेजों की देखरेख करता था, उन राजकीय डायरियों का, जिनमें राज्य के रोजाना के कामकाज दर्ज होते थे। लेकिन एक अहम चीज थी जो यूमेनीज ने दस्तावेजों में दर्ज नहीं की थी——सिकंदर की असली महत्वाकांक्षाएं और वह महान रहस्य जिसने उसे एक भगवान का दर्जा दिलाया था। सोलह साल पहले, यूमेनीज ने उस विजेता के साथ सिवा ओएसिस में जियस—एमन के मंदिर की यात्रा की थी, जहां सिकंदर को बताया गया था कि वह जियस—एमन का पुत्र है और इसलिए खुद भी भगवान है।

सिकंदर ने बिना समय गंवाए अपने देवत्व का दावा कर दिया और सुदूर पूर्व में सिंधु नदी की तरफ बढ़ चला, अपने उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जो उसे सच में ईश्वर बना देता। उसने उस महान रहस्य के बारे में जो कहानियां सुन रखी थीं और जो उसे उसका लक्ष्य हासिल करने की ताकत देने वाला था, उन्होंने उसे लगातार आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया, भले ही उसके सैनिक अपने घर लौटना चाहते थे।

यूमेनीज सिकंदर के साथ उस भूमिगत गुफा के बाहर तक गया था जहां ईश्वर के रहस्य छिपे थे। लेकिन गुफा के अंदर सिकंदर अकेला गया था। जब वह लौटा, उसका चेहरा जीत

से दमक रहा था। उसने वो ढूंढ़ लिया था जिसके लिए वह आया था। सिकंदर के गुप्त मिशन में कामयाबी का प्रमाण मल्लीज पर कब्जे के वक्त मिला, जब वो सिंधु नदी के किनारे से होकर वापस लौट रहा था। सिकंदर ने आक्रमण का नेतृत्व किया था, और जब वो एक सीढ़ी के सहारे दीवार पर चढ़ रहा था, सीढ़ी टूट गई और सिकंदर अपनी सेना से अलग उन बर्बरों के बीच घिर गया। उसके चेहरे के तेज और कवच की चमक देखकर एक बार तो वो बर्बर यह समझ बैठे कि कोई देवता उनके बीच आ गया है और भाग गए। लेकिन बहुत जल्दी वो संभल गए और उन्होंने उस पर हमला कर दिया। हालांकि सिर्फ दो रक्षकों की मदद से सिकंदर उनसे लड़ता रहा। पसलियों में तीर लगने के बावजूद सिकंदर तब तक पराक्रम दिखाता रहा, जब तक मकदूनिया की सेना वहां पहुंचकर उसे बचा नहीं ले गई। लेकिन जब उसके शरीर से तीर निकालने की प्रक्रिया चल रही थी, दस्ते में ये कहानियां फैल चुकी थीं कि उनका राजा मर चुका है।

यूमेनीज सिकंदर की नाव पर उसके केबिन के बाहर कई दिनों तक चिंतित मुद्रा में उसकी सेहत की खबर जानने के लिए इंतजार करता रहा, और अंत में सिकंदर नाव के डेक पर आया, जीवित लेकिन कमजोर। उस चमत्कार के किस्से भी यूमेनीज के कानों तक पहुंचे जिसने सिकंदर की जान बचाई। जख्म जानलेवा हो सकता था क्योंकि काफी खून बह चुका था। चिकित्सकों ने उम्मीद छोड़ दी थी——वो अंदरूनी जख्म भरने के लिए या खून को बहने से रोकने के लिए कुछ नहीं कर सकते थे। लेकिन जब वो सभी असहाय बैठकर अपने राजा की मौत का इंतजार कर रहे थे, सिकंदर के जख्म भरने शुरू हो गए। जख्म भरने की प्रक्रिया धीमी जरूर थी लेकिन वो अपने आप शुरू हो गई थी। सिकंदर की सेहत सुधरते देखकर चिकित्सकों ने भी अपनी तरफ से जल्द से जल्द उसे स्वस्थ करने की कोशिशें शुरू कर दी थीं। और कुछ ही दिनों में वो विजेता स्वस्थ हो चुका था, उसके जख्म भर गए थे और कमजोर होने के बावजूद उसने इस बात पर जोर दिया था कि उसे उसकी सेना के बीच ले जाया जाए।

यूमेनीज अफवाहों पर भरोसा नहीं करता था, लेकिन उस दिन, बाकी सेना की तरह उसे भी यकीन हो गया कि सिकंदर एक भगवान है। अमर, मनुष्य को ज्ञात किसी भी हथियार से अभेद्य। और यूमेनीज जानता था कि ईश्वर की गुफा की सिकंदर की यात्रा ने उसके इस बदलाव में भूमिका निभाई है। लेकिन अब वो इस बात को निश्चित तौर पर मान चुका था कि गुफा में चाहे जो भी महान रहस्य हो, सिकंदर ने उस रात गुफा में अकेले जाने के बाद चाहे जो किया हो, इस चीज का कोई ना कोई संबंध बेबीलोन में सिकंदर के अंतिम दिनों के मानसिक संताप से है, जब वो बुखार से पीड़ित था, लगातार प्यास लगने की वजह से उसका गला बैठ गया था और कुछ भी बोल पाने में असमर्थ था। भगवान बनने की सिकंदर की महत्वाकांक्षा तो पूरी हो गई थी, लेकिन विडंबना थी कि इसी ने उसकी जान ले ली थी।

यूमेनीज यह भी जानता था कि सिकंदर के इसी रहस्य की वजह से मरने के छह दिनों तक भी उसका शरीर उसी तरह दिख रहा था जैसे कि सिकंदर जीवित हो और सिर्फ गहरी नींद में हो।

और, अब, यहां वह सिकंदर के एक जनरल का कैदी है जो उसे निश्चित तौर पर मार देगा। उसे सिर्फ इस बात का संतोष था कि सिकंदर का महान रहस्य सुरक्षित है। यूमेनीज ने एक विश्वासपात्र की तरह इतिहासकार कैलिस्थनीज की किताब, सिकंदर के कार्य में ये सभी जानकारी दर्ज की थी। लेकिन आधिकारिक दस्तावेजों से उसने किताब के वो अंश हटा दिए थे जिसमें उस गुप्त मिशन का वर्णन था, जो कैलिस्थनीज ने सोगडियन भूमि पर, सिकंदर के उसे मौत की सजा दिए जाने से पहले पूरे किए थे। इसके बजाय उसने अपनी गुप्त डायरी में, जिसे वो अपने तंबू में छिपाकर रखता था, सिकंदर के साथ अपने अनुभव और कैलिस्थनीज के मिशन की बातें लिखी थीं।

उसने एंटीगोनस के साथ महायुद्ध के पहले अपने क्षत्रपों को जंगली जानवरों का झुंड मानते हुए अपने सभी कागजात और दस्तावेज नष्ट कर दिए थे। गुप्त डायरी को एक भरोसेमंद वाहक के जरिए सिकंदर की मां ओलिंपियास तक पहुंचा दिया गया था, जो मकदूनिया की राजगद्दी को कैसेंडर की महत्वाकांक्षा से बचाने में लगी थी।

एंटीगोनस को कुछ नहीं मिलेगा। यह सोचकर उसने चैन की सांस ली। उसने अपने शासक के प्रति कर्तव्य निभाया था। एंटीगोनस, टोलेमी, कैसेंडर——जो सिकंदर के साम्राज्य को अपने बीच बांट रहे थे——कभी भी सिंधु की भूमि में सिकंदर के महान रहस्य को नहीं जान पाएंगे। और, ना बाकी दुनिया को यह रहस्य मालूम होगा।

391 ईस्वी

दफन हुआ एक रहस्य

गांव की सुनसान सड़क पर एक खाली घोड़ागाड़ी धीरे—धीरे चल रही थी जिसके उजाले का स्रोत आधे चंद्रमा की कमजोर रोशनी भर थी। घोड़ा आराम से चल रहा था, मानो वो किसी हड़बड़ी में ना हो और उसे मालूम हो कि उसका मिशन खत्म हो चुका है और अब हड़बड़ी दिखाने की जरूरत नहीं है। घोड़ागाड़ी में तीन दिन पहले तक कुछ कीमती सामान था। कुछ अमूल्य, कुछ ऐसा जिसकी दुनिया ने पिछले 500 वर्षों तक पूजा की थी।

अब यह सुरक्षित नहीं था। मध्य पूर्व में उदित हुआ नया धर्म तेजी से दुनिया भर में फैल रहा था। ईसा मसीह कहलाने वाले एक व्यक्ति के जीवन और मृत्यु पर आधारित यह धर्म मिस्र पहुंच चुका था, जहां यह स्मृति चिह्न 500 साल से ज्यादा समय तक सुरक्षित रहा था। नए धर्मांतरित लोग, जो खुद को अपने नेता, जिसे वो ईश्वर का पुत्र मानते थे, के नाम पर ईसाई कहते थे, पुराने ईश्वर पर सवाल उठा रहे थे। मूर्तियां तोड़ी जा रही थीं, मंदिर नष्ट किए जा रहे थे और प्रतिमाएं बिगाड़ी जा रही थीं।

बहुत जल्दी ही यह लहर अलेक्जेंड्रिया में उस पवित्र जगह पहुंचने वाली थी, जहां पूजा की वस्तु दफन थी, जिसे पांच सदी तक किसी ने छेड़ा नहीं था।

इसकी सुरक्षा हर हाल में की जानी थी। और इसका जिम्मा ऑर्डर ने ले लिया था। अब खाली घोड़ागाड़ी में रखी चीजें अलेक्जेंड्रिया की अपनी जगह से हटाई जा चुकी थीं और नदियों और महासागरों के पार जा चुकी थीं——उन नावों, जहाजों, रथों और घोड़ागाड़ियों की मदद से जिन पर ऑर्डर के प्रतीक चिह्न बने थे। पांच सिर वाला एक सांप जो अपने फन उठाकर हमला करने को तैयार है। इस प्रतीक चिह्न ने इस खजाने को यात्रा के दौरान लोगों की उत्सुक आंखों और सवालों से दूर रखा था। क्योंकि यह प्रतीक हर देखने वाले के मन में डर पैदा करता था। ऑर्डर एक रहस्य था——कोई नहीं जानता था कि ऑर्डर क्या है या इसके सदस्य कौन हैं, या इसकी उत्पत्ति कैसे हुई है——लेकिन इसके कार्य गुप्त नहीं थे। अपना काम पूरा करने के बाद घोड़ागाड़ी और इसका चालक रेगिस्तान की तरफ जा रहे थे। चालक करमल को एक जगह और रुकना था।

गाड़ी एक शांत और सुनसान गांव से गुजरी। हालांकि यह शांति गाड़ी के दोनों तरफ बने सांप के निशान की वजह से भी हो सकती थी। गाड़ी एक बड़े से घर की चारदीवारी तक पहुंची और दरवाजे के अंदर चली गई। दरवाजा खुला था मानो करमल का आगमन तय था। रास्ते के अंत में पत्थर और ईंटों से बनी एक बहुमंजिली इमारत खड़ी थी।

गाड़ी घर के मुख्य द्वार के पास रुकी और करमल उसमें से उतरा। उसे ज्यादा इंतजार नहीं करना पड़ा क्योंकि तुरंत ही दरवाजा खुला और सिर और चेहरे को कनटोप से ढकी हुई एक लंबी आकृति बाहर आई। उस अजनबी ने गहरी आवाज में पूछा, 'काम हो गया?'

करमल ने थके हुए अंदाज में सिर हिलाया। यह काफी लंबा सफर था और वह थक चुका था।

'बढ़िया, तब तुम जानते हो कि तुम्हें क्या करना है', यह कहकर वो आदमी जाने के लिए मुड़ा।

'रुको', करमल ने उसका हाथ पकड़ लिया।

अजनबी वापस मुड़ा, साफ तौर पर उसके चेहरे पर अचरज के भाव थे। 'यह क्या है?'

'इसे रखो।' करमल ने उस आदमी के हाथ में कुछ रखा और गाड़ी में अपनी सीट पर वापस बैठ गया। उसे एक अंतिम काम और करना था। वो आदमी करमल को देखता रहा जब तक कि गाड़ी दरवाजे से बाहर नहीं चली गई और आंखों से ओझल नहीं हो गई। उसके हाथ उस धातु की चीज पर मजबूती से जमे थे, जो करमल ने उसे सौंपी थी। फिर वह तेजी से घर में घुसा और अपना कनटोप उतार फेंका, अब एक पतले चेहरे, गहरी आंखों और पतले होंठों वाली आकृति सामने थी।

उसने अपनी मुट्ठी खोली और अपनी हथेली में रखे तांबे के छोटे से कैप्सूल को देखा। फिर, अपनी मुट्ठी बंद करते हुए वह सीढ़ी चढ़ते हुए पहली मंजिल पर अध्ययन कक्ष में पहुंचा। कमरे का दरवाजा बंद करने के बाद वह अपनी मेज पर बैठ गया। उसका चेहरा पीला पड़ गया था और उसके हाथ कांपने लगे थे।

उस मूर्ख करमल ने क्या किया था?

वह जानता था कि करमल ऑर्डर को निराश नहीं करेगा। वह एक विश्वासपात्र की तरह कुछ मील तक गाड़ी को ले जाएगा और रेगिस्तान में कहीं भीतर घोड़ों को छोड़कर अपना गला खुद रेत लेगा। क्योंकि किसी को भी स्मृति चिह्न के स्थान का पता नहीं चलना चाहिए। ऑर्डर ने आदेश दिया था कि पूरी सुरक्षा के लिए स्मृति चिह्न को हमेशा के लिए गायब हो जाना चाहिए।

चाकू की मदद से उसने कैप्सूल के एक सिरे को सावधानी से खोला और उसे मेज पर लहराया। चमड़े का एक पतला पत्र उसमें से गिरा। उसके चेहरे पर दुख के भाव आ गए। चर्म—पत्र की तरफ बिना देखे भी वह समझ गया था कि यह एक नक्शा है।

उसने तेजी से उसे मोड़ा और तांबे के कैप्सूल में वापस डाल दिया। ऑर्डर को इस नक्शे के वजूद के बारे में कभी पता नहीं चलना चाहिए। यह उस जगह का इकलौता सुराग था, जिसे हमेशा के लिए एक राज बने रहना था।

उसने नक्शे को नष्ट करने की सोची, लेकिन फिर उसका मन बदल गया। वह एकमात्र शख्स था जिसे नक्शे के वजूद के बारे में पता था। यह तब काम आ सकता है जब कभी उसके संबंध ऑर्डर के साथ खराब हो जाएं। लेकिन नक्शे को चतुराई से ऐसी जगह और ऐसे तरीके से छुपाना होगा, जिसकी जानकारी सिर्फ उसे हो। और उसके बाद वो जगह एक राज रहेगी।

और उसे कैप्सूल छिपाने की एक ऐसी जगह मालूम थी।

जून 1990

सेंट जेम्स कॉलेज, फिलाडेल्फिया, अमेरिका

माइक एशफोर्ड ने अपने दांत भींच लिए क्योंकि वो चाहता था कि फोटोकॉपी मशीन तेजी से काम करे। यह मशीन बिलकुल नए मॉडल की थी जो सादे कागज का इस्तेमाल कर फोटोकॉपी कर सकती थी, इलेक्ट्रोस्टैटिक या पुराने टाइप की वैसी मशीन नहीं थी, जो पहले चलन में थीं। इसके बावजूद यह मशीन उसके काम को तेजी से नहीं कर पा रही थी।

उसके माथे पर पसीने की बूंदें दिखने लगीं जब उसने दो घंटे पहले आए उस टेलीफोन कॉल के बारे में सोचा।

‘माइक एशफोर्ड?’ दूसरी तरफ से आ रही आवाज ने पूछा।

‘हां, कौन बोल रहा है?’

‘यह जानना तुम्हारे लिए जरूरी नहीं है। ध्यान से सुनो। मुझे तुमसे एक चीज चाहिए। वो पपीरस दस्तावेज जो तुमने कल ढूंढ़े हैं।’

एशफोर्ड चौंक गया था। उसने पपीरस दस्तावेजों के बारे में किसी को नहीं बताया था जो उसे पुस्तकालय के तहखाने में एक बक्से में मिले थे। सिर्फ क्लासिक्स डिपार्टमेंट की फैकल्टी को इस बात की जानकारी थी। तो क्या डिपार्टमेंट में से ही किसी ने ये बात बाहर के किसी आदमी को बताई है? ऐसा होना तो मुश्किल है। लेकिन फोन कर रहे इस अनजान शख्स को तो ये पता है।

'कौन से दस्तावेज?' उसने अनजान बनने की कोशिश करते हुए कहा।

सामने से आ रही आवाज सख्त हो गई। 'मेरे साथ खेल मत खेलो, एशफोर्ड। मुझे उस पते पर दस्तावेज चाहिए जो मैं तुम्हें बताने जा रहा हूं। दस्तावेज एक सीलबंद लिफाफे में होने चाहिए। मैं नहीं चाहता कि पपीरस मुझे छितराए हुए मिलें, भले ही वो कितनी भी अच्छी हालत में हों।' इसके बाद फोन करने वाले ने फिलाडेल्फिया के कारोबारी इलाके का एक पता बताया। एशफोर्ड स्तब्ध था। फोन करने वाले शख्स को दस्तावेजों के बारे में सब कुछ पता था, यहां तक कि पपीरस की हालत के बारे में भी!

'और अगर मैं ना दूं तो?' उसने पलटकर पूछा। 'ये दस्तावेज कॉलेज की संपत्ति हैं। लाइब्रेरियन होने के नाते इनकी सुरक्षा मेरी जिम्मेदारी है, यह नहीं कि मैं इन्हें किसी के भी फोन करने पर उसे दे दूं।'

फोन करने वाले की आवाज अब संयम खो चुकी थी। 'फिर ठीक है। तुम्हें एक मौका दिया गया था, तुमने उसे गंवा दिया।'

फोन एकाएक कट गया और एशफोर्ड को सिर्फ उसकी टोन सुनाई दी।

उसने इसे एक क्रैंक कॉल मानकर इसकी परवाह नहीं की होती अगर उसे सिर्फ पैंतालीस मिनट बाद एक चौंकाने वाली खबर ना मिली होती। क्लासिक्स डिपार्टमेंट के फैकल्टी मेंबर कार्ल डन, जिनसे उसने सबसे पहले पपीरस दस्तावेजों का जिक्र किया था, को उनके घर के सामने सड़क पार करते वक्त एक कार ने टक्कर मार दी थी। उनकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई थी। उन्हें कुचलने वाली कार बिलकुल गायब हो गई थी। हादसे का कोई प्रत्यक्षदर्शी नहीं था और कार का कोई पता मिलने की उम्मीद भी नहीं थी।

यह खबर मिलते ही एशफोर्ड बेचैन हो गया। डन एक अच्छे आदमी थे, पूरी तरह धार्मिक कैथोलिक, जो जेसुइट लिबरल आर्ट्स कॉलेज में अच्छे से रम गए थे। क्या इस हादसे के पीछे उसे फोन करने वाला अनजान शख्स है? यह एक बहुत बड़ा संयोग लग रहा था।

उसे याद आया कि कैसे कॉलेज में क्लासिक्स के पूर्व प्रोफेसर और डीन लॉरेंस फुलर दो हफ्ते पहले रहस्यमयी परिस्थितियों में गायब हो गए थे। फुलर शिकागो विश्वविद्यालय के ओरियंटल इंस्टीट्यूट के एक सेमिनार से लौट रहे थे। उन्होंने अपने होटल से चेक आउट किया था और जैसे हवा में विलीन हो गए थे। होटल के दरबान और बेल ब्वॉय ने उन्हें एक टैक्सी में बैठते देखा था लेकिन वो कभी एयरपोर्ट नहीं पहुंचे। फुलर के साथ हुए करार की

शर्तों के तहत कॉलेज ने उनकी सभी चिट्ठियों और दस्तावेजों को अपने पास रख लिया था। ये सभी दस्तावेज उस वक्त बिना किसी कैटलॉग बनाए बक्सों में भरकर तहखाने में रख दिए गए थे। इन्हीं में से एक बक्से में एशफोर्ड को पपीरस मिले थे, जब वो फुलर के सामानों की जांच कर रहा था।

तो अब उसके पास क्या रास्ता है? एशफोर्ड ने जिद करते हुए फोन करने वाले की बात ठुकरा दी थी। क्या अगला निशाना वो होगा? तेजी से सोचते हुए उसने अपना मन बना लिया। वो फोन करने वाले के मुकाबले एक फायदे में था। कोई नहीं जानता था कि उसे पपीरस के साथ दो डायरी भी मिली थीं। उसने डन या किसी और को भी इस बारे में नहीं बताया था। दोनों डायरी अंग्रेजी में थीं और एक में पपीरस में लिखी चीजों का अनुवाद था, और यह फुलर की हस्तलिपि में डायरी के पहले पन्ने पर अलंकृत थी। अगर अनुवाद ने उसे चौंकाया था, तो दूसरी डायरी ने उसे स्तब्ध कर दिया था।

अगर ये दो डायरी उसी मतलब की थीं जैसा वो सोच रहा था, तो यह खोज हजारों साल पुराने बेकार दस्तावेजों को ढूंढ़ने से कहीं ज्यादा बड़ी थी।

दुनिया का भविष्य दांव पर हो सकता है।

कॉपी मशीन से आखरी कॉपी निकली। एशफोर्ड ने जल्दी—जल्दी कागजों को इकट्ठा किया और उन्हें एक साथ स्टेपल कर दिया। फोटोकॉपियों के दोनों सेट को उसने एक लिफाफे में भरा और कांपते हाथों से उन्हें पाने वाले का पता लिखने लगा, साफ था कि वो डरा हुआ था। कुछ पलों के लिए उसने सीलबंद लिफाफे को देखा जैसे वो अपने फैसले पर पुनर्विचार कर रहा हो। उसने आर्किटेक्चर डिपार्टमेंट से अपने सहकर्मी को बुलाया जो इस पैकेट को फेडएक्स ऑफिस में डिलीवरी के लिए देने जाने वाला था। पांच मिनट बाद पैकेट अपनी मंजिल की तरफ हिफाजत से जा चुका था।

जब उसका सहकर्मी पैकेट लेकर चला गया, एशफोर्ड अपनी कुर्सी में धंस गया। उसने वो सब कुछ किया था जिससे यह तय हो जाए कि सिर्फ वही नहीं है जिसे यह मालूम है कि डायरी में क्या है। वह अपने कर्तव्य को अच्छे से निभाने वाला साधारण आदमी था। इस हालत में भी उसके दिमाग में यह बात नहीं आई कि मूल दस्तावेजों को उसके दोस्त के पास भेजा जा सकता है। ये दस्तावेज कॉलेज की संपत्ति थे और इन्हें यहीं रखा होना था, जैसे पपीरस यहां रखे हैं। उसने यही सोचा कि दस्तावेजों की फोटोकॉपी की जाए और उन्हें भेजा जाए।

एशफोर्ड जानता था कि अब उसके साथ आगे क्या होने वाला है। ऐसा नहीं लग रहा था कि उसे फोन करने वाला रहस्यमय शख्स अपने साथ कोई खिलवाड़ पसंद करता है। उसे यह समझ नहीं आ रहा था कि वो अपनी सुरक्षा के लिए क्या करे। उसने सोचा कि वो भाग जाए लेकिन वो कहां जाएगा? यह कॉलेज पिछले पैंतीस सालों से उसकी जिंदगी था और वो इतने सालों में सिर्फ एक बार इसके कैंपस से बाहर निकला था, जब उसने 1983 में वॉशिंगटन डीसी में एक सम्मेलन में शिरकत की थी। उस वक्त उसने कॉलेज के बाहर अपना

इकलौता दोस्त बनाया था, भारत का एक इतिहासकार जो सम्मेलन में प्राचीन दस्तावेजों को सुरक्षित रखने के विषय पर अपनी बात रखने आया था। उन्होंने दोस्ती कर ली थी और आश्चर्यजनक रूप से इतने सालों में भी एक दूसरे से संपर्क में थे।

और, अपने इसी दोस्त को उसने फोटोकॉपीज भेजी थीं। जो होने वाला था, खुद को उसके हवाले कर उसने अपनी आंखें बंद कीं और प्रार्थना करने लगा। एक सच्चा कैथोलिक होने के नाते जब भी उसे समस्याएं होती थीं, यही उसकी इकलौती राहत थी।

दफ्तर की तरफ आते कदमों की आहट से उसने अपनी आंखें खोलीं। पांच व्यक्ति आए और दीवारों से लगकर खड़े हो गए। उनके जैकेट देखकर उसे अंदाजा हो गया था कि वो पिस्तौल से लैस हैं। उन सभी के पास हथियार थे, सिर्फ एक को छोड़कर, जो बीच में खड़ा था, लंबे कद और कोयले सी काली आंखों वाले इस शख्स के चेहरे पर ऐसी गंभीरता थी मानो वो हर वक्त गहरे दार्शनिक विचारों में डूबा रहता हो। साफ तौर पर वो इस समूह का नेता था।

उस आदमी की आंखें एशफोर्ड की मेज पर रखे पपीरस दस्तावेजों पर टिक गईं। ‘वाह, तुमने तो इन्हें मेरे लिए तैयार रखा है।’ उसकी आवाज से लग रहा था कि वो तारीफ कर रहा हो लेकिन उसके चेहरे के डरावने भाव बिलकुल नहीं बदले। उसके एक इशारे के बाद उसके आदमियों में से एक ने पपीरस दस्तावेज उठाए और अपने साथ लाए चमड़े के ब्रीफकेस में सावधानी से भर लिए।

एशफोर्ड निडर होकर उन्हें देखता रहा। उसके पास अभी भी एक ब्रह्मास्त्र था। दो डायरी जिनकी उसने फोटोकॉपी की थी, वो अभी भी उसकी मेज की दराज में सुरक्षित थीं।

‘तुम्हारे पास मेरे लिए और कुछ तो नहीं है?’ उन आदमियों के नेता ने कहा।

‘तुम कहना क्या चाहते हो? मैंने तुम्हें पपीरस दस्तावेज दे दिए हैं।’ एशफोर्ड उम्मीद कर रहा था कि वो झूठ बोलने में कामयाब हो जाएगा। वो हमेशा से इसमें नाकाम रहा था।

‘अंग्रेजी में लिखीं दो डायरी जो तुम्हें इन दस्तावेजों के साथ मिली थीं।’ उसकी आवाज सख्त थी, ‘तुम मुझे उनके बारे में नहीं बताना चाहते थे ना? तुम सोच रहे थे कि हमें कुछ नहीं पता।’

एशफोर्ड का मुंह खुला का खुला रह गया। इन्हें कैसे पता? उसने तो इस बारे में किसी को नहीं बताया था।

अपने नेता का इशारा पाकर उन आदमियों में से एक ने अचानक एशफोर्ड को एक घूंसा जड़ दिया। एशफोर्ड दर्द से चीख उठा, गुंडे ने घूंसा मारकर उसकी नाक तोड़ दी थी। उसके चेहरे पर खून की धार बहने लगी।

‘इसकी मेज की तलाशी लो।’ नेता ने आदेश दिया। तीन आदमी तेजी से दराज की तरफ बढ़े। उनमें से एक ने डायरी ढूंढ़ ली और उन्हें ब्रीफकेस में पपीरस के साथ ही डाल दिया।

इसके बाद नेता एशफोर्ड की तरफ झुका और उसे घूरते हुए कहा, ‘मैं तुम्हें दस्तावेज लेने

के बाद मारना चाहता था। लेकिन तुमने मेरा मन बदल दिया है। मैं तुम्हें अपने साथ ले जा रहा हूं। तुम गायब होने जा रहे हो, बिल्कुल फुलर की तरह। और इसके बाद तुम चाहोगे कि काश मैं तुम्हें मार देता।'

1

वर्तमान

पहला दिन

कोरिनोस का उत्तरी और मार्किगियालोस का दक्षिणी इलाका, ग्रीस

एलिस ने सेलफोन को अपने कान से सटाए रखा और दूसरी तरफ से लगातार बज रही घंटी को सुनती रही। उसके चेहरे पर हताशा थी और बार—बार कॉल करने के बावजूद एक जैसे नतीजे आने की वजह से वो तमतमाने लगा था। इस बार भी कोई जवाब नहीं मिला।

एक बार फिर कॉल कटने पर उसने खीज में अपनी जीभ चटकाई। अब तक वो समझ चुकी थी कि पलटकर कॉल नहीं आएगी।

मैं कॉल करने की जहमत ही क्यों उठा रही हूं?

वो उदास निगाहों से कुछ देर तक अपने फोन को घूरती रही और फिर उसे अपनी जेब में रख लिया। लंबी दूरी का रिश्ता निभाना आसान नहीं था। वो पिछले बारह महीनों में ज्यादातर समय पिडना के ग्रीक—अमेरिकी आर्कियोलॉजिकल मिशन की इंटरनेशनल टीम के सदस्य के तौर पर यहां रह रही थी।

ये मिशन दुनिया के सामने प्राचीन ग्रीस के सबसे पेचीदा रहस्यों को सामने लाने की कगार पर था। महीनों तक अलग—अलग रहने से उसके संबंधों पर बुरा असर पड़ा था और दो हफ्ते पहले इसकी परिणति तीखे गाली—गलौज के रूप में हुई थी। तब से उसके ब्वॉयफ्रेंड ने उसे फोन नहीं किया था। और न ही उसके किसी भी कॉल का जवाब दिया था।

मूर्ख इंसान। अगर उसमें अपनी भूल के लिए माफी मांगने की शालीनता नहीं है, तो कम से कम वो उसका फोन तो उठा सकता था ताकि वो रिश्तों को फिर से पटरी पर लाने की कोशिश कर सके। जब तक ऐसा नहीं होता... उसने इस बुरे विचार को सिर हिलाकर दूर कर दिया।

उसकी सोच को तोड़ा रोमांच से भरे एक छात्र ने, जिसकी सांस सुरंग से दौड़ लगाकर बाहर आने की वजह से फूल रही थी। सुरंग का रास्ता सदी की सबसे बड़ी खोज की तरफ ले

जाता था——एक मकबरा जिसे 2000 सालों से ज्यादा से खोला नहीं गया था। वो मकबरा जो पिछले 150 सालों से अटकलबाजी का विषय था। खुदाई करने वाली टीम में पचास से ज्यादा छात्र और बड़ी तादाद में स्थानीय मजदूर थे, जबकि प्रोजेक्ट के दो को—डायरेक्टर, एक ग्रीक और दूसरा अमेरिकी, थेसालोनिकी में रह रहे थे, जो ई—75 टोल रोड से जाने पर करीब पचास किलोमीटर दूर था।

'एलिस, हमने मकबरे का प्रवेश द्वार ढूंढ़ निकाला है!' उसकी आवाज में रोमांच दूर से ही महसूस किया जा सकता था। 'चलो, जल्दी करो!' उसके मुंह से ये शब्द निकले भर थे और उसके कदम उस रास्ते की तरफ मुड़ चुके थे जो गहराई में बने सुरंग की तरफ ले जाता था।

ब्वॉयफ्रेंड को लेकर सारी चिंताएं उसके दिमाग से छूमंतर हो गईं, एलिस ने अपना बैकपैक ठीक किया और छात्र के पीछे चल पड़ी। उसकी सोच उस पल की तरफ मुड़ गई जब 18 महीने पहले उसे इस टीम के साथ जुड़ने के लिए बुलाया गया था।

यह विडंबना थी कि वो अपने ब्वॉयफ्रेंड से तुरंत ही मिली थी जब यह बुलावा आया। वो उस वक्त एक ऐसी घटना से जूझ रही थी जिसके बारे में अब वो कभी बात नहीं करती थी। उस वक्त वो इसे खुद से दूर करने के लिए संघर्ष कर रही थी और वो इसे सदियों पुराने रहस्य की तरह अपने दिमाग के किसी कोने में गहरे दबा देने में कामयाब हो गई थी। उस वक्त ब्वॉयफ्रेंड उसका बड़ा सहारा था और वो इस चीज के लिए उसकी शुक्रगुजार थी। एकाध महीने तक एक दूसरे से मिलने—जुलने के बाद वो उसके साथ रहने लगी थी——जब तक कि उसे इस खुदाई के काम के लिए नहीं बुलाया गया। और आज, जब वो प्राचीन ग्रीस के बड़े रहस्यों में से एक को उजागर करने वाली है, ऐसा लगता है कि अब वो उसके साथ नहीं है।

जब वो मकबरे की तरफ छात्र के पीछे—पीछे जा रही थी, उसे अरबपति परोपकारी कुर्त वॉलेस के साथ अपनी मुलाकात याद आई। वॉलेस अपने वॉलेस आर्कियालॉजिकल ट्रस्ट, जो पुरातत्व विज्ञान और प्राचीन सभ्यताओं के अध्ययन को समर्पित संगठन था, के जरिए इस खुदाई का सारा खर्च उठा रहा था। "फॉरगॉटेन रूट्स" अभियान के पीछे भी उसका हाथ था, जो उनकी लिखी पांच किताबों पर आधारित काउंटर इवॉल्यूशन अभियान था। इन किताबों का समान विषय यह अवधारणा थी कि मानवजाति अपनी जड़ों को भूल चुकी है और क्रमिक विकास के सिद्धांत पर आधारित एक गलत परिकल्पना की ओर मुड़ गई है, जबकि मानवजाति का सच्चा स्रोत विश्व भर की संस्कृति के प्राचीन मिथकों में कहीं गहरा छिपा है।

एलिस ने वॉलेस के बारे में सुना और पढ़ा था लेकिन कभी भी इस पर विचार नहीं किया था कि उसके और उसके सिद्धांतों के बारे में वो क्या सोचती है। लेकिन वो उस व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता और उसके कुलीन और सभ्य व्यवहार की कायल हो गई थी। और हां, एलिस पर उसकी हवेली के साज—श्रृंगार का भी असर पड़ा था जहां उसे मिलने के लिए बुलाया

गया था।

मुलाकात ठीक दस मिनट चली थी और वॉलेस ने बातचीत की शुरुआत सीधे मुद्दे से की थी।

'मैं टीम में तुम्हें खास तौर पर सिकंदर महान के दौर और उसकी मौत के पहले और बाद के वर्षों के बारे में तुम्हारी विशेषज्ञता की वजह से चाहता था,' अभिवादन की औपचारिकता और जलपान के बारे में पूछने के बाद उसने यहां से शुरुआत की।

इन्हीं शुरुआती शब्दों ने उसकी उत्सुकता जगा दी और उसने अपने अध्ययन कक्ष की खिड़की के पास खड़े लंबे कद के वॉलेस की तरफ देखा——शानदार सूट, रेशमी टाई, रौबदार चेहरे और कुछ काले—कुछ सफेद बालों के साथ एक कुलीन पुरुष की छवि उसके सामने थी।

वॉलेस उसकी तरफ देखकर मुस्कुराया, वो जानता था कि तीर निशाने पर लगा है। 'ट्रस्ट की मेरी रिसर्च टीम ने प्राचीन ग्रीस के बड़े रहस्यों में एक का सुराग ढूंढ़ निकाला है। और इसका संबंध और किसी से नहीं, सिकंदर महान से है।'

वो इस मिशन के तरीकों और मकसद और टीम की बनावट के बारे में पूरी बात बताता चला गया। और जब तक उसने अपनी बात खत्म की, एलिस को इस प्रोजेक्ट से जुड़ने के लिए भुगतान किया जा चुका था।

'यहां ध्यान से आना,' छात्र की आवाज ने एक बार फिर उसके विचारों को भंग कर दिया। 'यहां से सुरंग की छत नीची है।' वो शाफ्ट से नीचे उतर गए थे और अब सुरंग में चल रहे थे, उस रोशनी की ओर जो पोर्टेबल लैंप से आ रही थी और जैसे—जैसे वो आगे बढ़ रहे थे, रोशनी बढ़ती जा रही थी।

छात्र के टॉर्च की रोशनी में वो जितनी तेजी से चल सकते थे, वो सुरंग में चल रहे थे और आखिरकार वो चिकने पत्थर की दीवारों वाले एक घनाकार कमरे में पहुंचे।

दो पोर्टेबल एलईडी पोल लाइट तिरछे कोने में एक दूसरे के सामने लगे थे और उस छोटी सी जगह में उजाला कर रहे थे।

'शुक्रिया मार्को।' एलिस ने मुस्कुराते हुए छात्र को कहा, जिसने अब अपनी फ्लैशलाइट बंद कर दी थी।

'खजाने का प्रवेश द्वार है ये', टीम के दूसरे पुरातत्वविद डैमन ने मकबरे के प्रवेश द्वार की तरफ इशारा करते हुए कहा, जिसे उन्होंने पिछले बारह महीनों तक कड़ी मेहनत की खुदाई में निकाला था। थुलथुले शरीर का डैमन अपनी उम्र के पांचवे दशक में था।

एलिस ने कमरे में डिब्बों के ढेर को देखा। ये गद्देदार डिब्बे थे जिनका इस्तेमाल खुदाई की जगह से निकली प्राचीन कलाकृतियों को जमा करने और उन्हें प्रयोगशालाओं तक सुरक्षित पहुंचाने के लिए होता था, ताकि उनकी जांच अच्छी तरह से की जा सके। 'क्या हम यहां से कुछ चीजें ले जा रहे हैं?' वो थोड़ा सा चौंक गई थी। यह पुरातत्व की मानक प्रक्रिया

के विरुद्ध था, जिसमें हर कलाकृति को खुदाई की जगह से हटाने के पहले उसकी तस्वीरें ली जाती हैं, उस पर निशान लगाया जाता है और उसका ब्यौरेवार मूल्यांकन किया जाता है।

'मुख्यालय के आदेश हैं, हमारे डायरेक्टरों ने मुझे खास निर्देश दिए हैं कि जो भी कलाकृति हट सकती है, उसे यहां से हटाकर बाहर सुरक्षित रखा जाए।' डैमन ने उसकी तरफ जिज्ञासा से देखते हुए जवाब दिया। 'तुम कहां थीं?'

एलिस अपने जज्बातों पर काबू पाने की कोशिश करते हुए बोली, 'मैंने गौर किया कि तुमने और सभी लोगों को दूर भेज दिया है।' शाफ्ट में घुसते वक्त वो एक दूसरे रास्ते की तरफ जाते दूसरे छात्र और मजदूरों को पीछे छोड़ आए थे और उसने महसूस किया था कि डैमन मकबरे को सबसे पहले खुद देखने की तैयारी कर रहा है।

'मैंने उन्हें दूर भेज दिया,' उसने एलिस को मुस्कुराते हुए जवाब दिया। 'मैंने सोचा कि इस मकबरे को खोलने का विशेष अधिकार हम दोनों को मिलना चाहिए।' उसने छात्र की तरफ देखते हुए कहा, 'हां, मार्को ने भी हमारी मदद की है, खुशकिस्मत है ये।' उसने मार्को को देखकर आंख मारी, जो जवाब में मुस्कुरा दिया।

एलिस की भौंहें तन गईं। 'यहां कोई दरवाजा नहीं है। सभी यूनानी मकबरों में दरवाजे होते हैं।'

डैमन ने कहा, 'हम ढूंढेंगे ना?' उसका चेहरा उसकी चिंता को छिपाने की कोशिश कर रहा था। क्या उन्होंने इतने महीनों तक इतनी कड़ी मेहनत इसलिए की है कि अंत में निराशा हाथ लगे?

एलिस ने गहरी सांस ली। यही सच था। उसने डैमन की तरफ देखकर सिर हिलाया जिसने मार्को को इशारा किया। छात्र ने एक पोल लाइट उतारी और उसे लेकर मकबरे में खुलने वाले रास्ते की तरफ चल दिया। जब एलिस और डैमन मकबरे में घुसे, डैमन दूसरा लैंप लेने के लिए बाहर आया और उसकी आंखें उत्तेजना से चमक रही थीं।

'यहां दो कमरे हैं,' डैमन फुसफुसाया। 'ठीक उसी तरह जैसे मकदूनिया के मकबरों में होते हैं। बैरल वॉल्ट डिजाइन वाले। यह तो यूनानी ही है।'

एलिस ने खुद को एक छोटे कमरे में खड़ा पाया, जिसकी दीवारों पर रंगीन कपड़े पहने एक महिला के भित्ति चित्र थे, जो सेना का नेतृत्व कर रही थी, पुरुषों को निर्देश दे रही थी और उसकी भाव—भंगिमा एक नेता की तरह थी।

एलिस ने डैमन की तरफ देखा जिसके चेहरे पर रोमांच के भाव थे। वो जैसा सोच रहे थे, वो सही निकला।

डैमन गहरी सांस लेते हुए बोला, 'एक रानी का मकबरा, अब दुनिया के सामने उसकी आरामगाह आएगी।'

एलिस पहले कमरे के दरवाजे से होते हुए कब्र के अंदर वाले कमरे में पहुंची, डैमन भी उसके पीछे था।

कमरे में घुसते ही उसकी सांसें तेज हो गईं। वो तैयार थी कि उसे ताबूत, मानव अवशेष रखने वाला संदूक, या ज्यादा से ज्यादा एक ममी देखने को मिलेगी। लेकिन उसकी आंखों ने जो दृश्य देखा, उससे उसके रोंगटे खड़े हो गए।

2

आर.के. पुरम, नई दिल्ली

भारतीय खुफिया ब्यूरो में स्पेशल डायरेक्टर इमरान किदवई घर लौटते वक्त आज के दिन की घटनाओं के बारे में सोच रहा था।

छह महीने पहले, जब जी20 देशों को मिली आतंकवादी धमकियों और महाभारत के एक प्राचीन रहस्य की खोज से हुई हलचल शांत हुई, अमेरिका और भारत की सरकारों ने एक ज्वाइंट टास्क फोर्स बनाने का फैसला किया, जो तकनीक आधारित आतंकवाद की निगरानी और जांच का काम करेगा। इस आइडिया की नींव एक संदेहास्पद वैश्विक समूह के उस प्रयास के बाद पड़ी, जिसका मकसद आतंकवादियों की मदद से और महाभारत के रहस्य पर आधारित आधुनिक तकनीक के इस्तेमाल के जरिए दुनिया पर राजनीतिक और आर्थिक दबदबा कायम करने का था। यह साजिश तो नाकाम हो गई थी लेकिन दुश्मन का वजूद अभी भी बना हुआ था। और इस पूरे घटनाक्रम से यह तो साफ हो गया था कि ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो अपने मकसद को हासिल करने के लिए टेक्नोलॉजी के इस्तेमाल से भी नहीं हिचकेंगे।

इमरान को टास्क फोर्स का आइडिया पसंद आया था जिसे राजनीतिक समर्थन तो था ही, साथ ही तकनीक आधारित आतंकवादी घटनाओं की पहचान करने का अधिकार और दायित्व भी था। लेकिन इमरान आज पहली बार ही टास्क फोर्स के अगुवा से मिला था। और उसने जो देखा, वो उसे पसंद नहीं आया। उसके लिए इससे भी बुरी स्थिति यह थी कि शुरुआत में इसका समर्थन करने के बाद उसके पास इस टास्क फोर्स से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं था। यह उसके लिए मुश्किल की घड़ी थी।

उसके ब्लैकबेरी पर आए ईमेल अलर्ट ने उसके विचारों को भंग किया। आज रात नहीं। आमतौर पर वो ऑफिस के घंटों के बाद आए ईमेल खुशी—खुशी पढ़ता था। इसका मतलब होता था कि कोई दिक्कत है जिसे दूर किया जाना है। और इमरान अगर समस्या सुलझाने वाला नहीं होता तो कुछ नहीं होता। ज्यादातर मिथुन राशि वालों की तरह उसे भी किसी नए संकट का नया पहलू सबसे ज्यादा पसंद था। इससे उसे रोजाना वाले कामों से कुछ अलग करने का मौका मिलता था। उसने अपना ईमेल इनबॉक्स देखा, और जो दिखा, उसने उसे उठकर बैठने को मजबूर कर दिया। ये ईमेल एक भूत की तरफ से आया था।

एक रानी की कब्र

डैमन और एलिस जैसे ही अंदरूनी कमरे में घुसे, बाहरी कमरे में रखे लैंप की रोशनी, जो दरवाजे से छनकर आ रही थी, में उन्हें एक डरावना दृश्य दिखा।

कमरे के बीचों—बीच एक पत्थर का ताबूत रखा था, सादा और बिना किसी साज—सज्जा के। कमरे में और कोई दूसरा सामान नहीं था। लेकिन कमरे का खालीपन या ताबूत की सादगी वो चीजें नहीं थीं, जिन पर ध्यान जाता था।

कमरे के दरवाजे के ठीक सामने की दीवार पर पत्थर का एक विशाल सांप बना था, जो मानो कब्र के फर्श से निकलकर बाहर आ रहा था। सांप का घुमावदार शरीर फर्श से शुरू होकर दीवार की पूरी लंबाई को घेरते हुए कमरे की छत तक पहुंच रहा था, जहां वो पांच सिर वाले विशालकाय फण में बदल गया था, और ये फण दीवार से करीब तीन फीट आगे की ओर और फर्श पर रखे पत्थर के ताबूत के ठीक ऊपर उभरा हुआ था। इसके विशालकाय जबड़े खुले हुए थे और विषैले दांत सामने दिख रहे थे, जैसे वो सांप अवांछनीय घुसपैठ पर नाराजगी व्यक्त कर रहा हो।

बिल्कुल ताबूत की सुरक्षा छतरी की तरह। एलिस के दिमाग में पहला विचार यही कौंधा। वैसी सुरक्षा जो इस रानी को जीवित रहते मिलती थी, वो मौत के बाद भी मिल रही है।

इस अद्भुत दृश्य को कमरे की बाकी दीवारों पर की गई नक्काशी और भी बढ़ावा दे रही थी। दीवारों पर कुंडली मारकर बैठे, फुफकारते हुए और फैलकर बैठे हुए सांपों की नक्काशी को उभारा गया था। हल्की रोशनी में वो ऐसे दिख रहे थे, मानो अभी दीवार से निकलकर कूद पड़ेंगे।

मार्को दोनों पोल लाइट्स के साथ डगमगाता हुआ सा पहुंचा और कब्र की विचित्र सजावट को देखकर एकाएक थम गया।

‘ये क्या चीज है?’ डरे हुए से स्वर में वो फुसफुसाया।

एलिस ने अपने दोनों साथियों को रोमांचित नजरों से देखा। ‘यह उसकी कब्र है।’ उसकी आवाज में किसी चीज को ढूंढ़ने के रोमांच की कंपन साफ महसूस की जा सकती थी। पिछले बारह महीनों से वो अपना यह अनुमान सही साबित हो जाने की उम्मीद कर रहे थे कि यह कब्र किसकी है। अब तो किसी शक की कोई गुंजाइश ही नहीं थी।

‘आप सब इसे देखना चाहोगे।’ मार्को कमरे में चारों ओर घूमता हुआ नक्काशियों को ध्यान से देख रहा था। कमरा अच्छा खासा बड़ा था, कम से कम पचास फीट लंबा। मार्को अब कमरे के दूसरे कोने में प्रवेश द्वार के सामने खड़ा था, ठीक विशालकाय सांप की कुंडली के नीचे, जो उनके ऊपर खड़ा था।

एलिस और डैमन तेजी से ये देखने पहुंचे कि उसने क्या खोज निकाला है। सांप की

विशाल आकृति के पीछे एक छिपा हुआ दरवाजा सा था। उन दोनों ने एक दूसरे की तरफ देखा। क्या यहां एक तीसरा कमरा है? यूनानी कब्र के लिए यह एक अनोखी बात थी।

मार्को को कुछ बताने की जरूरत नहीं थी। वो पहले से ही एक लैंप की मदद से छिपे हुए दरवाजे के रास्ते में उजाला कर रहा था, जिस रोशनी में एक छोटा कमरा दिखा। इसमें आलमारियों की दो कतारें दिख रही थीं, जिनमें अलग—अलग आकार की पत्थर की मूर्तियां और तख्ते लगे थे।

एलिस और डैमन उन आलमारियों में रखी चीजों को देखने के लिए आगे बढ़े।

'उसे जरूर सांपों के प्रति आकर्षण था,' डैमन ने एक पांच इंच ऊंची मूर्ति को ध्यान से देखते हुए कहा। यह मूर्ति पत्थर से तराशी गई थी और इसमें एक खूबसूरत युवती को दिखाया गया था, जिसे उसके सिर से पैर तक एक विशाल सांप ने अपनी कुंडली में लपेट रखा है।

एलिस ने सहमति में सिर हिलाया। 'कहा जाता है कि सिकंदर तृतीय का पिता एक सांप था। मुझे लगता है कि रानी के सांपों के प्रति आकर्षण की कहानियां सच रही होंगी।'

'यह आश्चर्यजनक है,' डैमन ने एक चौकोर टैबलेट के अभिलेख पढ़ते हुए कहा, जो करीब दस इंच लंबा था। 'इसमें लिखी बातों से हमें कई चीजें पता चल सकती हैं कि आखिर सिकंदर महान की मौत के बाद वास्तव में क्या हुआ था।'

एलिस ने भी आलमारियों में रखे टैबलेट और मूर्तियों को ध्यान से देखते हुए सहमति प्रकट की।

डैमन ने अपनी घड़ी देखी। 'हमें हेडक्वार्टर को जानकारी देनी चाहिए। वो हमारा इंतजार कर रहे हैं। वो इन चीजों को देखने के लिए इसी वक्त आना चाहेंगे।'

'हां, क्यों ना तुम होटल चले जाओ और उनका इंतजार करो? मैं तब तक कब्र की फोटोग्राफी खत्म कर लूंगी।' एलिस अपने बैग से कैमरा निकालने लगी। 'मैं इन कलाकृतियों को टैग कर उन्हें डिब्बों में पैक भी कर दूंगी।'

डैमन ने मुस्कुराते हुए उसकी तरफ देखा और धन्यवाद देते हुए कहा, 'मैं तुम्हारी मदद के लिए मार्को को वापस भेज दूंगा।' यह कहकर वो मार्को के साथ वहां से चल दिया।

एलिस ने चारों तरफ देखा और एक गहरी सांस ली। एक पुरातत्वविद के रूप में यह उसके करियर का सबसे अच्छा समय था। वो कमरे के, ताबूत के और भित्ति चित्रों के फोटोग्राफ लेने में व्यस्त हो गई।

इससे निपटने के बाद उसने छिपे हुए कमरे की कलाकृतियों की तरफ ध्यान दिया। उसने सावधानीपूर्वक हर कलाकृति के फोटोग्राफ लिए और फिर उन्हें गद्देदार डब्बों में पैक करने लगी।

'अरे, यह क्या है?' अंतिम कलाकृति को उठाते हुए वो खुद से बोली। यह कलाकृति

पीले रंग का एक घनाकार टुकड़ा था जिसकी पांच भुजाओं पर अभिलेख लिखे थे। यह अब तक दूसरी मूर्तियों और टैबलेट के पीछे छिपा था। पहले उसने सोचा कि यह पुरानी हड्डी से बना होगा, जिसका रंग सैकड़ों सालों में पीला पड़ गया है। लेकिन जब उसने इसे अपने हाथों में लिया और लैंप की रोशनी में ध्यान से देखा तो उसे समझ आया कि यह तो हाथीदांत से बनाया गया है। हाथीदांत के विशिष्ट लहरदार डिजाइन को लैंप की तेज रोशनी में साफ देखा जा सकता था।

'दो हजार चार सौ साल पहले मकदूनिया में हाथीदांत?' वो खुद से फुसफुसाते हुए बोली। 'ये तो अजीब है। इन इलाकों में तो हाथी होते नहीं थे।'

'तुमने अपना काम कर लिया?'

एलिस जैसे कूद पड़ी और घनाकार कलाकृति उसके हाथ से गिरते—गिरते बची। वो घूमी तो उसने मार्को को अपनी तरफ मुस्कुराते हुए पाया।

'तुमने मुझे चौंका दिया था,' उसने हल्के शिकायती लहजे में कहा। 'अंधेरी पुरानी कब्र में किसी अकेले इंसान के साथ ऐसा नहीं किया जाता।'

'मुझे माफ करना,' मार्को फिर से मुस्कुराते हुए बोला। उसकी आवाज उसके रोमांच को बयान कर रही थी। ऐसी खोज का हिस्सा बनने का मौका किसी छात्र को कभी—कभार ही मिलता है। 'तुम खुद से बातें कर रही थीं इसलिए मैं खुद को रोक नहीं पाया। डैमन ने हेडक्वार्टर में बात कर ली है। वो रास्ते में हैं। हां, डैमन ने कहा है कि तुम घनाकार टुकड़े को अपने साथ ले आओ। डायरेक्टर इसे देखना चाहते हैं।' उसने हाथीदांत के उस घनाकार टुकड़े की तरफ इशारा करते हुए कहा जिसे एलिस ने अभी भी हाथ में ले रखा था।

'बिलकुल, मुझे बस इसकी फोटोग्राफ लेनी है और टैग करना है।' उसने घनाकार कलाकृति की सभी भुजाओं की तस्वीरें लीं, फिर उसे दूसरी कलाकृतियों की तरह डिब्बे में पैक किया और उसे कैमरे के साथ अपने बैकपैक में रख लिया।

'बढ़िया, मेरा काम तो हो गया। अब हम इन्हें डिग हट ले चलते हैं।' एलिस कब्र से बाहर निकलने लगी। उन दोनों ने साथ मिलकर कलाकृतियों वाले डिब्बों को डिग हट में पहुंचा दिया और उन्हें सावधानी से बीचोंबीच रखी एक मेज पर रख दिया। एलिस जानती थी कि दोनों डायरेक्टर इन्हें जल्द से जल्द देखना चाहेंगे, क्योंकि उन्होंने ही खासतौर पर इन्हें कब्र से हटाने के लिए कहा था।

'हो गया।' मार्को ने सफेद दस्ताने उतारते हुए प्रश्नवाचक नजर से एलिस की तरफ देखा।

एलिस ने सहमति में सिर हिलाते हुए कहा, 'चलो चलें।' उन्होंने डिग हट के दरवाजे पर ताला लगा दिया। इस जगह पर दो गार्ड तैनात थे और यह जगह आबादी से मीलों दूर थी, इसलिए इस बात की आशंका काफी कम थी कि कोई इन कलाकृतियों को चुराएगा। लेकिन यह सहस्राब्दी की खोज थी इसलिए इस बारे में कोई जोखिम उठाने की जरूरत नहीं थी।

होटल वापस जाकर, जो गांव के बंगलों से कुछ ही बेहतर था, एलिस अपने कमरे की तरफ बढ़ गई जबकि मार्को ने कार लगाई और डैमन को ढूंढ़ने चला गया। 'मैं तुम लोगों से पांच मिनट में मिलती हूं।' उसने मार्को को कहा। वो जानती थी कि वो सिर्फ एक ऐसी चीज को टालने की कोशिश कर रही है जो अपरिहार्य है। पूरी खुदाई के दौरान, वो जहां तक मुमकिन हो सका, दोनों डायरेक्टरों से मिलने—जुलने से बचती रही। उनसे बात करने, ताजा हाल बताने और जरूरत पड़ने पर उनसे निर्देश लेने का काम उसने डैमन पर छोड़ रखा था। लेकिन आज रात तो कोई चारा नहीं था। उसे मिशन के दोनों को—डायरेक्टरों, स्तावरोस और पीटर, के साथ कब्र पर जाना होगा। उसे दोनों ही कुछ खास पसंद नहीं थे और वो ये भी जानती थी कि ऐसी ही भावना वो दोनों भी उसके प्रति रखते हैं। लेकिन इस मिशन के प्रमुख पुरातत्वविदों में से एक होने के नाते आज रात उसे उन दोनों से तो मिलना ही होगा। और उस काल अवधि की विशेषज्ञ होने के नाते, जिसमें यह कब्र बनाई गई थी, वो जानती थी कि दोनों डायरेक्टर कब्र में खोजी गई अनोखी चीजों पर उसके विचार भी जानना चाहेंगे।

जब वो इन सब बातों पर विचार कर रही थी, तभी हेलीकॉप्टर की कर्कश आवाज ने रात की शांति भंग कर दी। एक हेलीकॉप्टर काफी कम ऊंचाई से गुजर रहा था। उसकी आवाज थोड़ी देर तक आती रही और फिर अचानक बंद हो गई, जैसे वो पास ही कहीं उतरा हो।

एलिस का ध्यान अभी भी उस अप्रिय काम पर था जो आगे आने वाला था। एक ठंडी सांस लेकर उसने अपना लैपटॉप और कैमरा निकाला और कमरे में मेज पर रख दिया। उसने अपना मोबाइल फोन और कैमरे के मेमोरी स्टिक को अपनी जेब में रखा और डैमन के विला की तरफ जाने के लिए उठी।

उसने दरवाजे के दस्ते पर हाथ रखा ही था कि उस खिड़की से एक तेज आहट आई जिससे बगीचा दिखाई देता था। इस खिड़की में छड़ें नहीं लगी थीं, साथ ही इसके पर्दे भी हटे हुए थे इसलिए उसे खिड़की के कांच से सटा मार्को का डरा हुआ चेहरा साफ दिखाई दे सकता था। उसका चेहरा डर से सफेद पड़ चुका था, जैसे उसके चेहरे से पूरा खून निचोड़ लिया गया हो। उसने फिर से खिड़की थपथपाई, इस बात का इशारा करते हुए कि एलिस खिड़की खोल दे।

एलिस वापस लौटी और मार्को को खिड़की से अंदर आने दिया। 'क्या...' उसने मार्को के डर की वजह जानने के लिए मुंह खोला ही था कि मार्को फूट—फूटकर रोने लगा।

3

आसमान से गिरे....

'उन्होंने डैमन को मार डाला,' मार्को बिलखता हुआ बोला, वो फर्श पर गिर गया। 'पीटर ने उसे गोली मार दी। बस यूं ही।'

एलिस कुछ पल के लिए समझ नहीं पाई कि मार्को क्या कह रहा है। वो क्या बड़बड़ा रहा है? उसकी बात का कोई मतलब नहीं निकल रहा था। पीटर डैमन को गोली क्यों मारेगा?

वो घुटनों के बल मार्को के पास बैठी और उसके कंधे पर अपना हाथ रखकर आश्वस्त करने की कोशिश की। 'मुझे बताओ क्या हुआ,' उसने धीरे से पूछा। 'मुझे यकीन है कि यह सब कोई गलतफहमी है।'

'मैंने अपनी आंखों से यह देखा है!' मार्को ऊंची आवाज में रोते हुए बोला। 'स्तावरोस डैमन पर चिल्ला रहा था। वो डैमन से इस बात से नाराज था कि उसने तुम्हें कब्र में अकेला छोड़ दिया और कलाकृतियों की तस्वीर लेने दी। उसका कहना था कि डैमन को वो घनाकार कलाकृति उन्हें दिखाने के लिए लानी चाहिए थी।' उसकी आंखों से आंसुओं की एक धार और बह उठी और उसका गला भर आया।

एलिस ने धैर्य के साथ ये सब सुना और मार्को को टिश्यू बॉक्स दिया। अचानक उसे महसूस हुआ कि वो सपने में है। एक बहुत ही बुरे सपने में। उसने सोचा कि कोई उसे जल्दी से इस नींद से जगा दे।

मार्को ने अपनी नाक साफ की और फिर बोलने लगा। 'तभी पीटर ने बंदूक निकाल ली। उसने डैमन को कहा कि वो एक बोझ है क्योंकि उसने आदेश नहीं माने।' वो थोड़ी देर के लिए रुका और डैमन के विला की खुली खिड़की से दिखे दृश्य को याद किया। 'डैमन डरा हुआ था। उसने पीटर से गिड़गिड़ाते हुए एक और मौके की मांग की। वो रो रहा था। लेकिन पीटर ने उसकी एक नहीं सुनी। उसने उसे गोली मार दी।'

एलिस को उसके विला की तरफ कुछ लोगों के दौड़कर आने की आवाज सुनाई दी और वो उठ गई। क्या ये स्तावरोस और पीटर हैं? अचानक उसे अपने हालात का अंदाजा जाड़े में कंपकंपाने वाली ठंडी बारिश की तरह हुआ और वो हरकत में आ गई।

वो दौड़कर दरवाजे की तरफ पहुंची और उसे अच्छे से बंद कर दिया। इससे उन्हें कुछ

समय तो मिल ही जाएगा। अगर डैमन मारा जा चुका है तो इस बात में कोई संदेह नहीं है कि उसका और मार्को का क्या होगा।

उसने मार्को को कहा, 'हमें यहां से बाहर निकलना होगा, चलो।'

उसने अपना बैकपैक लादा और खिड़की के रास्ते जैसे ही बाहर निकली, किसी ने दरवाजा खोलने की कोशिश की।

'यह बंद है!' पीटर की आवाज आई।

'तोड़ दो इसे!' स्तावरोस ने जवाब दिया।

दरवाजे पर जोर से धक्का देने की आवाज उन्हें सुनाई देने लगी। दरवाजे की कुंडी इस धक्के से थोड़ी हिली तो जरूर लेकिन खुली नहीं।

एलिस ने दरवाजे की तरफ देखा और फिर मार्को की तरफ, जो अपनी जगह पर जम सा गया था। मार्को दरवाजे को उसी तरह देख रहा था, जैसे जंगल के रास्ते पर किसी कार की हेडलाइट की रोशनी में फंस गया हिरण देखता है। एलिस जानती थी कि अब किसी भी वक्त वो लोग दरवाजा तोड़कर अंदर आ सकते हैं।

उसने फुसफुसाते हुए मार्को को आवाज दी, 'मार्को!' अगर पीटर ये जानता है कि उसे अब तक की घटनाओं के बारे में पता है, तो वो अंदाजा लगा लेंगे कि वो भागने की कोशिश करेगी और इसलिए वो उसे रोकने में लग जाएंगे। 'जल्दी यहां से निकलो!'

उसकी आवाज ने मार्को को जैसे नींद से जगा दिया। वो उठ खड़ा हुआ और लड़खड़ाते हुए खिड़की तक पहुंचा। वो खिड़की के रास्ते निकलकर लॉन तक पहुंचा भर था कि दरवाजे की कुंडी ने जवाब दे दिया और पीटर तेजी से कमरे में घुसा।

'लॉन में हैं वो!' पीटर खिड़की की तरफ भागते हुए चीखा।

एलिस ये नहीं देखना चाहती थी कि उसके पीछे क्या हो रहा है, बल्कि उसने मार्को का हाथ पकड़ा और दौड़कर विला से दूर जाने लगी। उसे यह नहीं मालूम था कि दोनों को—डायरेक्टरों के साथ और कोई है या नहीं, लेकिन उसका अंदाजा था कि वो अकेले नहीं आए होंगे।

दो हल्की आवाजें आईं और उनके कान के पास से गोलियां गुजरीं।

एलिस ने महसूस किया कि कोई उन पर गोलियां चला रहा है और बंदूक में साइलेंसर लगा है।

वो दौड़ती हुई लॉन को पार करते हुए लैंड क्रूजर के पास पहुंची, और उसने मार्को का हाथ लगातार पकड़ रखा था। दौड़ते—दौड़ते उसे महसूस हुआ कि अचानक मार्को भारी हो गया है। अभी तो वो उसे आगे खींच रही थी कि अचानक वो अचल सामान बन गया, जैसे पत्थर में जम गया हो।

एलिस ने पीछे मुड़कर मार्को को देखा जब वो जमीन पर गिर गया। उसका चेहरा पूरी

तरह लाल हो चुका था और उसके बाल खून में भीगे हुए थे। गोलियों ने उसे अपना निशाना बना लिया था।

एक पल के लिए वो हिचकिचाई और उसकी आंखों में आंसू भर आए। वो खुद की हिफाजत और सामने होती हुई त्रासदी के बीच फंस सी गई थी। एक नौजवान लड़के की जिंदगी को निर्दयता से कुचल डाला गया था। और पता नहीं किस चीज के लिए?

तभी गोलियों की और आवाजें आईं और जैसे उसकी तंद्रा भंग हो गई। अनिच्छापूर्वक उसने मार्को का हाथ छोड़ा और तेजी से ड्राइवर सीट पर धंस गई।

कार में चाभी लगी हुई थी। मार्को ने इसे इस उम्मीद में रख छोड़ा होगा कि उसे को—डायरेक्टरों को कब्र की जगह पर ले जाना होगा। पहले तो इंजन स्टार्ट नहीं हुआ, लेकिन जब एलिस ने एक्सलेटर दबाया तो कार तेजी से चल पड़ी। एलिस ने उसे कब्र की तरफ जाने वाले धूल भरे रास्ते की तरफ ले लिया। उसे अपने पीछे से चीखने—चिल्लाने की आवाज सुनाई पड़ी। गोलियां फिर दागी गईं और धमाके की आवाज के साथ लैंड क्रूजर में धंस गईं। उसने एक्सलेटर को पूरा दबा दिया। उसे कब्र तक पहुंचना था। वहां दो सशस्त्र गार्ड थे जो उसे इस पागलपन से बचा सकते थे जो अचानक ही सब पर हावी हो गया था।

उसे खुदाई वाली जगह पर पहुंचने में ज्यादा वक्त नहीं लगा। एलिस यह देखकर चौंक गई कि यहां अंधेरा था और हर तरफ खामोशी थी। इस जगह पर उजाले के लिए लगे फ्लडलाइट बंद थे और ना ही जेनरेटर की आवाज आ रही थी।

गार्ड कहां गए?

वो गाड़ी से कूदी और ऊंची—नीची जमीन पर लड़खड़ाते हुए चलने लगी। वैसे तो उसे रास्ता मालूम था लेकिन वो अंधेरा होने के बाद यहां कभी नहीं आई थी, और यहां तो उसे सिर्फ तारों की रोशनी का सहारा था।

तभी अचानक उसे जमीन पर किसी भारी चीज की ठोकर लगी और वो किसी तरह गिरते—गिरते बची।

वो ये महसूस कर चौंक गई कि ये तो गियोर्डी है, वहां तैनात गार्ड्स में से एक। उसने झुककर उसकी जांच की लेकिन उसकी धड़कन रुक चुकी थी, वो मर चुका था।

वो सावधानी से खड़ी हो गई लेकिन उसे एक दुविधा ने घेर लिया। एक तरफ वो जानना चाहती थी कि यहां हो क्या रहा है, और दूसरी तरफ उसका विवेक कह रहा था कि यहां से भागो।

उसके दिमाग में ये सारी बातें दौड़ ही रही थीं कि तभी उसे जमीन के नीचे बने कब्र की तरफ ले जाने वाले शाफ्ट से एक गहरी परछाई बाहर निकलती दिखी।

एलिस डर से जम गई। और तभी उसे हेलीकॉप्टर दिखा, जिसकी बड़ी सी परछाई एक तरफ पड़ रही थी।

उसके दिमाग में एक के बाद एक परेशान करने वाले ढेरों विचार आ रहे थे, जिनमें से एक बिल्कुल साफ था। वो फंस चुकी थी।

4

मदद की पुकार

अनवर!

इमरान ने उस ईमेल को देखा जो उसे अभी तुरंत मिला था, उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हो रहा था।

अनवर और इमरान मेरठ में साथ—साथ पले—बढ़े थे। बाद में अनवर के माता—पिता की मौत के बाद वो अपने चाचा के साथ लखनऊ चला गया था। ये सालों पहले की बात है लेकिन दोनों लड़के एक—दूसरे के साथ संपर्क में रहे। इमरान ने जहां आईपीएस ज्वॉइन कर लिया, वहीं अनवर ने लखनऊ में अपना एक छोटा बिजनेस शुरू कर लिया जो काफी अच्छा चल रहा था। लेकिन दोनों अच्छे दोस्त बने रहे।

करीब पांच साल पहले अनवर जैसे अचानक गायब हो गया था। और अब, वो अचानक ही सामने आ गया था। अतीत से एक भूत की तरह। इमरान के दिमाग में कई उम्मीदें जाग गईं और उसका मन एक बार फिर से अपने पुराने दोस्त से जुड़ने की सोचकर उल्लसित हो उठा। उसने ईमेल खोला। और जैसे उसे चेहरे पर एक घूंसा सा लगा। इसमें अंग्रेजी के सिर्फ दो शब्द थे——हेल्प अनवर।

...और खजूर में अटके

शाफ्ट से निकली आकृति उसकी ओर बढ़ने लगी और एलिस वहां पत्थर की तरह खड़ी रही। तभी उसने देखा कि वो आकृति एक हाथ अपनी कमर पर ले जा रही है और उसने समझ लिया कि वो कोई हथियार निकाल रही है।

अब ये समझने की कोशिश को एक तरफ रखकर कि वहां हो क्या हो रहा है, एलिस घूमी और कार की तरफ तेजी से दौड़ पड़ी, ड्राइवर का दरवाजा खोला और सीट में धंस गई, तभी रात के सन्नाटे को भंग करती हुई गोलियों की आवाज गूंज पड़ी। बंदूक में साइलेंसर नहीं था। इस जगह कुछ छिपाने की जरूरत भी नहीं थी।

जब तक कार स्टार्ट होती, गोलियां कार की खिड़कियों पर लगीं और उनके कांच बिखर गए।

एक गोली उसके चेहरे के पास से गुजरी और उसकी बगल की पैसेंजर सीट में धंस गई।

जैसे ही एलिस ने कार को रिवर्स गियर में टॉप स्पीड पर डाला, लैंड क्रूजर का ताकतवर इंजन एक गरज के साथ जिंदा हो उठा और टायर पथरीली जमीन पर फिसलते चले गए। फिर उसने कार को फॉरवर्ड गियर में डाला और कब्र से दूर भागने लगी। एक और गोली स्टीरियो सिस्टम में लगी और एलिस डर से कांपती हुई और अपनी घबराहट पर काबू पाने की कोशिश करती हुई स्टीयरिंग व्हील पर नीचे की ओर झुक गई। उसके दिमाग में सिर्फ एक ही बात दौड़ रही थी।

उसे भागना पड़ेगा।

पीछे से उसे हेलीकॉप्टर चालू होने की आवाज सुनाई दी और वो समझ गई कि ये लोग उसे ढूंढ़ लेंगे और मार डालेंगे।

ये लोग कौन थे और ये क्या चाहते थे?

सिसकते हुए और डर से कांपते हुए उसने कार को थेसालोनिकी की तरफ जाने वाले टोल रोड ई75 की तरफ दौड़ा दिया। इस वक्त यही वो इकलौती चीज थी जिस बारे में वो सोच पा रही थी।

और दूसरी चीज जो उसकी सोच में थी, वो थी उसका पीछा कर रहे हेलीकॉप्टर की आवाज। उसने लैंड क्रूजर के स्टीयरिंग व्हील को जोर से दबाया मानो ऐसा करने से गाड़ी और तेज चलने लगेगी।

लेकिन वो जानती थी कि हेलीकॉप्टर उस तक पहुंच जाएगा। इसमें ज्यादा देर नहीं लगेगी।

अनवर की खोज

इमरान ने ड्राइवर को चीखकर कहा, ‘ऑफिस वापस चलो, बीकन चला दो!’

ड्राइवर ने उसका आदेश मानते हुए गाड़ी वापस घुमा ली और बीकन का स्विच ऑन कर दिया। इमरान जानता था कि वो अपने विशेषाधिकार की सीमा से बाहर जा रहा है। ऐसा उसने आज तक कभी नहीं किया था लेकिन इस वक्त उसे इस चीज की परवाह नहीं थी। उसे जो मेसेज मिला था, उससे वो एक चीज पक्के तौर पर जानता था। उसका दोस्त मुसीबत में था।

और इमरान उसकी मदद के लिए वो सब कुछ करने जा रहा था, जो वो कर सकता था।

आईबी हेडक्वॉर्टर की तरफ जाते हुए वो अपने फोन पर कुछ—कुछ आदेश देता जा रहा था। रेड बीकन इस चीज को सुनिश्चित कर रहा था कि ट्रैफिक में उसे रास्ता मिल जाए। ऐसा लग रहा था जैसे ट्रैफिक जाम चमत्कारिक रूप से गायब हो गया है, जैसे नमक के ढेर में बर्फ पिघल जाती है।

ऑफिस पहुंचकर इमरान ने अपनी टीम को बुलाया।

'क्या है हमारे पास?' उसकी आवाज आश्चर्यजनक रूप से शांत थी। उसका गुस्सा कभी भी फूट सकता था, उसके चेहरे पर तसल्ली के भाव दरअसल उसकी घबराहट को छिपाने भर को थे कि वो अपने दोस्त की मदद करने में देर ना कर दे। वो जानता था कि जब अनवर मेसेज टाइप कर रहा था, उसे बाधा पहुंचाई गई होगी ताकि वो ज्यादा जानकारी ना दे पाए।

'हमें आईपी एड्रेस का पता चल गया है,' उसकी टीम के एक सदस्य ने जवाब दिया। 'इसका सर्वर दिल्ली में है। हम उस जगह का अंदाजा लगा चुके हैं,' उसने इमरान को एक नक्शे का प्रिंटआउट दिखाया, जिस पर उस जगह पर लाल निशान लगा था, 'लेकिन सही जगह इसके पचास किलोमीटर के दायरे में हो सकती है।'

इमरान ने उसकी तरफ देखा। 'मुझे बिलकुल सही जगह चाहिए। मैं इस जगह का पता चाहता हूं।'

'सर, आप जानते हैं ना कि इसके लिए अदालत के आदेश की जरूरत होती है। मैं इंटरनेट सर्विस प्रोवाइडर (आईएसपी) को फोन कर सकता हूं...'

'हम अदालत के आदेश का इंतजार नहीं कर सकते,' इमरान ने उसे बीच में ही टोका। हर पल कीमती था। यहां तक कि उन लोगों के पास इस मसले पर चर्चा तक के लिए समय नहीं था। 'हमारे पास आईएसपी को सारी चीजें बताने का समय नहीं है। यह एक आपातकालीन स्थिति है।'

उसके एजेंट ने उसकी तरफ देखते हुए पूछा, 'आप चाहते हैं कि हम आईएसपी के डाटाबेस को हैक कर लें?'

'यही करो। मैं इसकी अनुमति देता हूं।' इमरान ये बात जानता था कि ऐसा करना उसकी ताकत का दुरुपयोग है। लेकिन साथ ही वो ये भी समझ रहा था कि उसका दोस्त गंभीर मुसीबत में है। आज की रात वो जरूरत पड़ने पर हर नियम तोड़ने को तैयार था, हालांकि आईपीएस के अपने लंबे करियर में उसने आज तक ऐसा नहीं किया था।

सभी आदमी एक दूसरे की तरफ हैरानी से देखते हुए तेज चाल से बाहर की ओर चल दिए। इमरान ने अपनी कुर्सी से पीठ टिकाई और एक गहरी सांस छोड़ी। वो सिर्फ यही उम्मीद कर सकता था कि उसके लोग समय रहते चीजों का पता लगा पाएंगे।

5

शिकार

एलिस को धमाके की गरज उस झटके के कुछ सेकेंड बाद सुनाई दी, जिसने तेज रफ्तार में चल रही लैंड क्रूजर को हिला दिया। उसकी कार धूल भरे रास्ते से हटकर डामर की बनी सड़क पर हाइवे की तरफ जा रही थी। एलिस अनायास ही तेजी से चीख उठी।

कार के रियर व्यू मिरर में आंसू भरी आंखों से उसने देखा कि खुदाई वाली जगह के ऊपर एक आग का गोला उभर रहा है। उसे इस पर यकीन नहीं हुआ। उन्होंने कब्र को नष्ट कर दिया! खुशकिस्मती थी कि उसने इस खोज को अपने कैमरे में कैद कर लिया था। उसके पास उसके कैमरे की मेमोरी स्टिक अभी भी रखी थी। उसने खुद को इस बात से सांत्वना दी कि भले ही कब्र को नष्ट करने से इतिहास और पुरातत्व विज्ञान को जो नुकसान हुआ है, उसकी भरपाई नहीं हो सकती, लेकिन उसके पास अभी भी ऐसी चीज है जिसे बचाया जा सकता है।

और तभी उसके दिमाग में ये बात आई कि अगर ये लोग, जो भी हैं, कब्र को उड़ा सकते हैं, तो साफ तौर पर वो इसके अंदर पाई गई किसी भी चीज का कोई निशान नहीं छोड़ना चाहेंगे।

और वो तो कब्र के अंदर हुई खोज की जिंदा सबूत थी। वो लोग तब तक चैन से नहीं बैठेंगे जब तक उसे मार ना दें।

लैंड क्रूजर की छत पर तभी अचानक एक धमाका सा हुआ। हेलीकॉप्टर का पायलट गाड़ी की छत को उसके स्ट्रट से तोड़ रहा था। एलिस अपनी सीट में कूद पड़ी और और फिर से चीखी, शाम को लगा सदमा और इस बात का आभास कि उसे निष्ठुरता से मार गिराया जाएगा, उसके दिलो—दिमाग पर हावी था।

उसने गियर बदला और एक बार फिर एक्सलेटर दबा दिया। आज रात चाहे जो हो जाए, वो इतनी आसानी से हार नहीं मानेगी। वो लोग उसे अंत में भले पकड़ लें, लेकिन वो कायरता से हथियार नहीं डालेगी।

हेलीकॉप्टर के पायलट को यह बात महसूस हो गई और हेलीकॉप्टर तेज रफ्तार में एक झटके से दाएं मुड़ा, एलिस से आगे पहुंचा और गोलाई में घूमते हुए उसकी तरफ नीचे उतरने लगा, जैसे वो एसयूवी की तरफ बढ़ रहा हो।

एलिस अपनी तरफ आते हेलीकॉप्टर को आतंक भरी निगाहों से देखती रही। तुरंत ही वो समझ गई कि पायलट क्या करने की कोशिश कर रहा है। ये तो साफ था कि वो सड़क पर हेलीकॉप्टर उतारने और उसका रास्ता रोकने की योजना बना रहा था, लेकिन वो उसे डराने की कोशिश भी कर रहा था। पायलट उसे बताना चाहता था कि वो हेलीकॉप्टर से एसयूवी को टक्कर मारने जा रहा है।

एलिस खुद को संभालने की कोशिश कर रही थी। इस विचार ने कि कोई उसे बिलकुल असहाय मानकर उसके साथ खिलवाड़ करना चाहता है, उसे संभलने में मदद की।

उसने मजबूती से खुद से कहा, 'ठीक है, दोस्त, इस खेल को दो लोग खेल सकते हैं। तुम रूलेट का खेल खेलना चाहते हो तो यही सही।' उसने गियर बदला, कुछ पलों के लिए गाड़ी की रफ्तार धीमी की और फिर तेज रफ्तार में सीधे हेलीकॉप्टर की तरफ बढ़ चली, जो अब जमीन से कुछ ही मीटर ऊपर था। 'देखते हैं पहले कौन पीछे हटता है।'

कुछ पल के लिए हेलीकॉप्टर और एसयूवी एक दूसरे की तरफ गरजते हुए बढ़ते रहे, जैसे दोनों एक टक्कर के लिए अड़े हों।

तभी पायलट को जैसे कोई बेहतर उपाय सूझा और उसने सड़क पर हेलीकॉप्टर रोक दिया, बिलकुल उसी रास्ते पर जिस पर लैंड क्रूजर आ रहा था। उसने दिमागी चाल चलना छोड़ दिया था और अब वो दिमाग की बजाय शारीरिक ताकत का इस्तेमाल करने की सोच रहा था।

हेलीकॉप्टर के पंखे धीरे—धीरे रुकने लगे और उससे एक आकृति निकली। एलिस ने देखा कि हेलीकॉप्टर में पायलट के साथ कोई नहीं है। वो आदमी एक तरफ खड़ा हो गया, जैसे कोई मकड़ी अपने जाल की तरफ आती किसी मक्खी को देखती है और उसे इस बात का भरोसा रहता है कि मक्खी तो इस रेशमी फंदे में फंसेगी ही।

एलिस ने अपने चारों तरफ देखा ताकि इससे निकलने का कोई रास्ता दिख जाए। वो अपने दिमाग पर हावी घबराहट से भी लड़ रही थी, वहीं भारी—भरकम हेलीकॉप्टर ने ना सिर्फ उसका रास्ता बल्कि उसकी नजरों को भी रोक रखा था। वो ये भी जानती थी कि इस बुरी हालत से निकलने का अगर कोई तरीका है तो वो तब तक नहीं मिलेगा जब तक वो डर को अपने ऊपर हावी होने देगी।

पलकें झपकाते हुए उसने आंसुओं को साफ किया और फिर कोशिश करने लगी कि उसका पूरा ध्यान सामने के दृश्य पर रहे।

तभी उसे एक मौका दिखा, जो भले ही छोटा था लेकिन उसने एलिस की उम्मीदें जगा दीं। वो जानती थी कि परिस्थितियां उसके विपरीत हैं लेकिन उसने तय कर लिया था कि बिना कोशिश किए वो हार नहीं मानेगी।

एलिस ने गाड़ी की रफ्तार धीमी की और फटाफट दिमाग में कुछ हिसाब लगाया। उसे लगा कि यह आइडिया काम कर सकता है।

पायलट ने रफ्तार धीमी करने के उसके कदम को उसके रुकने का संकते समझा और वो एलिस की तरफ बढने लगा।

जौनगढ़ किला, नई दिल्ली (भारत) से 130 किलोमीटर

कोलिन ने शिकायत के लहजे में कहा, 'मैं नहीं कह सकता कि चीजें जैसी हो रही हैं, उनसे मैं खुश हूं।'

विजय के पुश्तैनी किले की बालकनी में वो और विजय बैठकर सुहाने मौसम का मजा ले रहे थे। जाड़ा अभी तक आया नहीं था और रातें ठंडी होने लगी थीं, खासतौर पर पहाड़ी पर बने किले में। पहाड़ी के चारों तरफ खेत थे और इसके निचले इलाके में एक छोटा सा गांव भी बसा था। यह किला विजय के चाचा का था, जो रिटायर्ड परमाणु वैज्ञानिक थे और एक साल पहले उनकी निर्मम हत्या कर दी गई थी।

विजय कोलिन की तरफ देखकर मुस्कुरा दिया। 'तुम्हें वो शख्स पसदं नहीं आया? मुझे तो वो बेहद आकर्षक लगा।'

कोलिन ने त्यौरियां चढ़ाते हुए कहा, 'बिलकुल सही समझा तुमने कि मुझे वो शख्स पसंद नहीं है। जब हमारे दोस्त किदवई ने सबसे पहले ये बताया था कि अमेरिकी और भारत सरकार मिलकर यह ज्वाइंट टास्क फोर्स बना रही हैं, तो मुझे ये बहुत अच्छा आइडिया लगा था।'

'यह तो अच्छा आइडिया है ही,' विजय बोला। 'टेक्नोलॉजी आधारित आतंकवाद का अंदाजा लगाने और उसकी छानबीन के लिए वैज्ञानिकों और इंजीनियरों और अपने—अपने क्षेत्र के विशेषज्ञों की टीम बनाने का आइडिया वक्त की मांग है।'

'हां, लेकिन अब मैं जान गया हूं कि रडे राइडिंग हूड को कैसा लगा होगा जब वो जंगल में घूमने गई थी। यह यात्रा तभी तक सुखद लग रही थी जब तक कि भेड़िए ने उस पर हमला नहीं किया।'

विजय को हंसी आ गई। आज सुबह ही उन दोनों को इंटेलिजेंस ब्यूरो के हेडक्वॉर्टर माइकल ब्लेक से मिलने के लिए बुलाया गया था। माइकल सीआईए का गुप्तचर था जिसने पिछले साल एक अभियान में आईबी के साथ काम किया था। ब्लेक उस अमेरिकी बिल पैटरसन के साथ था जिसे अमेरिकी राष्ट्रपति ने ज्वाइंट टास्क फोर्स का मुखिया नियुक्त किया था। इसी मीटिंग के लिए कोलिन कुछ दिनों पहले अमेरिका से उड़कर यहां आया था।

6 फीट 3 इंच लंबे बिल पैटरसन के पास शारीरिक और दिमागी दोनों ताकत थी। उसने मॉलिक्यूलर बायलॉजी और केमिकल बायलॉजी दोनों में पीएचडी कर रखी थी। अमेरिकी नेवी में काम कर चुका और अफ्रीकी अमेरिकी मूल का बिल अपने रूखे व्यवहार से साफ कर देता था कि कमान उसके हाथ में है।

कोलिन, जिसका स्वभाव थोड़ा विद्रोही था, ने जिस वक्त पैटरसन को देखा था, उसी वक्त से वो उसे नापसंद था। उसके इसी स्वभाव की वजह से इस मसले पर तीखी बहस हो गई थी कि फैसले लेने की किसे कितनी छूट मिलेगी, लेकिन कोलिन को इस बहस में शिकस्त झेलनी पड़ी थी। उसे अभी भी इस बहस में हार जाने की टीस थी।

'देखो, अगर अमेरिका के राष्ट्रपति ये सोचते हैं कि वो इस काम के लिए अच्छा है तो मुझे इसमें कोई दिक्कत नहीं है। और तुम्हें भी नहीं होनी चाहिए', विजय ने कहा।

'मुझे ये बिलकुल पसंद नहीं है कि जब भी हमें किसी चीज की जरूरत हो, हमें उसके पास जाना पड़े,' कोलिन ने विजय की तरफ देखकर जवाब दिया।

'अरे यार, दिमाग ना खाओ! और हमें हर चीज के लिए उससे पूछने की जरूरत नहीं है। तभी पूछना होगा जब या तो कोई सैनिक कार्रवाई हो रही हो या किसी खास ट्रेनिंग की जरूरत हो। इस टास्क फोर्स का हिस्सा होने के नाते हमारा काम छानबीन करना और अनुमान की जांच करना है। अगर कोई कार्रवाई करनी है, तो इसका जिम्मा उन पर छोड़ देना चाहिए जो इस चीज के लिए प्रशिक्षित हैं।'

कोलिन भुनभुनाया। वो जानता था कि विजय सही है लेकिन वो इसे मानना नहीं चाहता था। उसने अपनी घड़ी देखी। त्यौरियां चढ़ाकर उसने कहा, 'अंदर जाने का वक्त हो गया, मैं बस उम्मीद करता हूं कि मुझे सपने में वो राक्षस पैटरसन ना दिखे। इस वक्त मुझे बस इसकी जरूरत है।'

6

मदद की पुकार

जैसे ही हेलीकॉप्टर का पायलट रास्ते के बीच में पहुंचा, एलिस ने अपनी दाईं ओर एक झटके से गाड़ी मोड़ी और एक्सलेटर दबा दिया। वो हेलीकॉप्टर की नाक और हाइवे की ढलान के बीच की मामूली खाली जगह में जाना चाहती थी और रास्ते के किनारे तक पहुंचते—पहुंचते उसकी गाड़ी ने रफ्तार पकड़ ली।

वो फर्राटा मारते हुए हैरान पायलट को पार कर गई जिसने तेज रफ्तार एसयूवी के पीछे भागना शुरू किया। एलिस प्रार्थना कर रही थी कि उसने जो जोखिम उठाया है, उसका फायदा मिल जाए। क्या खाली जगह की चौड़ाई उसकी गाड़ी के लिए पर्याप्त है?

अगले ही क्षण, लैंड क्रूजर अपनी दोनों तरफ धातु खुरच रहा था और धातु के कटने और रगड़ने की आवाज रात के सन्नाटे को तहस—नहस कर रही थी। गाड़ी एक तरफ से हेलीकॉप्टर को और दूसरी तरफ हाइवे की धातु के जंगले को रगड़ते हुए जा रही थी।

कुछ देर तक तो ऐसा लगता रहा जैसे वक्त की रफ्तार धीमी पड़ गई हो। एलिस को ऐसा महसूस हो रहा था कि हेलीकॉप्टर और जंगले दोनों मिलकर एसयूवी को कुचल रहे हैं और रात की गोलीबारी से बची कार की खिड़कियां चकनाचूर हो रही हैं।

एलिस ने अपनी आंखें बंद की और एसयूवी को अपने रास्ते पर चलने देती रही क्योंकि धातु की कर्कश आवाज मानो उसके मस्तिष्क में घुस रही थी।

अचानक, ऐसा लगा कि लैंड क्रूजर ने सभी बाधाओं को पार कर एक छलांग लगाई हो। एलिस समझ गई कि गाड़ी उस खाली जगह से निकल चुकी है और अब वो अपने सामने फैले हाइवे को साफ—साफ देख सकती थी।

उसके अंदर जैसी एक नई ताकत आ गई और उसकी उम्मीदें फिर से जिंदा हो गईं। उसने एक्सलेटर को पूरी ताकत से दबा दिया ताकि हेलीकॉप्टर और एसयूवी के बीच दूरी ज्यादा से ज्यादा हो जाए, इसके पहले कि पायलट इस झटके से उबरकर दोबारा उड़ान भरे।

अपने पीछे, एसयूवी की बिना कांच की खिड़कियों से उसे पायलट की गालियों की आवाज सुनाई दी और वो ये अनुमान लगाकर अपनी सीट में धंस गई कि एक बार फिर गोलियां चलेंगी। उसके सिर के पास से गोलियां फिर निकलने लगीं। कार की विंडस्क्रीन में एक गोली लगी और कांच के चटकने से उसमें मकड़ी के जाले सी आकृति बन गई।

एलिस किसी तरह ड्राइव कर पा रही थी लेकिन वो जानती थी कि काफी ज्यादा देर तक वो बहुत तेज गाड़ी नहीं चला पाएगी क्योंकि विंडस्क्रीन चटकने से सामने का दृश्य धुंधला हो गया था। उसकी उम्मीदें एक बार फिर डूबने लगीं क्योंकि उसे अपनी गाड़ी की रफ्तार थोड़ी धीमी करनी पड़ी जिससे कि वो सामने के रास्ते पर साफ—साफ ध्यान लगा सके।

वो हेलीकॉप्टर की आवाज सुनने की कोशिश करती रही, लेकिन कई मिनटों बाद भी उसे एसयूवी के केबिन से हवा के गुजरने और इसके इंजन की आवाज के अलावा कुछ सुनाई नहीं दिया। उसने सोचा कि क्या हेलीकॉप्टर उसके दुस्साहस की वजह से क्षतिग्रस्त हो गया या पायलट ने पीछा करने का इरादा छोड़ दिया।

रात की घटनाओं का रहस्य उसके दिमाग पर फिर हावी होने लगा। पहले वो सोच रही थी कि पुरानी कलाकृतियों के माफिया का इसमें हाथ हो सकता है। कब्र की फोटोग्राफी पर उनकी नाराजगी से ये बात तो साबित हो सकती है। अगर कब्र के अंदर की किसी भी चीज की फोटो बाहर आ जाएगी तो काले बाजार में किसी कलाकृति को बेच पाना बेहद मुश्किल हो जाएगा, खासतौर पर उस कब्र की जो इतना ज्यादा मशहूर हो।

लेकिन उसकी ये सोच कब्र के साथ ही टुकड़े—टुकड़े हो गई थी। इसका कोई तर्कसंगत स्पष्टीकरण भी नहीं सूझ रहा था। दो हजार साल पुरानी किसी कब्र की बर्बादी से किसी को क्या हासिल हो सकता है?

और अगर बर्बाद ही करना था तो एक साल से ज्यादा समय तक उसकी खुदाई करने का सिरदर्द क्यों लिया गया? इन सवालों के कोई जवाब आते नहीं दिख रहे थे।

अब वो लुडियास नदी के ऊपर ड्राइव कर रही थी और जानती थी कि अब उसे थेसालोनिकी पहुंचने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा। उसने अब तक जो कुछ हुआ, उसे भूलने की कोशिश की और आगे के उपायों पर ध्यान लगाने लगी।

इस बात की बहुत संभावना थी कि अगर पायलट का संबंध स्तावरोस और पीटर से होगा, तो उसके साथी थेसालोनिकी में भी होंगे। तो उसका पीछा करने की बजाय यह उसके लिए आसान रहा होगा कि वो अपने साथियों को फोन कर दे और अब वो उसका थेसालोनिकी में इंतजार कर रहे होंगे। उसने समझ लिया था कि उसके सिर पर मंडरा रहा खतरा पूरी तरह टला नहीं है।

एलिस ने एसयूवी रोकी और अपने आंसुओं को रोकने की कोशिश करती हुई बाहर निकली। उसे खुद को संभालना था। मार्को मर चुका था, और डैमन भी। लेकिन वो इन सबसे जिंदा निकलना चाहती थी। वो पुल की रेलिंग पर खड़ी हो गई और तब तक उस पर अपनी मुट्ठियों से मारती रही, जब तक वो दर्द ना करने लगीं। वो अपनी हताशा को किसी भी तरह बाहर निकालना चाहती थी। उसने मार्को और उसकी बेवजह मौत के बारे में सोचा। क्यों उसकी किस्मत ने इतनी जल्दी उसका साथ छोड़ दिया?

उसने आंसुओं के धब्बे भरे अपने चेहरे को आसमान की तरफ किया जो तारों से भरा

था, लेकिन उसे वहां से कोई तसल्ली नहीं मिली।

पुल की रेलिंग को मजबूती से पकड़े हुए वो सोचने लगी। थेसालोनिकी में अमेरिका का दूतावास है और उसे वहां पहुंचना है। यही इकलौती जगह है जहां वो सही मायने में सुरक्षित रह सकती है। हालांकि उसने अपना पासपोर्ट होटल में ही छोड़ दिया था, लेकिन उसके पास ड्राइविंग लाइसेंस था। ये उसकी पहचान साबित करने के लिए काफी होगा और उसे दूतावास में शरण मिल सकेगी।

उसने अपना मोबाइल फोन निकाला और उसमें दूतावास का पता देखा, 43 सिमिस्की स्ट्रीट।

फिर उसे लगा कि उसे किसी को फोन कर मदद मांगनी चाहिए।

अपने ब्वॉयफ्रेंड को, एक पल के लिए वो हिचकी। क्या वो अब उसका ब्वॉयफ्रेंड है भी? उसे इस बारे में कोई आइडिया नहीं था। लेकिन अभी तो सिर्फ वही है जो उसके पास है। एकाध दोस्तों को छोड़कर कोई भी इतना करीबी नहीं था जिस पर वो भरोसा कर सके।

एलिस ने उसका नंबर डायल किया। घंटी कुछ देर बजती रही और फिर अचानक कट गई। उसने समय देखा। अमेरिका में इस वक्त सुबह होगी। उसने दोबारा कोशिश की और नतीजा वही रहा। कुछ घंटियां और फिर एक व्यस्त टोन। निराश मन से उसने अपनी फोन स्क्रीन देखी जिस पर यह मेसेज दिख रहा था कि जिस नंबर पर वो फोन लगा रही है, वह व्यस्त है।

वो जगा हुआ था। इस सोच ने उसे आज की रात कुछ ज्यादा ही चोट पहुंचाई कि वो जानबूझकर उसका फोन नहीं उठा रहा है। ऐसा व्यक्ति जिसे इस वक्त उसके साथ होना चाहिए था, जब वो जिंदगी और मौत के बीच फंसी है, वो अचानक उसकी जिंदगी से गायब हो चुका है। ये सोचते हुए उसने बमुश्किल अपनी आंखों से आंसुओं को बहने से रोका।

उसे मजबूत होना होगा अगर वो अपनी जिंदगी बचाना चाहती है।

एक और नाम उसके दिमाग में कौंध उठा और उसने एक नंबर डायल किया। इस बार ये मोबाइल नहीं बल्कि लैंडलाइन नंबर था। उसके पास कुर्त वॉलेस का निजी सेलफोन नंबर नहीं था।

दो बार घंटी बजने के बाद फोन पर एक महिला की आवाज आई।

'यह मिस्टर वॉलेस का दफ्तर है, मैं आपकी क्या मदद कर सकती हूं?' ये क्लारा थी, वॉलेस की सहायक।

एलिस को महसूस हुआ कि उसकी आवाज बुरे अनुभवों के दबाव में कांप सी रही है। 'मुझे मिस्टर वॉलेस से बात करनी है, यह बेहद जरूरी है।'

'मिस्टर वॉलेस एक मीटिंग में हैं और उन्हें इस वक्त डिस्टर्ब नहीं किया जा सकता।'

'यह जिंदगी और मौत का मामला है! मेरी गुजारिश है कि आप उनसे मेरी बात करा दें,'

एलिस ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, इस डर से उसके हाथ—पांव ठंडे हो गए कि उसके हाथों से अंतिम सहारा भी छूटने वाला है।

‘आप अपना नाम और फोन नंबर मुझे दे दें और जैसे ही मिस्टर वॉलेस बाहर आते हैं, मैं उनसे कहूंगी कि वो आपसे बात कर लें। मुझे खेद है लेकिन मैं अभी उन तक नहीं पहुंच सकती।’

ये शब्द उस पर हथौड़े की तरह पड़े। अब वो अकेली थी, उसके पास मदद करने वाला कोई नहीं था।

7

थेसालोनिकी, ग्रीस के पास, ई75 पर

कुछ क्षणों तक एलिस स्तब्ध सी खड़ी रही, क्लारा के शब्दों को सुनकर जैसे वो सुन्न सी हो गई। फिर भी उसने दोबारा कोशिश की। अगर वो अपने बारे में बताए तो शायद...?

'मेरा नाम एलिस टर्नर है। मैं ग्रीस के उस मिशन का हिस्सा हूं जिसके लिए मिस्टर वॉलेस ने पैसे दिए हैं। कृपया आप उन्हें बताएं कि कब्र को बर्बाद कर दिया गया है, मेरी टीम के दो लोग मार दिए गए हैं और कोई मेरे पीछे भी लगा है। मैं... मैं बहुत डरी हुई हूं।' एलिस ये बोलते—बोलते सुबकने लगी।

क्लारा की आवाज में नरमी आई। 'मिस टर्नर, मुझे आपकी बुरी हालत के बारे में जानकर बहुत दुख पहुंचा है। मैं मिस्टर वॉलेस को इसी वक्त एक मेसेज भेज देती हूं। लेकिन बदकिस्मती से वो अपने पास निजी मोबाइल फोन नहीं रखते, इसलिए उन तक पहुंचने में मुझे कुछ समय लग सकता है। मैं आपसे बस यही कह सकती हूं कि आप इस बात को सुनिश्चित करें कि आपके मोबाइल पर आने वाली कॉल आपको मिल सके।'

एलिस ने सिर हिलाया, क्लारा को धन्यवाद दिया और फिर अपने आंसू पोंछते हुए ड्राइवर सीट पर बैठ गई। वो अभी अकेली थी। आशा है कि वॉलेस उसे जल्द फोन करें और उसकी मदद करें।

लेकिन तब तक उसे अपनी बुद्धि के ही भरोसे रहना होगा। और घबराने से कोई मदद नहीं होगी। उसने अपना दिमाग साफ करते हुए एक लक्ष्य तय करने की कोशिश की जिसे हासिल करने के लिए वो काम कर सके।

अमेरिकी दूतावास। उसे दूतावास पहुंचना था।

उसने लैंड क्रूजर के जीपीए सिस्टम में दूतावास की दिशा से संबंधित जानकारी डाली और अपना ध्यान अगले कदमों पर केंद्रित करने की कोशिश करने लगी।

'दिलचस्प है यह तो', उसने जीपीएस पर आए रास्तों को देखते हुए खुद से बुदबुदाते हुए कहा। थोड़ी दूर पीछे जाकर ई75 से मिलने वाला ए2 रास्ता आगे थोड़ी दूरी पर एक्सियोज मोड़ पर अलग हो जाता था और फिर थेसालोनिकी की तरफ बढ़ जाता था। गलिकोज पुल से कुछ मील आगे जाने पर ए2 निया दिटिकि आइसोडॉस में मिलता था, जो नवरचू कॉन्टुरियोटु की तरफ जाता था, जहां से थोड़ी दूर जाकर वो बाएं मुड़कर सिमिस्की के लिए

जा सकती थी। जीपीएस ने यही रास्ता दर्शाया था। लेकिन उसका ध्यान खींचा था दो वैकल्पिक रास्तों ने जो वो स्क्रीन पर देख सकती थी। पहला रास्ता निया दिटिकि आइसोडॉस से अलग होता था और 26 ऑक्टोवरिउ पर जाता था, जो वापस घूमकर उस जंक्शन पर जाता था जहां से वो नवरचू कॉन्टुरियोटु पर मुड़ सकती थी।

उसने अंदाजा लगाया कि इन दोनों रास्तों से उसका काम नहीं होगा, क्योंकि ये दोनों रास्ते जिस जंक्शन पर ले जाते थे, वहां जाहिराना तौर पर गुंडे उसका इंतजार करते मिल सकते थे।

दूसरा वैकल्पिक रास्ता उसे बेहतर लग रहा था। 26 ऑक्टोवरिउ पर मुड़ने की बजाय वो अगले एग्जिट से जा सकती थी जो उसे मोटरवे के नीचे से 28 ऑक्टोवरिउ पर ले जाता और उसके बाद थोड़ी देर बाद वो रास्ता मोनासटिरिउ पर मुड़ जाता, फिर इगनेटिया की तरफ जाता जहां के दाएं मुड़कर वो सिमिस्की जा सकती थी।

उसने यही रास्ता लेने का फैसला किया। यह भी एक जुआ ही था क्योंकि इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि गुंडे इस रास्ते की निगरानी नहीं कर रहे होंगे, लेकिन उसके पास बहुत ज्यादा विकल्प नहीं थे।

जब वो कार की तरफ बढ़ रही थी, उसे एक और नाम सूझा था। एक ऐसा नाम जिस पर

वो विश्वास कर सकती थी। कम से कम वो ऐसा मान रही थी। कॉलेज में उसका ब्वॉयफ्रेंड। जब तक ये रिश्ता चला था, ये उसके सबसे अच्छे रिश्तों में एक था। लेकिन वो कई सालों से उसके संपर्क में नहीं थी, हालांकि लड़के ने कई बार उसे फोन भी किया था और ईमेल भेजे थे जबकि एलिस ने उनका जवाब ना देना ही ठीक समझा था। अंत में लड़के ने कोशिश करनी छोड़ दी थी और समझ गया था कि अब इसका कोई मतलब नहीं है। एलिस के उसके साथ संपर्क तोड़ने की एक वजह यह भी थी कि रिश्ता खत्म होने के बाद उसके मन में बड़ी कड़वाहट थी। उसने हमेशा यही सोचा था कि यह रिश्ता लबां चलेगा, उन दोनों की शादी हो जाएगी और फिर दोनों उम्र भर साथ रहगें। लेकिन ये रिश्ता वैसा चल नहीं पाया।

कुछ तो अकेलेपन और दर्द की वजह से और कुछ मुसीबत में फंसे होने की वजह से एलिस को किसी से बात करने की जरूरत महसूस हो रही थी और उसे लगा कि अपने पुराने ब्वॉयफ्रेंड को फोन करना चाहिए। हालांकि वो तय नहीं कर पा रही थी कि इतने सालों बाद ऐसा करना ठीक होगा या नहीं। वो ये भी नहीं समझ पा रही थी कि इतने सालों बाद वो उसके बारे में सोच क्यों रही है, खासतौर पर सभी रिश्ते तोड़ने के बाद।

उसने कुछ पलों के लिए सोचा और अपने फाने की कॉन्टैक्ट लिस्ट के कुछ और नंबर देखें। उसने तुरंत अपना मन बना लिया और एक नंबर डायल किया। जल्दी से फोन उठाओ! ऐसा तो है नहीं कि वो उसका नंबर पहचानेगा नहीं, जब तक कि उसने अपने कॉन्टैक्ट लिस्ट से उसे हटा न दिया हो। और इतने सालों बाद ऐसा होना मुमकिन भी था।

8

जौनगढ़ किला

कोलिन अपने कमरे में बैठा था और उसने अपना मोबाइल फोन देखा। ग्यारह साल हो गए उसकी कोई खबर आए। रिश्ते तोड़ने के बाद उसने ईमेल तक का जवाब नहीं दिया था। हालांकि उसे इससे बहुत ज्यादा आश्चर्य नहीं हुआ था, उसने साफ कर दिया था कि वो अपने पुराने ब्वॉयफ्रेंड के साथ कोई रिश्ता नहीं रखेगी। और अब, वो उसे फोन कर रही थी। इतने लंबे समय बाद ऐसा क्या हो गया कि उसने अपना मन बदल दिया?

उसका नंबर देखते ही उसकी तुरंत इच्छा हुई कि फोन उठा ले। लेकिन वो रुक गया, वो असमंसज में था और शायद डरा हुआ भी, खासतौर पर आज के हालातों में। अगर वो उसके पास वापस आना चाह रही है तो इससे हालात और जटिल हो जाएंगे।

उसने एक गहरी सांस ली और फोन उठा लिया, बिना किसी उम्मीद के।

डूबते को तिनके का सहारा

‘एलिस?’ कोलिन की आवाज इतनी अच्छी उसे कभी नहीं लगी थी, इतने लंबे अंतराल के बावजूद।

‘कोलिन! मैं... मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं किसको फोन करूं।’ उसकी आवाज अभी भी कांप रही थी, लेकिन इस बार वो थोड़ी राहत महसूस कर रही थी, ये जानते हुए भी कि कोलिन उससे मीलों दूर अमेरिका में है और वो इस वक्त कोई मदद नहीं कर पाएगा।

‘कुछ गड़बड़ है क्या?’ कोलिन की आवाज में फिक्र थी या कहें कि परेशानी झलक रही थी। उसने एलिस की कांपती आवाज को भांप लिया था। ‘क्या तुम ठीक हो?’

अपराध बोध और डर से परेशान एलिस ने पिछले एक घंटे की अपनी आपबीती बयान कर दी, उसके कब्र में जाने और से लेकर अभी हाइवे पर होने तक की सारी कहानी।

जब उसने कहानी खत्म की तो थोड़ी देर दोनों तरफ चुप्पी छाई रही, जिसे कोलिन ने ही तोड़ा। ‘क्या थेसालोनिकी में तुम्हारे मिशन से कोई नहीं है जो तुम्हारी मदद कर सके?’

‘कोलिन, मैं नहीं जानती कि किस पर विश्वास करूं। अगर स्तावरोस और पीटर इन सबके पीछे हैं तो दूसरों के बारे में कौन जानता है? और मुझे लगता है कि डैमन भी इस

सबका हिस्सा था। वो मारा गया क्योंकि उसने आदेश का पालन नहीं किया। यही कहा था पीटर ने।'

'ठीक है, मुझे लगता है कि दूसरे रास्ते से थेसालोनिकी जाने की तुम्हारी योजना सही है। उन्हें उम्मीद नहीं होगी कि तुम ऐसा करोगी। तुम दूतावास जाओ। मैं इस वक्त भारत में हूं, लेकिन अमेरिका में मैं लोगों से बात करता हूं और फिर हम तुम्हारे लिए इन सबसे बाहर निकलने का रास्ता निकालेंगे।'

'तुम भारत में क्या कर रहे हो?'

कोलिन ने उसे बताया कि विजय को उसके चाचा से उत्तराधिकार में किला मिल रहा है, हालांकि उसने इसका ब्यौरा नहीं दिया।

'अच्छा, शुक्रिया कोलिन, मुझे बहुत अच्छा लगा। सब कुछ होने के बाद भी...'

'घबराओ नहीं। दोस्त इसीलिए होते हैं। भले ही वो एक दूसरे के साथ संपर्क में ना हों।' कोलिन ने हिचकिचाते हुए पूछा, 'क्या मैं विजय को बताऊं?'

'अभी नहीं, मुझे नहीं मालूम कि वो इस बारे में क्या सोचेगा।'

'अपना ख्याल रखना, मैं जल्दी ही तुमसे बात करूंगा।'

एलिस ने फोन काट दिया।

उसने मन बना लिया था, उसने इंजन स्टार्ट किया और आगे बढ़ चली। लेकिन वो मुश्किल से एक किलोमीटर गई होगी कि उसका फोन बजने लगा।

उसने फोन उठाया और उसकी स्क्रीन देखने लगी। क्या ये वॉलेस का फोन है?

'एलिस?'

'मिस्टर वॉलेस!' उसे काफी राहत महसूस हुई।

'मुझे बताया गया कि तुम्हें तुरंत मदद की जरूरत है।' वॉलेस की आवाज में गहरी चिंता झलक रही थी।

एलिस ने वॉलेस के सामने सब कुछ बयान कर दिया। वो यकीन नहीं कर पा रही थी उसके कब्र में जाने के बाद से मुश्किल से घंटा भर बीता होगा और उसके साथ इतना कुछ हो गया है।

उसके सब कुछ बताने के बाद एक पल के लिए खामोशी रही। फिर वॉलेस ने कहा, उसकी आवाज में फैसला और अधिकार दोनों झलक रहे थे। 'तुमने बताया कि तुम्हारे जीपीएस के मुताबिक तुम अमेरिकी दूतावास से आधे घंटे से ज्यादा दूर नहीं हो? चीजों को दुरुस्त करने के लिए इतना समय हमारे लिए काफी है।' उसकी आवाज में नरमी थी। सामान्य परिस्थितियों में वो उसकी भाषा को दया भाव दिखाने वाला समझती। लेकिन अभी वो उसे यहां से जीवित निकालने वाला सबसे अच्छा विकल्प दिख रहा था। 'घबराओ नहीं, तुम्हें कुछ नहीं होगा। मैं तुमसे वादा करता हूं। बस ड्राइव करती रहो। अगले दस मिनटों के

भीतर कोई तुमसे संपर्क करेगा। जब तुम दूतावास पहुंच जाओ तो मुझे फोन करना। अब मुझे जाना होगा।'

वॉलेस ने फोन काटा, एलिस ने उसका शुक्रिया अदा किया और ड्राइव करने लगी। आज की रात पहली बार उसने गौर किया कि हाइवे पर और कोई नहीं है। किसी भी दिशा में कोई भी कार उसने पार नहीं की थी। यह असामान्य था और थोड़ा डरावना भी।

अब वो स्थिर मन से गाड़ी चला रही थी, उसका मन वॉलेस से हुई बातचीत के बाद शांत था। जब वो एक्सियोस नदी के ऊपर से गुजरी, उसका फोन फिर बज उठा।

जैसे ही उसने फोन उठाया, उसके कान में ग्रीक लहजे में एक गहरी आवाज गूंज उठी, 'मिस टर्नर? मैं थेसालोनिकी के जनरल पुलिस डायरेक्टरेट से बोल रहा हूं।'

उसका दिल जोरों से धड़क उठा। क्या वो वाकई में यही सुन रही थी?

वॉलेस ने स्थानीय पुलिस से संपर्क किया था?

उसने अपनी हैरत को छिपाने की कोशिश करते हुए लड़खड़ाती आवाज में कहा, 'हां।'

फोन कर रहे पुलिस ऑफिसर ने उसे तुरंत पूरी योजना बता दी। निया दिटिकि आइसोडॉस के मोड़ पर उसे तीन मोटरसाइकिलों पर सवार पुलिस वाले मिलेंगे, जो उसे इस वक्त बंद हो चुके अमेरिकी दूतावास नहीं, बल्कि एक होटल ले जाएंगे, जहां उसके कमरे के बाहर और लॉबी में उसकी सुरक्षा के लिए हथियारबंद गार्ड तैनात रहेंगे। दूतावास उससे सीधा संपर्क करेगा ताकि उसे थेसालोनिकी से अमेरिका पहुंचाने के लिए जरूरी कागजात की व्यवस्था कर सकें।

एलिस समझ नहीं पा रही थी कि वो क्या प्रतिक्रिया दे। पिछले एक घंटे के आतंक ने उसे जैसे सुन्न सा कर दिया था और यह खबर उसके लिए सूखे में मॉनसून की बारिश जैसी थी। उसने फोन रखने के पहले पुलिस ऑफिसर का दिल खोलकर शुक्रिया अदा किया। फिर उसने कार रोकी और बाहर निकलकर सडक़ पर आ गई, घुटनों पर बैठ गई और अपने जज्बातों को बाहर निकलने दिया, उसकी आखों से राहत के आंसू बह निकले, उसका शरीर कांपने लगा——इस बार डर से नहीं बल्कि इस खुशी से कि वो अब सुरक्षित रहेगी।

खुफिया ब्यूरो मुख्यालय, नई दिल्ली

इमरान ने ऊपर देखा, जैसे ही उसकी टीम का एक आदमी कमरे में हडब़ड़ी में दाखिल हुआ। उसने सवालिया अंदाज में अपनी भौंहैं चढ़ाईं।

उसने मजे पर उस आदमी के रखे गए कागज को देखा। 'ठीक है, चलो।' वो दरवाजे की तरफ बढ़ गया। 'कमांडोज को खबर कर दो।' उसने पहले ही कमांडोज की एक टीम को तैयार रहने को कह रखा था। कुछ ही मिनटों में इमरान और आईबी की टीम आईएसपी के डेटाबेस से निकाले गए पते की तरफ जा रही थी। उसके आदमी के पास एक फोन आया।

उसने फोन करने वाले की बात सुनी और फिर इमरान की तरफ घूमकर कहा, ‘सर, जिस मेडिकल फेसिलिटी को हम जा रहे हैं, वहां एक बड़ी आग लगने की खबर फायर डिपार्टमंटे ने दी है।’

इमरान ने अपने दांत भींचे और प्रार्थना की कि वो सब लोग समय पर पहचुं जाएं।

9

थेसालोनिकी, ग्रीस

थकी—मांदी एलिस अपने बिस्तर में धंस गई, खुश थी कि वो जिंदा है। वादे के मुताबिक पुलिस टीम उसे मिल गई थी और उन्होंने उसे होटल तक पहुंचा दिया था, जहां उसे एक नकली नाम से चेक इन कराया गया था। वो नहीं जानती थी कि उन्हें उसके बारे में क्या बताया गया है, लेकिन यह साफ था कि उन्हें इस बात के निर्देश दिए गए थे कि उसकी सही पहचान किसी के सामने जाहिर ना की जाए।

पुलिस जल्दी ही केस दर्ज करेगी और मामले की जांच की जाएगी, साथ ही स्तावरोस और पीटर को पकड़ने के लिए खोजबीन भी शुरू होगी। हालांकि, पता नहीं क्यों, एलिस को लग रहा था कि वो पकड़े नहीं जाएंगे।

दूतावास ने उसे फोन कर बताया था कि देश छोड़ने के लिए जरूरी कागजात अगले दिन दोपहर तक तैयार हो जाएंगे। उन्होंने उसे भरोसा दिलाया था कि वो अब उनकी निगरानी में है और पूरी तरह सुरक्षित रहेगी। वॉलेस ने वाकई में बड़े पैमाने पर संपर्कों का इस्तेमाल किया था और वो उसकी मदद के लिए आभारी थी।

अब सिर्फ एक चीज बच गई थी। उसे यहां से बाहर जाने के लिए टिकट बुक करने की जरूरत थी। वो यह काम कल करेगी। लेकिन वो अमेरिका अपने घर वापस नहीं जाएगी। अब ये अच्छा नहीं था। स्तावरोस और पीटर जानते थे कि वो कहां से है और शायद उनके पास उसके घर का पता भी हो। वो यहां तो सुरक्षित है, लेकिन अमेरिका में उसकी रक्षा कौन करेगा? वो बार—बार वॉलेस के पास मदद के लिए भी नहीं जा सकती। उसने उसे यहां के झंझटों से निकालने के लिए काफी कुछ किया है।

वो कहां जा सकती है? नहाते हुए वो इस सवाल पर ही विचार कर रही थी। और, अभी जब वो शर्डने के गिलास के साथ आराम के मूड में थी, तो भी उसके पास कोई जवाब नहीं था।

उसने टेलीविजन चला लिया। यह ग्रीक भाषा में एक स्थानीय चैनल था, लेकिन उसे तस्वीरें देखकर ये हेडलाइंस समझने में दिक्कत नहीं हुई कि थेसालोनिकी की तरफ आने वाले हाइवे के दोनों रास्तों पर दो अलग—अलग हादसे हुए हैं और ट्रैफिक रुक गया है। इन हादसों की खबर अज्ञात लोगों ने दी थी और जब पुलिस वहां पहुंची तो कोई भी दुर्घटनास्थल

पर मौजूद नहीं था। ऐसा लग रहा था कि हादसे में शामिल लोग वहां से चले गए थे।

खबर सुन डर से उसके हाथ—पांव ठंडे पड़ गए।

उसने खुद को किस मुसीबत में डाल लिया था?

यह कोई साधारण षड्यंत्र नहीं था। जो कुछ भी हो रहा था, वो काफी बड़ा था। अगर वो लोग पागलपन की इस हद तक जा सकते हैं कि कुछ घंटों के लिए हाइवे ब्लॉक कर दें ताकि खुदाई की जगह से कोई जिंदा वापस नहीं जा सके, तो साफ है कि इस मामले में काफी बड़ा दांव खेला जा रहा है।

लेकिन क्या है ये? उसने अपने दिमाग को काफी झकझोरा, लेकिन किसी भी ऐसे नतीजे पर नहीं पहुंच सकी जिसका कोई मतलब निकले।

उसकी सोच को भंग करते हुए फोन की घंटी बजी।

'एलिस?' दूसरी तरफ से वॉलेस की आवाज आई।

'मिस्टर वॉलेस, मैं नहीं जानती कि किन शब्दों में आपका शुक्रिया अदा करूं।' एलिस कृतज्ञता के बोझ तले दबी जा रही थी। 'मैं थेसालोनिकी के एक होटल में हूं।'

'हां, मैं जानता हूं।' वॉलेस ने जवाब दिया। 'मुझे बताया गया। हां, वैसे मैंने तुम्हें पहले कहा था कि मुझे कुर्त कहकर बुलाया करो। खैर, मुझे खुशी है कि तुम सुरक्षित हो।'

'मैं भी सुरक्षित होकर खुश हूं।' एलिस ने जवाब दिया। 'लेकिन मुझे अभी भी डर लग रहा है।' उसने वॉलेस को टेलीविजन पर दिखाए गए हाइवे हादसे के बारे में बताया। 'मैं सुबह सबसे पहले अपने टिकट बुक करूंगी। मुझे लगता है कि मुझे यहां से जल्दी से जल्दी निकल जाना चाहिए।'

'इसलिए मैंने तुम्हें फोन किया था। मैं कुछ भी ऐसा वादा नहीं करना चाहता था जिस बारे में मैं सुनिश्चित नहीं था। मुझे नहीं लगता कि तुम्हें कम से कम एक हफ्ते तक ग्रीस की किसी कमर्शियल एयरलाइन में सीट मिलेगी। लेकिन इस बारे में मैंने कुछ लोगों से बात की है और कल दोपहर तक तुम्हारे लिए एक प्राइवेट जेट तैयार रहेगा जो तुम्हें अमेरिका ले आएगा।'

एलिस का मुंह खुला का खुला रह गया। प्राइवेट जेट? कुर्त वॉलेस के दोस्त जरूर ऊंची जगहों पर हैं। जैसे ही उसे महसूस हुआ कि वॉलेस उसे घर वापस भेजने की तैयारी कर रहा है, उसने भावनाओं पर काबू पाते हुए कहा, 'कुर्त, मैं इस बारे में सोच रही थी।' एलिस को अचानक पता चल गया था कि उसे कहां जाना है। उसने वॉलेस को अमेरिका लौटने की अपनी चिंताओं के बारे में बताया, उसका रुख नरम था लेकिन पूरी दृढ़ता से उसने वहां सुरक्षित जगह ढूंढ़ने के उसके प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

'तुमने इस बारे में पक्का फैसला कर लिया है?' वॉलेस ने उसकी पूरी बात सुनने और उसकी वांछित मंजिल के बारे में जानने के बाद पूछा।

‘बिलकुल।’ एलिस के दिमाग में इस बारे में कोई संदेह नहीं था कि वो क्या चाहती थी। ‘और मेरी एक गुजारिश है, अगर ये मुमकिन हो सके तो।’ उसने वॉलेस को बताया कि वो अपने लिए उससे क्या काम कराना चाहती है।

‘ठीक है फिर, इसका इंतजाम हो जाएगा। सुबह दस बजे के करीब तुम्हें फोन आ जाएगा। तुम्हारी उड़ान सुरक्षित हो और मुझे बताना कि क्या तुम्हें किसी और चीज की जरूरत है।’

‘मैं बताउंगी।’

जब उसने फोन काटा, उसके दिमाग में अचानक एक संदेह कुलबुला गया। क्या वो सही कर रही है?

एलिस ने दृढ़ता से इस संदेह को दूर कर दिया। उसे अपने डर से मुकाबला करना था। वो इनसे काफी लंबे समय से भाग रही थी।

10

आर्यन लेबारेट्रीज, नई दिल्ली

इमरान दमकल के सदस्यों और कमांडोज के साथ खड़ा था, दुख से उसके कंधे झुके हुए थे।

वो लोग मेडिकल सेंटर पर तीन घंटे पहले पहुंचे थे, और देखा कि दमकल के सदस्य एक भयानक आग को बुझाने में लगे हैं, जिसने चार मंजिली इमारत की ऊपरी तीन मंजिलों को बर्बाद कर दिया था।

आग पर काबू पाने में दमकल की पंद्रह गाड़ियों को चार घंटे तक जूझना पड़ा था। इमरान, आईबी की टीम और उनके कमांडो वहां असहाय से खड़े थे, सिर्फ दमकल के सदस्यों को उनका काम करते देख रहे थे, इस काम में उनकी कोई मदद नहीं कर पा रहे थे।

जैसे ही उन्हें बिल्डिंग में अंदर जाने की इजाजत मिली, इमरान कमांडोज, दमकल के सदस्यों और अपनी टीम को निर्देश देते हुए अंदर भागा। ऊपरी मंजिलें जहां तहस-नहस हो चुकी थीं, ग्राउंड फ्लोर सही-सलामत दिख रहा था।

'इस जगह पर क्या काम होता है?' इमरान ने अपने डिप्टी अर्जुन से पूछा, जैसे ही वो लोग बिल्डिंग में घुसे।

'यह एक क्लीनिकल लेबोरेट्री है। ये लोग यहां सिएटल, वॉशिंगटन की कंपनी टाइटन फार्मास्युटिकल के लिए बीमारियों पर रिसर्च करते हैं।'

इमरान ने भौंहें ऊपर की। 'अमेरिका की बहुराष्ट्रीय दवा कंपनी?'

'हां, हम ज्यादा जानकारी के लिए उनसे संपर्क कर रहे हैं। लेकिन ऐसा लगता है कि इस सेंटर पर उनके रिसर्च प्रोग्राम के लिए क्लीनिकल ट्रायल होते थे। ये पता चला है कि वो लोग कुछ ऐसे मोलेक्यूल विकसित करने में लगे हैं, जो चिकित्सा जगत में तहलका मचा सकती है।'

इमरान के वॉकी टॉकी में हरकत हुई। 'सर, आपको ऊपर आना होगा, चौथी मंजिल पर।' ये उसके एक एजेंट की आवाज थी।

सीढ़ियों पर भागते हुए इमरान को एक डर ने जकड़ रखा था। भले ही उसकी उम्र चालीस के पार जा चुकी थी, वो अभी भी बेहद चुस्त था, नियमित तौर पर व्यायाम करता था और अभी एक बार में दो सीढ़ियां चढ़ रहा था।

जैसे ही वो चौथी मंजिल पर पहुंचा, उसके कदम ठिठक गए। पूरी मंजिल जलकर काली हो गई थी। और जो कुछ चीजें आग से बच गई थीं, वो आग बुझाने वाली मशीनों के पानी से बर्बाद हो गई थीं।

फ्लोर पर जमा पानी के बीच से चलते हुए वो एक ऐसे कमरे में पहुंचे, जो आईटी लैब लग रही थी, फिलहाल वहां दमकल के सदस्यों ने टॉर्च और हेडलैंप से रोशनी कर रखी थी। उन्हें आग में जले हुए फर्नीचर और काले पड़ चुके कंप्यूटर टर्मिनल दिखे।

और उसका जो सबसे बड़ा डर था, वो जैसे सच साबित होता दिखा। एक कुर्सी पर कंप्यूटर टर्मिनल के सामने आग से बुरी तरह झुलसा हुआ शरीर था।

'अनवर?' इमरान के मुंह से पूरा नाम भी नहीं निकल सका।

'मुझे दुख है, सर। लेकिन अभी इसे पहचाना नहीं जा सकता। शरीर इस कदर झुलस चुका है कि पहचान में नहीं आ रहा।'

इमरान एक पल के लिए मौन हो गया। फिर उसने अपने आप को संभाला। 'अर्जुन,' अपने एक एजेंट को उसने कहा। 'मैं पूरी जांच चाहता हूं। इस जगह का मालिक कौन है? वो लोग यहां क्या कर रहे थे? आग कैसे लगी?' उसने आग से काले पड़ चुके शरीर को देखा। 'और मैं चाहता हूं कि इस बॉडी की पहचान की जाए।'

उसका वॉकी टॉकी फिर बजा। 'सर, बेहतर होगा कि आप ग्राउंड फ्लोर पर आ जाएं। हमें यहां कुछ मिला है।'

इमरान जल्दी से नीचे की ओर भागा, और अर्जुन उसके पीछे था। उसकी टीम का एक सदस्य लिफ्ट के शाफ्ट की जांच कर रहा था और उसने पाया कि यह ग्राउंड लेवल पर खत्म नहीं हो रही थी। ऐसा लग रहा था कि यह थोड़ा और नीचे जा रही है, जैसे बिल्डिंग के तहखाने तक जा रही हो।

कुछ अजीब सा महसूस कर, एजेंट वरुण झा ने लिफ्ट को ताकत लगाकर खोल दिया था। फ्लोर चुनने का जो पैनल था, वो इलेक्ट्रॉनिक टच पैनल था, उसमें आमतौर पर लिफ्ट में मिलने वाले बटन नहीं थे। पैनल में सब कुछ सही था, सिवाय इस चीज के कि उसमें तहखाने तक पहुंचने का कोई जिक्र नहीं था।

झा ने गौर किया कि मुख्य पैनल के ठीक नीचे एक छोटा पैनल भी है, जो छिपा हुआ सा है। इस पर कुछ लिखा नहीं था लेकिन उसे संदेह हुआ कि अगर कोई सही प्रमाण चिह्नों के साथ कार्ड स्वाइप करे तो इस पैनल पर नीचे जाने के लिए और फ्लोर दिखाई देंगे।

एजेंट ने अपनी सूझबूझ का परिचय देते हुए ये अंदाजा लगाया कि अगर बिल्डिंग में नीचे तहखाने हैं तो वहां तक पहुंचने के लिए लिफ्ट के अलावा सीढ़ियां भी होंगी। और उसने फिर दमकल के सदस्यों से बात की।

दमकल के सदस्यों ने सीढ़ियों की पड़ताल की और पाया कि सीढ़ियां नीचे की तरफ एक छोटे से वर्गाकार कमरे में जा रही हैं, जो खाली है। यहां से कोई रास्ता नहीं था। झा ने

दमकल के सदस्यों से कहा कि वो स्टेयरवेल को घेरने वाली तीन दीवारों को तोड़ दें। इसका नतीजा दिखा। सीढ़ियों के ठीक सामने की दीवार के बाहर खाली जगह थी।

इसके बाद ही झा ने इमरान को बुलाया था, जो अब वहां पहुंच गया था और दमकल के सदस्यों को दीवार तोड़ते देख रहा था। दीवार जब तोड़ी जा रही थी, तारें और नालियां टूट गईं और इधर—उधर लहराने लगीं। साफतौर पर यहां गुप्त रूप से कुछ इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम लगाया गया था जिसका इस्तेमाल शायद दीवार में छिपे रास्ते के लिए होता हो।

जब काम खत्म हो गया तो उन्हें लैंडिंग दिखी जो बिल्डिंग के निचले लेवल पर ले जाने के लिए बनी सीढ़ियों तक जाती थी।

इमरान इस बात से भयभीत सा था कि उन्हें क्या देखने को मिलेगा। अगर किसी ने तहखाने को छिपाए रखने के लिए इतनी व्यवस्था की है, तो साफ है कि कुछ ऐसा महत्वपूर्ण जरूर है जिसे छिपाया जाना है।

टॉर्चों की व्यवस्था की गई और आईबी एजेंट और दमकल के सदस्य सावधानी से सीढ़ियों से नीचे उतरने लगे। यह तो साफ था कि इस जगह के इंचार्ज भाग गए होंगे, लेकिन हो सकता है कि नीचे लोग फंसे हों जिन्हें बचाये जाने की जरूरत पड़े।

लेकिन वो लोग उस चीज के लिए नहीं तैयार थे जो उन्हें वहां दिखा। तहखाने के तीन लेवल थे। नीचे के दो लेवल को देखकर ऐसा लगता था कि वहां किसी तरह के रहने की व्यवस्था थी, जिसमें छोटे क्युबिकल्स बने थे, जो लंबे और पतले कॉरिडोर के साथ लगे हुए थे। बस ये कोई होटल या बोर्डिंग हाउस नहीं था। सभी कमरे बाहर से इलेक्ट्रॉनिक तालों से बंद थे।

और इन कमरों में रहने वाले सभी लोग मर चुके थे। दम घुटने से नहीं। इस नतीजे पर पहुंचने के लिए किसी फॉरेंसिक एक्सपर्ट की जरूरत नहीं थी। क्योंकि सभी शरीरों में गोलियां धंसी थीं। वैसे तो आग इस लेवल तक पहुंची नहीं थी, लेकिन यहां कोई भी जीवित नहीं था।

इमरान अर्जुन की तरफ घूमा। 'अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनी? पता करना होगा कि वो अपनी जगह पर सौ से भी ज्यादा लोगों की लाश के बारे में क्या जानते हैं, जिन्हें गोलियों से भूना गया है। मैं इस मामले को खुद देखूंगा। तब तक मैं चाहता हूं कि इस कंपनी के सीईओ और चीफ मेडिकल ऑफिसर से मुलाकात तय की जाए। और मुझे इस कंपनी के भारत में कामकाज से जुड़े सारे आंकड़े, इनका इतिहास और इनके किए जा रहे ट्रायल्स की जानकारी चाहिए। मैं इन लोगों से मिलने के पहले उनके बारे में सब कुछ जानना चाहता हूं।'

अर्जुन ने हामी भरी। 'आपको कल शाम तक रिपोर्ट मिल जाएगी।'

इमरान ने अर्जुन को अपने पास इशारे से बुलाया और वो दोनों बाकी लोगों से थोड़ा दूर हट गए। इमरान ने फुसफुसाते हुए उसे कहा, 'दो और बातें हैं।' अर्जुन सुनता रहा।

जब इमरान अपनी बात कह चुका, अर्जुन थोड़ा आश्चर्यचकित लग रहा था। लेकिन

उसने कोई आपत्ति नहीं जताई। 'मैं इसका इंतजाम अभी तुरंत करता हूं,' उसने वादा किया, और इमरान के आदेश का पालन करने के लिए वहां से चला गया।

इमरान ने लाशों और कमरों पर नजर डाली। छिपा हुआ तहखाना। गोलियों से छलनी लाशें। क्या हो रहा था यहां? किसी ने इस बिल्डिंग को बर्बाद करने की पूरी कोशिश की है। क्या वो लोग सबूत मिटाना चाहते थे? वैसी सूरत में वो सबूत किस ओर इशारा करते? अनवर के साथ क्या हुआ था? और वो इस जगह क्या कर रहा था जहां क्लीनिकल ट्रायल होते हैं?

सवाल कई थे। उसे एक अजीब सी बेचैनी सताने लगी। वो इस बेचैनी को समझ रहा था। उसे यह आभास हो रहा था कि यह सब किसी गंभीर और गहरे षड्यंत्र को छिपाने के मकसद के किया जा रहा है।

जबड़े भींचते हुए वो अपने अगले कदमों के बारे में सोचने लगा। चाहे जो हो जाए, वो इस राज की तह तक जाकर रहेगा।

जौनगढ़ किला

विजय उस कमरे के बीचोंबीच खड़ा होकर कुछ सोच रहा था, जिसे उसने पिछले हफ्ते ही ढूंढ़ा था। किला अच्छा—खासा बड़ा था, पांच स्तरों में बना था जिनमें पचास से ज्यादा कमरे थे, और विजय को जब साल भर पहले ये किला विरासत में मिला था, तबसे अब तक उसके पास ना तो समय था और ना ऐसी इच्छा थी कि वो सभी कमरों को देख पाता। ज्यादातर उसका समय पहली मंजिल पर बने स्टडी रूम और दूसरी मंजिल के उसके अपने कमरे में ही बीतता था।

किले के कुछ कमरों के बारे में उसे जानकारी थी, वहीं कई ऐसे कमरे थे जिस पर उसने कभी नजर भी नहीं डाली थी। पिछले छह महीने से उसने ये कोशिश शुरू की थी कि वो किले को बेहतर तरीके से जान सके। इसी खोजबीन के तहत उसे कई ऐसे दिलचस्प कमरे मिले जिनसे उसे अपने चाचा की पसंद और झुकाव का अंदाजा हुआ।

लेकिन दो हफ्ते पहले उसे कुछ ऐसा मिला जिसकी उसे दूर—दूर तक कोई उम्मीद नहीं थी। किले की पांचवीं मंजिल पर छत के ठीक नीचे एक कमरा था। कमरे में अपने आप में कोई विशेष बात नहीं थी और लगता था कि इसका इस्तेमाल सामान भंडार घर के तौर पर होता था, क्योंकि उसमें पैकिंग वाले कागज में लपेटकर बड़े—बड़े पैकेट और गत्ते के डब्बे रखे थे।

विजय को उत्सुकता हुई ये जानने कि इन गत्ते के डब्बों में क्या हैं, लेकिन जो चीज उसे मिली, उसके लिए वो बिलकुल तैयार नहीं था।

कमरे में रखी कुछ चीजें तो उसके माता—पिता की थीं, जो एक कार हादसे में तब मारे गए थे जब विजय पंद्रह साल का था। उसने अपने चाचा से सुना था कि कैसे एक ट्रक तेज

रफ्तार में उस कार से आकर सीधे टकरा गया था जिसमें उसके माता—पिता थे। दोनों की मौत घटनास्थल पर ही हो गई थी। विजय उस वक्त उनके साथ इसलिए नहीं था क्योंकि अंतिम मिनटों में ही किसी वजह से उसे रुक जाना पड़ा था, और जो वजह वो अब भूल चुका था। लेकिन इसने उसकी जिंदगी बचा दी थी।

उसने गत्ते के कुछ डब्बों की जांच करने के बाद यह जान लिया था कि उसके चाचा ने उसके माता—पिता के निजी सामानों को पैक कर किले में मंगा लिया था, जहां इस कमरे में ये सामान इतने सालों से रखे थे।

अचानक, अपने पिता के कागजों और मां की डायरी को देखकर उसे उन दोनों की याद आने लगी। उसके चाचा ने उसकी अच्छे से परवरिश की थी, उसे आगे की पढ़ाई के लिए एमआईटी भेजा था और कभी भी उसे अनाथ की तरह महसूस होने नहीं दिया था। और विजय ने पहले खुद को पढ़ाई में, और फिर काम में, व्यस्त कर लिया था, ताकि उस दुखद घटना की यादें उसके दिमाग से चली जाएं।

लेकिन जब अभी उसने अपने माता—पिता की चीजें देखीं तो उसे उनकी कमी महसूस होने लगी, खासतौर पर इसलिए भी कि अब उसके चाचा भी इस दुनिया में नहीं रहे।

विजय ने उस पल तय कर लिया कि वो सभी गत्ते के डब्बों की छानबीन करेगा और अपने माता—पिता की हर याद को जिएगा। वो अपने माता—पिता को बहुत कम जानता था, क्योंकि जब वो बड़ा हो रहा था और उन्हें बेहतर तरीके से जान रहा था, तभी उसने उन्हें खो दिया था। वो जानता था कि उसके माता—पिता दोनों इतिहासकार और शोधकर्ता थे और आर्कियालॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के साथ काम कर रहे थे, लेकिन उसे इससे ज्यादा कुछ याद नहीं था। वो किशोरावस्था के दौरान प्यार और फटकार के जरिए मजबूत होने वाले अनमोल रिश्ते को खो चुका था और अब शायद इस कमरे की चीजें उसे उसके माता—पिता के करीब लाने में मददगार हो सकें, भले ही वो अब इस दुनिया में नहीं हैं।

उसके बाद से हर रात, वो उस कमरे में एक या दो घंटे बिताता था, गत्ते के डब्बों की चीजों को छांटता था, उसमें रखे दस्तावेजों और डायरी को पढ़ता था और अपने माता—पिता के जानने की कोशिश करता था, जिस चीज का ख्याल उसे अपने किशोरावस्था के दौरान कभी नहीं रहा।

उसने एक मेज पर रखे लैंप के स्विच ऑन किया जिसे उसने इस कमरे में इसी मकसद से रखा था, और मेज पर जमा किए गए दस्तावेजों को जांचने लगा।

क्या आज की रात कुछ नया खुलासा होगा, जो पिछली रातों में नहीं हो सका था?

11

दूसरा दिन

खुफिया ब्यूरो मुख्यालय, नई दिल्ली

इमरान ने वीडियो कैमरे में देखा और फिर उसका एंगल ठीक किया, वो वीडियो कॉन्फ्रेंस में पैटरसन के जुड़ने का इंतजार कर रहा था। स्पेशल टास्क फोर्स का ये अगुआ चिढ़कर और संदेह के साथ उससे बातें कर रहा था, जब कुछ घंटे पहले उन्होंने उसे फोन किया था। इमरान ने उसे वॉशिंगटन में सुबह—सुबह जगा दिया था, इस बात से भी वो चिढ़ गया था। लेकिन इमरान का मानना था कि ये चीज ज्यादा इंतजार नहीं कर सकती। वो चाहता था कि जो शुरुआती सबूत उनके हाथ लगे हैं, उनके आधार पर जांच तेज की जाए। और, अगर इसके लिए इंडो—अमेरिकी टास्क फोर्स के लीडर को आधी रात में भी जगाना पड़े तो ये उचित है।

लेकिन जब पैटरसन ने इमरान का ईमेल देखा, उसने अपना मन बदल लिया था। ईमेल मिलने के एक घंटे के भीतर ही उसने वीडियो कॉन्फ्रेंस के लिए हामी भर दी थी।

टेलीविजन स्क्रीन झिलमिलाई और स्क्रीन के आधे हिस्से को ढकते हुए एक बॉक्स में पैटरसन का सख्त चेहरा उभर आया। दूसरे आधे हिस्से में एक दुबले—पतले शख्स का चेहरा दिख रहा था, जिसके सिर पर सफेद बाल तेजी से गायब हो रहे थे। इमरान जानता था कि वो कौन है। वो व्यक्ति था डॉक्टर हैंक रॉयसन, जो सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन के वॉशिंगटन दफ्तर में काम करता था। कॉन्फ्रेंस की पुष्टि करने वाले ईमेल में पैटरसन ने संकेत दिया था कि रॉयसन भी उन लोगों के साथ जुड़ेगा।

‘सुप्रभात,’ इमरान ने दोनों अमेरिकियों का अभिवादन किया।

‘सुप्रभात,’ एक लय में दोनों ने जवाब दिया।

‘डॉक्टर रॉयसन, इतने कम वक्त में हमारे साथ जुड़ने के लिए आपका धन्यवाद,’ पैटरसन सीधे मुद्दे पर आ गया। ‘उस रिपोर्ट पर आपको क्या कहना है, जो किदवई ने हमें भेजी है।’

रॉयसन ने अपना गला साफ करते हुए बोलना शुरू किया, ‘सबसे पहले तो आपको ये

समझना होगा कि रिपोर्ट बेहद शुरुआती है और इसके आधार पर कोई निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता। टॉक्सिक और डीएनए की ब्यौरेवार रिपोर्ट आने में थोड़ा वक्त तो लगेगा ही। हमारे पास शुरुआती टॉक्सिकोलॉजी रिपोर्ट और पॉलिमरेज चेन रिएक्शन टेस्टिंग या पीसीआर टेस्टिंग के नतीजे हैं, जो डीएनए टार्गेट सिक्वेंस को बड़ा करके दिखाता है।'

'हम जानते हैं पीसीआर टेस्टिंग क्या होती है,' पैटरसन ने बीच में ही उसकी बात काट दी। 'हम जानना चाहते हैं कि जो रिपोर्ट आपको भेजी गई है, उसके बारे में आपको क्या कहना है।'

रॉयसन कैमरे में थोड़ी नाखुशी से देखते हुए बोला, 'मुझे संदेह था कि मिस्टर किदवई इस बारे में जानते हैं या नहीं।'

इमरान ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, 'मैंने इसका कुछ अनुमान रिपोर्ट देखकर लगा लिया था, और मैंने गूगल पर भी इसके बारे में जानकारी ली थी। लेकिन आपने इतना सोचा, इसके लिए आपका शुक्रिया।' उसने सोचा कि उसे पैटरसन के कड़वेपन को थोड़ा कम ही तो करना है।

रॉयसन ने नाक चढ़ाई। 'तो बताता हूं, लेकिन ये थोड़ा जटिल है। वैसे मैं अंदाज से ही बता रहा हूं——हमें एक अपरिचित बैक्टीरिया और एक अनजान रेट्रोवायरस मिले हैं। दोनों सभी नमूनों में मौजूद हैं।' उसने फिर से कैमरे में देखा। 'सीडीसी उन सभी नमूनों का परीक्षण खुद करेगा जो आपने हमें भेजे हैं और फिर हम नतीजों की सत्यता प्रमाणित करेंगे। लेकिन मैं इस बात का भरोसा दिलाना चाहता हूं कि इसमें कोई बड़ी त्रुटि नहीं है।' उसने नीचे देखा, संभवतः वो रिपोर्ट्स देख रहा था, और फिर कैमरे में देखा।

'सचमुच यह अजीब है। बैक्टीरिया ने मजबूत बायोफिल्म बना ली हैं, जिनमें कोशिकाएं चारों तरफ से मैट्रिक्स के पदार्थ से घिरी हुई हैं, जो उन्हें इम्यून रिस्पॉन्स से बचाते हैं। शुरुआती टॉक्सिकोलॉजी रिपोर्ट से संकेत मिलता है कि ये बैक्टीरिया कई तरह के जहरीले पदार्थ उगल रहे थे जिनसे मौत होनी तय है।' उसने अब इमरान को संबोधित किया। 'मिस्टर किदवई, आपको ये सैंपल कहां से मिले?'

इमरान ने पिछली रात की सारी घटनाएं सुना डालीं। 'ये सैंपल हमने उस बिल्डिंग में मिली लाशों में से लिए हैं,' और अपनी बात खत्म करते हुए कहा। 'और, ये डाटा हमने हार्ड डिस्क से रिकवर किए हैं, मेरा अनुमान है आपने उन्हें देखा होगा कि उनमें जो मेडिकल हिस्ट्री है, उसमें वही सूचनाएं हैं, जो इन रिपोर्ट्स में हैं।'

रॉयसन ने सहमति में सिर हिलाया। 'हां, बिलकुल। आपने जो मेडिकल हिस्ट्री भेजी है, वो इन रिपोर्ट से बिलकुल मेल खाती हैं। और कुछ मेडिकल फाइल तो उन लोगों की हैं जिनकी मौत संक्रमण की वजह से हुई है। दिलचस्प बात यह है कि मेडिकल फाइलों के मुताबिक सभी मामलों में मौत बैक्टीरिया के संक्रमण के कम से कम चार—पांच सालों बाद हुई। ऐसा लगता है, मरीजों को संक्रमित करने के बाद बैक्टीरिया सुप्त हो गए, शायद कोशिकाओं के इम्यून रिस्पॉन्स की वजह से जिससे संक्रमण रुक तो गया लेकिन खत्म नहीं

हो सका क्योंकि बैक्टीरिया बायोफिल्म से घिरे थे। साफ है कि बैक्टीरिया में ये क्षमता थी कि वो मानव प्रोटीन्स से चिपक सकें या उनमें बदलाव कर सकें, जिससे उन्हें धीरे—धीरे फलने—फूलने की ताकत मिल जाए, लेकिन उसका कोई बाहरी रोग संबंधी लक्षण ना दिखे।'

इमरान ने धीरे—धीरे कहा, 'मुझे इस समझने दें। आप कह रहे हैं कि इन लोगों को बैक्टीरिया ने चार—पांच साल पहले संक्रमित किया था। किसी तरह ये बैक्टीरिया मानव प्रोटीन्स से बंध गए, जिससे उन्हें लंबी अवधि में फलने—फूलने की ताकत मिल गई। साथ—साथ उन्होंने बायोफिल्म बना ली जिससे उन्हें कोशिकाओं के इम्यून रिस्पॉन्स या सीएमआई से सुरक्षा मिल गई, और इसलिए उन्होंने संक्रमण का कोई लक्षण नहीं दिखाया।'

'बिलकुल सही।' रॉयसन पहली बार मुस्कुराया, जिससे धूम्रपान के दाग लगे उसके दांत दिखने लगे। 'और तब, अचानक किसी वजह से, शायद सीएमआई के कमजोर पड़ने या किसी और कारण से, बैक्टीरिया की रोग पैदा करने की ताकत सक्रिय हो गई जिससे उनका जहर शरीर में फैलने लगा और इससे तेज बुखार और कंपकंपी, बहुत ज्यादा प्यास लगने और पसीना आने, पेट में तेज दर्द, कमजोरी बढ़ने जैसे लक्षण पैदा हो गए, जिसके बाद कमजोरी, चिड़चिड़ापन, आवाज गायब हो जाने और लकवे जैसी बीमारियां हो गईं। इन लक्षणों के दिखने के कुछ ही दिनों में उनकी मौत हो गई।'

इमरान ने इस जानकारी को स्वीकार करने में कुछ सेकेंड लगाए।

पैटरसन बोल पड़ा। 'ऐसा लगता है कि तुम सही हो, किदवई। ये मुमकिन है कि क्लीनिकल ट्रायल इन गरीब लोगों पर किए जा रहे हों ताकि पता लगाया जा सके कि बैक्टीरिया कितने लंबे समय तक सुप्त रह सकते हैं।'

'जैविक आतंकवाद,' इमरान ने गहरी सांस लेते हुए कहा। उसे यह यकीन करने में अभी भी दिक्कत हो रही थी कि कोई कैसे इंसानों का इस्तेमाल इतने संवेदनहीन तरीके से कर सकता है।

'हमें इतनी जल्दी किसी नतीजे पर नहीं पहुंचना चाहिए ना?' रॉयसन एक उंगली ऊपर उठाते हुए बीच में ही बोला। 'मौजूदा रोगाणुओं की डीएनए सिक्वेंसिंग और उनके जीन बैंक की जांच करने की जरूरत होगी, ताकि पता लग सके कि क्या ये कोई नया बैक्टीरिया है या इसका मौजूदा प्रजातियों से कोई संबंध है। इस संक्रमण को फैलाने वाले जीवाणुओं के बारे में पता लगाने के लिए और परीक्षण करने की जरूरत होगी।'

पैटरसन ने इनकार में सिर हिलाते हुए कहा। 'निश्चित तौर पर, लेकिन हमारे पास इतने सबूत तो हैं ही कि टास्क फोर्स इस मामले को प्राथमिकता दे। इसी चीज के लिए तो टीम बनाई गई है।'

'वायरस के बारे में क्या पता लगा?' इमरान ने पूछा, अचानक उसे याद आया कि रॉयसन ने किसी वायरस का भी जिक्र किया था।

रॉयसन अपना सिर खुजाते हुए बोला, 'वो एक और अजीब चीज है।' वो अपने कागजों

को देखने के लिए थोड़ी देर रुका। 'हम रेट्रोवायरस के बारे में ज्यादा कुछ नहीं जानते। चौंकाने वाली बात यह है कि वायरस से संक्रमण के कोई दुष्प्रभाव नहीं दिख रहे। हार्ड ड्राइव में जो मेडिकल फाइलें हैं, उनमें भी वायरस के बारे में कोई जानकारी नहीं है। इस बारे में कुछ भी शर्तिया तौर पर कहने के पहले हमें पूरी जांच का इंतजार करना होगा।'

'ठीक है,' इमरान ने अपने दस्तावेजों को समेटते हुए कहा। उसके लिए अब यह कॉन्फ्रेंस खत्म हो चुकी थी। उसे दूसरे काम भी थे। 'दोस्तों, जैसे ही सीडीसी के नतीजे आएं, मुझे वो उपलब्ध कराएं। वैसे हमने सिएटल में टाइटन से बात की है और उनका दावा है कि उन्हें नई दवाओं पर हो रहे वैध क्लीनिकल ट्रायल के अलावा किसी चीज की जानकारी नहीं है। और बिल्डिंग के मालिक का कहना है कि उसने सिर्फ इसे टाइटन को किराये पर दिया था और उसका इसमें हो रहे कामकाज से कोई लेना—देना नहीं है। ऐसा लगता है कि कोई यहां से निजी हैसियत से कामकाज कर रहा था।'

पैटरसन सोचने की मुद्रा में तो रॉयसन हक्का—बक्का सा दिख रहा था। 'सिएटल वाले मामले पर काम करने के लिए मैं कुछ लोगों को यहां लगाता हूं,' पैटरसन ने वादा किया। 'अगर दोनों मामलों में कोई संबंध है, तो हम पता लगा लेंगे।'

इमरान ने सहमति में सिर हिलाया, उसका चेहरा कठोर था। 'हम पता लगाएंगे, आपका दिन शुभ हो, दोस्तों।'

दोनों अमेरिकियों ने भी सिर हिलाकर अभिवादन का जवाब दिया और टेलीविजन स्क्रीन से दोनों गायब हो गए।

इमरान अपनी कुर्सी में पीछे की ओर धंस गया। उसके दिमाग का पहिया तेजी से घूम रहा था और वो तय करता जा रहा था कि उसे कब—कब क्या—क्या करना है। ये मामला अब तक उसके पास आए सबसे मुश्किल मामलों में था। लेकिन एक चीज साफ दिख रही थी।

भारत में जैविक आतंकवादी मौजूद हैं।

और वो ये नहीं जानता कि उन्हें ढूंढ़ने के लिए शुरुआत कहां से की जाए।

जौनगढ़ किला

विजय बैठा हुआ था और उस फाइल को देखकर उलझन में था जो उसने दस मिनट पहले निकाली थी। फाइल के लेबल ने उसकी उत्सुकता बढ़ा दी थी। लेबल पर बस इतना लिखा था: '???'

स्वाभाविक था कि गत्ते के डिब्बे में फाइलों के ढेर में से वो उसी फाइल को निकालता और उसके पन्ने पलटता। सभी कागज या तो उसके पिता के लिखे नोट्स थे या अखबार में छपे लेख की कतरन, जो देश में जगह—जगह हुई पुरातात्विक खुदाई से संबंध रखते थे।

फाइल में इन रिकॉर्ड्स का कोई संदर्भ नहीं था, सिर्फ आंकड़े थे। यह बिलकुल वैसा था जैसे उसके पिता ने इन खुदाई से जुड़े आंकड़ों को गूगल किया हो या विकीपीडिया पर ढूंढ़ा हो और जो जानकारी मिली, उसे एक जगह रख दिया हो। अंतर इतना था कि जब ये फाइल बनाई गई थी, विकीपीडिया का वजूद नहीं था, और पेज और ब्रिन उस वक्त कैलिफोर्निया के एक गैराज से ही काम कर रहे थे।

आखिर उसके पिता क्या सोच रहे थे जब वो इन पन्नों की फाइल बना रहे थे? साफतौर पर इतनी जानकारी जुटाने के लिए काफी मेहनत लगी होगी।

विजय को इस बारे में कुछ समझ नहीं थी। उसने कागजों को पढ़ना शुरू किया, वो कोशिश में था कि वो अपने पिता की सोच को लेकर कोई सुराग ढूंढ़ सके, वो समझना चाहता था कि आखिर ये जानकारी इतनी अहम क्यों थी कि इन्हें इस तरीके से दर्ज किया गया है।

जितना ज्यादा वो पढ़ता गया, उतनी ज्यादा उसकी उलझन बढ़ती गई। इतने बड़े प्रयास के पीछे कुछ तो जरूर था।

लेकिन क्या था वो?

12

तीसरा दिन

जौनगढ़ किला

विजय बैठा था और उस विचित्र फाइल में तल्लीन था जो उसने कुछ घंटे पहले ढूंढ़ी थी। फाइल की विषय वस्तु दिमाग को चकरा देने वाली थी। फाइल के दस्तावेजों में आपस में कोई संबंध नहीं दिख रहा था, लेकिन शायद उसे वो संबंध तब तक ना दिखे, जब तक उसे यह पता ना चल जाए कि आखिर ये फाइल बनाई ही क्यों गई है।

तभी उसका मोबाइल फोन बज उठा और वो चौंक सा गया। घड़ी में सुबह के 3 बज रहे थे। इस समय कोलिन उसे फोन क्यों कर रहा था? और वो भी तब, जब वो तो किले में ही है।

उसने कोलिन को डांटने के अंदाज में कहा, 'तुमने तो मुझे चौंका दिया।'

कोलिन ने भी मसखरेपन के साथ जवाब दिया, 'भगवान का शुक्र है, मैं तो घबरा गया था कि तुम इस वक्त मेरे फोन का इंतजार कर रहे थे।'

विजय मुस्कुराया। 'और इस वक्त तुमने मुझे फोन क्यों किया है?'

एक पल के लिए कोई कुछ नहीं बोला। फिर कोलिन का जवाब आया, 'मुझे लगता है कि तुम्हें नीचे आकर खुद देखना चाहिए।'

'बैठक में?'

'हां, वक्त ना गंवाओ।'

जय ने फाइल बंद की और कमरे के दरवाजे पर ताला लगा दिया। इस कमरे को ढूंढ़ने के बाद से उसने इसकी चाभी अपने पास ही रखी थी, यहां तक कि एक और चाभी बनवाकर उसे एक ऐसी सुरक्षित जगह छिपाकर रख दी थी, जो सिर्फ उसे पता थी। उसे एक सुनहरा मौका मिला था, अपने माता—पिता को जानने—समझने का, और वो इसे गंवाना नहीं चाहता था।

कभी—कभी आपको तब तक उस चीज की अहमियत नहीं पता चलती है जब तक आप उसे खो नहीं देते।

यह रात हैरत से भरी साबित हो रही थी। जैसे ही वो बैठक में पहुंचा, वो जम सा गया। ऐसा लगा जैसे उसने भूत देख लिया हो। वो अपनी आंखों पर यकीन नहीं कर पा रहा था।

धीरे—धीरे उसने खुद को संभाला और कमरे के अंदर आ गया। लेकिन वो अभी भी तय नहीं कर पा रहा था कि वो क्या प्रतिक्रिया दे।

कोलिन ने अपने दोस्त का चेहरा पढ़ लिया था लेकिन कुछ कहा नहीं।

'हाय, विजय', एलिस संकोच के साथ चमड़े के सफेद सोफे से उठते हुए बोली, जिस पर वो कोलिन के साथ बैठी थी। वो खुद भी संदेह में थी।

विजय ने कोई जवाब नहीं दिया। उसके जबड़े भिंचे हुए थे, भौंहों पर शिकन थी। उसने इस चीज की तो उम्मीद बिलकुल ही नहीं की थी। उसने अतीत की यादों को अपने दिमाग में कहीं गहरे दबा दिया था और सोचा था कि वो अब कभी दोबारा सामने नहीं आएंगी। फिर भी, आज, वो उसी तरह ताजा हो गई थीं, जैसे आज से ग्यारह साल पहले थीं। और इन यादों के साथ जो जज्बात जुड़े थे, उन्होंने उसे विचलित कर दिया। इन यादों को वो कभी दोबारा जीना नहीं चाहता था, लेकिन अभी उसे यही करना पड़ रहा था।

अंततः उसकी आवाज निकली। 'सुबह के तीन बज रहे हैं अभी।' वो उदासीन बनने की कोशिश कर रहा था। 'तुम यहां क्यों आई हो? तुमने कहा था कि तुम मेरे साथ कभी कोई संबंध नहीं रखोगी। अब क्या बदल गया है?'

एलिस कुछ बोल पाती, इसके पहले ही कोलिन बोल पड़ा, 'वो मुसीबत में है, उसे तुम्हारी मदद की जरूरत है।'

इस सफाई से भी विजय का ठंडापन खत्म नहीं हुआ।

'विजय, उसकी जिंदगी खतरे में है। हमें उसकी मदद करनी चाहिए,' कोलिन ने दोबारा समझाने की कोशिश की।

बहुत कोशिश करके विजय ने अपनी भावनाओं को दबाया। 'अमेरिका से तुम इतनी दूर आई हो,' धीरे—धीरे उसने कहा। 'अगर तुम यहां मदद के लिए आई हो, तो इसका मतलब है कि तुम जरूर किसी मुसीबत में हो।'

एलिस ने उसकी तरफ देखा। पुराने जख्म फिर से हरे हो गए। उसने उन्हें भूलने की कोशिश की थी, लेकिन वो अभी भी अंदर कहीं मौजूद हैं। 'विजय, मैं जानती हूं तुम कैसा महसूस कर रहे हो, और मैं सच कह रही हूं कि मैं यहां नहीं आती अगर मेरे पास कोई दूसरा रास्ता होता। लेकिन मेरे पास और कोई रास्ता नहीं है।'

विजय ने अपनी आवाज को सामान्य रखने की कोशिश करते हुए पूछा, 'क्या हुआ?'

एलिस ने ग्रीस की अपनी पूरी आपबीती उसके सामने बयान कर दी। जब वो डैमन की हत्या, मार्को की मौत और हाइवे पर उसके भागने की घटनाएं बता रही थी, उसकी आवाज कांप रही थी। उसने अपनी बात खत्म करते हुए कहा, 'मैं अमेरिका वापस नहीं जा सकती

थी। मैं कहीं भी जाती, वो मुझे ढूंढ़ लेते। मुझे कहीं और जाना था। लेकिन मैं अमेरिका के बाहर किसी और को नहीं जानती जिस पर मैं भरोसा कर सकूं। कुर्त वॉलेस के दिल्ली के लोगों ने मुझे यहां तक पहुंचने के लिए एयरपोर्ट से कार दी। उसने कहा कि यही इकलौता तरीका है जिससे उस पर कोई नजर नहीं रख पाएगा। प्राइवेट जेट, प्राइवेट कार। कागजी या इलेक्ट्रॉनिक निशानी, कुछ नहीं।'

उसने विजय की तरफ देखा, इस बात की कोशिश करते हुए कि वो उसकी प्रतिक्रिया पहचान सके। यह साफ था कि विजय पर उसकी कहानी का असर हुआ था।

कोलिन ने चुप्पी तोड़ते हुए कहा, 'क्या विजय, उसे रहने के लिए जगह की जरूरत है। उसकी जिंदगी खतरे में है। तुम्हारे पास, किले में पचास कमरे तो होंगे ही? जब तक यह झंझट खत्म नहीं हो जाता, तब तक क्या वो यहां नहीं रह सकती?'

विजय ने पहले उसे देखा और फिर एलिस की तरफ मुड़ा। 'तुम्हें एक चीज समझनी होगी,' उसकी आवाज में गंभीरता थी। 'मैं चाहता हूं कि हम दोनों के मन में इस चीज को लेकर कोई दुविधा ना हो। मैं आगे बढ़ गया हूं। मेरी सगाई हो गई है। तुम और मैं——अब अतीत हैं। मैं इस अतीत को अपने और राधा के बीच में नहीं लाना चाहता।'

कोलिन ने एलिस की मदद करने के अंदाज में उससे कहा, 'राधा उसकी मंगेतर है।'

एलिस ने सहमति में सिर हिलाया। वो इससे ज्यादा की उम्मीद भी नहीं कर रही थी। कुछ भी हो, वो यहां सुरक्षित महसूस कर रही थी। भले ही वो कभी भारत नहीं आई थी, वो जानती थी कि वो अपने दोस्तों के बीच है।

'किले की सुरक्षा के लिए हमने एक सिस्टम बना रखा है,' विजय ने बोलना जारी रखा। 'जब तक तुम यहां रहती हो और बाहर नहीं निकलती हो, कोई तुम्हें ढूंढ़ नहीं सकता।' ऐसा कहते हुए उसे एकाएक पिछले साल उसके चाचा के साथ हुई घटना का ख्याल आया, लेकिन उसने अगले ही पल उसे अपने दिमाग से निकाल दिया। उसके बाद से किले की सुरक्षा प्रणाली को सुधार दिया गया है।

'शुक्रिया विजय,' एलिस ने जवाब दिया। 'मैं इस मदद के लिए दिल से तुम्हारी शुक्रगुजार हूं।'

विजय ने मुस्कुराने की कोशिश की। वो जान—बूझकर अपनी भावनाओं को दूर रखने की कोशिश कर रहा था। 'मुझे तुम्हारी मदद कर हमेशा खुशी होगी। कोलिन, क्या तुम एलिस को एक गेस्ट रूम में ले जाओगे। कोई भी चुन लो। ठीक है, अब मुझे सोने की जरूरत है। राधा कल यहां आ रही है और मैं नहीं चाहता कि जब वो यहां आए तो मैं सोता रहूं।' उसने कोलिन की तरफ देखा। 'और सुबह हमें इमरान से भी मिलना है।'

कोलिन ने सहमति जताई और विजय कमरे से बाहर निकल गया।

कोलिन एलिस की तरफ मुड़ा। 'कोई दिक्कत तो नहीं हुई ना?'

एलिस ने पूछा, 'मुझे राधा के बारे में बताओ, कैसी है वो?

कोलिन की त्यौंरी पर बल पड़ गए। चीजें उतनी आसान नहीं होने वाली जितना उसने सोचा था।

13

जौनगढ़ किला

विजय जैसे ही किले के डाइनिंग रूम में घुसा, उसकी भौंहें चढ़ गईं। कोलिन और एलिस नाश्ता कर रहे थे। गलत समय, राधा किसी भी पल यहां पहुंच रही होगी। उसने दोनों का अभिवादन किया, 'सुप्रभात'।

कोलिन ने उसकी तरफ देखकर बनावटी मुस्कुराहट दी, बिलकुल चेशर बिल्ली की तरह, और अब तक विजय इस मुस्कुराहट का आदी हो चुका था। लेकिन एलिस नाश्ते की मेज से ही उसकी तरफ देखकर मुस्कुरा रही थी; विजय को फिर से खुद को शांत रखने की कोशिश करनी थी।

'तुम्हें ठीक से नींद आई?' उसने एलिस से पूछा, लेकिन इस सवाल में लगाव से ज्यादा विनम्रता थी। हालांकि कल रात की बातचीत की कुछ बातें उसके दिमाग में रह गई थीं।

एलिस ने सिर हिलाते हुए कहा, 'हां, तुम्हारी नींद पूरी हुई?'

विजय ने जवाब नहीं दिया। उसके दिमाग में वो बात घूम रही थी जो एलिस ने पिछली रात बताई थी।

'तुमने कहा था कि तुम्हें मकबरे में हाथी दांत का एक घनाकार टुकड़ा मिला था,' मसाला ऑमलेट और पराठा खाते हुए उसने कहा।

एलिस चौंक गई। उसने नहीं सोचा था कि ग्रीस में उसके साथ हुई घटनाओं में से कुछ भी विजय को याद रही होंगी, खासतौर पर उन हालातों को देखते हुए जिनमें पिछली रात उनकी बातचीत हुई थी।

'हां,' उसने जवाब दिया। 'उस पर नक्काशी भी की हुई थी।'

'और जब मार्को तुम्हारे पास आया तो उसने तुम्हें ये कहा कि डैमन चाहता है कि तुम उस क्यूब को अपने साथ होटल ले चलो।'

'बिलकुल सही।' एलिस समझ नहीं पा रही थी कि विजय जानना क्या चाहता है।

'और तुमने उस क्यूब का क्या किया?'

'मैंने उसे अपने बैकपैक में रख लिया।' और उसे बोलते—बोलते एकाएक जैसे झटका सा लगा। अपनी घबराहट और वहां से भागने की कोशिश में वो तो बिलकुल भूल ही गई थी

कि क्यूब अब भी उसके पास है, उसके बैकपैक में डिब्बे में सुरक्षित है, और जिसे वो अपने साथ लेकर भारत आ गई है।

'और वो वही क्यूब चाहते थे,' विजय ने फुसफुसाते हुए कहा।

एलिस ने सहमति में सिर हिलाया। दो रात पहले की तस्वीरें उसके दिमाग में कौंध उठीं। 'वो मेरे पीछे थे क्योंकि मैंने मकबरा देखा था। मार्को के पास कुछ नहीं था। लेकिन वो हमारे साथ मकबरे में था। इसलिए उन लोगों ने उसे भी मार डाला। वो उन सभी लोगों को मार डालना चाहते थे जो उस जगह उस शाम मौजूद थे।'

विजय कुछ सोचने लगा। 'तुमने अपने लैपटॉप और कैमरे का क्या किया?'

'मैंने उन्हें होटल के कमरे में ही छोड़ दिया।'

'यानी उनके पास सभी कलाकृतियों की तस्वीरें होंगी।' विजय जैसे उलझ सा गया। 'लेकिन उससे कुछ साफ तो होगा नहीं।'

एलिस ने अपनी आंखें बड़ी करते हुए कहा, 'नहीं, उनके पास नहीं होंगी। मुझे लैपटॉप में फोटोग्राफ अपलोड करने का वक्त ही नहीं मिल पाया था। मैंने सोचा था कि मैं यह काम बाद में करूंगी, इसलिए मैंने मेमरी स्टिक निकालकर अपने पास रख लिया था। वो मेरे पास अभी भी है।'

विजय ने अपनी जांघ पर जोर से थपकी दी। 'यानी ये क्यूब ही है, इसकी दो वजहें हैं। पहली कि क्यूब ही वो कलाकृति है जो वहां से गायब है। और चूंकि उनके पास फोटोग्राफ भी नहीं हैं, उन्हें असली क्यूब चाहिए। ठीक है?'

'सही कहा,' एलिस ने धीरे से कहा, वो अभी भी समझ नहीं पा रही थी।

'दूसरी बात, तुमने कहा था कि तुम्हें वो क्यूब बिलकुल अंत में टैबलेट और मूर्तियों के पीछे छिपा मिला था, और तब तक डैमन मकबरे से बाहर जा चुका था।'

'बिलकुल सही।' एलिस को अब समझ में आया कि विजय क्या कहना चाह रहा है।

'तो तुम यह नहीं समझ पा रहे हो कि जब डैमन ने उसे देखा ही नहीं तो उसे उसके बारे में पता कैसे चला। ये मुमकिन है कि जब वो छिपे कमरे में कलाकृतियों की जांच कर रहा था, उसने उसे देख लिया होगा। '

विजय ने इनकार में सिर हिलाया। 'नहीं, यह बात नहीं है। मैं तुम्हें बताता हूं। को—डायरेक्टरों ने ये आदेश दिया था कि सभी कलाकृतियों को हटाकर बाहर बनी झोपड़ी में रखा जाए, ठीक है ना?'

'हां।'

'तो तुम्हें डैमन ने सिर्फ क्यूब को होटल लेकर आने के लिए क्यों कहा? क्यूब इतना अहम क्यों है? और इससे भी ज्यादा बड़ी बात, मार्को ने तुम्हें बताया था कि स्तावरोस ने डैमन को इसलिए डांटा था कि उसने तुम्हें क्यूब लेकर आने को कहा था। स्तावरोस के

मुताबिक डैमन को उसे खुद लेकर आना चाहिए था। इसका मतलब ये है कि डैमन को बताया जा चुका था कि क्यूब बेहद अहम है और उसे होटल लाया जाना है। अब सवाल यह है कि स्तावरोस या पीटर, या फिर किसी और को, यह कैसे पता कि क्यूब मकबरे में था जबकि उनमें से कोई वहां उसे देखने के लिए मौजूद नहीं था?'

एलिस ने इस पर थोड़ी देर सोचा। 'ये मुमकिन है कि डैमन ने उन्हें क्यूब के बारे में बताया हो और उसे कहा गया हो कि इसे लेकर होटल आ जाओ।'

'मैं ऐसा नहीं सोचता,' विजय ने अपना तर्क दिया, 'तुम्हारी बात मानने के लिए कई संयोगों को मानना होगा। पहला, डैमन ने तुम्हारे ढूंढ़ने के पहले ही क्यूब को देख लिया था। इस बात की संभावना कम है। और, इस बात की संभावना भी बेहद कम है कि डैमन ने स्तावरोस को इसके बारे में बताया होगा और उसे सिर्फ वही कलाकृति लाने को कहा गया होगा, जब तक कि उसके साथ कोई खास अहमियत ना जुड़ी हो। और वो लोग सिर्फ क्यूब को क्यों देखना चाहते थे? मकबरे की किसी और कलाकृति को क्यों नहीं? अंत में निष्कर्ष यही है कि सिर्फ क्यूब ही वो कलाकृति है जो उनके पास नहीं है, और इसकी कोई तस्वीर भी उनके पास नहीं है, इसलिए वो सिर्फ क्यूब के पीछे पड़े हैं।'

'मुझे नहीं मालूम,' एलिस ने जवाब दिया। 'तुम सही हो सकते हो। तुम्हारे तर्कों में दम है। क्यूब एक पहेली की तरह था, लेकिन इसमें ऐसा कुछ खास नहीं था, सिवाय इसके कि यह हाथी दांत का बना था और इस पर कुछ अस्पष्ट सी नक्काशी की हुई थी।'

'मकबरे में रखे हाथी दांत के एक क्यूब को लेकर इतनी मारधाड़ क्यों होगी?' कोलिन ने ताज्जुब किया। 'वैसे, यह मकबरा किसका था?'

एलिस उसकी तरफ देखकर मुस्कुरा दी। 'मैं तुम्हैं इस खुदाई के पीछे की कुछ बातें बताती हूं जिससे तुम्हें यह समझ में आ जाएगा कि हम वहां क्या ढूंढ़ रहे थे।'

कोलिन ने उसे टोकते हुए कहा, 'दोस्तों, अगर हम पुरातात्विक अवशेषों और मकबरों जैसी चीजों की बात कर रहे हैं, तो क्या हम कहीं ज्यादा आरामदायक जगह पर जा सकते हैं? मुझे मालूम है कि ऐसी चर्चाएं कैसा रूप लेती हैं और मैं खाने की मेज पर वैसी स्थिति में नहीं पड़ना चाहता।'

विजय ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, 'बिलकुल, स्टडी रूम में चलें?'

'बहुत बढ़िया,' कोलिन ने कहा। उसे स्टडी रूम बहुत पसंद था जिसे विजय के चाचा ने किले में अपने लिए बनाया था। 'सूरज चढ़ आया है इसलिए उम्मीद है कि कमरे में अच्छा उजाला होगा।'

वो लोग स्टडी रूम की तरफ चल दिए और कांच की कॉफी टेबल के इर्द—गिर्द बैठ गए, जो एक कोने में रखी थी और उसके पास ही दीवार पर एलसीडी टेलीविजन लगा था।

एलिस ने शुरुआत की, 'मुझे अठारह महीने पहले वॉलेस आर्कियालॉजिकल ट्रस्ट की तरफ से बुलाया गया था और मुझे इस खुदाई की टीम का प्रमुख सदस्य नियुक्त किया गया

था।' उसने कमरे में मौजूद दोनों पुरुषों की तरफ देखा। 'तुम लोग मैसिडॉन के सिकंदर तृतीय के इतिहास के बारे में कितना जानते हो?'

'वो कौन है?' कोलिन ने चमड़े के सफेद कुशन के सहारे आराम से बैठते हुए पूछा। 'क्या सिकंदर महान से इसका कोई लेना—देना है?'

एलिस ने ठंडी सांस भरते हुए कहा, 'सिकंदर तृतीय ही सिकंदर महान था।'

कोलिन लज्जित सा होकर मुस्कुराते हुए बोला, 'सॉरी, इतिहास में मैं कभी अच्छा नहीं रहा।'

एलिस ने अपनी बात आगे बढ़ाई, 'खैर, कुर्त वॉलेस मुझे निजी तौर पर इस मिशन में किसी वजह से शामिल करना चाहता था। और चूंकि यूनानी इतिहास मेरी दिलचस्पी का विषय रहा है, मैंने इसके लिए हामी भी भर दी।'

'कुछ तो ऐसा जरूर होगा जो तुम इस मिशन के लिए तैयार हो गईं,' विजय ने कहा। 'मैं तुम्हें जानता हूं। जब तक तुम इसे लेकर जुनूनी नहीं रही होंगी, तुम इसमें शामिल नहीं होतीं।'

एलिस मुस्कुरा दी। इसलिए तो उसे विजय से प्यार हो गया था। पता नहीं कैसे, लेकिन वो उसे अच्छी तरह जानता था। लेकिन यह चल क्यों नहीं पाया?

उसने कुछ बोलने के लिए मुंह खोला ही था कि बटलर शिवजीत वहां आया। 'हुकुम, राधा मैम डॉक्टर शुक्ला के साथ आई हैं।'

राधा ने मुस्कुराते हुए कमरे में प्रवेश किया, उसके पीछे—पीछे डॉक्टर शुक्ला थे। उसने डांटने के स्वर में कहा, 'शिवजीत, तुम्हें हमारे बारे में मुनादी करने की जरूरत नहीं है।'

उसने जैसे ही एलिस को देखा, उसके कदम रुक गए और मुस्कुराहट गायब हो गई।

कोलिन ने जल्दी—जल्दी सबका परिचय एक दूसरे से कराया। वो जानता था कि राधा विजय पर कितना हक समझती है और इसलिए उसने इस बात का ख्याल रखा कि एलिस का परिचय वो विजय की पूर्व प्रेमिका की तरह ना दे। विजय को जब ऐसा करना होगा, वो खुद करेगा।

विजय उठा और शुक्ला से गले लगकर उनका अभिवादन किया। उसने बहुभाषाविद शुक्ला से कहा, 'मुझे खुशी है कि आप भी आए हो।'

'मैंने सोचा कि तुम लोगों के साथ कुछ समय बिताया जाए।' शुक्ला ने मुस्कुराते हुए कहा। 'मैं कोलिन से एक साल से नहीं मिला हूं।'

विजय राधा की तरफ मुड़ा और उसे चूमा। उसने मुस्कुराते हुए कहा, 'मैं तुम्हारा बेसब्री से इंतजार कर रहा था।'

राधा ने भी मुस्कुराहट के साथ जवाब दिया, 'मैं भी।'

वो सभी एक साथ सोफे पर बैठ गए और शुक्ला कोलिन के पास बैठ गए। विजय ने उन

लोगों को बताया, 'एलिस ग्रीस में एक डरावने तजुर्बे से गुजरी हैं, वो हमें उसी के बारे में बता रही थीं।'

राधा ने मुस्कुराते हुए कहा, 'बताओ, एलिस। मुझे ये सुनकर दुख हुआ लेकिन मैं भी जानना चाहूंगी कि हुआ क्या।'

एलिस ने भी राधा की तरफ मुस्कुराते हुए देखा और अपनी बात जारी रखी। 'कुर्त वॉलेस ने मुझे एक सुराग के बारे में बताया जो उनकी टीम को मिला था और जो प्राचीन ग्रीस के रहस्यों में से एक को सुलझा सकता था।'

'कुर्त वॉलेस एक अरबपति है जिसने खनन कार्य का खर्चा उठाया,' कोलिन ने राधा को समझाया, जिसने अपना सिर हिलाकर हामी भरी।

'और वो रहस्य क्या था?' शुक्ला की दिलचस्पी जाग उठी थी।

'फिलिप द्वितीय की पत्नी और सिकंदर महान की मां ओलिंपियास की कब्र। उसकी कब्र अटकलों का विषय रही है लेकिन ऐसा कोई सबूत नहीं था जो ये बताए कि कब्र है भी, इसकी जगह का पता लगाना तो दूर की बात थी।'

विजय को जैसे कुछ याद आया। ये नाम, ओलिंपियास, उसने कहीं पहले भी सुना है? और हाल ही में, शायद पिछले महीने या इसके आसपास ही। लेकिन सवाल का जवाब ऐसा था कि वो बाकी चीजों पर ध्यान नहीं दे सका। इसलिए उसने इतना ही कहा, 'वाह, ये तो बड़ी बात है।'

एलिस उसकी तरफ देखकर मुस्कुरा दी। 'मुझे नहीं मालूम कि तुम लोग यूनानी इतिहास के बारे में कितना जानते हो, लेकिन रानी के तौर पर ओलिंपियास का समय काफी उथल—पुथल भरा था। सिकंदर की मौत के बाद उसे सिकंदर के बेटे सिकंदर चतुर्थ की राजगद्दी बचाने के लिए सत्ता की राजनीति में उलझना पड़ गया था। पहले उसने पर्डिकास का साथ लिया और फिर पोलीपर्चन का, लेकिन इन दोनों ही यूनानी जनरलों की अपनी महत्वाकांक्षाएं थीं। एपिरस से मैसिडोनिया ले जाते वक्त उसे पाइडना में 316 ईसा पूर्व में एंटीपैटर के बेटे कैसेंडर ने अपने घेरे में ले लिया। एंटीपैटर उस वक्त मैसिडोनिया में सिकंदर का वायसराय था जब वो एशिया में युद्ध कर रहा था। इसके बाद ओलिंपियास को उन मैसिडोनिया निवासियों के रिश्तेदारों ने मार डाला, जिन्हें रानी के तौर पर उसने मौत की सजा दी थी। इन लोगों को कैसेंडर ने भड़काया था क्योंकि वो ओलिंपियास को मारने का काम खुद नहीं करना चाहता था। कैसेंडर ओलिंपियास से नफरत करता था और उसने उसका शरीर दफनाने से मना कर दिया था, साथ ही आदेश दिया था कि इसे खुले में फेंक दिया जाए। हालांकि, ऐसा लगता है कि ओलिंपियास को चोरी—छिपे दफनाया गया और बाद में उसका मकबरा भी बनाया गया, संभवतः एपिरस के पाइरस के शासनकाल में, जो ओलिंपियास की ही तरह एक एकिड था।'

एलिस ने चारों तरफ देखा। 'और बताओ,' शुक्ला उसे उत्साहित कर रहे थे। 'ये तो

वाकई में दिलचस्प है।'

'हमने मकबरा ढूंढ़ निकाला।' वो खुद भी चकित थी कि उसने सिर्फ चार शब्दों में इस यादगार खोज के बारे में बता दिया।

'तुम्हें कैसे पता कि वो ओलिंपियास का ही मकबरा था?' राधा जानना चाहती थी। उसे विजय की तरफ देखकर एलिस का मुस्कुराना पसंद नहीं आया था, जब विजय ने उसकी खोज पर उसकी तारीफ की थी। कौन थी यह औरत? विजय ने राधा को कभी उसके बारे में नहीं बताया था।

'शुरुआत से बताती हूं। मैक्रिगियालोज गांव में बीसवीं सदी की शुरुआत में ही कुछ शिलालेख मिले थे जिनमें ओलिंपियास की कब्र का जिक्र मिलता है। माना जाता है कि मैक्रिगियालोज ही प्राचीन पाइडना है। और कुर्त की रिसर्च टीम को एक खबर दिखी जिसमें पत्थर की एक पुरानी पट्टी का जिक्र था जो आधी नष्ट हो चुकी थी। उन लोगों ने इस पट्टी को ढूंढ़ निकाला और खरीद लिया। इस पर जो नक्काशी की गई थी उसका मकबरे से सीधा संबंध जुड़ रहा था, और जिससे संकेत मिलता था कि मकबरा मैक्रिगियालोज के बजाय कोरिनोस के ज्यादा नजदीक है। इसलिए हमने उस जगह पर खुदाई शुरू कर दी, जिसका जिक्र नक्काशी में था और सैटेलाइट रिमोट सेंसिंग से भी सबूत मिले थे कि उस टीले की गहराई में मकबरे जैसा ढांचा दबा पड़ा है। हालांकि जब हम मकबरे में घुसे तो भी हम यह बात पक्क से नहीं कह सकते थे कि मकबरा किसका है।' एलिस ने यह बात मानी। 'लेकिन जब हमने दीवारों पर बनी मूर्तियां देखीं...'

वो रुकी, और कब्र कक्ष में हर तरफ बने सांपों के बारे में सोचने लगी। 'अच्छा, किंवदंती के अनुसार सिकंदर फिलिप से पैदा नहीं हुआ था। ओलिंपियास ने सिकंदर को बताया था कि वो जियस का बेटा है, जो उसके पास एक सांप के रूप में आया था। यह भी कहा जाता है कि ओलिंपियास को सांपों से अजीब सी आसक्ति थी——वो सांपों के साथ सोती तक थी। हो सकता है, सिकंदर के जन्म की कहानी को इसी बात ने यादगार बना दिया हो।' उसने वर्णन किया कि कैसे अंदर के कमरे में दीवारों पर बने चित्र में एक रानी को दिखाया गया था, कब्र कक्ष की दीवारों पर सांप बने थे और तीसरे गुप्त कमरे में मूर्तियां और टैबलेट्स थे।

'और क्यूब?' विजय अपनी उत्सुकता दबा नहीं पा रहा था। 'क्या हम उसे देख सकते हैं?'

14

हाथी दांत में एक पहेली

एलिस अपने कमरे से वो क्यूब लाने के लिए उठ गई। जब वो चली गई, विजय ने राधा और शुक्ला को ग्रीस में उसकी भयानक रात और क्यूब के बारे में उनकी बातचीत के बारे में बता दिया।

‘तो, वो अमेरिका वापस नहीं गई,’ राधा ने कहा। ‘वो यहां आ गई।’

‘जब वो वहां से निकलने की कोशिश कर रही थी, उसने मुझे फोन किया था,’ कोलिन ने तुरंत जवाब दिया, उसने राधा की आवाज में कड़वाहट महसूस कर ली थी। ‘शायद उसने सोचा हो कि उसका यहां स्वागत किया जाएगा।’

‘और स्वागत तो हुआ ही है ना?’ राधा ने टिप्पणी की।

तभी एलिस डिब्बे के साथ लौट आई और उसे खोलकर कॉफी टेबल पर रख दिया जिससे कि सभी उसे देख सकें। चार सिर क्यूब की ओर झुक गए और उस फलक को गौर से देखने लगे जो दिख रहा था।

‘इस पर क्या लिखा है, क्या तुम इसे पढ़ सकती हो?’ राधा ने एलिस से पूछा।

एलिस ने ना में सिर हिलाया। ‘मैं यह लिपि नहीं जानती। लेकिन इस पर जो नक्काशी है वो आयतों की तरह दिखती है। हालांकि मैं गलत हो सकती हूं।’

‘यह ब्राह्मी लिपि है,’ शुक्ला बोल पड़े। वो काफी गौर से क्यूब की जांच कर रहे थे। ‘अजीब बात है लेकिन इसकी भाषा संस्कृत है। यह इसलिए भी अजीब है क्योंकि ब्राह्मी लिपि का इस्तेमाल संस्कृत लिखने के लिए आमतौर पर नहीं होता था। यह क्यूब भारत में बना हो सकता है।’

एलिस, कोलिन और विजय ने एक दूसरे की तरफ देखा। ‘भारत में बना एक क्यूब ग्रीस के एक पुराने मकबरे में क्या कर रहा है?’ एलिस अचरज में थी। ‘एक क्यूब के लिए तो ये काफी लंबी यात्रा है। मुझे तो यही समझ में नहीं आ रहा कि ये ग्रीस पहुंचा कैसे होगा।’

शुक्ला ने एलिस की तरफ देखा। ‘अगर तुम्हारी इजाजत हो तो क्या मैं इसे डिब्बे से निकालकर और अच्छी तरह जांच कर सकता हूं?’

‘बिलकुल।’ एलिस ने हामी भरी। वो भी दूसरों की तरह ये जानना चाहती थी कि

नक्काशी में क्या लिखा है।

शुक्ला ने क्यूब को उलट—पलटकर सभी छह फलकों की जांच कर ली। 'दिलचस्प है यह,' उन्होंने अपनी राय दी।

'बताओ पापा,' राधा ने जोर डाला। 'हमें पढ़कर सुनाओ।'

शुक्ला ने क्यूब के फलकों को गौर से देखा। 'क्यूब का एक फलक खाली है। बाकी पर नक्काशी है——कुल मिलाकर पांच छंद हैं। एक में लिखा है:

पर्वत पर नदी के ऊपर
जहां दिन और रात एक साथ मिलते हैं
और शुक्र शिव के दंड की ओर इशारा करता है
शक्तिशाली सर्प का दूत
पांच मुकुटधारी, शाश्वत अभिभावक
उस द्वार का जो तुम्हें जीवन देगा।'

राधा की आंखें इस पहेली की व्याख्या करने की चुनौती के बारे में सोचकर चमक उठी थीं। 'हम इन पहेलियों को सुलझा सकते हैं। जिन चीजों का उल्लेख किया गया है वो भारतीय प्रकृति के हैं। उदाहरण के लिए शिव का दंड उनका त्रिशूल हो सकता है।'

एलिस ने कहा। 'मुझे कोई जानकारी नहीं है। तुम लोगों को इस बारे में बेहतर पता होगा। लेकिन यह अपने आप में एक पहेली है कि कैसे हाथी दांत का एक क्यूब, जिस पर भारत से संबंधित नक्काशी है, वो यूनानी मकबरे में पहुंच गया।'

'यह भारत में ही बना है,' शुक्ला ने कहा। 'जिस शुक्र का उल्लेख है, उसका जिक्र भी भारतीय पौराणिक कथाओं में मिलता है। शुक्र भृगु ऋषि के पुत्र थे। महाभारत के अनुसार, वो असुरों के पुरोहित थे और पुनर्जीवन विज्ञान के विद्वान थे। जो दानव देवों के द्वारा मारे जाते थे, उन्हें वो इस विज्ञान की मदद से पुनर्जीवन देते थे।'

'दूसरे फलकों पर क्या लिखा है?' विजय जानना चाहता था।

शुक्ला ने क्यूब को पलटा। 'यह एक और सबूत है कि यह क्यूब भारतीय ही है। इस फलक पर लिखा गया है:

तेजी से बहती हुई आंख के उस पार
गहरे और लवणरहित सागर के पास
तीन भाई बना रहे हैं अपनी छाया
उस तीर के अग्रभाग पर जो दिखाता है राह
पाताल को अंक में भरने के लिए

सांप की मुहर के नीचे करो गहरी खुदाई
और पाओ अपने अन्वेषण का सार।'

उन्होंने क्यूब से नजरें हटाईं। 'भारतीय पौराणिक कथाओं में पाताल अधोलोक को कहा जाता है। तकनीकी रूप से यह अधोलोक के सात क्षेत्रों में से एक है।'

'आपका मतलब है, जैसे नरक?' कोलिन ने पूछा।

'नहीं, ऐसा नहीं है,' शुक्ला ने समझाया। 'नरक एक पश्चिमी विचार है जिसका इस्तेमाल डर पैदा करने के लिए होता है ताकि लोग सचाई के रास्ते पर चलें। हिंदू दर्शनशास्त्र या पुराणों में नरक की कोई संकल्पना नहीं है। यह सच में अधोलोक है, एक ऐसी दुनिया जो हमारी दुनिया के नीचे मौजूद है।'

एलिस ने चारों तरफ देखा। 'कुछ समझ में आया? मुझे तो कोई मतलब नहीं दिख रहा। सिवाय इसके कि ये किसी तरह के निर्देश हैं जिसकी मदद से आप अपनी तलाश पूरी कर सकें।'

'मैं सिर्फ यह समझ पा रहा हूं कि यह छंद लोगों को अधोलोक में प्रवेश करने को कह रहा है,' कोलिन ने कहा। 'मैं इसे वास्तविकता से जोड़कर नहीं देख पा रहा। क्या अधोलोक एक मिथक नहीं है?'

'शायद हमें तब बेहतर समझ आएगा जब हम उन सभी का अनुवाद कर लेंगे।' राधा ने कहा। 'पापा, आप आगे बताओ, दूसरे छंद क्या कह रहे हैं।'

15

कई पहेलियां

'ये रहा अगला।' शुक्ला ने क्यूब के एक और फलक को पलटते हुए कहा।

'और पर्वत के चारों तरफ की भूमि से
तोड़ो फल और पत्तियां और छाल
पहला जिसमें हों कई डंठल और फल
गहरा जामुनी, ढका हो धूसर और सफेद से
और हरे या भूरे से, अगला हो चिकनी
बनावट वाला, जिसमें हों बैंगनी फल
रहना सावधान, स्पर्श से हो सकते हैं छाले।'

'कितना साफ निर्देश दिया गया है,' कोलिन ने व्यंग्यात्मक अंदाज में कहा, 'अगर आप जानते हों कि आप क्या तलाश कर रहे हैं।'

'लेकिन यह उस चीज की पुष्टि तो कर रहा है जो अभी एलिस ने कही,' राधा ने उसे टोका। 'यह क्यूब किसी तलाश के लिए गुप्त दिशा—निर्देशक हो सकता है। सिर्फ समस्या यह है कि हम नहीं जानते कि इस तलाश का उद्देश्य क्या है।'

शुक्ला ने अगला छंद पढ़ा।

'याद रखो, चूंकि तुम उत्साही, निर्भीक हो
अपने जोखिम पर करो चेतावनी की उपेक्षा
सभी तत्व एक साथ आएं
तीक्ष्ण दृष्टि की सुरक्षा से लैस
जो हैं सर्प की——की अवमानना
और खो बैठोगे अपना अमूल्य उपहार।'

'ठीक है,' कोलिन ने तुरंत दखल दिया। 'मैं इस पहेली की कम से कम एक पंक्ति का मतलब बता सकता हूं।' उसके चेहरे पर बनावटी हंसी थी। 'इसे हम डिस्क्लेमर मान सकते हैं। इसका मतलब यह है कि अगर तुम निर्देश नहीं मानोगे और चेतावनी को नजरअंदाज करोगे——वो जो भी हैं——तुम अपनी जिंदगी खो बैठोगे। यही "अमूल्य उपहार" है।

इसके अलावा यह कुछ हो भी नहीं सकता।'

'तुम सही हो सकते हो,' राधा विचारपूर्वक बोली। 'लेकिन यह अभी भी नहीं बता रहा कि निर्देशों को मानने से हमें क्या मिलेगा। और यहां तो कई तरह के काल्पनिक चित्र घुले—मिले हैं——हमारे पास शिव है, एक सांप है, फल तोड़ने हैं, तेजी से घूमती आंख है——कोई कैसे इनका अर्थ निकालेगा?'

'रुको, अंतिम छंद भी देख लेते हैं।' जब सभी आपस में बात कर रहे थे, शुक्ला अंतिम छंद को पढ़ने में लगे थे। 'यह कहता है:

अब तुम उसके द्वार में प्रवेश करो
जहां घाटियां पूर्व और पश्चिम को अलग करती हैं
बुद्धिमानी से यहां चुनाव करो, याद रखो
जहां तुम जा रहे हो और जहां सूर्य रहता है।'

'वाह, क्या बात है,' कोलिन बोल पड़ा। 'एक और द्वार और अब सूर्य। यह तो हमें पागल बना देगा। सूर्य कौन है?'

'नहीं, ऐसा नहीं है,' राधा दिमाग पर जोर डालते हुए बोली। 'सूर्य और कोई नहीं, सूर्यदेव हैं जिसकी भारत में पूजा होती है। और सूर्य पूर्व दिशा में उगता है जिसका मतलब है कि यह पहेली दो घाटियों के बारे में बात कर रही है और कहा जा रहा है कि उस घाटी को चुनो जो पूर्व दिशा में है।'

'ये तो ठीक है। लेकिन कौन सी घाटी? और सूरज पूरब से पश्चिम की तरफ जाता है तो सूरज पश्चिम में भी हो सकता है, ये इस बात पर निर्भर करेगा कि दिन का समय कौन सा है,' विजय ने इस पहलू की तरफ इशारा किया।

राधा की आंखों में आई चमक मंद पड़ गई। 'हमारे पास इस पहेली को सुलझाने के लिए कोई प्रसंग नहीं है,' उसने कंधे उचकाते हुए कहा, उसकी आवाज में हल्की निराशा थी। 'हमें यह भी समझना होगा कि क्यूब का कौन सा पहलू पहले पढ़ा जाएगा। या हमें यह जानना होगा कि क्यूब किस उद्देश्य से बनाया गया है। इन दोनों में से किसी भी एक के बिना हम क्यूब की पहेली को सुलझा नहीं सकते।'

'बिलकुल सही,' एलिस भी सहमत हुई। 'क्यूब निश्चित तौर पर किसी उद्देश्य से बनाया गया था। लेकिन यह जानने का कोई तरीका नहीं है कि वो क्या था।' उसने क्यूब को वापस गद्देदार डिब्बे में रख दिया।

'चलो, यह तो अपनी जगह है। क्यों ना हम लोग बाहर चलें और किले में थोड़ा घूमें? आज का दिन खूबसूरत है। हम इन पहेलियों को ऐसे तो सुलझा नहीं सकते। मैं तो इससे खुश हूं। मैं ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहता जिसका संबंध डरावने सांपों से हो। और मेरी जिंदगी मेरा सबसे कीमती तोहफा है और मैं किसी तलाश में पड़कर इसे खोने की इच्छा नहीं रखता। ये पहेलियां यूनान के हरक्युलिस जैसे सूरमाओं के लिए बनाई गई हैं। मेरे जैसे

बीसवीं सदी के आदमी के लिए नहीं।' कोलिन उठा और अपना हाथ एलिस की तरफ बढ़ाया। उसने कोलिन की तरफ देखकर मुस्कुरा दिया और उसने भी अपना हाथ बढ़ा दिया।

'घबराओ नहीं,' विजय हंस पड़ा। 'हम वैसे भी इन पहेलियों को सुलझाने के लिए कहीं नहीं जा रहे। ग्रीस हमसे काफी दूर है जहां जाकर हम इनका जवाब ढूंढ़ सकें। और, ऐसा करने की कोई वजह भी नहीं है। यह हमारे लिए एक बौद्धिक चुनौती थी, और मुझे लगता है कि इसका हमारे लिए कोई मतलब नहीं है।'

'मुझे भी थोड़ी ताजी हवा चाहिए।' शुक्ला उठे और कोलिन और एलिस के साथ कमरे से बाहर चले गए। राधा और विजय वहां बैठे रहे।

विजय ने उसे प्रश्न भरी निगाहों से देखा।

'तो, कौन है यह?' राधा ने पूछना शुरू किया। 'गोरी, नीली आंखों वाली, बार्बी की तरह, आधी रात में आ रही है, और तुम दोनों से काफी घुलीमिली है। क्या कर रही है वो यहां? माजरा क्या है?'

राधा की आवाज में भले ही प्रसन्नता थी, विजय को लगा कि उसे सबकुछ बता देना चाहिए। उसने एलिस के साथ अपने पुराने रिश्तों के बारे में उसे बता दिया। 'लेकिन घबराने की कोई बात नहीं है,' उसने उसे भरोसा दिलाते हुए कहा। 'ये सब अब अतीत है। मैं काफी पहले ही इससे दूर जा चुका हूं। जब तुम और मैं मिले थे, तो उस वक्त मेरा संबंध सिर्फ मेरे काम से था।'

राधा ने सिर हिलाया और मुस्कुरा दी। लेकिन उसके दिल में आशंकाएं थीं। वो विजय को लेकर चिंतित नहीं थी; वो उस पर आंख मूंदकर भरोसा करती थी। और कहीं ना कहीं उसका मन कह रहा था कि विजय और एलिस के रिश्तों में एलिस ज्यादा गहरी डूबी थी। लेकिन उसने इस बात पर गौर किया था कि एलिस विजय को किन निगाहों से देखती है। उसे संदेह था कि एलिस के मन में रिश्ते टूटने के इतने सालों बाद अभी भी विजय को लेकर जज्बात हैं।

उसने फैसला किया कि वो घबराएगी नहीं और जब जैसे हालात होंगे, उन्हें संभालेगी। 'इमरान यहां कब आ रहा है?' उसने पूछा।

विजय ने अपनी घड़ी देखी। 'उसने दोपहर के लिए कहा था। हमारे पास काफी समय है।' तभी उसके दिमाग में एक विचार कौंधा। 'अरे, चूंकि हमारे पास समय है, मैं तुम्हें एक वाकई में अजीब चीज दिखाना चाहता हूं। हमें सबसे ऊपरी मंजिल के एक कमरे में जाना होगा।'

'इमरान किस बारे में मिलना चाहता है?' राधा ने पूछा, जब वो पांचवी मंजिल पर जाने के लिए सीढ़ियां चढ़ रहे थे।

'उसने साफ नहीं बताया। बस इतना कहा कि टास्क फोर्स के पास पहला केस आ गया है और वो हमें उस बारे में बताना चाहता है। लेकिन वो इसे लेकर बहुत खुश नहीं दिख रहा

था।'

16

जौनगढ़ किला

'यह तो वाकई रहस्यमय है,' राधा उस फाइल के पन्ने पलटते हुए बोली, जिसने विजय को उलझा दिया था। 'इसकी कोई वजह तो जरूर होगी जिससे तुम्हारे पिताजी ने इस फाइल को रखा है।'

विजय कंधे उचकाते हुए बोला, 'मैंने इस बारे में सोचा। लेकिन मुझे समझ में नहीं आया कि क्या वजह हो सकती है।'

'यह क्या है?' राधा ने एक ए4 साइज के पन्ने की तरफ इशारा किया जिस पर कुछ प्रतीक चिह्न बने हुए थे। उसने उन चिह्नों की तरफ गौर से देखा। 'ये किसी रहस्यमय संकेत की तरह दिख रहे हैं। और ये हाथ से लिखे गए हैं। क्या ये तुम्हारे पिताजी की लिखावट है?'

'मैं नहीं जानता,' विजय ने कहा। 'मुझे उनकी लिखावट याद नहीं है। काफी सोचने पर भी मुझे उनके बारे में ज्यादा याद नहीं आता। मैंने उनके साथ कभी ज्यादा समय नहीं बिताया। मुझे लगता था कि वो हमेशा मेरे साथ रहेंगे और हमें साथ होने के लिए काफी समय मिलेगा। इसलिए मैं अपना समय अपने पड़ोस के पार्क में अपने दोस्तों के साथ फुटबॉल और क्रिकेट खेलकर बिताता था। और, अंत में क्या हुआ, कभी भी समय ही नहीं मिला।' वो चुप हो गया और राधा ने अपना हाथ उसके हाथ पर रख दिया। विजय ने उसका हाथ हल्के से दबा दिया, इस बात की कृतज्ञता जताते हुए कि वो उसके साथ है।

'यहां किसी तरह की कोई सूची बनी है,' राधा उन कागजों में से एक पन्ने पर ध्यान दे रही थी। 'ये एक इंडेक्स की तरह लग रहा है।'

विजय ने फाइल के उस पन्ने को देखा जिसे राधा जांच रही थी। 'चलो देखते हैं क्या इस लिस्ट में और फाइल में आपस में कोई संबंध है?'

राधा ने हामी भरी। यह पहेलीनुमा था। शायद इसमें कुछ भी महत्वपूर्ण ना निकले लेकिन वो समझ रही थी कि विजय यह जानना चाहता है। उसने इंडेक्स वाले पन्ने को फाइल से बाहर निकाल लिया। विजय ने फाइल के उन दस्तावेजों को जमाना शुरू किया और वो देख रही थी कि लिस्ट में उनका जिक्र है या नहीं।

यह बहुत मुश्किल काम था। बहुत कम ऐसे दस्तावेज थे जो लिस्ट से मेल खा रहे थे। ज्यादातर मामलों में वो दस्तावेजों को पहचान पा रहे थे, लेकिन कुछ की पहचान सिर्फ

अंदाज और अनुमान के आधार पर हो पा रही थी।

'इस लिस्ट में तीन आइटम ऐसे हैं जो फाइल में नहीं दिख रहे,' राधा ने अंत में कहा, जब उन्होंने पूरी फाइल देख डाली। उसने उनके नाम पढ़े। 'केएस—1, केएस—2, और यह तीसरा।' उसने तीसरा नाम समझने की कोशिश की जो सिर्फ एक प्रतीक चिह्न था। 'यह क्या है——"डब्ल्यू"?'

विजय ने भी उस निशान को पहचानने की कोशिश की। '"डब्ल्यू" की तरह दिख तो रहा है, लेकिन कुछ ज्यादा ही लहरदार है। देखो इसे, इसमें कोई सीधी रेखा नहीं है।' तभी उसे जैसे कुछ याद आया और वो तन सा गया।

'क्या हुआ?' राधा ने उसकी मुद्रा में एकाएक आए बदलाव पर ध्यान दिया।

'मुझे लगता है कि मैं इनमें से गायब दस्तावेजों को कहीं देख चुका हूं,' विजय ने अपनी आंखें सिकोड़कर याद करने की कोशिश की। 'मुझे याद है कि मैंने पहले भी कहीं "केएस" देखा है।' वो उठा और गत्ते के उन डिब्बों को देखने लगा जिन्हें वो पिछले दो हफ्ते में देख चुका था। 'मुझे इन्हें दोबारा देखना होगा,' किसी सोच में डूबी हुई उसकी आवाज निकली।

'मैं तुम्हारी मदद करती हूं।' राधा ने गत्ते का एक डिब्बा अपनी तरफ खींचा और उसकी चीजें बाहर निकालने लगी।

विजय उसे देखकर मुस्करा दिया और दूसरा कार्टन निकालकर जांचने लगा।

राधा की यही बात उसे अच्छी लगती थी। वो जानता था कि भले ही वो उदासीन दिख रही हो, उसे एलिस की मौजूदगी से परेशानी हुई है। लेकिन उसने उस चीज को खुद से दूर कर दिया है और हमेशा की तरह उसकी मदद के लिए तैयार है। उसकी आंतरिक शक्ति और आत्मविश्वास के अलावा ऐसा कुछ और भी था, जिसका वो प्रशंसक था। वो हमेशा ही अपने दोस्तों और परिवार के लिए मौजूद रहती थी, भले ही इसके लिए उसे अपनी जरूरतें और प्राथमिकताएं टालनी पड़ें। वो चाहता था कि काश वो भी उस जैसा बन जाए। वो बेहद अंतर्मुखी था, अपनी ही दुनिया में खोया हुआ। एकाएक उसके ख्याल एलिस की तरफ चले गए। वो जानता था कि जब वो दोनों एमआईटी में थे तो एलिस ने उसके साथ रिश्ता क्यों तोड़ा था। रिश्ता टूटने के बाद वो काफी बेचैन रहा था और उसने गलती सुधारने की कोशिश भी की थी। और अंत में उसे समझ आ गया था। वो कभी भी एलिस के सामने खुल नहीं पाया था। वैसे तो वो हमेशा से ही गंभीर और संकोची रहा था, अपने माता—पिता की मौत के बाद तो जैसे उसने खुद को एक खोल में बंद कर लिया था। उसके साथ हुए दुखद हादसे को भुलाने का ये उसका तरीका था। उसने अपने आसपास मजबूत दीवारें खड़ी कर ली थीं। और उसके लिए उसके प्रोजेक्ट से ज्यादा कोई चीज मायने नहीं रखती थी। जब वो एलिस से मिला था, ऐसा लगा था कि चीजें बदल सकती हैं। लेकिन वो कभी भी उन दीवारों को गिरा नहीं पाया जो उन दोनों के बीच खड़ी रहीं।

लंबे समय तक वो एलिस को इस बात के लिए माफ नहीं कर पाया, जिस तरीके से

उसने उसे छोड़ दिया था। कोई बातचीत नहीं, कोई सफाई नहीं, उसे अपनी गलती सुधारने का कोई मौका नहीं। यहां तक कि गलतियों का अहसास तक नहीं कराया। वो कठोर हो गया था, एलिस से नाराज। यह बात उसे काफी बाद में समझ आई कि अगर एलिस ने उस वक्त उसे समझाने की कोशिश भी की होती तो कोई अंतर नहीं आता। वो तैयार ही नहीं होता। उसे ब्रेकअप के बाद सामान्य होने में दो साल का समय लग गया था। इसके बाद से उसे किसी भी रिश्ते से जुड़ने में घबराहट होने लगी थी। कुछ तो इस वजह से कि वो अपने काम में व्यस्त रहता था और कुछ उसे लगता था कि वो किसी रिश्ते को निभा नहीं पाएगा। और तब उसकी मुलाकात राधा से हुई। विजय के चाचा की हत्या के बाद मुलाकातों के दौरान उनकी दोस्ती साल भर पहले प्यार में बदल गई। पता नहीं कैसे, चीजें ठीक हो गई थीं और अब वो खुश था। संतुष्ट था। उसे अपने लिए राधा से बेहतर शख्स नहीं मिल सकता था।

'ये रहा वो!' राधा की आवाज जैसे उसके विचारों के महासागर पर तैरती हुई सी आई। विजय उस सागर से बाहर निकल आया यह देखने के लिए कि उसे क्या मिला है।

राधा के हाथ में एक पतली कार्डबोर्ड फाइल थी जिसमें कागजों का एक पुलिंदा था जो एक फीते से बंधा था। यह काफी पुराना और घिसा हुआ लग रहा था। 'केएस—1', उसने ऐलान सा किया।

विजय के चेहरे पर चमक आ गई। 'वाह, चलो देखते हैं इसमें क्या है।'

'लग रहा है हाथ से लिखे हुए जरनल की फोटोकॉपी है,' राधा ने फाइल खोलकर उसके पन्नों पर नजर डालते हुए कहा। 'दिलचस्प है यह तो। तुम्हारे पिता इतिहासकार थे न?'

विजय ने हामी भरी।

'उन्हें पक्के तौर पर अपने काम का जुनून रहा होगा तभी वो ऐसी चीजें इकट्ठा कर पाए हैं। यह जरनल उस जरनल का अनुवाद है जो सिकंदर महान के समय में लिखा गया था।'

विजय का मोबाइल फोन बज उठा। कोलिन ने फोन किया था। इमरान आ गया था।

'दोपहर हो गई है क्या?' राधा ने अपनी घड़ी देखी और फिर विजय की ओर देखकर मुस्कुरा दी। 'जब आप मजे कर रहे हों तो समय उड़ने लगता है।' उसने जरनल को विजय की ओर लहराते हुए कहा। 'यह बड़ी दिलचस्प चीज है। पहले पन्ने के अनुसार यह काफी पुराने जरनल का अनुवाद है जिसे...' उसने नाम ढूंढ़ने के लिए जरनल में देखा। 'हां, यूमेनीज ने लिखा था। उसने मूल जरनल लिखा था जिसका किसी लॉरेंस फुलर ने अंग्रेजी में अनुवाद किया था।'

विजय ने उससे जरनल ले लिया और उसके पन्ने पलटने लगा। उसके पिता ने इसे सुरक्षित रखने के लिए काफी मेहनत की थी। उसे ये जानना था कि आखिर क्यों। तभी जरनल में दिखे एक नाम ने उसका ध्यान आकर्षित किया। उसने इसे राधा को दिखाया, राधा ने जरनल उसके हाथ से ले लिया और उसकी आंखें उत्तेजना में चमकने लगीं।

17

टास्क फोर्स की बैठक

विजय और राधा सीढ़ियों से नीचे आने लगे, राधा के हाथ में वही जरनल था जो उन्होंने अभी ढूंढ़ा था। इमरान के जाने के बाद वो विजय के साथ जरनल पढ़ना चाहती थी।

दस मिनट के बाद विजय, राधा और कोलिन स्टडी रूम में कॉफी टेबल के इर्द—गिर्द बैठे थे। इमरान का चेहरा गंभीर था और उसने स्टडी रूम के दरवाजे को अच्छी तरह से बंद कर दिया था। यहां तक कि उसके अभिवादन में गर्मजोशी नहीं थी।

'तो,' इमरान ने बोलना शुरू किया। 'टास्क फोर्स के पास पहला मामला आ गया है और थिंक टैंक के सदस्य होने के नाते आप सबको बताया जाना जरूरी है। इसलिए मैं यहां आया हूं। मैं इस मामले पर पैटरसन के संपर्क में हूं जो अमेरिका के टीम मेंबर्स को केस के बारे में बताएगा।'

वो रुका। 'हमारे पास जो केस है, वो जैविक आतंकवाद का मामला लगता है। दो रात पहले, मुझे अपने बचपन के दोस्त अनवर का ईमेल मिला जिसमें उसने मदद की गुहार लगाई थी। मुझे यह उस वक्त मालूम नहीं था, लेकिन ऐसा लगता है कि वह पांच साल पहले टाइटन फार्मास्यूटिकल के क्लीनिकल ट्रायल से वॉलंटियर के तौर पर जुड़ गया था। टाइटन फार्मास्यूटिकल अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनी है और इसके भारत में रिसर्च सेंटर हैं।' इसके बाद उसने उस रात की घटनाओं का वर्णन किया जब आर्यन लेबोरेट्रीज के सेंटर में उन्हें लाशें पड़ी मिली थीं।

'आईटी लैब में मिली लाश अनवर की थी,' उसने बोलना जारी रखा। 'ये इतनी बुरी तरह झुलस गई थी कि पहचानना नामुमकिन था लेकिन हमने डीएनए जांच से इस बात की पुष्टि कर ली है।' वो फिर एक पल के लिए रुका। उसके दोस्त की मौत ने उस पर गहरा असर डाला था। 'हम सिर्फ अनुमान लगा सकते हैं लेकिन ऐसा लगता है कि अनवर किसी तरह आईटी लैब तक पहुंच गया था और उसने वहां से ईमेल भेजा था। लेकिन उसे भी ढूंढ़ लिया गया और मार डाला गया। शव—परीक्षण से पता चला है कि उसकी मौत सिर में गोली लगने से हुई थी। बिलकुल सिर से सटाकर गोली मारी गई थी। उन्हें जब यह समझ आ गया कि ईमेल एक आईबी अफसर को भेजा गया है, उन्होंने सभी लोगों को मारकर उस जगह को जला डालने का फैसला किया ताकि हमारे साथ कोई सबूत ना लगे।'

‘तो क्या ये क्लीनिकल ट्रायल किसी जैविक हथियार को बनाने के लिए किए जा रहे थे?’ राधा ने पूछा। ‘टाइटन का इस बारे में क्या कहना है?’

‘यह हमारा संदेह है,’ इमरान ने जवाब दिया। ‘लेकिन टाइटन का दावा है कि उनके प्रायोजित सभी ट्रायल वैध थे और भारत के ड्रग कंट्रोलर जनरल से मान्यता प्राप्त थे। और हमने क्लीनिकल ट्रायल्स रजिस्ट्री से भी पता किया, जहां टाइटन ने कई क्लीनिकल ट्रायल रजिस्टर कराए हैं। पैटरसन और उसकी टीम ने अमेरिका में टाइटन के सीनियर मैनेजमेंट से बात की है, और बोर्ड के चेयरमैन कुर्त वॉलेस से भी पूछताछ की है, जो टाइटन में सबसे बड़ा शेयरधारक है।’

इस नाम ने तुरंत ही सबका ध्यान खींचा।

‘वही शख्स जिसने एलिस के अभियान का खर्च उठाया,’ विजय चौंक उठा।

‘एलिस कौन है?’ इमरान ने तुरंत पूछा। ‘और उसका यहां क्या काम है?’

‘अमेरिका से मेरी एक दोस्त है जो आज सुबह अचानक आई है।’ उसने तेजी से एलिस की पूरी कहानी बता दी और वॉलेस के बारे में भी वो सारी बातें जो एलिस ने बताई थीं।

इमरान ने अपने होंठ सिकोड़े, जब विजय ने अपनी बात पूरी की। ‘तुम्हारी दोस्त को जाहिर तौर पर मुश्किल दौर से गुजरना पड़ा है। मुझे खुशी है कि वो वहां से निकल पाई। हालांकि निश्चित तौर पर यह एक दिलचस्प संयोग है कि कुर्त वॉलेस का नाम दोनों मामलों में है। और यह भी दिलचस्प संयोग है कि तुम्हारी दोस्त उसी वक्त यहां आई है जब हम जैविक आतंकवाद के एक संभावित मामले की जांच कर रहे हैं।’

विजय समझ गया कि इमरान क्या सोच रहा है। उसने उसकी बात का प्रतिवाद करते हुए बोला, ‘मैं उसकी गारंटी ले सकता हूं, मैं उसे...’ वो लड़खड़ा गया क्योंकि वो एलिस के साथ अपने रिश्ते को समझा नहीं पा रहा था जिससे राधा नाराज ना हो। ‘मैं उसे अच्छी तरह जानता हूं,’ उसने यह कहकर अपनी बात खत्म की।

इमरान विजय की तरफ देखते हुए बोला, ‘शायद तुम जानते हो। लेकिन उसका यहां आना और कुर्त वॉलेस से जुड़ा होना हमारे केस के तथ्यों से जुड़ता है। हो सकता है कि यह महज इत्तेफाक हो। लेकिन जब तक मैं निश्चिंत ना हो जाऊं, तब तक पक्के तौर पर मैं किसी चीज को नकार भी नहीं सकता।’

विजय अपनी निराशा को छिपाने की कोशिश करते हुए शांत हो गया।

इमरान ने अपनी बात आगे बढ़ाई। ‘वॉलेस और टाइटन के पूरे सीनियर मैनेजमेंट ने आर्यन के मालिक सुमन पाहवा पर उंगली उठाई है जो आग लगने के बाद से गायब है। हमने हर उस जगह की तलाश कर ली है, जहां वो हो सकता था, लेकिन वो नहीं मिल रहा है। इस वजह से हमारी जांच आगे नहीं बढ़ रही है। हालांकि कुछ कोशिशें जारी हैं। आग में हार्ड ड्राइव को काफी नुकसान पहुंचा है, लेकिन हमारी शानदार आईटी लैब ने काफी जानकारी हासिल करने में कामयाबी पाई है। ये उन लोगों की मेडिकल फाइल्स हैं जिन पर क्लीनिकल

ट्रायल चल रहा था। हमने लाशों का परीक्षण भी कराया और उनके नमूने नई दिल्ली के नेशनल सेंटर फॉर डिसीज कंट्रोल और पुणे में नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ वायरोलॉजी भेजे हैं। उनकी जांच रिपोर्ट के तथ्यों की पुष्टि वॉशिंगटन के सीडीसी के परीक्षणों से भी हुई है। मुझे उनकी रिपोर्ट आज सुबह ही मिली है।'

उसके बाद उसने पिछली शाम पैटरसन और रॉयसन के साथ हुई बातचीत के बारे में उन लोगों को बताया। 'तो हमारा अनुमान है कि ये पाहवा सेंटर में गुप्त रूप से क्लीनिकल ट्रायल करवा रहा था। हां, हमने इस संभावना को खारिज नहीं किया है कि इसके तार अमेरिका से जुड़े हो सकते हैं। हो सकता है वॉलेस खुद इसमें शामिल हो, लेकिन अभी इस बात के पक्ष में कोई सबूत नहीं है।'

उसकी बात समाप्त होने पर वहां थोड़ी देर शांति छाई रही।

फिर कोलिन ने पूछा, 'तो हमारा अगला कदम क्या है?'

विजय ने भी पूछा, 'और हम कैसे मदद कर सकते हैं?'

'अभी हमारे पास करने के लिए कुछ खास नहीं है,' इमरान ने स्वीकारोक्ति की। 'मैं चाहता था कि तुम लोगों को केस से जुड़े सारे तथ्य बता दूं ताकि तुम लोग किसी और पहलू पर भी सोच सको और हम उस पर काम कर सकें। अभी, टास्क फोर्स के एजेंट पाहवा की तलाश में लगे हैं और क्लीनिकल ट्रायल के बारे में और सुराग ढूंढ़ रहे हैं। वो पिछले चार—पांच सालों के अखबार खंगाल रहे हैं ताकि उनमें क्लीनिकल ट्रायल के विज्ञापनों का पता लगे, साथ ही इस धंधे से जुड़े लोगों से भी बात कर रहे हैं। मैं भारत में टाइटन के सीईओ डॉक्टर स्वरूप वर्मा से मिलने जा रहा हूं। और मैं टाइटन के चीफ मेडिकल ऑफिसर डॉक्टर वरुण सक्सेना से भी मिलूंगा।'

'हम इसमें आपकी मदद कर सकते हैं,' राधा ने कहा। 'अगर आप चाहें तो मैं सीएमओ से मिल सकती हूं।'

इमरान ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, 'शुक्रिया, लेकिन यह फील्ड का काम है। मुझे मालूम है कि तुम लोगों को टास्क फोर्स बनने के बाद फील्ड ट्रेनिंग दी गई है, लेकिन तुम लोगों को अभी इसका कोई तजुर्बा नहीं है। अगर हम जैविक आतंकवाद में वास्तव में शामिल किसी शख्स से मिलें तो इसमें खतरा हो सकता है।'

'लेकिन अगर हम शुरुआत नहीं करेंगे तो हमें कभी फील्ड में काम का अनुभव ही नहीं होगा,' राधा अपनी बात पर अड़ी रही। 'कैसा रहेगा अगर मैं आपके साथ रहूं जब आप सीईओ से मिलने जा रहे हों, और अगर कुछ दिक्कत आती है तो आप तो रहेंगे ही?'

'इमरान, तुम्हें मानना पड़ेगा,' विजय मुस्कुराते हुए बोला। 'वो एक बुलडॉग की तरह है। अब वो पीछे नहीं हटेगी।'

राधा ने उसकी पीठ पर हल्का सा धौल जमाया। 'मेरा मानना है कि यह दिलचस्प होगा। इमरान, चलो, ऐसा करते हैं।'

‘ठीक है, ठीक है,’ इमरान ने हथियार डाल दिए। ‘बातचीत में क्या गड़बड़ हो सकती है? सीईओ के साथ शाम साढ़े चार बजे मीटिंग है। मैं अपने लोगों को कह दूंगा कि सीएमओ के साथ मीटिंग भी उसी समय तय कर दी जाए।’

उसने जैसे ही अपना फोन हाथ में लिया, वो बज उठा। इमरान ने गौर से फोन करने वाले की बात सुनी और उसका चेहरा मुरझा गया।

‘बुरी खबर है?’ विजय ने अनुमान लगाया।

‘हमें अभी—अभी पाहवा की लाश मिली है। आगरा एक्सप्रेसवे पर उसकी कार हादसे का शिकार हो गई। ऐसा लग रहा है कि उसकी कार के ब्रेक्स के साथ छेड़छाड़ की गई थी और वो बेकार हो गए थे। वो जरूर सड़क पर काफी तेज जा रहा होगा इसलिए उसके पास बचने का कोई मौका नहीं था।’ उसने एक ठंडी सांस ली। ‘हमारा अंतिम जिंदा सुराग चला गया। और इसका यह मतलब भी है कि वो इस खेल में मोहरा भर था। टाइटन में कोई है जो ये खेल खेल रहा है। बस, मामला यह है कि हमारे पास ये जानने का कोई तरीका नहीं है कि वो कौन है।’

18

गुड़गांव

गुड़गांव के वेस्टिन होटल में प्रेसिडेंशियल सुइट में एक आरामकुर्सी पर बैठकर पीटर कपू र फ्लैट स्क्रीन मॉनिटर्स को देख रहा था। कमरे के एक कोने में रैक पर कई उपकरण रखे थे, जिनमें से तारों के गुच्छे निकल रहे थे और कई सर्वर्स से जुड़े थे।

कूपर को कभी कंप्यूटर समझ नहीं आए। बावन साल की अपनी उम्र में वो कभी टेक्नोलॉजी के साथ सामंजस्य नहीं बैठा पाया। वो इक्कीस साल की उम्र में ऑर्डर के साथ जुड़ गया था। उसके अंदर किसी भी चलती हुई चीज को कितनी भी दूरी से, जो बंदूक की दूरबीन से दिख जाती हो, निशाना बनाने की अद्भुत क्षमता थी। साथ ही वो किसी भी चीज को एकाध बार ही देखकर आसानी से उसे याद रख सकता था। इन दोनों खूबियों ने उसे एक भयानक हत्यारा बना दिया था, जिसे किसी को मारकर कोई पछतावा भी नहीं होता था।

उसने कभी गिनती नहीं की कि उसने कितने लोगों की हत्या की है, जिनमें मर्द, औरतें और बच्चे सभी शामिल थे। उसके लिए वो कोई आंकड़ा नहीं थे। वो इंसान भी नहीं थे। वो सिर्फ निशाना थे जिन्हें खत्म करना है। और वो अपना काम परू ी बारीकी से करता था। उसे अपनी इस खूबी पर घमंड था। उसने आज तक कोई निशाना नहीं चूका। और ना ही वो कभी हिचकिचाया, जब उसकी उंगलियां बंदकू के घोड़े पर होती थीं।

पिछले कुछ सालों में ऑर्डर में उसकी हैसियत बढ़ती चली गई थी। अब उसका काम उसके कौशल पर नहीं, उसकी रणनीतिक चतुराई पर निर्भर था। इसका मतलब यह था कि अब उसे लोगों की हत्या करने के काम कम मिलते थे, हालांकि उसकी निगाहें उम्र बढ़ने के बावजूद कमजोर नहीं हुई थीं। और, भले ही पिछले सालों में जैसे—जैसे उसकी भूमिका बदलती गई, उसकी कामयाबी में टेक्नोलॉजी की अहमियत भी बढ़ती गई थी, लेकिन वो अभी भी टेक्नोलॉजी के साथ जुड़ नहीं पाया था। उसके लिए किसी रणनीतिकार का सबसे बड़ा हथियार, जिसे वो सबसे ऊंचे स्तर की टेक्नोलॉजी मानता था, उसके दिमाग में होता था। उसे बस इसी की जरूरत थी। बाकी सारी चीजें फालतू थीं।

‘क्या स्थिति है?’ उसने कंसोल पर बैठे शख्स से पूछा, जो स्थानीय टेक्नोलॉजी टीम संभालता था। यह शख्स काले रंग का था, गंजा, चेहरे पर मूंछ और उसका नाम था कृष्णन। उसका रंग—रूप भले ही सादा था, वो इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी में प्रवीण था और कूपर इस बात को मानता था।

थेसालोनिकी मामले में पुलिस के शामिल होने के बाद कूपर ने फैसला किया था कि वो अब धैर्य से काम लेगा और एलिस का पीछा करने की बजाय उस पर नजर रखेगा। यह एक गुप्त मिशन था और वो नहीं चाहता था कि इस पर किसी का ध्यान जाए। स्तावरोस इस बात का ख्याल रख रहा था कि खुदाई की जगह पर हुई घटनाओं की खबरें मीडिया में ना आएं। कोई नहीं जान पाएगा कि वहां हुआ क्या था। और मिशन एक रहस्य ही बना रहेगा।

सिर्फ एलिस ही बची थी। वो सिर्फ वहां हुई घटनाओं की गवाह ही नहीं थी, बल्कि उसके पास वो चीज भी थी जिसके इर्दगिर्द पूरा मिशन घूम रहा था। और उसे वो चीज हासिल करनी थी, बिना किसी का ध्यान उसके या मिशन की तरफ खींचे।

जब एलिस थेसालोनिकी से गायब हुई, उसने उसकी तलाश की लेकिन जल्दी ही उसे समझ आ गया कि उसने देश छोड़ दिया है। लेकिन वो इतनी आसानी से हार मानने वाला नहीं था। इतनी जल्दी तो बिलकुल नहीं, खासतौर पर जब वो जानता था कि एलिस का पासपोर्ट होटल के कमरे में ही पड़ा हुआ था। अपने नेटवर्क का इस्तेमाल कर उसने थेसालोनिकी के अमेरिकी दूतावास में एक संपर्क ढूंढ़ निकाला था। ग्रीक महिला, जो अकेली रह रही थी और एक बच्चे की मां थी, ने पहले तो सहयोग करने से मना कर दिया था। लेकिन कूपर ने उसकी पांच साल की बेटी का अपहरण कर लिया। और इसके बाद जिस तेजी से उस महिला ने जानकारियां दीं, उससे वो भी अचरज में था। उसे पता चला था कि वॉशिंगटन से खास आदेश आया था और असामान्य तेजी से एलिस का पासपोर्ट जारी कर दिया गया था। मां—बेटी दोनों की तस्वीरें अगली सुबह अखबारों में छपी थीं, लाश के रूप में जिनका गला रेत डाला गया था। यह उसका तरीका नहीं था लेकिन इस काम को अंजाम दिया था उसके नए सहायक ने, और वो बंदूक से ज्यादा कुशल ब्लेड का इस्तेमाल करने में था।

उसका अगला पड़ाव था ग्रीक इमिग्रेशन जहां उसके नेटवर्क में भाड़े के संपर्क सूत्र थे। उनसे उसे पता चला कि एलिस प्राइवेट जेट से भारत में नई दिल्ली गई है।

ग्रीस को संभालने का जिम्मा स्तावरोस पर छोड़कर कूपर तुरंत अपने निजी विमान से, जो उसे ऑर्डर की तरफ से मिला था, नई दिल्ली आ गया। भारत पहुंचते ही उसने अपनी स्थानीय इकाई से संपर्क किया और अपना हेडक्वॉर्टर गुड़गांव में बनाया। अब, उसे बस इतना जानना था कि एलिस कहां छिपी है और किसके साथ है। जो वह जानना चाहता था, उसे यह जानने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा और उसका मिशन बिना किसी परेशानी के जारी रहेगा। एलिस एक मामूली सी बाधा थी, एक चींटी जिसने पिकनिक का मजा किरकिरा कर दिया था। अब वक्त था उस चींटी को मसल डालने का।

कृष्णन अपनी कुर्सी पर घूमा और कूपर को देखकर बोला। 'वो जौनगढ़ नाम की जगह पर एक किले में है जो नई दिल्ली से 130 किलोमीटर दूर है। हमने उसके साथ के लोगों की भी पहचान कर ली है।' वो एक पल के लिए रुका। 'लेकिन खबर अच्छी नहीं है।'

कूपर की भौंहें तन गईं।

‘उसके साथ दो अमेरिकी नागरिक हैं। एक भारतीय मूल का है, विजय सिंह। दूसरा है कोलिन बेकर। एक महिला भी है जो इंडियन डिपार्टमेंट ऑफ एटॉमिक एनर्जी में काम करती है——वो एक परमाणु भौतिकविज्ञानी है और नाम है राधा शुक्ला। और वहां भारतीय खुफिया ब्यूरो का स्पेशल डायरेक्टर भी है, इमरान किदवई।’

कूपर की भौंहें फिर तन गईं। यह तो मामूली बाधा से कहीं बड़ी बात है। भारतीय खुफिया एजेंसियां भी इसमें शामिल हैं। कृष्णन सही कह रहा है, यह तो बुरी खबर है।

‘आईबी का शख्स वहां क्या कर रहा है?’ उसने पूछा। ‘क्या हम उनकी बातचीत के बारे में कुछ सुराग हासिल कर सकते हैं?’

‘हमारी टीम इस चीज में लगी हुई है। लेकिन वो लोग एक ऐसे कमरे में हैं जिसमें ऐसी व्यवस्था की गई है कि उस पर निगरानी ना की जा सके। हमारे पास उनकी आवाज सुनने को कोई तरीका नहीं है। और ना ही कोई ऐसी जगह है जहां से हम उन्हें देख भी सकें। हम यहां पर अंधे से हैं।’ कूपर की निगाहें उस पर जमी थीं। ‘हमें स्टिंगरे का इस्तेमाल करना चाहिए। इससे हमें उनके फोन कॉल पर नजर रखने में मदद मिलेगी और उस जानकारी का इस्तेमाल कर हम जान सकेंगे कि वो क्या करने जा रहे हैं।’

कूपन ने उसे आंखें तरेरकर देखा। ‘हम इस मिशन को गुप्त रखना चाहते हैं। तुम्हें मालूम भी है कि स्टिंगरे को किसी देश में लाने के लिए क्या करना पड़ता है? यह मुमकिन तो है लेकिन यह हमें खतरे में भी डाल देगा। तुम्हें अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करना है। जो चीजें तुम्हें दी गई हैं उनके साथ ही काम करो।’

वो सभी विकल्पों पर सोचने लगा। अगर उसके निशाने किले में हैं तो बिना भारी—भरकम आग्नेयास्त्र के उस जगह पर धावा बोलना आसान नहीं होगा। और ये लोगों का ध्यान तो खींचेगा ही।

‘हमारी सभी टीमों को सावधान कर दो,’ उसने आदेश दिया। ‘मैं किले में रह रहे हर शख्स पर निगरानी रखना चाहता हूं। मैं जानना चाहता हूं कि वो कहां हैं और क्या कर रहे हैं।’

वो पीछे टिककर बैठ गया और अपनी आंखें बंद कर लीं। सही मौका मिलने पर बंदूक का घोड़ा दबाने के लिए इंतजार करने के लंबे अनुभव ने उसे धैर्यवान बना दिया था। वो इंतजार करेगा। जब तक कि सही समय खुद नहीं आए।

और वो जानता था कि समय जल्दी आएगा। उसके पक्ष में चीजें इसी तरह से काम करती थीं।

19

एक रोचक खोज

विजय किले की पहली मंजिल पर अपने स्टडी रूम में बैठकर लैपटॉप की स्क्रीन देख रहा था। जबसे इमरान और राधा टाइटन फार्मास्युटिकल्स में अपनी मीटिंग के लिए निकले थे, वो उस जरनल को पढ़ रहा था जो राधा ने ढूंढ़ी थी। बीच—बीच में वो नोटपैड पर कुछ लिखता भी जा रहा था।

जरनल पढ़ने के बाद उसने पिछले आधे घंटे इंटरनेट पर उन संदर्भों से जुड़ी जानकारी तलाश करते हुए बिताए थे, जो उसने नोट किए थे। इस बीच वो तभी रुका था जब वो स्टडी से निकलकर पांचवी मंजिल के उस कमरे में गया था जिसमें उसके माता—पिता की चीजें रखी थीं। उसने वो फाइल उठाई थी, जो वो और राधा मिलकर पहले देख रहे थे, और वापस स्टडी रूम में आ गया था।

तभी दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी। 'तुमने यहां अपनी जड़ें जमा ली हैं क्या?' कोलिन ने दरवाजा खोला और अंदर आ गया।

विजय मुस्कुराया। वो जानता था कि कोलिन सब कुछ जानने के लिए बेहद उत्सुक है। यही बात चौंकाने वाली थी कि वो अब तक इंतजार कर रहा था, ये जानने के लिए कि विजय क्या कर रहा है।

कोलिन ने त्योरियां चढ़ाते हुए उससे कहा। 'एलिस इस बात से थोड़ी नाराज है कि तुमने उससे ये तक नहीं पूछा कि इमरान के साथ उसकी मीटिंग में क्या हुआ।' इमरान ने उन लोगों को सारी बातें बताने के बाद एलिस से मिलने की इच्छा जताई थी और उसके साथ स्टडी रूम में आधे घंटे तक बात करता रहा था। लेकिन विजय के दिमाग में जरनल घूम रहा था और जैसे ही इमरान और राधा वहां से निकले थे, उसने जरनल पढ़ने के लिए स्टडी रूम पर कब्जा कर लिया था।

'वो बालिग है,' विजय ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। 'क्या पूछना है? और इमरान अच्छा आदमी है। भले ही वो खुफिया विभाग का आदमी है, मुझे भरोसा है कि सबकुछ अच्छा हुआ होगा।

कोलिन ने हामी भरी। 'उसने उससे खुदाई, वॉलेस, उसके ट्रस्ट और उस रात क्या हुआ था, इन सबके बारे में ढेरों प्रश्न पूछे। उसने उससे यहां तक कहा कि वो उसे स्तावरोस और

पीटर की फोटो व्हाट्सऐप कर दे। दरअसल वो देखना चाहता है कि क्या वो इन लोगों के बारे में कोई जानकारी निकाल सकता है या नहीं।'

उसने जरनल और विजय के नोट्स की तरफ उत्सुकता से देखा। 'लेकिन तुम कर क्या रहे हो?'

'मैं तुम लोगों को बुलाने ही वाला था। मुझे कुछ मिला है जो बेहद दिलचस्प है। और एलिस तो पागल हो जाएगी अगर वो इसे देखेगी। हम एक प्राचीन रहस्य को सुलझाने जा रहे हैं।'

कोलिन की त्योरियां थोड़ी और चढ़ गईं। वो बड़बड़या, 'मैं जान रहा था कि यहां आना एक भूल होगी। मुझे तुम्हें अकेला छोड़ देना चाहिए था।' इसके बावजूद उसकी आंखों में एक चमक थी। 'रुको; मैं एलिस और डॉक्टर शुक्ला को यहां लेकर आता हूं।'

जब तक वो लोग आते, विजय ने जरनल और लैपटॉप को पांचवीं मंजिल वाली फाइल के साथ सेंटर टेबल पर रख दिया। उसने स्टडी रूम की तिजोरी में से हाथी दांत के क्यूब वाला डिब्बा भी बाहर निकाल लिया था, जहां उसे सुरक्षित रखा गया था और उसे भी टेबल पर ही रख दिया।

एलिस जब कोलिन और शुक्ला के साथ कमरे में घुसी तो वो सवाल भरी नजरों से विजय को देख रही थी।

विजय ने बोलना शुरू किया, 'एलिस, तुम्हें यकीन नहीं होगा। लेकिन तुम इसे पसंद जरूर करोगी। जब तुमने आज सुबह ओलिंपियास का जिक्र किया था, मुझे लगा था कि मैंने यह नाम पहले भी सुना है, लेकिन मुझे याद नहीं आ रहा था कि कहां सुना है। दरअसल मैंने यह नाम हाल ही में इसमें पढ़ा था।' उसने जरनल उठाकर उसे दिखाया। 'यह मकदूनिया के यूमेनीज की गुप्त डायरी है।' उसने उम्मीद भरी नजरों से एलिस की तरफ देखा।

एलिस भी उसे देखने लगी। वो समझ नहीं पा रही थी कि विजय मजाक कर रहा है या सच बोल रहा है। 'गुप्त डायरी? यूमेनीज की?' उसकी आवाज से साफ था कि वो इस बात पर यकीन नहीं कर रही थी। 'तुम मजाक कर रहे हो।'

विजय मुस्कुराया। जरनल पढ़ने और इंटरनेट पर इस बारे में जानकारी जुटाने के बाद उसने ग्रीक इतिहास के बारे में अच्छा—खासा जान लिया था और वो एलिस से ऐसी ही प्रतिक्रिया की उम्मीद कर रहा था।

'ठीक है,' उसने अपने नोट्स की तरफ देखते हुए कहा। 'मैं तुम्हें दिखाता हूं कि मैं सच बोल रहा हूः इस जरनल में कैलिस्थनीज की गुप्त यात्रा का जिक्र है जो उसने सॉगडियन रॉक के पास बैक्ट्रिया में की थी, सिकंदर की ओर से। यह एक दूसरे गुप्त मिशन की भी बात करता है जो सिकंदर और यूमेनीज ने किया था, उस वक्त जब सिकंदर ने भारत पर हमला किया था।'

एलिस ने उसे उलझन भरी निगाहों से देखा। वैसे तो विजय सभी सही नामों का जिक्र

कर रहा था, लेकिन अभी भी उसे इस बात की संभावना नहीं लग रही थी कि यूमेनीज की कोई गुप्त डायरी है। और वो भी उसकी आंखों के सामने।

‘क्या मैं देख सकती हूं?’ उसने तुरंत पूछा और विजय ने उसे जरनल थमा दिया।

‘एक मिनट रुको,’ कोलिन ने विजय का हाथ पकड़ लिया। ‘यूमेनीज कौन है?’ ‘और ये कैलिस्थनीज कौन है? ऐसा लग रहा है यह वही शख्स है जिसने कैलिस्थेनिक्स का आविष्कार किया है।’

‘कैलिस्थनीज सिकंदर महान के समय का ग्रीक इतिहासकार था।’ एलिस ने पल भर के लिए जरनल से ध्यान हटाकर कोलिन के सवाल का जवाब दिया। ‘वो ग्रीस और फोसियन युद्ध के वृहत इतिहास का लेखक था। लेकिन उसका नाम द डीड्स ऑफ अलेक्जेंडर के लेखक के तौर पर मशहूर है, जो सिकंदर की विजय गाथाओं का इतिहास है और जिसमें उसने सिकंदर को देवता की तरह पेश किया है। यह माना जाता है कि उसी ने सिकंदर के दैवीय जन्म की दंतकथा की शुरुआत की थी जिसमें उसे जियस का पुत्र बताया गया है। उसी ने ग्रीक जगत में इस कहानी का प्रचार—प्रसार किया कि सिकदंर ने सिवा में ऑरेकल के दर्शन किए थे जिन्होंने घोषित किया था सिकंदर जियस—आमन का पुत्र है और पैंफिलिया में समुद्र ने सिकंदर को जाने का रास्ता दिया था। यह विडंबना है कि उन्होंने ही सिकंदर को भगवान बनाने का काम किया, और जब सिकंदर ने खुद को भगवान घोषित किया तो उनकी फटकार सिकंदर की मौत का कारण बनी।’

‘अरे वाह! तुम्हारा मतलब यह है कि सिकंदर सच में खुद को भगवान मानता था?’ कोलिन वास्तव में चकित था।

‘हां,’ एलिस उसके आश्चर्य पर मुस्कुराई। ‘328 ईसा पूर्व, मध्य एशिया के लोगों पर विजय पाने के बाद, सिकंदर ने जब बाल्ख शहर में अपना पड़ाव डाला तो उसने एलान किया कि वो ईश्वर की तरह पूजा जाना चाहता है। फारस और मध्य एशिया में उसकी विजय, सिवा के ऑरेकल की घोषणा और कैलिस्थनीज द्वारा की गई उसकी विजय स्तुति ने उसे विश्वास दिला दिया होगा कि वो सच में ईश्वर है।’

‘जबकि कैलिस्थनीज ने उसे ईश्वर मानने से इनकार कर दिया था,’ विजय बुदबुदाते हुए बोल पड़ा, उसने पिछले आधे घंटे में इस बारे में रिसर्च किया था। एलिस ने हामी भरी। ‘हां, और उसने सिर्फ इनकार नहीं किया। कहा जाता है कि उसने सिकंदर के सामने इलियड की एक पंक्ति उद्धरित कीः “तुमसे कहीं बेहतर मनुष्य था पैट्रोक्लस लेकिन मृत्यु ने उसे भी नहीं बख्शा।”‘

‘यह तो एक तरह का ताना है,’ कोलिन ने टिप्पणी की। ‘मेरा मतलब है कि वो इस बात को थोड़े और एहतियात के साथ कह सकता था। एक शख्स को और बेहतर तरीके से बताया जा सकता है कि तुम भगवान नहीं हो। खासतौर पर तब जब उस शख्स के हाथ में तलवार हो।’

‘इसलिए तो सिकंदर ने उसे मरवा डाला था। इस समय तक सिकंदर यह बिलकुल सहन नहीं कर सकता था कि कोई उसके विचार से असहमत हो। उस समय सिकंदर को एक नौकर के हाथों मरवाने के लिए षड्यंत्र भी हुआ था। कैलिस्थनीज पर इस षड्यंत्र में साथ देने का झूठा आरोप लगाया गया और राजद्रोह के लिए मौत की सजा दी गई। सिकंदर ने उसे सूली पर लटका दिया था।’

कोलिन कांप गया। ‘यह भयानक है। और कैलिस्थनीज ने सिकंदर के लिए जितना किया था उसे देखते हुए तो घोर कृतघ्नता है। मैसिडोनिया के यूमेनीज की क्या कहानी है?’

एलिस ने विजय की तरफ देखा। ‘चूंकि विजय खुद इस बारे में गुप्त रूप से लगातार चीजें तलाश रहा है, शायद वो हमें बताए,’ कहकर वो मुस्कुरा दी।

20

334 ईसा पूर्व

मकदूनिया, ग्रीस

मकदूनिया के राजा फिलिप द्वितीय की पत्नी ओलिंपियास ने अपने सामने खड़े शख्स पर नजर डाली। भूरी चमड़ी, काले बाल और काली आंखें, ढीले सफेद कपड़ों में लिपटा हुआ जैसे कपड़े उसने पहले कभी नहीं देखे थे, इस व्यक्ति को देखकर लगता ही नहीं था कि यह वैसा ज्ञानी होगा जैसा उसे बताया गया था। अगर यह जानकारी ऑर्डर के सर्वोच्च स्तर से नहीं आई होती, तो वो बिना कुछ सोचे उसे खारिज कर चुकी होती।

'मैंने सुना है कि तुम ईश्वर के रहस्यों के बारे में काफी कुछ जानते हो,' उसने उस शख्स को अपनी निगाहों से भेदते हुए कहा।

उस शख्स ने सिर हिलाया। 'मैं जानता हूं। लेकिन ये आपके ईश्वर नहीं हैं। ये पूर्वी देशों के ईश्वर हैं। मेरे लोगों के ईश्वर हैं।' उसका उच्चारण विचित्र था और वो बहुत धीमे—धीमे बोल रहा था, जैसे कोई उस भाषा में बात करे जो उसके लिए अनजान हो।

ओलिंपियास की त्योरियां चढ़ गईं। इस शख्स की बेपरवाही और उसके शाही रुतबे के प्रति अनादर उसे क्रोधित कर रही थी। लेकिन उसे उस शख्स से जानकारी चाहिए थी। इसलिए उसने अपने क्रोध को दबाया और बात आगे बढ़ाई। एक बार जब उसे मनोवांछित चीज मिल जाए फिर वो इस शख्स की किस्मत का फैसला करेगी।

'मुझे यह पता है। लेकिन यह बात मायने भी नहीं रखती। मुझे इस बात की कोई परवाह नहीं है कि वो किसके ईश्वर हैं। मेरे लिए मिथक की सचाई मायने रखती है। क्या तुम उसे सिद्ध कर सकते हो?'

भूरी चमड़ी वाला वो शख्स बिलकुल भी विचलित नहीं हुआ। 'मिथक सच है। मैं इसका साक्षी हूं।'

'मैं कैसे मान लूं कि तुम सच बोल रहे हो?' उसने पूछा।

उस शख्स ने उसी अंदाज में जवाब दिया। 'रानी साहिबा, क्या आप मुझ पर संदेह कर रही हैं?' बिना किसी लाग—लपेट के पूछे गए उसके इस सवाल ने ओलिंपियास को

हिचकिचाहट में डाल दिया। वो मुस्कुराते हुए बोला, 'इतना अभिमान, इतनी महत्वाकांक्षा। अगर आपको मेरे शब्दों पर यकीन नहीं है तो आपको नदियों और महासागरों के पार इतनी लंबी यात्रा की व्यवस्था नहीं करनी थी। फिर भी आपको संदेह करने के लिए क्षमा किया जा सकता है। जो नहीं जानते, उनके लिए मिथक समझ और विश्वास के परे है।'

वो एक पल के लिए रुका और फिर बोला। 'रानी साहिबा, आपके अनुसार मेरी उम्र क्या होगी?'

ओलिंपियास ने फिर अपनी त्योरियां चढ़ा लीं। इस शख्स की उम्र क्या मायने रखती है? वो बस इतना चाहती थी कि मिथक के बारे में उसकी जानकारी का पता चल जाए। उसने धीरे से कंधे उचकाते हुए कहा। 'मैं कैसे जान सकती हूं?'

'मैं इस पृथ्वी पर 600 सालों से ज्यादा से घूम रहा हूं। मैंने अब साल की गिनती करनी बंद कर दी है और सिर्फ दशकों की गिनती करता हूं।'

ओलिंपियास का पूरा ध्यान अब उस शख्स पर था। यह आदमी कुछ अलग सा था। यह चालीस साल से ज्यादा की उम्र का नहीं लगता। अगर इसका दावा सच है तो...

ओलिंपियास ने उसके शब्दों पर विचार किया। 'मुझे बताओ कि ईश्वर के रहस्य कहां छिपे हैं।' वो थोड़ा आगे की तरफ झुकी, उसकी आंखें उम्मीद से चमक रही थीं।

'वह यहां से काफी दूर है रानी साहिबा,' उस शख्स ने जवाब दिया। 'सिंधु की भूमि पर एक गुप्त स्थान पर। उसे कोई नहीं ढूंढ़ सकता जब तक उसके पास साधन ना हो।'

'पृथ्वी का दूसरा छोर,' ओलिंपियास फुसफुसाते हुए बोली, उसके चेहरे पर चमक थी।

'यूनानियों जैसी उन्नत नस्ल से होने के नाते, यह चौंकाने वाला है कि आप इस दुनिया के बारे में कितना कम जानती हैं, जिसमें हम रहते हैं,' वो दार्शनिक की तरह मुस्कुरा दिया।

ओलिंपियास ने गुस्से से उसे घूरा। वो सच में बेहद गुस्ताख है। उसने अपनी एक भौंह सवालिया अंदाज में चढ़ाई।

'क्या आपके गुरुओं ने आपको यही सिखाया है? पृथ्वी का छोर सिंधु के पार है? तब आपका पुत्र अपनी बची हुई जिंदगी पृथ्वी के छोर तक पहुंचने में लगा देगा और जब वो मैसिडोनिया लौटेगा तो कोई ज्यादा बुद्धिमान नहीं हो जाएगा।' दार्शनिक ने अपनी आवाज नीची की। 'रानी साहिबा, जान लें कि पृथ्वी सिंधु के भी काफी आगे तक फैली हुई है, डरावनी और महाकाय नदियों के पार। वहां राज करने वाले साम्राज्य शक्तिशाली हैं, उनके पास ऐसे हथियार हैं जिनके बारे में आप कुछ नहीं जानतीं। यह वो भूमि है जहां कभी हमारे ईश्वरों का आधिपत्य था। एक बार जब आपके पुत्र को वो मिल जाए, जो वह चाहता है, उसे तुरंत लौट आना चाहिए। अपनी और उसकी महत्वाकांक्षा को मैसिडोनिया की बर्बादी का कारण ना बनने दें।'

ओलिंपियास उस आदमी की गुस्ताखी पर अवाक थी। लेकिन उसने अपना आपा नहीं खोया। उसे अभी भी वो चीज नहीं मिली थी जो वो चाहती थी। 'और तुम्हारे पास मुझे देने के

लिए क्या है?' उसने पूछा।

उसने अपने ढीले—ढाले कपड़ों की जेब में से दो चीजें निकालीं और ओलिंपियास की तरफ बढ़ाईं। 'यह हमारे पूर्वजों ने हमारे लिए बनाया था। लेकिन आप नहीं समझ पाएंगी कि इन पर क्या लिखा है। क्योंकि आप हमारे ईश्वरों के बारे में कुछ नहीं जानतीं।' उसने अपने चोगे में से एक चर्मपत्र निकाला और ओलिंपियास को दिया। 'मैंने इसे यात्रा के दौरान आपके लिए तैयार किया है। ये लिखावट ग्रीक में है। मैं इसे आपको समझाउंगा, अन्यथा आप इसे समझ नहीं सकेंगी। और इसे,' उसने एक चीज की तरफ इशारा किया, 'हमारी जमीन पर निश्चित तौर पर लौटा दें। जब आपका पुत्र सिंधु पार करे, वो इसे कहीं गहरे दबा दे ताकि इसे कभी ढूंढ़ा ना जा सके।' अपनी बात आगे बढ़ाने के पहले वो एक पल रुका, उसका चेहरा गंभीर हो चुका था। 'लेकिन सतर्क रहें। यह एक खतरनाक काम है। अगर दिए गए निर्देश अच्छे तरीके से नहीं माने गए तो आगे सिर्फ मृत्यु है।'

ओलिंपियास ने दोनों चीजें ले लीं, उसके हाथ उत्तेजना से कांप रहे थे। पहली चीज एक घनाकार टुकड़ा थी जो हड्डी से बनी हुई लग रही थी। देखने में बेहद प्राचीन यह चीज पीली पड़ चुकी थी। इस क्यूब की ऊपरी सतह पर कुछ लिखा था लेकिन वो लिपि उसके लिए अनजान थी। दूसरी चीज थी काले रंग की धातु की प्लेट जिस पर कुछ उत्कीर्ण था। दार्शनिक ने बोलना शुरू किया और चर्मपत्र पर लिखी बातों को समझाने लगा, वो ओलिंपियास को निर्देश देता जा रहा था कि क्या किए जाने की जरूरत है।

दार्शनिक ने चर्मपत्र पर एक जगह की तरफ संकेत किया। 'यह वो जगह है जहां आपके पुत्र को रुकना होगा। उसे यहां से आगे नहीं जाना होगा। उसे घर लौटना होगा या फिर वो लौट ही नहीं पाएगा।'

ओलिंपियास ने उसकी बात पर खास ध्यान नहीं दिया। जैसे—जैसे उसकी नजरें चर्मपत्र की सतह पर दौड़ रही थीं, उसकी उत्तेजना बढ़ती जा रही थी। यह उसके बेटे सिकंदर के लिए बनाई गई योजनाओं का चरम होने जा रहा है। वो जानती थी कि पहले से ही वो अपने साम्राज्य को उन सीमाओं से ज्यादा फैलाना चाहता है, जो फिलिप ने खींची थीं और जो खुद भी एक जोशीला विजेता था। अब उसकी पहुंच में ईश्वर के रहस्य हैं, जिनकी मदद से वो सुनिश्चित करेगी कि उसका पुत्र दुनिया पर राज करे। लेकिन एक मनुष्य की तरह नहीं, एक ईश्वर की तरह।

21

वर्तमान

तीसरा दिन

विचित्र साक्षात्कार

राधा टाइटन फार्मास्युटिकल्स के भारत हेडक्वॉर्टर की आलीशान लॉबी को ध्यान से देख रही थी, जब वो सीएमओ के साथ अपनी मीटिंग का इंतजार कर रही थी। वो जानबूझकर इमरान की तरफ देखने से बच रही थी, जो उससे कुछ दूरी पर रखे एक दूसरे सोफे पर बैठा था। वो दोनों एक समय पर ही वहां पहुंचे थे लेकिन अलग—अलग कारों में। राधा को आईबी की तरफ से एक फील्ड एजेंट दिया गया था जो उसे यहां तक लाया था और वापस भी छोड़ने वाला था।

बिल्डिंग अपने आप में एक साधारण छह—मंजिला ढांचा थी, गुड़गांव के कई दूसरे कॉरपोरेट दफ्तरों की तरह, स्टील और कांच से बनी हुई। अंदर जरूर साज—सज्जा की गई थी, संगमरमर के फर्श, रिसेप्शन के लिए ग्रेनाइट काउंटर और लॉबी के बीचों—बीच एक फव्वारा। साफ दिख रहा था कि यहां से मुनाफे वाला और फलता—फूलता बिजनेस चल रहा है।

राधा ठीक से बैठ गई जब उसकी तरफ एक लंबा और दुबला—पतला, अधपके बालों वाला शख्स आया। उसने लेबोरेट्री में पहना जाने वाला कोट पहन रखा था और उसकी शख्सियत से लग गया था कि वही डॉक्टर वरुण सक्सेना है। राधा प्रभावित हो गई। उसने यह उम्मीद नहीं की थी कि वो उसे लेने के लिए खुद आएगा। लेकिन डॉक्टर वरुण को बताया गया था कि राधा एक पत्रकार है जो उनके मेडिकल फेसिलिटी में लगी आग की रिपोर्टिंग कर रही है और राधा ने अनुमान लगाया कि कंपनी अपने बारे में नकारात्मक खबरें नहीं चाहती है। यही वजह है कि डॉक्टर वरुण ने तुरंत उससे मिलने की मंजूरी दे दी थी।

‘हैलो सीमा,’ दुबले—पतले शख्स ने उसके छद्‌म नाम से उसे संबोधित किया। उसके चेहरे पर मुस्कान थी लेकिन वो साफतौर पर बनावटी थी। स्पष्ट रूप से, वो इस मीटिंग को लेकर बहुत खुश नहीं था और जानता था कि उसके पास कोई और चारा नहीं है। ‘मैं हूं

डॉक्टर वरुण सक्सेना।'

राधा ने भी बदले में अभिवादन किया। 'इतनी जल्दी मीटिंग के लिए तैयार होने का शुक्रिया,' उसने जोड़ा। 'हम चाहेंगे कि यह खबर कल चली जाए, अगर इसमें बताने जैसी कोई बात हो तो।'

सक्सेना ने राधा के इस शुरुआती हमले से संभलने की कोशिश की। 'मुझे भरोसा है कि आपको बहुत ज्यादा बताने जैसी चीजें नहीं मिलेंगी। मुझे आपकी जरूरत की सारी जानकारी देकर खुशी होगी, लेकिन मुझे नहीं लगता कि आपको एक खबर के लिए जरूरी काफी मसाले मिलेंगे।' माहौल को हल्का बनाने की अपनी कोशिश के साथ उसने एक मुस्कान बिखेर दी। 'क्या हम ऊपर चलकर बात करें?'

राधा ने सहमति दी और वो दोनों चुपचाप चौथी मंजिल की ओर चल दिए। जब वो लोग मीटिंग रूम में बैठ गए और सक्सेना ने उनके लिए कॉफी ऑर्डर कर दिया तो राधा ने फैसला किया कि सीधे मुद्दे की बात की जाए।

'मैंने पूर्वी दिल्ली में आपकी फेसिलिटी में आग को लेकर कई अफवाहें सुनी हैं,' उसने बोलना शुरू किया, 'और मुझे लगा कि सचाई जानने के लिए सबसे अच्छा तरीका है कि आपसे बात की जाए।'

'बिलकुल, ' सक्सेना ने अपने दांत निपोर दिए। 'यह बहुत अच्छा किया। तो आपने क्या अफवाहें सुनी हैं?'

'देखिए,' राधा एक पल के लिए रुकी जैसे वो सोच रही हो कि उसे क्या कहना चाहिए, 'मैंने सुना है कि कुछ क्लीनिकल ट्रायल डीसीजीआई से मान्यता प्राप्त नहीं थे। यह भी कि लोगों पर जानलेवा माइक्रोब्स के साथ प्रयोग किए जा रहे थे।'

सक्सेना हंस दिया जैसे वो इस सवाल की उम्मीद कर रहा था लेकिन उसकी हंसी में बनावटीपन और घबराहट दोनों थी। 'आपने जहां भी ये अफवाहें सुनी हों, ये बिलकुल झूठ हैं। उस फेसिलिटी में जो भी क्लीनिकल ट्रायल टाइटन कर रही थी, सभी सबके सामने थे। सभी को डीसीजीआई की मान्यता प्राप्त थी। मैं आपको इसके दस्तावेज दिखा सकता हूं। और जानलेवा माइक्रोब्स का इस्तेमाल करना तो कोई सोच भी नहीं सकता। मैं आपको बताना चाहूंगा कि क्लीनिकल ट्रायल इस तरीके से नहीं होते। और, टाइटन में हमने काम करने के सख्त सिद्धांत बना रखे हैं जिन पर हमें गर्व है। मैं एक वायरोलॉजिस्ट हूं और मुझे तुरंत पता चल जाएगा कि कहीं कुछ गड़बड़ी तो नहीं हो रही।'

'और फेसिलिटी में जो लाशें मिलीं? इस बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?' राधा जानती थी कि इमरान ने फैसला किया था कि लाशों के मिलने की बात को अभी सार्वजनिक नहीं किया जाए, नहीं तो मीडिया की नजर में आने के बाद जांच प्रभावित हो सकती थी। उसे इस बात का पूरा भरोसा था कि सक्सेना मीडिया की तरफ से इस सवाल की उम्मीद नहीं कर रहा होगा और वो चाहती थी कि वो उसे रंगे हाथों पकड़े।

सक्सेना चौंक गया। साफतौर पर वो इस सवाल की उम्मीद नहीं कर रहा था। उसकी आंखें सिकुड़ गईं। 'आपसे यह किसने कह दिया?' उसने पूछा। 'यह बिलकुल झूठ है। आग में कोई नहीं मारा गया है। संपत्ति और उपकरणों को भारी नुकसान हुआ था लेकिन किसी की मौत नहीं हुई थी।'

राधा ने गहरी सांस ली। 'डॉक्टर सक्सेना, मुझे भरोसा है आप जानते होंगे कि हम पत्रकारों के अलग—अलग जगहों पर सूत्र होते हैं। पुलिस में भी। जो मैंने सुना है वो आपकी बात से मेल नहीं खा रहा। मेरे सूत्रों के अनुसार, जब दमकल की गाड़ियां वहां पहुंची तो बिल्डिंग में कोई नहीं था। कोई स्टाफ, लैब टेक्नीशियन या रिसर्चर नहीं था। सभी लोग गायब हो गए थे। सिर्फ उन लाशों को छोड़कर जो एक गुप्त तहखाने में मिले थे, हाई—टेक सेल्स में, जो बाहर से बंद थे। और मैंने यह भी सुना है कि उन लोगों को गोली मारी गई थी। वो आग में नहीं मरे और शायद आपकी बात में इतनी ही सचाई थी।'

सक्सेना के कंधे झुक गए और उसके चेहरे पर घबराहट दिखने लगी। लेकिन उसने तुरंत ही खुद को संभाल लिया। या तो उसे बहुत अच्छी ट्रेनिंग दी गई थी या फिर उसे ऐसे मुश्किल हालात संभालने का लंबा अनुभव था।

'ठीक है,' वो राधा की तरफ देखकर मुस्कुराते हुए बोला। 'मैं सोच रहा था कि कोई इस बारे में नहीं जानता। मैं आपसे झूठ बोलने के लिए माफी मांगता हूं। लेकिन मेरी समझ से आप इस मामले की गंभीरता को और इसके हमारी कंपनी पर पड़ने वाले असर को अच्छे से समझती होंगी।' उसने अपना सिर हिलाया। 'हमें बिलकुल नहीं पता कि वो लाशें वहां कैसे आईं या वो लोग वहां क्यों थे। यकीन मानिए, टाइटन दृढ़ आदर्शों और सिद्धांतों वाली कंपनी है। हमारे फाउंडर और चेयरमैन कुर्त वॉलेस सिर्फ अमेरिका में ही नहीं, दुनिया भर में सिद्धांतों में विश्वास रखने वाले और सम्मानित व्यक्ति के रूप में जाने जाते हैं। मैं यह नहीं कह रहा कि हमसे भूल नहीं होती। हम भी गलतियां करते हैं। लेकिन यह हमारी भूल नहीं थी। हमारा मानना है कि उस फेसिलिटी का मालिक सुमन पाहवा वहां एक गुप्त अड्डा चला रहा था। अगर आप इसकी वजह जानना चाहती हैं तो बेहतर होगा कि आप उसी से बात करें। मतलब जब पुलिस उसे ढूंढ़ ले। मुझे यकीन है कि आपके सूत्र इस बारे में आपकी मदद कर सकते हैं।' उसने अपने शब्दों पर खासा जोर दिया।

यानी इसका मतलब है कि इसे पाहवा की लाश मिलने की बात नहीं पता। राधा ने फैसला किया कि वो इसे यह बात नहीं बताएगी।

'लेकिन सेंटर पर तो सिर्फ टाइटन के ट्रायल्स चल रहे थे।' राधा हार मानने को तैयार नहीं थी।

'जी हां, बिलकुल। मैं इस बात से इनकार नहीं करता।'

'तो ऐसी फेसिलिटी में, जहां क्लीनिकल ट्रायल हो रहे हों, आपको सेल्स की जरूरत क्यों थी?'

सक्सेना ने गहरी सांस ली। 'आप वहां गंदगी ढूंढ़ने की कोशिश कर रही हैं, जहां यह है ही नहीं। जैसा मैंने आपको बताया, ये क्लीनिकल ट्रायल, दूसरे ट्रायल की ही तरह, बाहर कराए जा रहे थे। इन ट्रायल को कराने वाली लैब आर्यन उस फेसिलिटी की मालिक थी। हमने रिसर्च को प्रायोजित करने के लिए समझौता करने के पहले अपना प्रतिनिधि भेजकर उस फेसिलिटी की जांच कराई थी, लेकिन हम यह कैसे जान सकते थे कि कोई गुप्त तहखाना भी वहां हो सकता है। किसी जगह को देखते वक्त कोई यह थोड़े ही देखता है कि वहां गुप्त कमरे हैं या नहीं। आप गलत जगह पर गलत सवाल पूछ रही हैं। मैं यह फिर से कहूंगा कि आप पाहवा से पूछें। आपको उससे पूछताछ कर गंदगी ढूंढ़नी चाहिए, टाइटन में नहीं। फेसिलिटी से जो बात सामने आई है, उसने हमें भी उतना ही चौंकाया जितना आपको।'

राधा ने उसकी बातों को करीब—करीब नजरअंदाज करते हुए जवाब दिया, 'एक और अजीब बात यह थी कि फेसिलिटी की सिर्फ तीन मंजिलें ही जली थीं। संयोग से, यही वो तीन मंजिलें थीं जहां आईटी सेंटर और फेसिलिटी के सभी मेडिकल रिकॉर्ड थे। आपको यह अजीब नहीं लगता कि सिर्फ उन्हीं मंजिलों पर आग लगी? यह तो साफ—साफ लग रहा है कि फेसिलिटी में हो रहे ट्रायल से जुड़े रिकॉर्ड और आंकड़ों को नष्ट करने के लिए जानबूझकर आग लगाई गई।'

'मेरा जवाब वही है।' सक्सेना की आवाज में अब रूखापन था। 'हमें नहीं पता कि आग किसने लगाई या कैसे लगी। इसकी जांच शुरू हो गई है और जब यह पूरी हो जाएगी तो निस्संदेह हमें ज्यादा जानकारी मिलेगी। अभी हम सिर्फ अटकलें लगा सकते हैं; और हमारा मानना है कि इन सबके पीछे सुमन पाहवा का हाथ है।'

राधा ने इस बात पर सिर हिला दिया। अब जोखिम लेने का समय था। 'मैंने ये भी सुना है कि जो लाशें मिली थीं, वो एक अनजान बैक्टीरिया और वायरस से संक्रमित थीं। यह कैसे मुमकिन है कि पाहवा, अगर वो इन सबके लिए जिम्मेदार है, को एक नहीं बल्कि दो नए माइक्रोब्स मिल गए और उसने आपके मेडिकल सेंटर में सौ से ज्यादा लोगों पर इसके क्लीनिकल ट्रायल कर डाले और किसी को कुछ पता नहीं चला?'

सक्सेना का चेहरा सख्त हो गया। साफ था कि इस प्रश्न ने एक दुखती रग छेड़ दी थी। 'मैं सच में जानना चाहूंगा कि आपके सूत्र कौन हैं,' वो कठोर लहजे में बोला। 'ऐसा लगता है कि आप बहुत सारी अनाप—शनाप चीजें जानती हैं। आप टाइटन के खिलाफ गंभीर आरोप लगा रही हैं जिनका कोई सबूत नहीं है। बदकिस्मती से, इस दुखद घटना ने साबित किया है कि कहीं ना कहीं हमारा प्रशासन नाकाम रहा। सेंटर के स्टाफ सिर्फ अपना काम कर रहे थे, परीक्षण कर रहे थे या नमूने इकट्ठे करने जैसे काम कर रहे थे। वो शायद इस झूठे भरोसे में रह गए कि सभी ट्रायल्स को आधिकारिक स्वीकृति है। हम अपने अंदरूनी सिस्टम की जांच कर रहे हैं और अब हम ऐसा प्रोसेस बनाएंगे जो यह सुनिश्चित करे कि ऐसी घटना दोबारा ना हो। इसके लिए मैं आपको निजी तौर पर भरोसा दिला सकता हूं।'

वो राधा की तरफ झुका, उसका चेहरा पत्थर की तरह सख्त और मन में दबे डर की वजह से काला पड़ गया था। 'और मैं जानता हूं कि आप इस खबर को नहीं छापेंगी, मिस सीमा। आप जानती हैं क्यों?'

राधा ने कुछ नहीं कहा। उसकी आवाज में कुछ ऐसा था जो दहला देने वाला था। क्या उसने ज्यादा जोखिम ले लिया था?

'क्योंकि,' सक्सेना ने अपनी बात जारी रखी, 'आपके पास कोई सबूत नहीं है। अगर आप टाइटन फार्मास्युटिकल्स को बदनाम करने के लिए ऐसी खबर छापेंगी, हम आपके अखबार पर मुकदमा करेंगे। और मैं जानता हूं कि आपका संपादक ऐसा खतरा तो नहीं उठाएगा।'

राधा ने जवाब दिया। 'और अगर हमें सबूत मिल जाएं तो?'

वो निडरता से सीएमओ को घूर रही थी, हालांकि उसका कलेजा मुंह को आ रहा था।

सक्सेना उसकी तरफ देखकर नाखुशगवार तरीके से मुस्कुराया। 'आपको नहीं मिलेंगे। और मैं आपको सलाह दूंगा कि आप कोशिश भी ना करें। यह खतरनाक हो सकता है।'

'आप मुझे धमकी दे रहे हैं डॉक्टर सक्सेना,' राधा खुद पर काबू पाने की कोशिश करते हुए बोली। उसका निचला होंठ कांपने लगा था।

सक्सेना की आवाज एकाएक बदल गई। उसने सामान्य होने का मुखौटा वापस ओढ़ लिया था। 'नहीं, बिलकुल नहीं,' जबरन मुस्कान उसके चेहरे पर लौट आई। 'मैं बस इतना कह रहा था कि अगर कोई हमारे परिसर का इस्तेमाल गैर कानूनी क्लीनिकल ट्रायल के लिए कर रहा था, और वो लोग हमसे इतने लंबे समय तक इस बात को छिपाने में कामयाब रहे, तो वो इस बात की पूरी कोशिश करेंगे कि वो और उनकी घृणित योजनाएं सबसे छिपी रहें। वो इस बात से नाराज हो सकते हैं कि कोई रिपोर्टर उनके राज का पर्दाफाश करने की कोशिश करे।' वो खड़ा हो गया, ये इशारा करने के लिए कि मीटिंग खत्म हो चुकी है। 'आप एक अच्छी नौजवान महिला हैं,' उसने अपनी बात पूरी की। 'मुझे यह बिलकुल अच्छा नहीं लगेगा कि आपको कुछ हो जाए। इसलिए अपना ख्याल रखिए।'

राधा ने चुपचाप सिर हिला दिया। जो कुछ वो सुन रही थी उसे लेकर उसके मन में कोई भ्रम नहीं था। उसने तुरंत सक्सेना से हाथ मिलाया और वहां से चल दी।

जब वो चली गई, सक्सेना अपनी कुर्सी में बैठा, थोड़ी देर तक छत पर लगी लाइट्स को देखता रहा। फिर उसने ठंडी सांस भरी और अपना मोबाइल फोन निकाला।

'सक्सेना बोल रहा हूं,' कॉल लगने के बाद उसने कहा। 'कुछ ऐसा है जो तुम्हें जानने की जरूरत है।'

22

गुप्त डायरी

'बिलकुल,' विजय अपना गला साफ करते हुए बोला। 'देखते हैं। यह थोड़ा उलझन में डालने वाला है। यूमेनीज के बारे में अलग—अलग जगहों पर अलग—अलग चीजें मिलती हैं। लेकिन मुझे जितना पता चल सका, उससे लगता है कि वो सिकंदर का एक जनरल था जो उसकी मौत के बाद गृह युद्ध में फंस गया था। उसने ओलिंपियास को उसके पोते को मकदूनिया की गद्दी पर बैठाने की कोशिशों में साथ भी दिया था और इसे करते हुए उसने अपनी जान गंवा दी थी। ये भी लगता है कि वो एक विद्वान था और सिकंदर के एशिया अभियान के दौरान राजसी रोजनामचे की देखरेख करता था।'

'तुमने संक्षेप में काफी अच्छे से बता दिया, खासतौर पर अगर इस बात को ध्यान में रखा जाए कि तुम्हें कैलिस्थनीज और यूमेनीज पर रिसर्च करने के लिए ज्यादा वक्त नहीं मिला था,' एलिस ने कहा। 'यूमेनीज सिकंदर के पिता फिलिप द्वितीय का सचिव भी रहा था। और फिलिप की मौत के बाद यूमेनीज सिकंदर का मुख्य सचिव बन गया, साथ ही वो उसके प्रमुख सेनापतियों में भी एक था। सिकंदर की मौत के बाद उसके सेनापतियों में साम्राज्य के विभाजन को लेकर भीषण लड़ाई हुई। ज्यादातर जगहों पर इस बात का जिक्र है कि यूमेनीज एक काबिल सेनापति था, लेकिन ऐसा लगता है कि उसकी किस्मत उसके साथ नहीं थी। यह एक लंबी कहानी है लेकिन मैं संक्षेप में बताती हूं। एक बार पर्डिकास, जो सिकंदर का निर्वाचित उत्तराधिकारी था, के खिलाफ विद्रोह करने वाले सेनापतियों ने उसे मौत की सजा सुना दी थी लेकिन उस वक्त उसने मौत को मात दे दी थी। लेकिन सिकंदर के ही एक और सेनापति एंटीगोनस के साथ युद्ध में मौत उसका पीछा कर रही थी। एंटीगोनस को पराजित करने के बावजूद यूमेनीज को उसके ही क्षत्रपों ने धोखा दिया और 316 ईसा पूर्व में उसे एंटीगोनस ने मार डाला। यह कहा जाता है कि उसने एंटीगोनस के साथ युद्ध के पहले सभी दस्तावेज और जरनल नष्ट कर दिए थे। हालांकि किसी भी ऐतिहासिक दस्तावेज में उसकी किसी गुप्त डायरी का कोई जिक्र नहीं मिलता।'

'तुम्हारे अनुसार यह नकली है?' विजय ने थोड़े गुस्से में पूछा। उसकी आवाज में आक्रामकता को देखकर कोलिन ने भौंहें चढ़ाईं।

एलिस अब डायरी को ध्यान से पढ़ रही थी। उसने शायद इस पर गौर ही नहीं किया था। 'ऐसा तो नहीं लगता,' उसने धीरे से कहा, जैसे खुद से ही कह रही हो। 'अनुवादक लॉरेंस

फुलर की शुरुआती टिप्पणी के अनुसार, उसने 1954 में मिस्र में पुरानी चीजों के एक दुकानदार से ठीक—ठाक हालत में पपीरस दस्तावेजों का एक दस्ता लिया था, जब वो काहिरा के पास खुदाई के लिए गई एक टीम का हिस्सा था। फुलर ने बड़े पैमाने पर टीका—टिप्पणी भी जोड़ी है। लेकिन मुझे यह नहीं समझ आ रहा कि यह डायरी मिस्र कैसे पहुंच गई। यूमेनीज उस इलाके में मारा गया था जो आज ईरान है।' उसने विजय की तरफ देखा। 'तुम्हें यह कहां से मिली?'

विजय ने उसे बताया कि कैसे उसने और राधा ने इस डायरी को आज सुबह ही ढूंढ़ निकाला था। 'मेरे माता—पिता इतिहासकार थे,' उसने अपनी बात खत्म करते हुए कहा, 'वो आर्कियालॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया में काम करते थे।'

'अद्भुत,' एलिस फुसफुसाई, और फिर डायरी पढ़ने लगी। 'ऐसा लगता है कि पपीरस दस्तावेज ठीक—ठाक हालत में तो थे लेकिन कुछ हिस्से गायब थे। फुलर, जो भी वो था, ने अनुवाद करते वक्त अपनी तरफ से पूरी कोशिश की थी कि इसका अर्थ समझ में आए, लेकिन गायब शब्दों के साथ इसे पढ़ने और समझने में दिक्कत हो रही है।'

'तुम्हारे माता—पिता को यह डायरी कहां से मिली,' कोलिन ने आश्चर्य जताया। 'हो सकता है वो इस फुलर को जानते हों।'

विजय ने कंधे उचकाते हुए जवाब दिया। 'मैं बहुत छोटा था, और बदकिस्मती से उस समय उनके कामकाज में मेरी दिलचस्पी भी नहीं थी। मुझे बिलकुल नहीं पता कि उनके दोस्त कौन थे या यह फुलर भी उनका दोस्त था। हालांकि आज मैं सोचता हूं कि काश मुझे पता होता। कितना अच्छा होता अगर मैं उससे संपर्क कर पाता और अपने माता—पिता के बारे में बात कर पाता।' उसकी आवाज में एक उदासी सी उतर आई।

'अभी मेरे पास इतना धैर्य नहीं है कि मैं पूरी डायरी पढ़ूं,' एलिस ने जल्दी से अपनी बात खत्म की, उसकी आवाज में रोमांच की झलक थी। 'मुझे इसका सार बता दो।'

'फुलर के मुताबिक यह डायरी दो हिस्सों में है और इसमें एक अक्षर भी है,' विजय ने अपनी बात शुरू की। 'कैलिस्थनीज वाला हिस्सा लगता है कैलिस्थनीज ने खुद लिखा है, लेकिन साफतौर पर ये यूमेनीज की 'द डीड्स ऑफ अलेक्जेंडर' से निकाला गया था, जिसे कैलिस्थनीज ने अपनी डायरी का हिस्सा बना लिया। कैलिस्थनीज के मुताबिक सिकंदर ने सॉगडियन रॉक अभियान के दौरान उसे एक गुप्त मिशन पर भेजा था। इस कहानी में कई चीजें गुम हैं क्योंकि डायरी के इस हिस्से को काफी नुकसान पहुंचा था। इसलिए यह बहुत साफ नहीं है कि इस मिशन के उद्देश्य क्या थे। लेकिन इस बात का वर्णन है कि वो बैक्ट्रिया के जंगलों में घूम—घूमकर पेड़ों और पत्तियों का परीक्षण कर रहा था। इसका कोई मतलब समझ नहीं आता।'

'बस इतना ही?' एलिस ने सोचा यह तो एंटी—क्लाइमेक्स हो गया।

'उस कहानी में बस यही है। कैलिस्थनीज लौटा, उसका मिशन कामयाब रहा, और

सिकंदर ने उसके इस काम के लिए कृतज्ञता जताई।'

'और थोड़े दिनों बाद ही उसे मरवा डाला,' कोलिन हंस दिया। 'यह उसकी मनोदशा के उतार—चढ़ाव को दिखाता है।'

'क्या डायरी इस बारे में बताती है कि कैलिस्थनीज को बैक्ट्रिया में मिला क्या था?' शुक्ला ने धीरे से पूछा। वो अब तक चुपचाप बैठे, हाथी दांत के क्यूब का निरीक्षण कर रहे थे और उनकी बातचीत सुन रहे थे।

विजय ने अपने नोट्स देखे और फिर ना में सिर हिला दिया। 'फुलर के अनुवाद में ऐसा कुछ नहीं है। हो सकता है कि मूल पपीरस दस्तावेजों में यह हो और वो हिस्सा बर्बाद हो चुका हो।'

'यह मुमकिन लगता है,' एलिस की टिप्पणी आई। 'कैलिस्थनीज सिकंदर के एशिया पर आक्रमण के दौरान कई वैज्ञानिक मिशन पर गए थे। लेकिन यह चौंकाने वाली बात है कि इस कहानी में ज्यादा कुछ नहीं है। मिसाल के लिए वो बैक्ट्रिया के जंगलों में क्या कर रहा था।'

'यूमेनीज की कहानी थोड़ी ज्यादा दिलचस्प है। तुम लोग उसके लिए तैयार हो जाओ।' विजय की आंखों में एक चमक थी। 'यूमेनीज के मुताबिक सिकंदर को उसकी मां ने एक चर्मपत्र दिया था जिस पर छह छंद लिखे थे, जिसकी मदद से उसे उस चीज को ढूंढ़ने में मदद मिलती, जिसे वो 'ईश्वर का रहस्य'' कहते थे। यूमेनीज ने इस बात का खुलासा नहीं किया है कि वह रहस्य क्या था, लेकिन वो कहता है कि चर्मपत्र पर लिखे छंद दिशा—निर्देश थे जो सिकंदर को रहस्य का पता लगाने में मदद करते। उन दोनों ने एक रात अपनी सेना को छोड़ा और अपने साथ एक छोटा चमड़े का थैला और एक मोमजामे का थैला रखा, हालांकि उनमें क्या था, यह यूमेनीज को नहीं पता था। उन्होंने उस गुप्त स्थान को ढूंढ़ निकाला, जो एक ऐसे पहाड़ में था जिसकी आकृति पांच सिर वाले सांप की थी। सिकंदर ने यूमेनीज को पीछे छोड़ा और थोड़ी देर के लिए अंदर गया। जब वो लौटा, उसकी छाती के कवच गीले थे, जैसे वो किसी तालाब में डुबकी लगाकर आया हो। यूमेनीज नहीं जानता था कि उस रात क्या हुआ, लेकिन वो यह कहकर अपनी बात खत्म करता है कि सिकंदर को ईश्वर का रहस्य मिल गया था और उस रात के बाद से, वो भी ईश्वर बन गया था।'

जब विजय ने अपनी बात खत्म की तो वहां चुप्पी छाई थी।

'यह कुछ कहानी हुई,' अंत में एलिस ने कहा। 'यह निश्चित तौर पर ऐतिहासिक अभिलेख से मेल खाती है जिसमें बताया गया है कि सिकंदर ने स्वयं को ईश्वर घोषित कर दिया था और वो पूजा जाना चाहता था। लेकिन यह कहानी ऐसी लगती है जैसे सिकंदर पर लिखे उपन्यासों में एक हो।'

'मैंने उस बारे में सुना है,' कोलिन ने कहा। 'देख लो, मैं ग्रीक इतिहास से बिलकुल अनजान नहीं हूं। सिकंदर के बारे में एक कहानी संग्रह है ना?'

'कोलिन, मैं उसे ग्रीक इतिहास नहीं कहूंगी,' एलिस मुस्कुराती हुई बोली। 'सिकंदर पर

उपन्यास किसी अनजान ग्रीक लेखक ने लिखे थे जिसे आज छद्म—कैलिस्थनीज कहकर संबोधित किया जाता है। ये उपन्यास तीन संस्करणों में हैं और काफी मजेदार हैं। सबसे पुरानी पांडुलिपि तीसरी सदी की है। उनमें सिकंदर के बारे में कहानियां हैं जो इतनी मजेदार हैं कि उन पर यकीन नहीं किया जा सकता। सच पूछो तो उसमें इतिहास से ज्यादा कल्पना है।'

कोलिन मुस्कुराया। 'हां—हां, मैं भी जानता था ये, सच में।'

एलिस उस बारे में सोच रही थी जो विजय ने अभी—अभी उन्हें बताया था। 'सिकंदर का इकलौता अभियान जिस पर वो गया था, वो था दुनिया जीतने का। यह तो इतिहास में काफी अच्छे से दर्ज है।' वो अभी भी अपनी बात पर कायम थी। 'और, अगर हम एक पल के लिए यह भी मान लें कि वो एक गुप्त अभियान पर गया था "ईश्वर के रहस्य" की तलाश में तो भी यूमेनीज ने इस बात का वर्णन तो किया नहीं है कि उसे कोई कीमती चीज मिली हो। वो बस इतना कहता है कि सिकंदर पहाड़ के अंदर अकेला गया और जब बाहर लौटा तो उसके कवच गीले थे।'

'शायद उसने ईश्वर का तालाब ढूंढ़ निकाला हो,' कोलिन फिर से मुस्कुरा दिया। 'वो भी तो बेहद खास होगा ना?'

एलिस ने उसकी ओर देखकर बुरा सा मुंह बनाया। 'अच्छा मजाक था, कोलिन। लेकिन सच तो यही है कि यह कहानी भी सिकंदर के उपन्यासों में जो कहानियां हैं, उनकी तरह लग रही है। उपन्यासों के सभी संस्करणों में सिकंदर को ईश्वर की तरह प्रस्तुत करना सामान्य है। हो सकता है इसीलिए यूमेनीज ने इस कहानी को अपने आधिकारिक अभिलेखों में शामिल नहीं किया हो। इसमें इतनी कल्पना है कि इसे सच नहीं माना जा सकता।'

शुक्ला ने अपना गला साफ किया और विजय को संबोधित किया। 'क्या यूमेनीज यह बता रहा है कि वो छह छंद किस बारे में थे?' उन्होंने धीरे से यह प्रश्न पूछा।

'मैंने सोचा कि आप लोग नहीं पूछेंगे,' विजय के हाव—भाव से लगा कि वो अब कुछ बड़ी चीज का खुलासा करने जा रहा है। 'उसने डायरी में हर छंद को दर्ज किया है और फुलर ने हर छंद का अनुवाद करने की कोशिश की है। कुछ शब्द गायब हैं लेकिन आप हर छंद का सार तो समझ ही जाएंगे। ये रहे वो छंद।'

उसने अपनी नोटबुक का एक पन्ना पलटा और पढ़ना शुरू किया।

23

मंडराता हुआ संकट

कूपर प्रेसिडेंशियल सुइट के अपने बेडरूम में बैठा था और अपने निजी कंप्यूटर पर क्रिश्चियन वान क्लुएक का चेहरा देख रहा था। उसने वान क्लुएक को अभी तुरंत बताया था कि मिशन का काम कितना आगे बढ़ा है। वान क्लुएक पूरी बातचीत के दौरान सिर हिलाता जा रहा था और संकेत दे रहा था कि वो कॉल को जल्दी से खत्म करना चाहता है।

लेकिन, जब कूपर ने उन लोगों के बारे में बताया, जो एलिस के साथ थे, इस ऑस्ट्रियन बिजनेसमैन का पूरा ध्यान उसकी बातों पर गया। उसकी बाज जैसी तीखी आंखें स्थान और समय की दूरी के परे कूपर पर धंस गईं।

'मैं इन नामों को पहचानता हूं।' वान क्लुएक की आवाज में पैनापन था। वो उन लोगों को नहीं भूला था जिन्होंने पिछले साल महाभारत के उस राज को हासिल करने की ऑर्डर की कोशिशों को विफल कर दिया था, जो पिछले दो हजार सालों से गुप्त था। 'वो रास्ते के बहुत बड़े कांटें हैं। उन्हीं लोगों की वजह से पिछले साल हमें ऑर्डर के एक अहम सदस्य को खोना पड़ा था।' उसने जल्दी—जल्दी कूपर को उन घटनाओं के बारे में बता दिया।

'हमने उन्हें खत्म क्यों नहीं कर दिया?' कूपर चकित था कि ऑर्डर ने इन लोगों को आसानी से जाने क्यों दिया। उनका अभी तक जीवित रहना ऑर्डर के काम करने के तरीके से मेल नहीं खाता। "कोई जिंदा ना बचे, कोई गवाह ना बचे" ऑर्डर का मार्गदर्शी सिद्धांत था। ऑर्डर के साथ काम करने वाला हर शख्स इस सिद्धांत से वाकिफ था। इसका कोई अपवाद नहीं हो सकता था। इस मामले में इस सिद्धांत से क्यों हटा गया, कूपर समझ नहीं पा रहा था।

वान क्लुएक ने कूपर के मन में चल रहे सवालों को महसूस कर लिया था। वो वास्तव में ऑर्डर का मेंबर नहीं था, सिर्फ एक कर्मचारी था। 'जितनी पीछे तक किसी की याददाश्त जा सकती है, ऑर्डर तब से काम कर रहा है, इतिहास की शुरुआत से। ये व्यक्तिगत प्रतिशोध से कहीं बड़ा है। कोई नहीं जानता ऑर्डर का उद्देश्य क्या है। यह सिर्फ ऑर्डर के सदस्यों को पता है। लेकिन जो लोग मायने रखते हैं, वो जानते हैं कि हम क्या कर सकते हैं। और वो हासिल किया जा रहा है चुपचाप रहकर, पर्दे के पीछे से काम करके, राजनीति, युद्ध, अर्थव्यवस्थाओं, व्यापार और वित्तीय बाजारों के चालाकी से इस्तेमाल के जरिए। और इसलिए तुम्हारा मिशन इतना महत्वपूर्ण है।'

'यह समस्या खड़ी कर सकता है,' कूपर ने कुछ सोचने की मुद्रा में अपनी ठुड्डी खुजाई। 'भारतीय खुफिया विभाग के इस मामले में शामिल होने की वजह से कुछ भी हासिल कर पाना मुश्किल होगा।'

वान क्लुएक ने फीकी मुस्कान बिखेरी। 'मैं तुम्हें जानता हूं। तुम अपने काम को छिपाए रखोगे। ये लोग हमारे लिए कोई महत्व नहीं रखते। और हमारा इस काम के पीछे कोई स्वार्थ नहीं है। इसलिए अगर कोई भी तुम्हारे रास्ते में आता है तो जो तुम्हें सही लगे, वो करो। कोई जिंदा ना बचे, कोई गवाह ना बचे। तुम नियम जानते ही हो।'

कूपर ने हामी भरी और बातचीत खत्म हो गई।

तभी बेडरूम के दरवाजे पर दस्तक हुई। कृष्णन आया था जो कुछ बेचैन सा था।

'कोई परेशानी है?' कूपर ने पूछा।

'आईबी अफसर और राधा शुक्ला दोनों टाइटन फार्मास्युटिकल्स में हैं।'

अगले ही पल कूपर सुइट के लिविंग रूम में था। 'यह नहीं हो सकता।'

कृष्णन ने एक मॉनिटर की तरफ इशारा किया जिसमें दो जगहों पर लाल रोशनी टिमटिमा रही थी। 'यह टाइटन है। और ये दो हमारे शिकार हैं।'

कूपर अपनी आंखों पर यकीन नहीं कर सका। क्या भारतीय खुफिया एजेंसियों को उनकी योजनाओं की भनक लग गई है? यह तो मुमकिन ही नहीं था। कोई नहीं जानता था। यहां तक कि वो भी पूरी बात नहीं जानता है। वो बस इतना जानता है कि यह मिशन पच्चीस साल पहले शुरू हुआ है। उसे कहा गया था कि स्तावरोस को काम पर लगाया जाए और ओलिंपियास के मकबरे पर खुदाई के काम की अगुवाई में हाथ बंटाए। उसे बताया गया था कि मकबरे से क्या चीजें निकालनी हैं। और उसे इस बात का भी निर्देश दिया गया था कि एक बार जब कलाकृतियां मिल जाएं तो उनका क्या करना है। वो इससे ज्यादा नहीं जानता था।

तो ऐसा क्या है जो आईबी जानती है और वो नहीं?

जो भी हो, उसे कार्रवाई तो करनी होगी। उसने तुरंत अगले कदम का फैसला कर लिया। सबसे पहले उसे एक फोन करना है। और उसके बाद उसे अपने शिकार को खत्म करना था। वो लोग सच जानने के बेहद करीब पहुंच रहे थे।

और वो ऐसा नहीं होने दे सकता था।

24

एक टूटी कड़ी

विजय ने सभी छह छंद पढ़े, वो तभी रुक रहा था जब उसे हर छंद को एक नंबर देना होता था और वो गुम शब्दों को छोड़ता जा रहा था।

'पहला छंद,' उसने शुरू किया। 'यह छंद ऐसा है जो करीब—करीब पूरा है।

तब... छल का जन्मस्थान
जो जन्मा है मृत्यु से, कट्टर प्रतिशोध से
जिसने खत्म कर दिया एक सम्राट के वंश को
जो था साहसी योद्धा... पासा फेंको!
और... भाग्य तुम्हें राह दिखाएगा!

दूसरे छंद में कई शब्द गायब हैं,' उसने आगे पढ़ने के पहले ये बात जोड़ दी।

'तेजी से... आंख के उस पार
...लवणरहित सागर के पास
तीन भाई...
उस तीर के अग्रभाग पर जो... राह
प्रवेश करने के लिए... हेडस के
खुदाई करो... सांप की मुहर
और पाओ... अन्वेषण।'

'तीसरा छंद,' वो आगे बढ़ा।

'और... पर्वत...
तोड़ो... और... और छाल
पहला जिसमें हों... और फल
गहरा... ढका हो... सफेद
और... या... अगला है चिकना
फल का....

रहना सावधान... छाले होंगे... स्पर्श।

'चौथा छंदः

अब प्रवेश करो... द्वार...
घाटियां... पूर्व...
चुनाव करो.... यहां, याद रखो जहां
तुम... अपोलो रहता है।'

'पांचवां छंद हैः

पर्वत... के ऊपर
जहां... और रात... मिलते हैं
और... पोजीडॉन का दंड
....को ...सर्प
पांच... अभिभावक
द्वार... जीवन... देगा।'

'और ये रहा अंतिम और छठा छंदः

'याद रखो... निर्भीक हो...
करो उपेक्षा... अपने जोखिम पर
तत्व... एक साथ
सुरक्षा से लैस... तीक्ष्ण दृष्टि
...की ...अवमानना
और खो बैठो... अमूल्य उपहार।'

विजय ने अब ऊपर देखा। सब तरफ चुप्पी छाई थी।

'तो इसका मतलब है कि सिकंदर ने जो चर्मपत्र अपने साथ रखा था और हाथी दांत का जो क्यूब एलिस को उसकी मां के मकबरे में मिला है, उनमें आपस में कोई संबंध है।' कोलिन ने चुप्पी तोड़ी। 'पहले छंद के अलावा, बाकी सभी वैसे ही हैं जो क्यूब पर लिखे हैं। ये साफ दिख रहा है, भले ही कुछ शब्द गायब हैं।'

शुक्ला ने कोलिन की बात का समर्थन किया। 'मुझे लगता है कि ये मामला कुछ ऐसा था। जब तुमने कैलिस्थनीज के बैक्ट्रिया के जंगलों में मिशन का जिक्र किया था, मेरा दिमाग तुरंत उस छंद की तरफ चला गया था जिसमें पत्तियों, छाल और एक पौधे का वर्णन किया गया है। और जब तुमने बताया कि सिकंदर का अभियान पांच सिर वाले एक सांप के साथ खत्म हुआ था, मेरा निष्कर्ष इस बात से और पुष्ट हो गया। क्यूब का एक छंद रास्ते के अभिभावक के तौर पर एक ऐसे सांप की बात करता है जिसने पांच मुकुट पहन रखे हैं, इसे पांच सिर वाले सांप के तौर पर देखा जा सकता है। लेकिन मैं खुद तय नहीं कर पा रहा था

कि क्या मैं इन कड़ियों को जोड़कर वो संबंध बनाने की कोशिश कर रहा था जो था ही नहीं।'

'यह दिलचस्प है,' एलिस ने धीरे से बोला। ऐसा लग रहा था कि वो बोलते हुए सोच भी रही है। 'क्यूब में भारतीय देवताओं का जिक्र है और एक प्राचीन भारतीय भाषा और प्राचीन भारतीय लिपि में लिखा है। दूसरी ओर सिकंदर के पास जो चर्मपत्र था, उसमें भारतीय देवताओं के बदले ग्रीक देवता हैं। सूर्य की जगह अपोलो है, शिव की जगह पोजीडॉन है। और सिर्फ देवता ही नहीं——पाताल की जगह हेडस ने ले ली है। इस बात की संभावना ज्यादा है कि चर्मपत्र पर लिखा भी ग्रीक में गया हो। इसका मतलब यह है कि क्यूब भारत में तैयार किया गया और किसी ने उसका अनुवाद ग्रीक में किया। इससे सिकंदर के लिए छंद अधिक प्रासंगिक हो गए और संस्कृत छंद की तुलना में आसानी से समझ भी आ गए।'

'इससे तो और नए सवाल खड़े होते हैं,' विजय ने कहा। 'सबसे पहले तो यही कि क्यूब आया कहां से? और किसने मूल संस्कृत छंदों का अनुवाद ग्रीक में किया? ये तो वही कर सकता है जिसे संस्कृत और ग्रीक दोनों भाषाएं आती हों। फिर, वो अभियान कौन सा था जिसकी बात चर्मपत्र में की गई है? यह निश्चित रूप से सिकंदर के लिए बेहद महत्वपूर्ण रहा होगा तभी तो वो इसके लिए ग्रीस से भारत तक आ गया। यूमेनीज के अनुसार यह अभियान ईश्वर का रहस्य ढूंढ़ने के लिए था। लेकिन इससे कोई बात साफ नहीं होती।'

'और उस पत्र का क्या?' एलिस ने विजय से पूछा। 'तुमने कहा था कि डायरी के साथ एक पत्र भी था।'

विजय ने हामी भरी। 'फुलर के मुताबिक, वो पत्र डायरी के लिए व्याख्या पत्र जैसा है। यह यूमेनीज ने ओलिंपियास को संबोधित करते हुए लिखा था। फुलर का मानना है कि यह पत्र डायरी के साथ ही यूमेनीज ने ओलिंपियास के पास भेजा था। शायद उसने अपनी मृत्यु के कुछ समय पहले ही इसे ओलिंपियास के पास भेजा हो?'

एलिस ने भौंहें तानते हुए जवाब दिया। 'यूमेनीज की मौत 316 ईसा पूर्व में हुई थी। और ओलिंपियास की भी। हो सकता है उसे यह पत्र मिला ही ना हो। शायद फुलर का अनुमान सही है। और किसी तरह ये सभी दस्तावेज मिस्र पहुंच गए।' उसने कंधे उचकाए। 'ये सब अटकलें हैं। हमारे पास कोई तथ्य या प्रमाण नहीं हैं।'

विजय मुस्कुरा दिया। एलिस के अंदर का पुरातत्ववेत्ता बाहर आ रहा था, जो ऐतिहासिक दस्तावेजों से बाहर की किसी भी चीज को तब तक स्वीकार नहीं करता जब तक कोई पुरातात्विक या अभिलेखीय प्रमाण ना हों।

उसने कहा, 'जो भी हो, पत्र ओलंपियास को जानकारी देता है कि सिकंदर का सिंधु की भूमि का अभियान सफल हुआ। पत्र में यह भी कहा गया है कि उसने सिकंदर को जो वृत्ताकार धातु पट्टिका दी थी, उसे उसके निर्देशों के मुताबिक सिकंदर के दैवीय पिता जियस की वेदी के नीचे जमीन में गाड़ दिया गया है। यह उन बारह वेदियों में एक था जिन्हें सिकंदर ने बेबीलोन वापसी के पहले व्यास नदी के तट पर बनवाया था। और यूमेनीज के मुताबिक

यह धातु पट्टिका ईश्वर के रहस्य को ढूंढ़ने की चाभी थी।'

'तो तुम मानते हो कि यह धातु पट्टिका वो माध्यम हो सकती है जो क्यूब पर लिखे छंदों का मतलब समझा सकती है?' कोलिन ने अनुमान लगाया कि विजय क्या सोच रहा है।

'यह संभव हो सकता है,' शुक्ला ने भी सहमति जताई। 'क्यूब पर लिखे छंद का कोई अर्थ नहीं है, जब तक कि, जैसा राधा ने पहले कहा था, हमारे पास कोई संदर्भ ना हो ताकि हम समझ सकें कि उनका मतलब क्या है। शायद यह धातु की पट्टिका हमें संदर्भ दे सकती है। और अगर सचमुच में यह रहस्य की चाभी थी, तो यह बात भी समझ में आती है कि क्यों ओलिंपियास ने उसे जमीन में गाढ़ देने के लिए कहा होगा। आखिर वो भी तो नहीं चाहती होगी कि ईश्वर के रहस्य का पता उसके बेटे के बाद कोई और लगा पाए।'

'मैं अभी भी ये नहीं समझ पा रही हूं कि ओलिंपियास को क्यूब और मेटल प्लेट कहां से मिले,' एलिस अभी भी इस पहेली में उलझी हुई थी। 'किसने ये चीजें उसे दी होंगी? और क्यों? यह अच्छा रहता कि वो मेटल प्लेट भी उसके साथ ही उसके मकबरे में दफन कर दी गई होती। इससे हम उसकी जांच कर पाते और खुद भी देख पाते कि क्या उसका संबंध क्यूब से हो सकता है।'

विजय उसकी ओर देखकर मुस्कुराया। उसके पास अभी भी एक चौंकाने वाली चीज मौजूद थी। उसने उस फाइल पर थपकी दी जिसमें उसे पहली बार डायरी का जिक्र मिला था।

'मैंने तुम्हें एक फाइल के बारे में बताया था जिसने हमें यूमेनीज की डायरी तक पहुंचाया,' विजय ने समझाते हुए कहा। 'यह वही फाइल है। कुछ सोचकर, मेरे पिता ने उस समय दुनिया भर में चल रहे खनन कार्यों से संबंधित कई अखबारों के लेख और दस्तावेज जमा किए थे। मुझे नहीं पता कि उन्होंने ऐसा क्यों किया था, लेकिन जब मैं डायरी पढ़ रहा था, मुझे इस फाइल के एक लेख में लिखी किसी चीज का ख्याल आया था।'

वो फाइल में रखे कागजों को पलटने लगा जब तक कि उसे वह लेख नहीं मिल गया जिसकी उसे तलाश थी। 'यह खबर 1985 की है। मैं इसे पढ़कर सुनाऊं?'

सभी लोगों ने सिर हिलाया और इंतजार करने लगे।

'सिकंदर महान की बनवाई गई वेदियों के अवशेष मिले,' विजय ने उस लेख का शीर्षक पढ़ा। 'होशियारपुर जिले में दासूया शहर के पास सिंधु घाटी के अवशेष की खुदाई कर रहे पुरातत्ववेत्ताओं को बड़ी संख्या में विशाल ढांचों की नींव मिली है, जो मिट्टी की ईंटों से बने लगते हैं। नींव के हिसाब से लगता है कि हर ढांचे का आधार कम से कम 17 वर्ग मीटर रहा होगा। पुरातत्ववेत्ताओं का अनुमान है कि ये उन बारह वेदियों के अवशेष हो सकते हैं जिनके बारे में माना जाता है कि उन्हें सिकंदर ने अपनी वापसी की लंबी यात्रा शुरू करने से पहले व्यास नदी के तट पर बनवाया था। करीब दो हजार साल तक ये वेदियां नजरों से ओझल रही हैं, जबकि सिकंदर के बाद करीब 400 साल तक भारतीय राजाओं ने इन वेदियों की पूजा

की थी।'

उसने नजरें उठाकर सभी के चेहरे देखे। 'अब इसे ध्यान से सुनो। एक वेदी का परीक्षण करते वक्त एक छोटी वृत्ताकार धातु पट्टिका मिली, जो किसी अनजान काली धातु से बनी थी और एक आधारशिला के नीचे दबी थी। इस प्लेट की उत्पत्ति और यह वहां कैसे पहुंची, यह एक रहस्य है क्योंकि यह प्लेट ग्रीक मूल की नहीं लगती। खनन कार्य में लगी टीम इस बारे में कुछ नहीं बता रही है, सिर्फ इतना बताया जा रहा है कि धातु की पट्टिका काफी प्राचीन है, सिकंदर के समय से भी पुरानी, और इस पर रहस्यात्मक प्रतीक चिह्न खुदे हैं जो चित्रलिपि की तरह दिखते हैं। इस प्लेट को नई दिल्ली में राष्ट्रीय संग्रहालय में भेजा जा रहा है जहां इसकी जांच होगी और इसे संरक्षित रखा जाएगा।'

शुक्ला मुस्कुराने लगे। वो जानते थे कि विजय अब क्या कहने जा रहा है। 'तो तुम एक और दूर की कौड़ी लाए हो और कहना चाह रहे हो कि यह रहस्यमयी धातु पट्टिका वही है जिसका वर्णन यूमेनीज ने अपने पत्र में किया है?'

'बिलकुल सही।' विजय ने फाइल मेज पर वापस रख दी। 'मैं नहीं मानता कि ये दूर की कौड़ी है। पहली बात कि प्लेट सिकंदर के समय से भी पुरानी लग रही है। दूसरी बात कि ये सिकंदर की वेदियों की आधारशिला के नीचे कैसे पहुंची? जब तक कि सिकंदर ने खुद उसे वहां नहीं रखा हो? और यूमेनीज ने यही कहा है कि सिकंदर ने ऐसा किया था।'

'मुझे इस तर्क में अभी भी कमी दिख रही है विजय।' एलिस के माथे पर लकीरें उभर आई थीं और वो अपने विचारों को साफ—साफ व्यक्त कर रही थी। 'एक बहुत साधारण सा अनुमान पुरातत्ववेत्ताओं ने लगा लिया था कि वो ढांचे सिकंदर की वेदियों के अवशेष थे। एक बार फिर कोई पुख्ता सबूत नहीं है इस दावे के पक्ष में। अगर वो सिर्फ दो हजार साल पुराने अवशेष हों, जिनका सिकंदर से कोई संबंध ना हो तो?'

शुक्ला के माथे पर भी बल पड़े। 'पट्टिका 1985 में ढूंढ़ी गई थी। मैंने उसे कभी भी राष्ट्रीय संग्रहालय में नहीं देखा है।'

'हम संग्रहालय में फोन करके क्यों ना पूछ लें?' कोलिन ने सलाह दी। 'हो सकता है कि यह आम लोगों के देखने के लिए ना रखी गई हो। कई संग्रहालयों में चीजें उनके तहखाने में गत्ते के डिब्बों या लकड़ी के बक्सों में रखी रहती हैं। मैं जानता हूं कि काहिरा का संग्रहालय यही करता है। आमतौर पर जनता को ऐसी चीजें देखने की इजाजत नहीं मिलती है, लेकिन एलिस तो खुद पुरातत्ववेत्ता है। वो ये कह सकती है कि वो इसे अपने रिसर्च के मकसद से देखना चाहती है?'

एलिस ने हामी भरी। 'बिलकुल, मैं यह जानने के लिए उत्सुक हूं कि क्या प्लेट का क्यूब से वाकई में कोई संबंध है। इससे इस डायरी में किए गए दावों की पुष्टि भी करने में मदद मिलेगी या फिर यह साबित हो जाएगा कि ये भी सिकंदर पर लिखे गए उपन्यासों का एक हिस्सा है।'

‘एक बार कोशिश तो की जा सकती है।’ विजय उठा और उस मेज की तरफ बढ़ा जहां उसका मोबाइल फोन रखा था।

‘शायद मैं मदद कर सकता हूं,’ शुक्ला ने कहा। ‘मेरा एक दोस्त था जो राष्ट्रीय संग्रहालय में निरीक्षक था। वो हमारी मदद कर सकता है।’ उन्होंने विजय को नंबर दिया।

अगले कुछ मिनटों में विजय ने शुक्ला के दोस्त से बात कर ली थी, पुरातत्व विभाग के निरीक्षक का नंबर हासिल कर लिया था जो पुरातात्विक संग्रह का रखवाला भी था और प्लेट देखने के लिए संग्रहालय जाना भी तय कर लिया था।

विजय ने मोबाइल फोन नीचे रखा, उसकी आंखें चमक रही थीं। ‘देखते हैं कि हमारे अनुमानों का कोई मतलब भी है या नहीं। अभी तो हम क्यूब की पहेली को सुलझा नहीं पा रहे हैं। हमें यहां तक नहीं पता कि सिकंदर की मां को यह चीज मिली कैसे। लेकिन जैसा एलिस ने कहा था, ये देखना अच्छा रहेगा कि हम एक पुराने रहस्य की कड़ियां जोड़ पाते हैं या नहीं और क्या डायरी में लिखी कहानी में सचाई है या नहीं।’

‘तुम बिलकुल सही कह रहे हो कि हम क्यूब की इस पहेली को सुलझाने नहीं जा रहे,’ कोलिन ने जोर देकर कहा। ‘पिछली बार जब हम छंदों का मतलब निकालने गए थे, हम आतंकवादियों से उलझ गए थे और मौत के मुंह से बाहर निकले थे। यह एक रोचक चर्चा थी लेकिन इसे बस यहीं खत्म होना चाहिए। हम धातु पट्टिका देखें, पता लगाएं कि यूमेनीज ने हमारा समय बर्बाद किया या नहीं और उस अध्याय को वहीं बंद कर दें।’

विजय मुस्कुराया। ‘बिलकुल, मैं तुम्हारे साथ हूं। मैं इस बार कोई जिद नहीं करूंगा। यह क्यूब हमारे लिए कोई महत्व नहीं रखता। जो भी इसके राज हैं, वो हमेशा के लिए दफन ही रहेंगे।’

वो यह नहीं जानता था कि वो कितना गलत सिद्ध होने वाला है।

25

गंदे मंसूबे

‘वो कहीं जा रहे हैं,’ कृष्णन ने बताया।

कूपर ने स्क्रीन पर दिख रहे बिंदु—गुच्छों पर नजर डाली। वो मुस्कुराया। ‘वो किले से बाहर निकल रहे हैं। बहुत अच्छा।’ वो इसी मौके की तलाश में था। किले के बाहर उन्हें निशाना बनाया जा सकता था। ‘उन पर निगरानी रखो और मुझे बताते रहना।’

वो अपने पास खड़े एक बलिष्ठ नौजवान की तरफ घूमा, जो छह फीट लंबा था, उसके घुंघराले सुनहरे भूरे बाल किनारों पर बिखरे से थे, और ध्यान खींचने वाली नीली आंखें थीं। राइली उसके हत्यारों की टीम में एक साल पहले ही शामिल हुआ था लेकिन अपने कत्ल के तरीके से उसे प्रभावित कर चुका था——निर्मम और अचूक। लेकिन राइली चाकू, रस्सी और अपने हाथों का इस्तेमाल करता था। ‘मैं अपने शिकार को महसूस करना चाहता हूं जब वो मर रहे हों; जब कोई अंतिम सांस लेता है तो मौत की तरफ बढ़ते उसके शरीर का ठंडा स्पर्श मुझे पसंद है,’ उसने कूपर को यही बताया था जब उससे पूछा गया था कि उसे बंदूक क्यों नापसंद हैं।

उसके इसी झुकाव की वजह से वो काफी कसरत करता था और डील डौल को बढ़ाने वाली दवाएं लेता था ताकि उसकी शारीरिक ताकत बढ़ती रहे। किसी को करीब से मारने के लिए आपको अपने शिकार से ज्यादा मजबूत होना जरूरी होता है। आप कामयाब नहीं होंगे अगर आपका शिकार आपको दबोच ले।

उसे जब दो रात पहले ग्रीस में दो बार बंदूक का इस्तेमाल करना पड़ा था तो उसे यह नागवार गुजरा था। उस रात उसे आदेश दिया गया था कि जिस मकबरे की कूपर और स्तावरोस ने खुदाई की है, उसमें विस्फोटक लगाए जाएं। लेकिन एक महिला पुरातत्ववेत्ता वहां अचानक आ गई थी जब वो वहां मौजूद था। उसे मजबूरन गोली चलानी पड़ी थी ताकि वो वहां से भाग ना जाए, लेकिन उसके लिए बंदूक कभी भी पसंदीदा हथियार नहीं थी और उसका निशाना चूक गया था। उसका सामना उस महिला से दोबारा तब हुआ था जब उसने अपना हेलीकॉप्टर हाइवे पर उतारा था। उस रात उसने बेमन से बंदूक का सहारा लिया था जब वो महिला खुल्लमखुल्ला उसे चुनौती देते हुए उसके हेलीकॉप्टर को टक्कर मारकर वहां से भाग निकली थी। वो जिंदा बच गई थी। और देश छोड़कर भाग गई थी। लेकिन उन लोगों ने उसे अब ढूंढ़ निकाला है।

‘मैं चाहता हूं कि तुम इसे खुद संभालो,’ कूपर ने राइली को कहा। ‘पता करो कि वो क्या जानते हैं। और फिर तीनों को खत्म कर दो। अगर वो दिल्ली जा रहे हैं तो तुम तुरंत चले जाओ और वहां हमारी टीम से मिलो।’

राइली ने सिर हिलाकर हामी भरी। यह उसके लिए मौका था उस काम को पूरा करने का, जो वो उस रात नहीं कर सका था। उसे बदला लेना था। ‘बिलकुल, मैं इसे संभाल लूंगा। आप बाकी दो के पीछे जा रहे हैं?’ उसकी आवाज में टेक्सास में बिताए लंबे समय की छाप थी।

कूपर ने हां में जवाब दिया। ‘हमने फैसला किया है कि हम महिला को जिंदा पकड़ेंगे। हमें उसे खत्म करने के पहले पता करना है कि वो क्या जानती है।’ उसने एक दूसरी स्क्रीन पर एक लाल बिंदु की तरफ इशारा किया। ‘लेकिन उसके पहले मैं एक और शिकार को संभालूंगा।’ वो राइली की तरफ देखकर मुस्कुराया। ‘मैं तुम्हें भेजता लेकिन हमें इसके लिए लंबी दूरी के हथियारों की जरूरत पड़ेगी।’

‘चीयर्स।’ राइली की आवाज में नरमी थी।

कूपर सुइट से बाहर निकला और लिफ्ट के बटन पर घूंसा मारा। अगर चीजें योजना के मुताबिक चलीं, मिशन का ये दौर आज की रात खत्म हो जाएगा। हमेशा की तरह, कोई जिंदा नहीं बचेगा।

26

नई दिल्ली

राधा शाम की भीड़वाले ट्रैफिक के बीच से रास्ता निकालते हुए धीरे—धीरे गाड़ी चला रही थी। टाइटन फार्मास्युटिकल्स के दफ्तर से निकलने के बाद उसने इमरान को फोन करने की कोशिश की थी लेकिन उसे कोई जवाब नहीं मिला था। यह सोचकर कि वो शायद अभी भी टाइटन के सीईओ के साथ मीटिंग में होगा, उसने विजय को फोन किया था।

विजय ने उसे संक्षेप में डायरी पर हुई बातचीत के बारे में बताया, साथ में यह भी कहा कि वो लोग राष्ट्रीय संग्रहालय जा रहे हैं। 'हम तुम्हारे पिताजी को यहां का काम खत्म कर छोड़ देंगे,' उसने उसे बताया था। तब उसने फैसला किया था कि वो सीधे घर जाएगी और बाकियों का इंतजार करेगी। गुप्त डायरी, मेटल प्लेट और हाथी दांत के क्यूब के साथ इसके संभावित रिश्ते की कहानी ने उसे भी कौतूहल में डाल दिया था और वो जानना चाहती थी कि संग्रहालय में क्या हुआ।

उसने दक्षिणी दिल्ली में सफेद दीवारों वाले अपने बंगले के दरवाजे के बाहर कार खड़ी की, जहां वो अपने पिता के साथ रहती थी। जब वो घर में घुस रही थी, उसने इमरान का नंबर एक बार और डायल किया। इस बार, उसने फोन उठा लिया।

उसने बोला, 'माफ करना, मेरी मीटिंग देर से शुरू हुई और खिंचती चली गई क्योंकि सीईओ को बार—बार फोन कॉल आ रहे थे। मैंने अपना काम तुरंत खत्म ही किया है और मैं तुम्हें फोन करने वाला था। तुम्हारी मीटिंग कैसी रही?'

राधा ने उसे सक्सेना के साथ उसकी बातचीत की जानकारी दी।

'तुमने जाहिर तौर पर उसे झुंझला दिया था। मुझे लगता है कि हमें सक्सेना पर नजर रखनी पड़ेगी। वो जरूर कुछ छिपा रहा है।' इमरान इसके बाद अपनी मीटिंग के बारे में बताने लगा। 'कुछ खास नहीं है बताने को। उसने भी वहीं बातें कहीं जो सक्सेना ने तुम्हें बताईं। हां, उसका लहजा नरम था और धमकाने वाला नहीं था। उसने मुझे आश्वस्त किया है कि वो पूरा सहयोग देगा और उनके सभी रिकॉर्ड मुहैया कराएगा, और मुझे ये दिलचस्प लग रहा है। अगर उनके पास छिपाने के लिए कुछ भी है तो वो इतनी आसानी से हमें अपने आंतरिक दस्तावेज जांचने नहीं देंगे। मैं सोच रहा हूं कि मैं पैटरसन को अमेरिका में उनके दस्तावेज की जांच के लिए भी बोलूं,' कहकर उसने फोन रख दिया।

राधा ने सोचा कि सभी लोग किले में वापस लौटने के पहले कुछ खाना जरूर चाहेंगे। जौनगढ़ काफी दूर था और वो लोग जब तक वहां पहुंचेंगे, भूख से उनकी हालत खराब हो चुकी होगी। लेकिन इसके पहले कि वो उनके लिए रात के खाने की तैयारी करे, तुरंत नहा लेना अच्छा रहेगा।

वो जल्दी से नहाकर और कपड़े बदलकर खाना बनाने लगी। जब उसने काम खत्म किया तो अपनी घड़ी देखी। साढ़े आठ बज चुके थे। ये लोग अब तक पहुंचे क्यों नहीं? क्या उन्हें संग्रहालय में ऐसा कुछ दिलचस्प मिल गया कि वो वहां रुक गए? एक पल के लिए उसकी इच्छा हुई फोन करने की। लेकिन वो जानती थी कि अगर विजय ने अभी तक फोन नहीं किया है तो जरूर कोई वजह होगी।

टेलीविजन चलाकर वो चैनल बदलने लगी। वो इस बारे में सुनने के लिए इंतजार करेगी।

नामोनिशान खत्म

इमरान ने पैटरसन के साथ फोन पर बातचीत खत्म होने के बाद ठंडी सांस ली। टास्क फोर्स के इस लीडर के बारे में उसका शुरुआती आंकलन बिलकुल सही था। पैटरसन जिद्दी था, उसे किसी चीज के लिए मनाना मुश्किल था और हर चीज में तर्क ढूंढ़ता था। इमरान की आईपीएस और आईबी में ऐसी प्रतिष्ठा थी कि अधिकतर समय उसे चीजें अपने हिसाब से करने की आदत हो चुकी थी। और जब चीजें उसके हिसाब से नहीं होती थीं, वो नियम तोड़कर जो चाहता था वो हासिल कर लेता था। किसी परिस्थिति या व्यक्ति की पहचान करने की अपनी विलक्षण क्षमता और सही पूर्वानुमान के सहारे उसने ज्यादातर मौकों पर वो नतीजे दिखाए थे, जो उसके सीनियर चाहते थे। उसे कभी अपने पूर्वानुमानों को लेकर ना तो खुद को सही साबित करने की जरूरत पड़ी और ना ही सफाई देने की।

पैटरसन अलग किस्म का था। वो तथ्य चाहता था, अनुमान नहीं। सबूत चाहिए थे, जज्बात नहीं। और वो इमरान के इस अनुमान को मानने को तैयार नहीं था कि टाइटन का कोई आदमी ठेके पर चल रही मेडिकल फेसिलिटी की घटनाओं में शामिल था।

‘तुम्हें जो बातें पता चली हैं उनमें कुछ भी असाधारण नहीं है,’ उसने उनकी बात खारिज करते हुए कहा था, जब इमरान ने उसे टाइटन के सीएमओ के साथ राधा की मीटिंग और सीईओ के साथ अपनी मीटिंग के बारे में बताया था। ‘मैंने खुद कुर्त वॉलेस से बात की है और उस शख्स ने ना सिर्फ मुझे पूरे सहयोग का भरोसा दिलाया है बल्कि अमेरिका या भारत में टाइटन की मैनेजमेंट टीम के किसी भी सदस्य के इस घटना में शामिल ना होने का यकीन दिलाया है। यह किसी स्थानीय गिरोह का काम लगता है। हो सकता है कि इसे किसी अंतर्राष्ट्रीय आतंकवादी संगठन से मदद मिल रही हो, इसलिए मैं तुम्हें सलाह दूंगा कि तुम टाइटन पर फोकस करने की बजाय मामले की गहरी जांच करो और पता लगाओ कि इसके पीछे कौन है।’

इमरान ने एक बार सोचा कि उसे एलिस के वहां अचानक पहुंचने और कुर्त वॉलेस के साथ उसके संबंध के बारे में बताया जाए और दोनों घटनाओं को जैविक आतंकवाद से जोड़कर देखा जाए। लेकिन उसने इस विचार को आने के साथ ही छोड़ भी दिया। उसे एलिस से बात करने के बाद यकीन हो गया था कि वह सच बोल रही है। लेकिन उसे कोई ऐसा तरीका नहीं दिख रहा था जिससे वो ग्रीस में उसके अनुभवों को यहां की घटनाओं से जोड़ सके, भले ही दोनों घटनाओं के तार कहीं ना कहीं कुर्त वॉलेस से जुड़ रहे हैं।

तभी उसे याद आया; एलिस ने उसे स्तावरोस और पीटर की फोटो दी थीं, वो दोनों को—डायरेक्टर जिन पर उसने अपनी टीम के सदस्यों की हत्या का आरोप लगाया था। उसने एक इंटरनेशनल डाटाबेस में इन तस्वीरों को डालकर देखा और तभी एक कामयाबी हाथ लग गई।

इमरान ने विजय का नंबर डायल किया और उससे थोड़ी देर बातचीत की, और बताया कि उन्हें क्या पता चला है।

उसकी कार रिहायशी कॉम्प्लेक्स के मुख्य दरवाजे की तरफ मुड़ी। गार्ड ने उसे सलामी दी और इमरान ने मुस्कुराकर उसका जवाब दिया। गार्ड कम तनख्वाह पाने वाले कॉन्सटेबल थे और एक नाशुक्र और मुश्किल काम करते थे। उसने देखा था कि कैसे दूसरे वरिष्ठ पुलिस अफसर या तो उन्हें नजरअंदाज कर देते थे या गुजरते वक्त घूरकर देखते थे। इमरान का स्वभाव ऐसा नहीं था। उसका मानना था कि वो दूसरों के लिए कम से कम इतना तो कर ही सकता है कि उन्हें देखकर मुस्कुरा दे और उनके काम के लिए शुक्रिया अदा करें।

इमरान अपने अपार्टमेंट ब्लॉक तक पहुंचकर कार से उतरा और ड्राइवर को मुस्कुराकर जाने को कहा। उसने ग्राउंड फ्लोर पर लिफ्ट बुलाई और छठी मंजिल पर अपने अपार्टमेंट में जाने के लिए उसमें सवार हो गया। लिफ्ट की छत से लगा बल्ब फड़फड़ा रहा था। उसने इसकी शिकायत मेंटनेंस में कराने की सोची और अपने अपार्टमेंट के दरवाजे का ताला खोला।

उसके लिविंग रूम में अंधेरा था जब उसने उसमें कदम रखा। उसने लाइट जलाई और खिड़की की तरफ गया, सड़क के पार बन रहे एक टॉवर के बेढंगे नजारे को देखकर उसने बुरा सा मुंह बनाया। पांच मंजिलें बन चुकी थीं और छठी मंजिल बनाई जा रही थी जो उसके अपार्टमेंट की बराबरी पर थी। पहले वो कभी बिल्डिंग पर ध्यान नहीं दिया करता था लेकिन अब वो रोज ही मजदूरों को देखता था।

यह रोज का नियम था। उसके घर की देखरेख करने वाला नौकर रोज पर्दे खुला रखता था और वो शाम में लौटकर उन्हें तुरंत लगा देता था ताकि टॉवर का नजारा छिप जाए। जैसे ही वो कमरे में घुसा, उसके ब्लैकबेरी पर बीप की आवाज आई। उसने अपने बेडरूम की तरफ कदम बढ़ाते हुए स्क्रीन पर नजर डाली और जो दिखा, उससे उसका मुंह खुला रह गया।

इमरान को उस टेक्स्ट मेसेज को देखकर झटका सा लगा। इतना बड़ा झटका कि वो पर्दे

लगाने के लिए खिड़की की तरफ भी नहीं गया। उसने सड़क के उस पार बन रही बिल्डिंग की छठी मंजिल पर उस आकृति को भी नहीं देखा जिसकी झलक दिख रही थी।

वो अपने बेडरूम से मुश्किल से दो कदम ही दूर था, जब खिड़कियों के कांच छितरा गए, एक सीटी सी आवाज आई और कुछ कमरे में उड़ता हुआ आया।

उसकी सूझबूझ और प्रशिक्षण इस वक्त काम आया और उसने तुरंत समझ लिया कि यह क्या है। रॉकेट की मदद से फेंका गया बम उसके और दरवाजे के बीच गिरा था, जो अभी भी खुला था।

इमरान तेजी से बाईं ओर छलांग लगाकर अपने बेडरूम में पहुंच गया और तब तक बम उसके लिविंग रूम में फट चुका था। बम के धमाके से अपार्टमेंट हिल गया और उसकी धमक बाहर तक गूंजती रही।

बेडरूम की दीवार ने धमाके से पैदा हुई ताकत को तो झेल लिया लेकिन इमरान को अपने सीने में तेज दर्द महसूस हुआ और वो अपने बेडरूम के फर्श पर गिर गया। उसने देखा कि फर्श पर खून फैल रहा है।

उसका खून। उस चोट लगी थी। वो नहीं जानता था कि किससे। बम के टुकड़े से? उड़ते हुए कांच से? जो भी हो, वो घायल हो चुका था। बुरी तरह।

तभी उसकी आंखों के आगे अंधेरा छाने लगा।

उसका ब्लैकबेरी उसके निर्जीव हाथ से तीन फीट दूर पड़ा था। उसकी स्क्रीन पर अभी भी वो मेसेज दिख रहा था: “कूपर आज इमिग्रेशन से गुजरा।”

27

संग्रहालय में एक रात

विजय ने फोन काटा और अपने आसपास दूसरों की तरफ देखा। 'इमरान का फोन था,' उसने उन्हें बताया। 'एलिस ने उसे जो फोटोग्राफ दिए थे उसने उनकी जांच की। एक फोटो मेल खा गई। पीटर का नाम अंतर्राष्ट्रीय अपराधियों के डाटाबेस में है। उसे "द रीपर" के नाम से जाना जाता है। उसका असली नाम पीटर कूपर है और वो पिछले तीस सालों में दर्जनों हत्याओं के लिए जिम्मेदार रहा है। वो एक दक्ष निशानेबाज है, दूरबीन वाली बंदूक का इस्तेमाल करने में माहिर है और उसका निशाना कभी नहीं चूकता। इक्कीस देश उसकी तलाश में हैं। वो तुम्हारी खनन की टीम में कैसे आ गया?'

'मैं नहीं जानती।' एलिस की आवाज कांप रही थी। 'वो... बस वहां... था। स्तावरोस के साथ। वो दोनों को—डायरेक्टर थे। वॉलेस ट्रस्ट द्वारा नियुक्त किए गए। स्तावरोस पुरातत्ववेत्ता था। पीटर ज्यादातर वित्तीय और संपर्क के मामले देखता था। वो पुरातत्व या खुदाई के बारे में कुछ नहीं जानता था। लेकिन मैं उसके बारे में बस इतना ही जानती हूं। मैंने अनुबंध के बाद कोई प्रश्न नहीं पूछा। मैं इस बात से ही इतनी रोमांचित थी कि मैं ओलिंपियास की कब्र की खुदाई करने जा रही हूं कि मैं सिर्फ खुदाई के ही बारे में सोचती थी। स्तावरोस के बारे में क्या पता चला?'

विजय ने सिर हिलाते हुए जवाब दिया। 'कुछ नहीं, इमरान के मुताबिक डाटाबेस में उसका नाम नहीं है। हालांकि इसका कोई बहुत ज्यादा मतलब नहीं है। हो सकता है कि वो इंटरपोल के रडार पर ना हो या किसी और खुफिया एजेंसी को उसकी तलाश ना हो।'

'घबराओ नहीं,' कोलिन ने एलिस के डर को भांपकर उसे दिलासा देते हुए कहा। 'तुम इस कूपर को ग्रीस में काफी पीछे छोड़ आई हो। कोई तरीका नहीं है जिससे वो तुम तक भारत पहुंच सके। वो ये कैसे अंदाजा लगाएगा कि तुम अमेरिका जाने के बजाय यहां आओगी? और अगर उसने यह पता भी लगा लिया तो जौनगढ़ नक्शे से इतना दूर है कि यहां के लोगों को भी नहीं पता कि ये है कहां।'

'लेकिन अभी हम जौनगढ़ में नहीं हैं।' एलिस को अचानक इस बात का अहसास हुआ कि किले में, खासतौर पर सुरक्षा प्रणाली मजबूत होने की वजह से, वो कितने आराम से और सुरक्षित थी। 'हम उसके लिए यहां आसान चारा हैं।'

'अगर कूपर ने तुम्हारे भारत और जौनगढ़ में होने की बात पता भी लगा ली, जो इतना आसान नहीं है जैसा कोलिन ने कहा, वो ये कैसे जान लेगा कि तुम आज दिल्ली आ रही हो?' विजय हंसा। 'मैं जानता हूं कि तुम्हें ग्रीस में बहुत मुश्किलों वाली रात बितानी पड़ी थी। लेकिन वो अब पीछे छूट चुकी है। और इमरान ने भारतीय इमिग्रेशन अथॉरिटीज को इस बारे में सावधान भी कर दिया है। जैसे ही उसे उस आदमी की असलियत पता चली, उसने ये काम कर दिया था। अगर कूपर भारत आता है हमें पता चल जाएगा। इमरान ने तो यहां तक व्यवस्था की है कि अगर ऐसा होता है तो तुम्हें आईबी की निगरानी में एक महफूज घर में रखा जाए। तुम यहां सुरक्षित हो। चलो, हम यहां पहुंच गए।'

वो लोग संग्रहालय पहुंच चुके थे। मुख्य दरवाजे बंद थे क्योंकि दर्शकों के लिए तय समय खत्म हो चुका था। विजय ने तुरंत क्यूरेटर को फोन लगाया जो उनका इंतजार कर रहा था। संग्रहालय के एक गार्ड ने दरवाजा खोला, कार को अंदर आने दिया और फिर उसे बंद कर दिया।

'अरे वाह, उसे देखा क्या?' कोलिन ने एक अहाते में रखे विशालकाय रथ की तरफ इशारा किया जब वो लोग उधर से गुजर रहे थे। 'वाकई में काफी पुराना लगता है।'

विजय ने कार लगाई और सभी उतरे। गार्ड आया और उसने बताया कि वो उन्हें क्यूरेटर के पास ले जाएगा। उन्होंने सम्राट अशोक के गिरनार के आज्ञापत्र की प्रतिकृति को पार किया, जो संग्रहालय की अंदरूनी चारदीवारी से सटाकर लगाई गई थी और उस भवन में प्रवेश किया जो एक खुली छत वाले गोलाकार भवन के चारों तरफ बना था।

क्यूरेटर का दफ्तर पहली मंजिल पर था। जैसे ही वो लोग अंदर आए वो अभिवादन के लिए उठा।

'डॉक्टर शुक्ला,' क्यूरेटर ने सबसे पहले शुक्ला के साथ हाथ मिलाया।

'मैं राजीव साहू हूं, निरीक्षक——पुरातत्व विज्ञान और कलाकृतियों का रखवाला। आपसे मिलकर खुशी हुई।' फिर वो एलिस की तरफ मुड़ा। 'और आप जरूर मिस टर्नर होंगी।' उसने उससे हाथ मिलाया। 'आपसे मिलकर खुशी हुई। बताइए मैं आपके क्या काम आ सकता हूं?'

कोलिन ने विजय की तरफ त्योरी चढ़ाकर देखा और फुसफुसाया, 'तो क्या हम अंगरक्षक हैं?'

विजय मुस्कुराया और खुद का और कोलिन का परिचय साहू को दिया।

'अरे हां, हमने बात की थी,' साहू विजय की तरफ देखकर मुस्कुराया और कोलिन से बिना कुछ कहे उससे भी हाथ मिलाया।

एलिस असमंजस में थी। उसने सोचा था कि मेटल प्लेट की बात हो चुकी है। 'अअअ.. मैं वो प्लेट देखना चाहती हूं जो दासूया के पास 1985 में मिली थी। वो प्लेट जो माना जाता है कि सिकंदर महान ने उस वेदी के आधार में दफनाई थी जो उसने व्यास के तट पर ग्रीस

लौटने के पहले बनवाई थी।'

'बिलकुल, बिलकुल,' साहू वहीं खड़ा रहा। 'मुझे समझ नहीं आ रहा था कि आपको उस कलाकृति में इतनी दिलचस्पी क्यों हैं। आपको तो पता ही है कि वो लोगों के देखने के लिए नहीं रखी गई है।'

'हमने बात की थी मिस्टर साहू,' विजय ने बीच में टोका। 'हमें डॉक्टर दत्ता ने आपका नाम सुझाया था। और आप हमें वो प्लेट दिखाने के लिए राजी भी हुए थे।'

'मैं आपको दर्शकों के लिए तय समय के बाद भी संग्रहालय में आने देने के लिए राजी हुआ था,' साहू ने विजय की ओर देखे बिना जवाब दिया। उसकी आंखें अभी भी एलिस पर टिकी थीं। 'जो अपने आप में सरकारी नियम—कायदों के विरुद्ध है। लेकिन मैं आपसे पूछ भी नहीं रहा था। मैं मिस टर्नर से जानना चाहता हूं कि उन्हें उस प्लेट में दिलचस्पी क्यों है। वो एक ऐसी कलाकृति देखना चाहती हैं जो लोगों के देखने के लिए रखी नहीं गई है। निश्चित तौर पर आप यह तो नहीं सोचते होंगे कि मैं हर किसी को, जो पुरातत्ववेत्ता होने का दावा करे, इन दरवाजों से आगे जाने देता हूंगा? भले ही उसे डॉक्टर दत्ता ने मेरे पास भेजा हो।'

वो एलिस की तरफ उम्मीद भरी निगाहों से देख रहा था।

'मैं एक पुरातत्वविद हूं,' एलिस ने अनिच्छा से जवाब दिया। 'आपको मेरी योग्यता पर संदेह है? आप मेरे बारे में इंटरनेट पर देख सकते हैं। मुझे प्राचीन ग्रीक इतिहास में काफी दिलचस्पी है। खासतौर पर यूनानी कालावधि में। जब मुझे पता चला कि आपके पास एक ऐसी कलाकृति है जिसका संबंध सिकंदर महान से है, मुझे लगा कि इसे मुझे जरूर देखना चाहिए।'

'मुझे भरोसा है कि आपके पास कोई ना कोई पहचान पत्र जरूर होगा,' साहू ने ऐसे कहा जैसे उसने एलिस की बात सुनी ही ना हो। 'मिसाल के लिए आपका परिचय पत्र? कोई ऐसी चीज जो उस बात का समर्थन करे जो आपने अभी कही?'

एलिस का चेहरा तमतमा गया लेकिन उसने अपने पर्स में ढूंढ़ा और ग्रीस में ज्वाइंट मिशन का अपना परिचय पत्र निकालकर साहू को दिया। क्यूरेटर ने उसे एक पल के लिए देखा और एलिस को लौटा दिया।

'आप मेटल प्लेट देख सकती हैं।' साहू ने अपनी जेब से चाबियों का छल्ला निकाला जिसमें एक ही चाबी थी। 'मैं आपको दिखाउंगा कि वो कहां रखी है। यह दूसरी मंजिल पर है।' उसने बाकी लोगों की तरफ ऐसे देखा जैसे वो उन्हें नापसंद करता हो। 'क्या ये सभी लोग आपके साथ आएंगे?'

'हां, वो आएंगे,' एलिस ने दृढ़ता से कहा। 'आपका बहुत—बहुत शुक्रिया।'

'मेरे पीछे आइए,' साहू ने कहा और चल दिया। वो उन्हें सीढ़ियों से ऊपर ले गया और हथियारों की गैलरी पार करने लगा, जिसमें शीशे के बक्सों में तलवार, भाले और सभी प्रकार के प्राचीन और मध्यकालीन अस्त्र—शस्त्र थे। गैलरी के एक छोर पर एक दरवाजा था जिस

पर लिखा था “प्राइवेट”। साहू ने दरवाजे का ताला खोला।

उन सभी के मन में एक उत्सुकता थी। पता नहीं उन्हें क्या देखने को मिलेगा?

28

एक नया रहस्य

कमरे में अंधेरा था। विजय ने अपने मोबाइल फोन के टॉर्च की मदद से लाइट स्विच ढूंढ़ी और उसे ऑन कर दिया। छत से लटकती हुई एक लाइट ने अंधेरे को चीरते हुए उजाला कर दिया और एलिस चौंक पड़ी।

कमरे में कई आलमारियां थीं जिनमें हर आकार—प्रकार के टैबलेट रखे थे, जिन पर अलग—अलग लिपियों में कुछ लिखा गया था, और उनमें से किसी के बारे में एलिस नहीं जानती थी। उसने महसूस किया कि यह इतिहास का खजाना है। शुक्ला को भी ऐसा ही महसूस हुआ। उसने अपने चारों तरफ ऐसे देखा जैसे कोई बच्चा किसी खिलौने की दुकान में चला जाए और यह समझने की कोशिश करे कि उसे सबसे पहले किस खिलौने के साथ खेलना है।

‘हम जो प्लेट ढूंढ़ रहे हैं वो कौन सी है?’ यह विजय की आवाज थी।

‘यहां है वो।’ साहू ने एक छोटी काले रंग की धातु की प्लेट उठाई, जो वृत्ताकार थी, और उन्हें दिखाई। इस टैबलेट पर छह प्रतीक बने हुए थे।

वो सभी प्लेट को निहारते रहे। वो छह प्रतीक उन्हें कुछ समझ नहीं आ रहे थे।

साहू ने अपनी घड़ी देखी। ‘मैं आपको ज्यादा से ज्यादा पंद्रह मिनट दे सकता हूं। आप लोग अपना काम खत्म करने के बाद ताला लगा दें। मैं आपको अपने दफ्तर में मिलूंगा।’ इतना कहकर वो सीढ़ियों से उतरकर नीचे चला गया।

कुछ पलों के लिए वो सभी उस प्लेट को देखते रहे और समझने की कोशिश करते रहे।

‘तो, कुछ कहना है किसी को?’ एलिस ने कहा जब सभी थोड़ी देर तक टैबलेट को देख चुके।

शुक्ला ने अपना सिर हिलाते हुए कहा, ‘मुझे इसमें ऐसा कुछ भी नहीं दिख रहा जो इसे क्यूब से जोड़े। मेरा अनुमान है कि मैं गलत था।’ वो व्यंग्यपूर्वक मुस्कुरा दिए। ‘वैसे, उम्मीद करने या अंदाज लगाने में कोई नुकसान नहीं होता। अगर मैं सही होता तो काफी दिलचस्प होता।’

‘मुझे भी कुछ दिख नहीं रहा। इस टैबलेट का तो कोई मतलब ही समझ नहीं आ रहा,’

विजय भी शुक्ला की बात से सहमत था।

'ठीक है, यहां से बाहर निकलते हैं और राधा के घर चलते हैं,' कोलिन अपने हाथ रगड़ते हुए बोला। 'मुझे उसके हाथ का खाना बहुत पसंद है।'

'रुको, मुझे इसकी फोटो लेने दो।' विजय ने अपने मोबाइल फोन से कई फोटो ले लिए।

उन्होंने कमरा बंद किया और गैलरी को पार किया। हल्के अंधेरे में भी वहां रखे हथियार डरावने लग रहे थे। वो बस कल्पना कर सकते थे कि युद्ध के मैदान में वो कितने भयानक होते होंगे।

जब वो सीढ़ियों की तरफ ले जाने वाले गलियारे से गुजर रहे थे, एक तेज दर्दभरी चीख आई। यह क्यूरेटर के ऑफिस की तरफ से आई थी। इसके बाद एक के बाद एक कई चीखें आईं, तीखी और दर्द से भरी।

संग्रहालय में आफत

साहू अपने ऑफिस की तरफ बढ़ा, वो थोड़ा चिढ़ा हुआ था। वो आज समय से ऑफिस से निकलना चाहता था लेकिन दत्ता के अचानक आए फोन ने उसकी योजना पर पानी फेर दिया था। वो दत्ता के आग्रह को ठुकरा नहीं सका क्योंकि दत्ता ने कहा था कि इसमें बहुत ज्यादा देर नहीं लगेगी। लेकिन उसे अभी भी समझ नहीं आ रहा था कि एक अमेरिकन पुरातत्वविद को एक अज्ञात धातु पट्टिका में इतनी दिलचस्पी क्यों है जो करीब तीन दशक पहले मिली थी। उस वक्त सिकंदर की वेदियों की खोज ने सुर्खियां बटोरी थीं, कोई भी यह साबित नहीं कर पाया था कि मिले अवशेष सचमुच में वही मशहूर वेदियां हैं। पूरा सिद्धांत जल्दी ही खारिज कर दिया गया था और माना जाने लगा था कि सिकंदर की वेदियों को आज भी कोई ढूंढ़ नहीं सका है।

मीडिया की दिलचस्पी भी इस कहानी में जल्दी ही खत्म हो गई थी और मेटल प्लेट को भुला दिया गया था और वो ऊपर कमरे में तबसे ऐसे ही पड़ी है। उसे यह भी नहीं समझ आया था कि उस महिला को इसके बारे में पता कैसे चला, लेकिन दत्ता ने कहा था कि शुक्ला एक अच्छा दोस्त है इसलिए उसे उसकी बात माननी पड़ी थी।

साहू अपने ऑफिस में घुसते—घुसते रुक गया। कमरे में दो व्यक्ति थे। वैसे तीन थे, अगर उसने मरे हुए गार्ड को भी गिना होता जो फर्श पर खून से लथपथ पड़ा था, उसका गला रेत दिया गया था।

एक लंबा गोरा नौजवान साहू की कुर्सी के पीछे खड़ा था और चुपचाप एक बड़े और भद्दे से दिखने वाले बोवी चाकू को साहू के टिश्यू बॉक्स से टिश्यू निकालकर साफ कर रहा था। जबकि दूसरा आदमी दरवाजे पर खड़ा था जिसके हाथ में बंदूक थी। साहू ने गौर किया कि भले ही बंदूकधारी ने मुखौटा लगा रखा था जिससे उसका पूरा चेहरा तो नहीं दिख रहा था, लेकिन उसकी नाक, आंखें और हाथ बता रहे थे कि वो एक गोरा है।

साहू भागने के लिए तुरंत मुड़ा लेकिन उसे समझ आ गया कि भागने के सारे रास्ते बंद हैं। बंदूकधारी उसके और दरवाजे के बीच आ चुका था। वो वहां फंस गया था।

राइली ने चाकू को अपनी कमर में लगी म्यान में डाला और मोबाइल फोन पर देखा। ‘राजीव साहू,’ उसने फोन से पढ़ते हुए कहा। ‘पुरातत्व विभाग का निरीक्षक।’ उसने फोन दूर रखा और साहू की तरफ देखा। ‘जो लोग तुमसे मिलने आए थे, वो कहां हैं?’

साहू ने उसकी तरफ पलटकर देखा, सदमे से उसकी आवाज नहीं निकल रही थी। कौन है यह आदमी? यह संग्रहालय में घुस आया है, गार्ड को मार डाला है और अब वो उन लोगों के बारे में पूछ रहा है जिन्हें वो अभी—अभी टैबलेट रूम में छोड़कर आया है।

किसी तरह उसकी आवाज लौटी। ‘ऊपर,’ वो हकलाते हुए बोला, उसने अपने अंगूठे से दूसरी मंजिल की तरफ इशारा किया।

राइली ने सिर हिलाते हुए कहा, ‘क्या हम लोग बैठें? मैं तुमसे मिलने आए लोगों को देखने के पहले तुमसे कुछ सवाल करना चाहता हूं।’

जब कृष्णन ने उसे बताया था कि चारों शिकार गुड़गांव से गुजरते हुए दिल्ली की तरफ जा रहे हैं, राइली होटल से निकलकर दिल्ली की टीम से मिलने चला गया था। जब उसे पता चला कि उसके शिकार राष्ट्रीय संग्रहालय में रुके हैं, राइली ने समझ लिया था कि उन्होंने बिना सोचे—समझे इस मंजिल को नहीं चुना है। उसने कूपर को फोन किया था जिसने उसे शिकारों का पीछा करने, संग्रहालय में उनकी गतिविधियों की जांच करने और उन्हें खत्म करने के पहले ज्यादा से ज्यादा जानकारी जुटाने का निर्देश दिया था।

और यह क्यूरेटर उन्हें सारी जानकारी देने के लिए सबसे अच्छा शख्स था।

‘अब मुझे बताओ ये लोग क्या चाहते थे,’ राइली ने पूछा जब साहू अपनी मेज पर बैठ गया।

साहू आंखें फाड़कर राइली को देख रहा था, उसके शरीर के रोम—रोम से डर टपक रहा था। राइली मुस्कुरा दिया। इस शख्स से डर की गंध आ रही थी। और राइली को अपने शिकार को मारने के पहले उससे आती यह गंध पसंद थी। इससे उस पर ऐसा नशा छाता था जो किसी नशीली दवा से भी नहीं होता।

‘उनमें से एक पुरातत्वविद है,’ साहू की जुबान लड़खड़ा रही थी।

‘वो अमेरिकी महिला। मैं यह पहले से जानता हूं।’ राइली की आवाज सख्त थी। वो अपना धीरज खो रहा था। ‘मुझे वो बताओ जो मैं नहीं जानता, वो यहां क्यों आए हैं?’

उसने बंदूकधारी की तरफ कुछ इशारा किया जो साहू के पास आया, उसकी कलाई पकड़ी और उसके हाथ को मेज पर पटक दिया, हथेलियां उलटी थीं, उंगलियां फैली हुई थीं। राइली ने अपना चाकू निकाला, क्यूरेटर की बांह देखी और उस पर चाकू की ब्लेड को फिराया। फिर, उसने साहू के हाथ पर एक जगह चुनी और मांस का एक टुकड़ा काट डाला। खून की धार बहने लगी।

साहू दर्द से चीख पड़ा जिसकी गूंज खाली गलियारों और संग्रहालय की गैलरी में सुनाई पड़ी। दर्द असहनीय था। राइली ने एक और जगह चुनी और थोड़ा और मांस काट डाला।

क्यूरेटर बार—बार चीखने लगा, जैसे चीखने से दर्द कम हो जाएगा।

‘अब, मैं तुमसे एक बार और पूछ रहा हूं,’ राइली ने धीमी और डरावनी आवाज में कहा। ‘पुरातत्वविद तुमसे क्या चाहती थी? वो संग्रहालय में क्यों आई है?’

29

खतरे का आभास

'यह साहू की आवाज है,' विजय ने कहा। 'मैं जाकर देखता हूं, तब तक तुम लोग दरवाजा बंद करो।'

विजय सीढ़ियों से नीचे दौड़ पड़ा और गलियारों से होते हुए साहू के दफ्तर की तरफ जाने लगा। जब वो दफ्तर के पास पहुंच रहा था, उसने साहू की दर्द भरी चीख के अलावा एक आदमी की आवाज सुनी, धीमी और डरावनी।

'अब, मैं तुमसे एक बार और पूछ रहा हूं,' उस आदमी ने कहा। 'पुरातत्वविद तुमसे क्या चाहती थी? वो संग्रहालय में क्यों आई है?'

विजय के कदम रुक गए। डर से उसके हाथ—पांव जैसे ठंडे पड़ गए। कोई एलिस के बारे में पूछ रहा था। कोई जानता था कि एलिस यहां संग्रहालय में है। क्या ये कूपर है? ये कैसे हो सकता है? कूपर बिना इमरान की जानकारी के इमिग्रेशन को पार नहीं कर सकता था। और इमरान उन्हें तुरंत सावधान कर देता।

तभी जैसे उसके अंदर से आवाज आई और सारे सवाल एक तरफ हो गए। उसके दिमाग में चेतावनी की घंटी बजने लगी। उसे दूसरों को सावधान करना होगा।

पता लग गया

राइली ने बाहर गलियारे में किसी के दौड़ने की आहट सुनी और बंदूकधारी को देखने का इशारा किया। वो आदमी कमरे से बाहर निकल गया। राइली ने अपना ध्यान फिर से क्यूरेटर की तरफ किया।

'मैं इंतजार कर रहा हूं,' उसने कहा। अपने खाली हाथ से उसने क्यूरेटर के दूसरी बांह को पकड़ा और उस पर चाकू फिराया, दूसरे हाथ से भी मांस का टुकड़ा काटने के लिए। मेज पर हर तरफ खून फैला हुआ था।

'मेटल प्लेट,' साहू लड़खड़ाती जुबान में आंसुओं के बीच बोला और अपने बंदीकर्ता की मजबूत गिरफ्त से अपनी दूसरी बांह छुड़ाने की नाकाम कोशिश करने लगा। 'यह सिकंदर की वेदी की नींव के नीचे गड़ा हुआ मिला था!'

यह खबर राइली के कानों में चुभ सी गई। वो इतिहास या पुरातत्व विज्ञान के बारे में ज्यादा नहीं जानता था——इनमें उसकी दिलचस्पी भी नहीं थी——लेकिन वो ये जानता था कि मिशन ग्रीक इतिहास के बारे में है। और उसने ग्रीस में खुद मकबरे को देखा था। उसने खुदाई की जगह पर बनी झोंपड़ी में रखी कलाकृतियों को भी देखा था जब उसने उन्हें धमाके में उड़ाया था। इसलिए वो जानता था कि, कुछ भी हो, यह मेटल प्लेट अहमियत रखती थी।

'वो गार्ड नहीं था। मैं उसे अच्छी तरह नहीं देख पाया और गलियारों में इतनी कम रोशनी है, लेकिन इतना अंदाजा मैं लगा सकता हूं।' बंदूकधारी ने राइली के ईयरपीस में यह जानकारी पहुंचाई। 'वो ऊपर चला गया। हमारे शिकारों में से एक रहा होगा। मैं दूसरों को बुला रहा हूं और उसके पीछे जा रहा हूं।'

'यही करो।' राइली फिर से क्यूरेटर की तरफ मुड़ा। 'वो अब कहां हैं? मेटल प्लेट कहां है?'

अब तक साहू टूट चुका था। उसने राइली को वो सब कुछ बता दिया जो वो जानना चाहता था।

'दूसरी मंजिल, हथियारों का कमरा,' राइली ने अपने आदमियों को निर्देश दिया। 'उन्हें वहां इकट्ठा करो और मेरा इंतजार करो। मैं एक मिनट में ऊपर आ रहा हूं। उन्हें मारने के पहले मैं उनसे बात करना चाहता हूं।'

प्रतिरक्षा

विजय गलियारे के छोर तक तेजी से दौड़ता हुआ पहुंचा और दो सीढ़ियां एक बार में चढ़ने लगा। बाकी लोग करीब—करीब आधी सीढ़ियां नीचे उतर चुके थे।

'वापस चलो!' वो हांफते हुए बोला। 'हमें वापस ऊपर जाना होगा।' उसने एलिस की तरफ देखा। 'वो जानते हैं कि तुम यहां हो।'

अभी सवाल—जवाब के लिए कोई समय नहीं था। विजय की आवाज में छिपी ताकीद और हड़बड़ी उन्हें सीढ़ियां वापस चढ़ाने के लिए काफी थी।

जब वो वापस लौट रहे थे विजय के दिमाग में एक योजना बन रही थी। उसने जल्दी से सभी को इस बारे में बता दिया जब वो लोग दूसरी मंजिल की गैलरी की तरफ जा रहे थे। 'हम नहीं जानते कि वो लोग कितने हैं,' वो फुसफुसाया। 'और हम यह भी नहीं जानते कि क्या यहां से संग्रहालय के प्रवेश द्वार तक पहुंचने का दूसरा रास्ता भी है या नहीं। हम सीढ़ियों वाले मुख्य रास्ते से नहीं जा सकते क्योंकि वो लोग हमारे पीछे आ रहे होंगे। और हमें मानकर चलना होगा कि उनके पास हथियार होंगे। तो ध्यान से सुनो कि हम लोग क्या करने जा रहे हैं। हम लोग सबसे पहले जो भी हथियार और बख्तर मिलें, वो हासिल कर लें।'

'बेटे, हम उनसे लड़ नहीं सकते,' शुक्ला ने धीरे से कहा। 'खासतौर पर अगर उनके पास बंदूक हों। यहां दिख रहे तलवार और भाले बंदूक के सामने हमारी कोई मदद नहीं कर पाएंगे।'

विजय ने अपना सिर हिलाया और अब तक वो हथियारों वाले गलियारे में पहुंच चुके थे। 'मैं यह नहीं कह रहा हूं कि हम यहां उन्हें रोकने के लिए खड़े रहें। हथियार सिर्फ एहतियात के लिए हैं। मैं मानता हूं कि हम उनसे लड़ नहीं सकते——ये मूर्खता होगी। लेकिन हमें हथियारों की जरूरत होगी अगर कुछ गलत होता हो तो। यही है जो हमें करना चाहिए। हमारे पास यही रास्ता है।' उसने योजना बताई और बाकी सभी ने उस पर रजामंदी दे दी।

विजय और कोलिन ने गलियारे में रखी मूर्तियों में से पत्थर की एक छोटी मूर्ति उठाई और उन शीशे के बक्सों को तोड़ दिया जिनमें वो हथियार रखे थे जो उन्होंने अपने लिए चुने।

शुक्ला ने युद्ध में इस्तेमाल होने वाली कुल्हाड़ी चुनी जो नादिरशाह की थी, 1739 ईस्वी की। इसकी लंबाई 52 सेंटीमीटर थी, आकार और वजन में ये ऐसी थी कि वो बिना किसी दिक्कत के चला सकें।

कोलिन ने टीपू सुलतान की तलवार चुनी और विजय ने कश्मीर की बनी एक गदा चुनी जो अठारहवीं सदी की थी।

'तुमने अपनी तरह ही भारी—भरकम हथियार चुना है,' कोलिन विजय की तरफ देखकर मुस्कुराया, ऐसे गंभीर माहौल में भी उसकी मजाक करने की आदत गई नहीं थी। 'तुम्हें भरोसा है कि जब जरूरत होगी तो तुम इसे आसानी से घुमा सकोगे?'

'उम्मीद करते हैं कि मुझे इसकी जरूरत ही ना पड़े,' विजय ने गंभीर भाव से कहा। 'तुम क्या चुन रही हो, एलिस?'

एलिस भयभीत और असमंसज में दिख रही थी, जानती थी कि समय बहुत कम है, फिर भी वो तय नहीं कर पा रही थी कि कौन सा हथियार वो इस्तेमाल कर सकती है। इस सोच ने ही उसके मन में घबराहट पैदा कर दी थी कि ग्रीस में उसके पीछे लगे शिकारी यहां तक पहुंच गए हैं। अंत में विजय ने उसके लिए हथियार चुना, लकड़ी और हाथी दांत से बना एक राजपूती भाला जो 16वीं शताब्दी का था। लंबाई सिर्फ 38.5 सेंटीमीटर थी, और इतना हल्का था कि एलिस उसे आसानी से अपने पास रख सकती थी। वो भी उम्मीद कर रही थी कि उसे इसका इस्तेमाल करने की नौबत ना आए।

अपने हथियारों से लैस होकर उन्होंने विजय की योजना के मुताबिक अपनी—अपनी जगह पकड़ ली और इंतजार करने लगे। मौजूदा हालातों में उनके पास इस चीज पर भरोसा करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था कि योजना काम करेगी।

30

क्या योजना काम करेगी?

तीन बंदूकधारी सीढ़ियों के पास मिले जो दूसरी मंजिल पर जाती थीं। उनमें से दो ग्राउंड फ्लोर पर तैनात थे, दोनों गलियारों की निगरानी कर रहे थे जो संग्रहालय के मुख्य कक्ष तक ले जाती थीं, और सुनिश्चित कर रहे थे कि कोई संग्रहालय में आए—जाए नहीं।

कांच टूटने की आवाज उनके कानों तक पहुंची और उन्होंने एक साथ ऊपरी मंजिल की तरफ देखा।

मुख्य बंदूकधारी ने उन्हें सीढ़ियों पर चढ़ने का संकेत दिया और वो ऊपर चढ़ने लगे, तेजी से लेकिन चुपचाप।

जब वो जीने के अंत तक पहुंचे वहां दूसरी मंजिल पर सन्नाटा था। और हल्का अंधेरा भी। गलियारे की बत्तियां बुझा दी गई थीं, साथ ही उनके पास की गैलरियों की बत्तियां भी बुझी थीं। उन तक जो रोशनी आ रही थी वो गोलाकार कमरे में काफी दूर दिख रही गैलरियों की थी।

उन्होंने चारों तरफ देखा, संग्रहालय के साइन बोर्ड की मदद से वो उस गैलरी को ढूंढ़ने की कोशिश कर रहे थे जिनमें हथियार और बख्तर रखे थे। उनमें से एक ने चुपचाप फ्लोर प्लान की तरफ इशारा किया जो जीने के पास दीवार पर लगा हुआ था। मुख्य बंदूकधारी ने अपना सिर हिलाया और एक फ्लैशलाइट निकाली। उसके पास कोई विकल्प नहीं था और उसे इस बात का जोखिम उठाना पड़ा कि उसके शिकार उसे देख सकते हैं। यह साफ था कि वो समझदार लोगों के समूह से मुकाबला कर रहे थे, जो रोशनी की कमी को अपने फायदे के लिए इस्तेमाल कर रहे थे।

उसने नक्शे पर उस गैलरी को ढूंढ़ लिया जिसकी उन्हें तलाश थी और इसे बाकी दोनों को भी दिखाया। तभी उसे यह ख्याल आया और उसने यह इशारा भी कर दिया कि उनके शिकारों के पास हथियार हो सकते हैं। इस बारे में पक्के से कोई नहीं कह सकता। भले ही राइली ने उन्हें बताया था कि वो साधारण लोग हैं। वो ऐसे कई लोगों को जानता था जिन्होंने अपने दुश्मनों को कम आंका और जान गंवा दी। वो उन लोगों में शामिल होने वाला नहीं था।

जहां वो खड़े थे, तीनों आदमी गैलरी का प्रवेश द्वार देख सकते थे। दरवाजा खुला था। अंदर घुप्प अंधेरा था।

मुख्य बंदूकधारी ने फिर इशारा किया। उन्हें गलियारे की बत्तियों की मुख्य स्विच ढूंढ़नी थी। तीनों आदमी अलग—अलग होकर दीवारों को देखने लगे।

'मिल गया,' उनमें से एक फुसफुसाया, उसके गले के पास लगा माइक्रोफोन उसकी गर्दन की कंपन को ले रहा था जिस वजह से उसकी फुसफुसाहट संग्रहालय के सन्नाटे में भी मुश्किल से सुनाई दी थी।

उसने एक स्विच को झटका दिया और गलियारे की बत्तियां जल गईं, तीनों आदमियों की आंखें पल भर के लिए चौंधिया गईं।

मुख्य बंदूकधारी ने अपने स्की—मास्क के अंदर से ही मुंह बनाया। गलियारे की बत्तियों से अंधेरी गैलरी में, हल्की सी ही सही, कुछ रोशनी तो होगी, लेकिन उनके लिए रोशनी से भरे गलियारे में से घुप्प अंधेरे वाले कमरे में जाना मुश्किल होगा। कोई और विकल्प तो था नहीं।

तीनों आदमी धीरे—धीरे गैलरी के प्रवेश द्वार की तरफ बढ़ने लगे।

चूहे—बिल्ली का खेल

विजय तनकर खड़ा हो गया जब उसने देखा कि बाहर की बत्तियां जल गई हैं। उसने अंदाजा लगाया था कि बंदूकधारी एक घुप्प अंधेरे कमरे में नहीं आएंगे, और उनका ध्यान लाइट स्विच ढूंढ़ने की तरफ मोड़ देना ही उसे इकलौता रास्ता सूझा था ताकि उन लोगों को खुद को संभालने के लिए कुछ अतिरिक्त समय मिल जाए।

उसने कोई आवाज नहीं सुनी, लेकिन एक परछाई उसे दरवाजे की तरफ दिखी। सधे हुए हत्यारे, उसने मन में सोचा। वो बिलकुल दक्ष थे।

वो परछाई गायब हो गई और उसकी जगह दूसरी परछाई आई और फिर तीसरी परछाई। तीनों परछाई गैलरी के अंधियारे में घुलती चली गईं, जैसे—जैसे बंदूकधारी दरवाजे की सीध से और बाहर से आ रही रोशनी से हटते गए।

अब क्या? विजय सोच में था। यह पता करने का कोई तरीका नहीं था कि दूसरे लोग भी योजना के मुताबिक चल रहे हैं या नहीं। उसे सिर्फ इंतजार करना होगा और उम्मीद करनी होगी कि उनकी योजना सफल हो।

मंजिल के करीब...

राइली ने अपने ईयरपीस में बंदूकधारी की आवाज सुनी और सिर हिलाया। उसने साहू को बुरी तरह झकझोरा। 'तुम मेरे साथ चलो,' उसने कहा। 'हमें ऊपर कुछ काम है।'

वो खून से लथपथ क्यूरेटर को लगभग घसीटता हुआ सीढ़ियों से ऊपर ले गया, उसकी कोशिश थी कि वो गैलरी तक पहुंच जाए जहां उसके शिकार छिपे थे और वो भाग ना सकें।

नाकाम!

विजय ने अपने होंठ सिकोड़ लिए जब उसने दीवारों पर धुंधली सी परछाईं बनती देखीं। बाकी लोग योजना के मुताबिक चुपचाप कमरे से बाहर निकलने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन, योजना की कामयाबी इस बात पर निर्भर थी कि उनके हत्यारों को वो कमरे में घुसते देखेंगे, लेकिन उन्होंने ये नहीं सोचा था कि उन्हें भी कमरे से बाहर निकलते देखा जा सकता है। और वो नहीं जानता था कि क्या बाहर या सीढ़ियों से नीचे और लोग हैं या नहीं। लेकिन उनके पास यही मौका था।

उसने इंतजार किया। लेकिन कोई तीसरी परछाई दरवाजे से बाहर जाती नहीं दिखी। तो कौन गायब था? और उसे इस बात से भी आश्चर्य हुआ था कि उनकी तलाश में आए तीनों आदमियों में से किसी ने उसके साथ आए लोगों के गैलरी से बाहर निकलने पर उनका पीछा नहीं किया था। कुछ तो गड़बड़ है।

तभी बिना किसी चेतावनी के, गैलरी की बत्तियां जल गईं। उसने एकाएक आई रोशनी में अपनी आंखों को अभ्यस्त करने के लिए पलकें झपकाईं। क्या हो रहा है?

31

फंदे में फंसे

जैसी उन लोगों ने योजना बनाई थी, एलिस गैलरी से छिपते हुए बाहर निकली। उन लोगों ने कमरे में रखे अलग—अलग कांच के बक्से के पीछे अपनी जगह बनाई थी——इन लंबे बक्सों में शरीर के अलग—अलग कवच दिखाए गए थे, पुतले राजाओं के बख्तर पहने खड़े थे——और इंतजार कर रहे थे।

उन्होंने गलियारे की बत्तियों के जलने के बाद आदमियों के कमरे में घुसने की गिनती की थी। योजना थी कि आखरी आदमी के घुसने के बाद 20 सेकेंड तक इंतजार करेंगे, यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई और ना हो, और फिर दस सेकेंड के अंतराल पर एक—एक कर बाहर निकलेंगे।

कोलिन कुछ पलों बाद उसके साथ हो लिया और वो वहां खड़े रहे, शुक्ला के इंतजार में। विजय ने खुद कहा था कि वो अंत में निकलेगा। ‘चूंकि मेरे पास सबसे ताकतवर हथियार है,’ उसने बिलकुल गंभीरता से कहा था। उन लोगों ने कोई बहस नहीं की थी। उनके पास वक्त बहुत कम था।

समय बीत गया लेकिन शुक्ला बाहर नहीं आए। कोलिन ने घबराकर एलिस की तरफ देखा। वो शुक्ला या विजय को छोड़कर नहीं जाना चाहते थे। कोलिन तय नहीं कर पा रहा था कि उन्हें क्या करना चाहिए। अंदर वापस जाना कोई चारा नहीं था। भले ही उनके शिकारियों ने बाहर आते वक्त उनका पीछा नहीं किया था, हो सकता है कि वो उनके लौटने का इंतजार कर रहे हों।

तभी उसके मन में एक बुरा विचार आया। कहीं शुक्ला को पकड़ ना लिया गया हो?

उसे फैसला लेने का वक्त नहीं मिला जब राइली दूसरी मंजिल पर पहुंच गया, अपने पीछे खून से लथपथ साहू को घसीटते हुए। ‘गैलरी की बत्तियां जलाओ,’ उसने साहू को आदेश दिया, और उसने एलिस और कोलिन की तरफ एक व्यंग्य भरी मुस्कान फेंकी। साहू ने तुरंत उसकी बात मानी।

एलिस और कोलिन जहां खड़े थे, वहीं जम से गए। वो नहीं जानते थे कि यह आदमी कौन है, लेकिन साहू को, जिसका दाहिना हाथ खून से लथपथ था और राइली के हाथ में बोवी चाकू को देखकर उन्होंने एक चीज तो समझ ली थी।

वो फंदे में फंस चुके थे।

रखवाले की किस्मत

विजय दहशत भरी निगाहों से अपने सामने के दृश्य देखता रहा। एलिस और कोलिन को दरवाजे से अंदर लाया जा रहा था, और साथ में खून से लथपथ साहू भी था, जो सुनहरे बालों वाले एक लंबे और बलिष्ठ गोरे आदमी के साथ था जिसके हाथ में एक बड़ा सा बोवी चाकू लहरा रहा था। साफ था कि इस गोरे आदमी ने एलिस और कोलिन को गैलरी के बाहर दबोच लिया था; लेकिन उसने साहू के साथ क्या किया है? विजय को अब समझ में आया कि साहू क्यों दर्द से चीख रहा था। क्यूरेटर का चेहरा अब पीला पड़ चुका था, दर्द की जगह आघात ने ले ली थी, उसके होश ढीले पड़ गए थे।

कमरे की दूसरी तरफ तीन बंदूकधारी खड़े थे, उनके चेहरे काले स्की—मास्क से ढके थे, उन्होंने तीनों कैदियों को निशाने पर ले रखा था।

राइली ने अपने फोन में देखा। ‘एलिस टर्नर, ठीक है, कोलिन बेकर।’ उसने कोलिन की तरफ देखा। ‘यह तुम्हीं होंगे। तुम्हीं इस कमरे में दूसरे गोरे हो।’ उसने चारों तरफ देखा। ‘किले में तुम पांच लोग थे। दो लोग जो मुखबिरी कर रहे थे उनका तो पता लग चुका है। इसका मतलब है कि एक आदमी गायब है।’ उसने अपनी आवाज ऊंची की। ‘विजय सिंह! मैं जानता हूं कि तुम यहां हो। तुम छिप नहीं सकते। अगर तुम खुद सामने आ जाओ तो मैं इन दोनों के साथ नरमी से पेश आऊंगा।’

उस पल में विजय को दो चीजें समझ में आ गईं। पहली तो ये कि किले में उन पर निगरानी रखी जा रही थी। वो समझ नहीं पा रहा था कैसे, लेकिन यह आदमी उनके नाम जानता था और यह भी जानता था कि उनमें से तीन एक साथ किले में थे। उसे इस बात की भी जानकारी थी कि इमरान और राधा भी उनके साथ थे। दूसरी बात यह कि इस आदमी की जानकारी पूरे तौर पर सही नहीं थी। वो शुक्ला के बारे में नहीं जानता था। विजय समझ नहीं पाया कि शुक्ला के बारे में उसे पता क्यों नहीं लगा, लेकिन उसने उम्मीद जताई कि वो भाषा विज्ञानी इस बात को समझ गए होंगे और छिपे रहेंगे।

वो एक शीशे के बक्से के पीछे से बाहर आया जिसमें बख्तरबंद रखे थे, वो अपने साथ गदा खींचता आ रहा था। ‘मैं यहां हूं,’ उसने बस इतना कहा।

राइली का चेहरा चमक गया, चीजें उसके मनमुताबिक हो रही थीं। तभी एकाएक वो साहू की तरफ मुड़ा, उसे जकड़ा और एक झटके में उसका गला रेत दिया, क्यूरेटर का शरीर फर्श पर गिर पड़ा, और वहां उसका खून जमा होने लगा था। ‘हमें अब इसकी जरूरत नहीं है,’ उसने दूसरों को समझाने के अंदाज में कहा।

जब तक बाकी लोग इसे दहशत से देख रहे थे, उसने एलिस को जकड़ा और चाकू की नोक को उसके गले पर दबाते हुए पूछा, ‘अब मुझे बताओ, वो मेटल प्लेट कहां है?’

दो बंदूकधारी विजय और कोलिन के पास आ गए थे, और उन्हें अपने निशाने पर ले लिया था। उन लोगों से मुश्किल से एक हाथ दूर, लेकिन इतने करीब कि बिलकुल सही निशाना लग सके। एलिस के गले पर एक छोटा लाल धब्बा दिखने लगा जहां चाकू की नोक दबी थी। उसने बोलने की कोशिश की लेकिन उसके मुंह से शब्द नहीं निकले।

राइली दबी हंसी के साथ बोला, 'देखते हैं कि यह तुम्हारे पास तो नहीं है।'

'रुको,' विजय एक कदम आगे बढ़ा, वो खुद को रोक नहीं पा रहा था। वो देख सकता था कि एलिस डर से कांप रही है। 'उसके पास मेटल प्लेट नहीं है। यह उस दरवाजे के पीछे कमरे में है।' उसने दरवाजे की तरफ इशारा किया जो उन्होंने थोड़ी देर पहले ही बंद किया था। 'मेरे पास चाभी है।' उसने उस बंदूकधारी की तरफ देखा जिसने उस पर बंदूक तान रखी थी।

बंदूकधारी ने सिर हिलाया। 'आराम से,' उसने विजय को चेतावनी दी, उसकी आवाज स्की मास्क की वजह से धीमी आ रही थी। 'कोई चालाकी दिखाई तो मेरा निशाना नहीं चूकेगा।'

विजय ने धीरे से चाभी के छल्ले को बाहर निकाला और राइली की तरफ फेंक दिया। वो गोरा एलिस को कुछ तो घसीटते हुए और कुछ लादते हुए दरवाजे की तरफ चल दिया और उसे खोल दिया। उसने अंदर टैबलेट और मुहरों के भंडार को देखा। 'कौन सी है यह?' उसने गुस्से में पूछा।

एलिस ने उसे प्लेट दिखा दी। राइली ने उसे तीसरे बंदूकधारी की तरफ बेतरतीबी से धकेल दिया जो लड़खड़ाती हुई एलिस को पकड़ने के लिए आगे आया। गोरे शख्स ने चाकू को म्यान में रखा, प्लेट उठाई और उसे देखने लगा।

विजय और कोलिन एकाएक चौंक गए क्योंकि कुछ ऐसा हुआ जिसकी बिलकुल उम्मीद नहीं थी।

32

334 ईसा पूर्व

मकदूनिया

सिकंदर महल के अपने कमरे में था, खिड़की से बाहर झांक रहा था, अपनी सोच में डूबा हुआ, तभी उसकी मां एकाएक अंदर आ गई।

‘बेटे,’ ओलिंपियास ने कहा। ‘मैं तुम्हारे लिए एक तोहफा लाई हूं।’

सिकंदर मुड़ा, उसकी भौंहें तनी हुई थीं। वो अपनी मां की सनक के साथ बड़ा हुआ था, लेकिन उसे अभी भी इसकी आदत नहीं हुई थी। उसकी मां का कभी भी खुशी से नाचने लगना, सांपों के साथ प्यार करना और उसके कमरे में बिना किसी पूर्व सूचना के आ जाना——इन सबसे कभी—कभी उसे चिढ़ आती थी। लेकिन वो उससे बहुत प्यार करता था और कभी भी उसके साथ कोई डांट—डपट नहीं कर सकता था।

उसकी गहरी आंखों ने अपनी मां के हाथों में उस तोहफे को ढूंढ़ा जिसकी वो बात कर रही थी, लेकिन वो तो खाली थे, सामने की तरफ जुड़े हुए।

‘मां,’ नौजवान राजा बोला। ‘अभी कोई खेल नहीं। मुझे बताओ क्या है यह, तुम तो जानती हो कि मुझे तोहफे पसंद हैं।’

‘उसके पहले मुझे तुमसे एक वादा चाहिए,’ उसने जवाब दिया, सिकंदर की तरफ देखकर मुस्कुराते हुए। शायद वही एकमात्र व्यक्ति था जिसका वो कोई फायदा नहीं उठाना चाहती थी। वो सिर्फ इतना चाहती थी कि उसका बेटा एक महान आदमी बने, जिसका गौरव अमर हो। और वो इस चीज को सुनिश्चित करने के लिए कुछ भी करने को तैयार होती।

सिकंदर की त्योरियां फिर चढ़ गईं। ‘इस पर निर्भर करता है कि यह है क्या,’ उसने जवाब दिया।

‘ठीक है, मेरा मानना है कि तुम इस वादे को पूरा करके खुश होगे,’ उसकी मां उसकी उत्सुकता को और बढ़ा रही थी। ‘यह तुम्हारे फारस अभियान के बारे में है।’

सिकंदर ने उसे भेदने वाली निगाहों से देखा। ‘मां, तुम जानती हो कि यह मेरे लिए क्या मायने रखता है। फारस वालों ने जो हमारी बेइज्जती की है, हमारी जमीन पर आकर जो हमें

हराया है, उसका बदला लेना——अभी मेरे लिए एकमात्र लक्ष्य है। मैं तब तक चैन से नहीं बैठूंगा जब तक फारस साम्राज्य को मकदूनिया के शासन तले ना ले आऊं।'

'मैं जानती हूं, बेटे,' ओलिंपियास स्नेहपूर्वक मुस्कुराते हुए बोली। 'लेकिन वहीं क्यों रुकना है? फारस के आगे, पूर्व की तरफ और भी जमीन है।' उसकी आवाज अब फुसफुसाहट में बदल गई। 'पूर्व के ईश्वरों की भूमि, जहां सिंधु और दूसरी बड़ी नदियां बहती हैं।'

'पृथ्वी का दूसरा छोर! मां, मैंने उस भूमि की समृद्धि के बारे में सुना है,' सिकंदर अब कुछ सोचने लगा था। उसने सिंधु घाटी में सोने और कीमती पत्थरों की कहानियां सुनी थीं और ये भी सुना था कि कैसे वहां के निवासी फारस के लोगों को उपहार में सोना देते हैं। 'लेकिन इसका मतलब ये होगा कि घर से दूर कुछ और साल बिताऊं। क्या यह इस लायक होगा? फारस का साम्राज्य हमें उतनी संपत्ति दे देगा जितनी हमें जरूरत है।'

'उस भूमि पर तुम्हें सांसारिक संपत्ति नहीं ढूंढ़नी है।' उसकी मां की आंखों में एक चमक थी। 'तुम एक ईश्वर से पैदा हुए हो। जियस के बेटे हो। मैंने तुम्हें पहले भी बताया है। लेकिन तुम अभी भी एक मनुष्य हो।' वो रुकी और सिकंदर की आंखों में देखा। 'सिंधु की भूमि की एक पौराणिक कहानी है। प्राचीन कहानी, एक महान रहस्य के बारे में जो तुम्हें ईश्वर बना देगा। यही वो रहस्य है जिसे ढूंढ़ने के लिए मैं तुम्हें कह रही हूं।'

ओलिंपियास ने सिकंदर को पूर्वी भूमि से आए एक दार्शनिक के साथ अपनी मुलाकात के बारे में बताया। उसने सिकंदर को चर्मपत्र और धातु पट्टिका दी, जो दार्शनिक ने उसे दिए थे और सिकंदर को उस पर उत्कीर्ण लिखावट और नक्काशी के बारे में समझाया, ठीक उसी तरह जैसे उसे समझाया गया था।

'लेकिन इस मिशन को गोपनीय रखना होगा। अगर तुम्हारी सेना को पता चलेगा कि तुम किस चीज की तलाश में हो, तो मुश्किल होगी। वो तुम्हारे साथ पृथ्वी के दूसरे छोर पर नहीं जाएंगे क्योंकि वो यकीन नहीं करेंगे।'

जब उसकी बात खत्म हो गई, सिकंदर ने चर्मपत्र को ध्यान से देखा। 'यह मेरी नियति है,' उसने कहा। 'ईश्वर से पैदा हुआ, और मैं भी ईश्वर बनूंगा।'

33

वर्तमान

तीसरा दिन

बुलावा

राधा ने दरवाजे की घंटी बजने की आवाज सुनी और जल्दी से दरवाजा खोलने गई। क्या विजय है?

दरवाजे पर एक आदमी सफारी सूट में खड़ा था, दुखी लग रहा था। ऐसा लग रहा था कि वो कोई बुरी खबर लेकर आया है और राधा को घबराहट होने लगी।

'मिस राधा शुक्ला?' उस आदमी ने पूछा।

राधा ने हामी भरी, उसका कलेजा मुंह को आ रहा था।

'मैं खुफिया ब्यूरो से होशियार सिंह हूं।' उस आदमी ने उसके सामने अपना परिचय पत्र लहराया। राधा बमुश्किल उसे देख सकी। वो जानना चाहती थी कि इतनी रात गए वो यहां क्या करने आया है।

'मिस्टर इमरान किदवई अस्पताल में हैं,' होशियार सिंह ने अपनी बात जारी रखी। 'किसी ने रॉकेट से फेंके गए बम का इस्तेमाल करके उनके अपार्टमेंट में उन्हें जान से मारने की कोशिश की है। उनकी हालत नाजुक है। मुझे आपको सूचित करने को कहा गया ताकि अगर आप चाहें तो हमारे साथ अस्पताल चल सकें।'

राधा को एक झटका लगा। इमरान अस्पताल में? बम? उसे यकीन नहीं हो रहा था जो उसने सुना था। उसने अभी थोड़ी देर पहले ही उससे बात की थी।

'एक मिनट रुको,' उसने कहा और अपना फोन लेने के लिए अंदर गई। उसने जल्दी से विजय को सारी जानकारी देने वाला और उससे अस्पताल में मिलने वाला एक मेसेज टाइप किया। 'चलो,' उसने उस आदमी से कहा, घर में ताला लगाया और तेजी से बगीचे वाले रास्ते से इंतजार कर रही कार की तरफ चल दी।

अविश्वसनीय उद्धारक

शुक्लाजी उस शीशे के बक्से के पीछे छिपकर सब कुछ देख रहे थे, जिसमें मुगल बादशाह औरंगजेब का बख्तरबंद सूट रखा था। उन्होंने देखा कि एलिस को खींचकर टैबलेट वाले कमरे में ले जाया गया। विजय की तरह उन्होंने भी समझ लिया था कि राइली उनकी मौजूदगी के बारे में नहीं जानता। वो नहीं समझ पा रहे थे कि इसका कोई फायदा है या नहीं, लेकिन उन्होंने तय किया कि वो अभी छिपे रहेंगे। और कुछ नहीं तो, अगर बाकियों को बंदी बनाकर ले जाया जाता है तो वो इमरान को मदद के लिए टेलीफोन कर सकते हैं। उन्होंने खुद को कोसा। जिंदगी में पहली बार उन्हें इस बात का अफसोस हो रहा था कि उनके पास मोबाइल फोन नहीं है। सालों तक उनका मन बदलने की राधा की कोशिशों को उन्होंने नाकाम किया था। 'जब मोबाइल फोन नहीं थे तब भी मैं हमेशा सबकी पहुंच में रहता था,' उनका कहना होता था। 'अगर किसी को मुझे संपर्क करने की जरूरत है, उसे पता होगा कि मैं कहां मिलूंगा।'

आज उन्हें महसूस हुआ कि ऐसी परिस्थिति में मोबाइल फोन कितना उपयोगी साबित हो सकता था। इस वक्त एक मेसेज भी मदद बुलाने के लिए काफी होता।

इस बीच उन्होंने देखा कि एलिस को राइली ने धक्का दिया और वो लड़खड़ाती हुई आगे गिर रही है। तीसरा बंदूकधारी उसे गिरने से बचाने के लिए आगे आया, और वो उस जगह से एक फुट करीब पहुंच गया जहां शुक्ला छिपे हुए थे।

बंदूकधारी ने एलिस को पकड़ा, लेकिन इस प्रक्रिया में उसने करीब-करीब अपना संतुलन खो दिया था।

शुक्ला के दिमाग में एकाएक जैसे कुछ कौंध गया।

वो बक्से के पीछे से बाहर आए और कुल्हाड़ी से बंदूकधारी के सिर पर तेज प्रहार किया, जब तक वो बंदूकधारी खुद का संतुलन बनाने और एलिस को पकड़ने की कोशिश साथ—साथ कर रहा था।

कुल्हाड़ी ने अपना काम किया और बंदूकधारी सीधे नीचे गिरा और बक्से के कांच में जाकर टकरा गया, उसके गिरने के साथ एलिस भी गिर गई थी।

अचानक जैसे उथल—पुथल मच गई।

विजय और कोलिन ने गौर किया कि शुक्ला अपनी जगह से बाहर निकलकर कुल्हाड़ी लहरा रहे थे। एक पल के लिए तो वो दोनों इस अप्रत्याशित चाल से चौंक गए, लेकिन अगले ही पल उन्हें अपने पास खड़े बंदूकधारियों से निपटने का मौका मिल गया।

बंदूकधारियों का पूरा ध्यान अपने बंदियों पर था और जब उनका सहयोगी फर्श पर गिरा तो वो बुरी तरह चौंक गए थे। कुछ पलों के लिए उनका ध्यान भटक गया।

विजय और कोलिन ने इसी पल का फायदा उठाया। कोलिन नीचे झुका और एक घुटने

पर चक्कर खाते हुए उसे निशाने पर ले रखे बंदूकधारी के पास पहुंच गया और अपने दूसरे पैर से तेज प्रहार किया। उसका निशाना बंदूकधारी के घुटनों पर लगा। उस आदमी की टांगें मुड़ीं और बंदूक नीचे गिर गई। कोलिन ने छलांग लगाकर बंदूक उठाई और उस आदमी के सिर पर बंदूक के कुंदे से हमला किया, वो ठंडा पड़ गया।

शुक्ला ने एलिस को उठाया और वो दरवाजे की तरफ दौड़ पड़े। जब कोलिन अपने बंदीकर्ता से निपट रहा था, विजय फर्श पर फिसला, पलटी खाई और अपने पीछे खड़े बंदूकधारी की तरफ गदा लहरा दी। जब गदा उसके ऊपर से उड़ती हुई गई, वो इसके रास्ते से हट गया ताकि वो पलटकर उस पर हमला ना कर दे। गदा में आठ ब्लेड थीं जो एक बेलनाकार डंडे पर लगी थीं और इसकी ताकत में कोई कमी नहीं आई थी। गदा बंदूकधारी की जांघ पर लगी, उसकी मांसपेशियों को चीर दिया और वो फर्श पर गिरकर छटपटाने लगा।

कुछ सेकेंडों में ही ये सारी घटनाएं हो गईं और राइली को हरकत में आने का कोई मौका ही नहीं मिला। जब तक उसने अपना चाकू म्यान से बाहर निकाला, चारों बंदी कमरे से बाहर निकलते हुए अपने पीछे गैलरी का दरवाजा बंद कर चुके थे।

राइली ने शुरुआती झटके से खुद को तुरंत संभाला और तेजी से दरवाजे की तरफ भागा। तभी गैलरी में अंधेरा हो गया और वो बुरा—भला कहने लगा। उन लोगों में से किसी ने समझदारी दिखाते हुए सीढ़ियों से नीचे जाने के पहले बत्तियां बुझा दी थीं।

उसने अंधेरे में ही धीरे—धीरे रास्ता ढूंढ़ने की कोशिश की, वहां रखी चीजों से टकराते हुए वो दरवाजे की तरफ जा रहा था। जब वो दरवाजे तक पहुंचा और उसे खोला, उसने देखा कि गलियारा भी अंधियारे में डूबा हुआ है। खुली खिड़की से उसने संग्रहालय के बाहर कार का इंजन स्टार्ट होने की आवाज सुनी।

वो गुस्से से भर उठा और उसने सीढ़ियों के लकड़ी के जंगले में जोर से चाकू घुसेड़ दिया। उसे कूपर को बताना होगा। लेकिन वो कूपर की प्रतिक्रिया से चिंतित नहीं था। आज रात की घटना उसके रिकॉर्ड पर एक कलंक थी। उसके आदमियों ने उसे नाकाम कर दिया था।

यह दोबारा नहीं होगा।

34

नई दिल्ली

संग्रहालय से आनन—फानन में निकलने के बाद विजय सेंट्रल दिल्ली की गलियों में तेजी से कार चला रहा था, ट्रैफिक से गुजरते हुए उसकी कोशिश थी कि वो संग्रहालय से जितना दूर हो सके, चला जाए। उनमें से कोई भी अपना ध्यान उस क्यूरेटर की तरफ से नहीं हटा पा रहा था जिसकी उनकी आंखों के सामने निर्मम हत्या कर दी गई थी।

कुछ देर बाद वो थोड़ा संयत हुआ हालांकि स्टीयरिंग व्हील पर उसकी मजबूत पकड़ से साफ था कि वो अभी भी तनावग्रस्त है। 'क्या वो कूपर था?' उसने एलिस से पूछा।

एलिस ने जड़वत अपना सिर हिला दिया। वो अभी भी सदमे में थी। वो नहीं जानती थी कि कमरे में वो गोरा आदमी कौन था लेकिन वो समझ गई थी कि उसका पीछा करने वाले लोगों ने हार नहीं मानी थी। वो लोग, किसी भी तरह, उसका पीछा करते हुए ग्रीस से दिल्ली पहुंच गए थे। और वो लोग यह भी जानते थे कि वो विजय के किले में छिपी है!

'हमें इमरान को बताना होगा। भले ही कूपर यहां हो या नहीं, आज की घटना अचानक नहीं हुई है। कोई तुम पर निगरानी रख रहा है, एलिस,' विजय ने वही कह दिया जो एलिस सोच रही थी। उसने अपना फोन कोलिन को थमाया। 'इमरान को फोन करो, वो स्पीड डायल पर है।'

कोलिन ने हामी भरी और स्मार्टफोन पर दिख रहे स्क्रीनसेवर को हटाने के लिए स्वाइप किया, फिर विजय का पासवर्ड टाइप किया। 'तुम्हें राधा ने एक टेक्स्ट मेसेज भेजा है,' उसने बताया।

'मेसेज क्या है?' विजय आश्चर्य में था।

कोलिन का चेहरा लटक गया जब उसने मेसेज पढ़ा।

'क्या दिक्कत है?' शुक्ला ने पीछे की सीट से पूछा जहां वो एलिस के साथ बैठे थे।

'यह इमरान के बारे में है,' कोलिन की आवाज भरी हुई थी। वो यकीन नहीं कर पा रहा था जो वह पढ़ रहा था। 'आज शाम उसके अपार्टमेंट को बम से उड़ा दिया गया। वो अस्पताल में है। राधा आईबी के लोगों के साथ अस्पताल गई है और उसने हमें वहां बुलाया है।' उसने विजय को अस्पताल का पता दिया और विजय ने कार तुरंत ही घुमा ली। अस्पताल वहां से ज्यादा दूर नहीं था जहां वो लोग थे और वो वहां पंद्रह मिनट से भी कम में

पहुंच जाएंगे।

आईबी या कुछ और?

राधा कार में बैठी और अपने चारों तरफ ट्रैफिक को उदासी से देखने लगी। उसके दिमाग में कई सवाल घूमने लगे। इमरान को निशाना क्यों बनाया गया? कोई उसे क्यों मारना चाहेगा? क्या इसका टाइटन में उनकी मुलाकात से कोई लेना—देना है? और अगर इमरान पर जानलेवा हमले और टाइटन की मुलाकात में कोई संबंध है तो फिर वो भी निशाना हो सकती है?

उसने अपने कंधे झुकाए और इस बात के लिए शुक्रिया अदा किया कि वो खुफिया ब्यूरो के तीन आदमियों के साथ एक कार में थी। इससे उसने खुद को सुरक्षित महसूस किया।

'डॉक्टरों ने इमरान के बारे में क्या कहा?' वो अपने पास बैठे आईबी एजेंट की तरफ मुड़ी, जो घनी मूंछों वाला एक रूखा आदमी था।

उसने अपने कंधे उचका दिए। होशियार सिंह, जो आगे की सीट पर बैठा था, पीछे घूमा और उसने जवाब दिया। 'हम बस इतना जानते हैं कि उनका काफी खून बह गया है। इससे ज्यादा तभी पता चलेगा जब हम पहुंच जाएंगे।'

राधा अपने आंसुओं को रोक रही थी। पिछले साल उसका इमरान के साथ बेहद खास बंधन जुड़ गया था। उसका अपहरण कर लिया गया था और करीब—करीब उसे मार ही दिया जाता लेकिन इमरान ने उसे बचा लिया था। वो नहीं मर सकता। अभी नहीं।

कार एक गोल चक्कर के पास आई और वहां से बाईं ओर मुड़ गई। राधा ने खिड़की से बाहर देखा, अभी भी अपनी सोच में डूबी हुई थी, लेकिन उसने एकाएक गौर किया। वो अब तक उस रास्ते पर ज्यादा ध्यान नहीं दे रही थी, जिससे वो लोग गुजर रहे थे। वो लोग दक्षिणी दिल्ली से अस्पताल के रास्ते पर ही जा रहे थे। लेकिन इमरान को खोने की आशंका से बेचैन राधा ने इस पर गौर नहीं किया था कि अब वो ऐसी दिशा में जा रहे हैं जो उन्हें अस्पताल से दूर ले जा रही है। उसे समझ आया कि वो लोग चाणक्यपुरी से गुजर रहे हैं, और धौलाकुआं की तरफ बढ़ रहे हैं, ऐसा रास्ता जो उन्हें गुड़गांव ले जाएगा।

उसने अपने पास बैठे रुखे एजेंट को देखा और सामने के दोनों एजेंटों पर भी तुरंत गौर किया। ऐसा नहीं लग रहा था कि उनमें से कोई भी जानता है कि वो लोग गलत रास्ते पर जा रहे हैं, और अगर वो जानते थे, तो इससे चिंतित भी नहीं लग रहे थे। कार का रेडियो बज रहा था और होशियार सिंह एक नए बॉलीवुड गाने को गुनगुना रहा था, जो कार में चल रहा था।

कुछ तो गड़बड़ है। उसे घबराहट होने लगी। क्या ये लोग सच में आईबी एजेंट हैं? या कहीं यह टाइटन फार्मास्युटिकल्स में उसकी मुलाकात का नतीजा तो नहीं है? उसने एजेंट के परिचय पत्र को याद करने की कोशिश की, लेकिन उसे समझ आया कि उसने तो उसे गौर से देखा ही नहीं था। हो सकता है वो उसे अपना ड्राइविंग लाइसेंस दिखा रहा था। उसने इस

लापरवाही के लिए खुद को कोसा।

लेकिन अगर ये लोग आईबी एजेंट नहीं हैं, तो उन्होंने उसे तुरंत मार क्यों नहीं डाला? उसके घर पर ऐसा करना बड़ा आसान होता क्योंकि कोई गवाह नहीं मिलता। इमरान को देखने के नाम पर उसे कार में ले जाने का क्या मतलब है? क्या इमरान के बारे में दी गई खबर उसे घर से बाहर निकालने की एक चाल थी? इस विचार के साथ ही उसके मन में उम्मीद की एक किरण जगी। शायद इमरान पूरी तरह ठीक हो। लेकिन उम्मीद की यह किरण खुद की मुसीबत का अहसास होते ही बुझ गई।

राधा अपनी सीट में धंसकर बैठ गई। शायद वो बहुत घबरा रही है। लेकिन अगर वो सही सोच रही है, तो उसे सुनिश्चित करना होगा कि इन आदमियों को उसकी आशंका का पता ना चले। उसने दोनों तरफ के दरवाजों की तरफ देखा। वो सेंट्रल लॉकिंग मेकेनिज्म से बंद थे। लेकिन इसका यह मतलब नहीं था कि वो खुल नहीं सकते थे। बस, वो एक चलती कार से कूदने का प्रयास नहीं कर सकती थी। ऐसा करके वो खुद को घायल ही करेगी और उन लोगों के लिए उसे कार में दोबारा ठूंस देना बड़ा आसान होगा।

उसे समझ आया कि उसके पास भागने का सिर्फ एक मौका है। अगर वो नाकाम रहा तो ये लोग दोगुने सावधान हो जाएंगे और उसकी सारी उम्मीदें मिट्टी में मिल जाएंगी।

राधा ने अपनी आंखें बंद कीं और खुद को शांत रखने की कोशिश करने लगी। उसे धीरज से काम लेना होगा और इंतजार करना होगा जब तक कि वो लोग किसी चौराहे पर ना आएं जहां उन्हें रुकना पड़े। उसके पास वही इकलौता मौका होगा।

उसने सड़क पर सामने की ओर देखा और वो लोग एक अनजान मंजिल की तरफ चलते रहे। उसके साथ क्या होने जा रहा था?

35

अस्पताल में

विजय अस्पताल के पार्किंग स्थल की तरफ घूमा और एक खाली जगह पर कार रोक दी। कार में बैठे चारों शख्स एक साथ ही कार से बाहर निकले और अस्पताल के इमरजेंसी विंग की तरफ भागे। विजय और कोलिन रिसेप्शन पर एक साथ पहुंचे, एलिस उनके ठीक पीछे थी। शुक्ला उनके पीछे—पीछे आ रहे थे क्योंकि वो बाकी लोगों की तरह तेज नहीं दौड़ सकते थे।

'इमरान किदवई,' विजय ने रिसेप्शन पर हांफते हुए पूछा। 'हम उसके दोस्त हैं।'

'बस एक मिनट,' रिसेप्शनिस्ट ने छोटा सा जवाब दिया। उसने कुछ दस्तावेज देखे, फिर कुछ टाइप किया और अपने सामने रखे कंप्यूटर मॉनिटर में देखने लगी। अंत में उसने सिर हिलाते हुए विजय को बताया, 'इस नाम का तो यहां कोई नहीं है।'

कोलिन और विजय ने एक दूसरे की तरफ देखा। 'आपको पक्का यकीन है?' विजय ने संदेह करते हुए पूछा। 'हमें बताया गया था कि उसे थोड़ी देर पहले ही यहां लाया गया था। वो बम धमाके का शिकार हुआ था। वो खुफिया ब्यूरो में है।'

रिसेप्शनिस्ट ने दृढ़ता से अपना सिर हिलाया। 'मैंने सारे रिकॉर्ड्स देख लिए हैं। यहां बम धमाके का कोई मरीज नहीं है। और खुफिया ब्यूरो से तो निश्चित तौर पर कोई नहीं है। मुझे खेद है। शायद आप लोग गलत अस्पताल में आ गए हैं।'

शुक्लाजी उनके पास पहुंच गए और उन्होंने रिसेप्शनिस्ट की बातें सुनीं। उन्होंने उन लोगों की तरफ देखा, उनके चेहरे पर डर झलक रहा था। उन्हें अपना डर व्यक्त करने के लिए शब्दों की जरूरत नहीं थी। वो सभी एक ही बात सोच रहे थे। अगर इमरान अस्पताल में नहीं हैं, राधा किससे मिली और वो लोग उसे कहां ले जा रहे थे?

मौके की दस्तक

कार धौला कुआं पहुंच चुकी थी। उन्होंने अभी—अभी धौला कुआं फ्लाइओवर पार किया था और पास में ही एयरपोर्ट एक्सप्रेस मेट्रो लाइन चल रही थी, और बाईं तरफ सड़क के ऊपर वो थोड़ी देर के लिए धौला कुआं मेट्रो स्टेशन पर गायब हो जा रही थी और फिर

इंटरनेशनल एयरपोर्ट की तरफ जाती दिख रही थी।

मेट्रो स्टेशन के अगले सिग्नल पर काफी ट्रैफिक था, जब उन्होंने फ्लाइओवर पार किया, रिंग रोड से आने वाले हर तरह के वाहन वहां मिल रहे थे, जिसके ऊपर से फ्लाइओवर जाता था। दाएं जाने वाली कारें, बसें और दोपहिया वाहन मनमाने तरीके से लेन बदल रहे थे और सीधे जाने वाले ट्रैफिक में मिल रहे थे, जिस वजह से वहां भारी ट्रैफिक जाम लग गया था जो फ्लाइओवर के निचले हिस्से तक पहुंच गया था।

राधा चुपचाप तनकर बैठ गई थी। यही उसका मौका था। एक बार उन्होंने इस सिग्नल और अगले को पार कर लिया, वो उस एक्सप्रेसवे पर होंगे जो दिल्ली से गुड़गांव जाता है। उस सड़क पर तेज रफ्तार से चलते ट्रैफिक के मद्देनजर कार के धीमी होने की कोई सूरत नहीं होगी।

उसने खिड़की से बाहर की तरफ देखा। उनके पास वाली कार बिलकुल सटकर चल रही थी, मुश्किल से दोनों वाहनों के बीच में एक फुट का अंतर था। कोई तरीका नहीं था जिससे वो दरवाजा खोलकर बाहर निकल पाती। कार धीरे—धीरे आगे बढ़ने लगी, ड्राइवर अलग—अलग दिशाओं में जा रही गाड़ियों के बीच से रास्ता निकालने की कोशिश कर रहा था। कारों के बीच का अंतर थोड़ा बढ़ा और राधा की चिंता बढ़ने लगी। ट्रैफिक लाइट हरी हो चुकी थी और जाम तेजी से छंटने लगा था क्योंकि गाड़ियां अपनी—अपनी दिशाओं में जाने लगी थीं।

यह उसके लिए अभी नहीं या कभी नहीं वाली हालत थी, और उसने चुपके से अपना हाथ दरवाजे को खोलने के लिए बढ़ाया।

तभी उसका मोबाइल फोन बजने लगा। कार में बैठे तीनों आदमी उसकी तरफ देखने लगे। और यही वो नहीं चाहती थी।

सच क्या है?

‘वो फोन नहीं उठा रही है,’ विजय ने बाकियों को बताया, उसके चेहरे पर चिंता थी और शुक्ला भी चिंतित लग रहे थे। उस पल एक पिता और एक मंगेतर दोनों ही एक जैसे बेचैन थे।

‘इमरान को लगाओ,’ कोलिन ने सुझाव दिया। ‘हमें उसे वैसे भी पीटर के बारे में बताना है। शायद वो राधा का पता लगाने में हमारी मदद कर सके?’ वो यह बोलते हुए खुद भी आशंकाग्रस्त था, लेकिन वो हिम्मत नहीं हारना चाहता था——इससे विजय और शुक्ला दोनों और टूट जाएंगे।

विजय ने सिर हिलाया और इमरान का नंबर डायल किया। एक अजीब और अनजान आवाज ने उत्तर दिया। ‘कहिए?’

‘मैं... मैं इमरान किदवई से बात करना चाहता हूं,’ विजय हिचकिचाते हुए बोला।

'आप कौन हैं?' आवाज का लहजा आदेशात्मक था।

विजय एक मिनट के लिए तो स्तब्ध रह गया। जिस आदमी ने फोन उठाया था, ऐसा लग रहा था कि वो इमरान को जानता है। फिर भी, इमरान ने फोन नहीं उठाया। इसका क्या मतलब हो सकता है?

'मैं... मैं उसका दोस्त हूं,' वो किसी तरह बोल पाया। 'विजय सिंह।'

'इंतजार कीजिए,' उस आवाज ने कहा और फिर कुछ पलों के लिए सन्नाटा छाया रहा। फिर वो आदमी फोन पर वापस आया।

'ठीक है, आप अमेरिका—भारत टास्क फोर्स में हैं। मुझे खेद है, विजय, लेकिन मुझे जांचना पड़ा कि फोन सच में आप ही कर रहे हैं। इन परिस्थितियों में हम कोई ढील नहीं दे सकते।'

विजय का आश्चर्य और बढ़ गया। और एक घबराहट सी उसे महसूस होने लगी। ऐसी क्या परिस्थितियां हैं? इमरान कहां था?

उसने यही सवाल पूछा।

'आपको बताया नहीं गया?' उस आदमी की आवाज में आश्चर्य था। 'इमरान पर आज जानलेवा हमला हुआ है। काफी पास से उसके अपार्टमेंट पर रॉकेट से बम फेंका गया। अपार्टमेंट तहस—नहस हो गया। इमरान की हालत इस वक्त काफी नाजुक है। उसकी सर्जरी हो रही है। हम नहीं जानते कि वो जिंदा बचेगा या नहीं।'

विजय का दिमाग तेजी से घूम रहा था। यानी इमरान पर हमले की खबर सही थी! उसके दिमाग ने तुरंत सभी सूचनाओं को एक साथ गूंथ दिया। अगर इमरान की वाकई में सर्जरी हो रही है और वो लोग एक गलत अस्पताल में हैं, इसका मतलब है कि राधा को फंसाया गया है। और अगर राधा से मिलने वाले जो लोग आईबी एजेंट बनकर गए थे, जानते थे कि इमरान पर बम से हमला हुआ है, तो ये राधा के लिए अच्छा शकुन नहीं है। वो इस बात का दावा करने को तैयार था कि नकली आईबी एजेंट उसी के लिए काम कर रहे थे जिसने इमरान को मारने की कोशिश की है।

'विजय,' उस आदमी की आवाज आई, 'तुम फोन पर हो?'

विजय को एक पल के लिए कोई जवाब नहीं सूझा। फिर उसने पूछा, 'आप कौन हैं?'

उस आदमी की आवाज में थोड़ी सख्ती आ गई। 'मैं अर्जुन वैद हूं, आईबी डायरेक्टर, हम लोग मिल चुके हैं।'

विजय शर्मिंदा सा हो गया। वो वैद को जानता था। इमरान का बॉस है वो। लेकिन वो यह कैसे जान सकता था कि इमरान का बॉस फोन उठाएगा। 'मुझे खेद है, मिस्टर वैद,' वो हकलाते हुए बोला, 'मैं आपकी आवाज नहीं पहचान पाया। लेकिन मैं बिलकुल उम्मीद नहीं कर रहा था...'

‘ठीक है,’ वैद की पहले की आवाज लौट आई। ‘तुम इस वक्त कहां हो? और क्या राधा तुम्हारे साथ है? हम इस बात से इनकार नहीं कर सकते कि उनके टाइटन फार्मास्युटिकल्स जाने से इस घटना का संबंध जरूर है।’

विजय डर से कांप गया। उसके और राधा के बीच इस मामले पर कई बार बातें हुई थीं। जब इमरान ने टास्क फोर्स में उन्हें शामिल करने का जिक्र हुआ था, विजय ने पहले मना कर दिया था। राधा ही थी जिसने उसे टास्क फोर्स में शामिल करने के लिए मनाया था।

‘टास्क फोर्स में जुड़ने के लिए तुमसे बेहतर कौन हो सकता है,’ उसने तर्क दिया था। वो उसके राज के बारे में जानती थी और कोलिन भी। उसने अपनी जिंदगी के दो सबसे महत्वपूर्ण लोगों के साथ यह राज बांटा था। ‘यह तुम्हारे लिए ना सिर्फ देश की, बल्कि पूरी दुनिया की मदद करने का मौका होगा। ऐसे मौके जीवन में एक बार ही मिलते हैं, अगर मिलें भी तो।’

इसलिए वो ना चाहते हुए भी मान गया था। लेकिन वो राधा के टास्क फोर्स में शामिल होने की इच्छा के खिलाफ था। इमरान चाहता था कि राधा शामिल हो, लेकिन विजय नहीं। उसने काफी कोशिश की थी राधा को मनाने की, लेकिन वो हार गया था।

‘यह बेहद खतरनाक है,’ उसने डांटते हुए कहा था।

‘अच्छा, यह मेरे लिए खतरनाक है लेकिन तुम्हारे लिए नहीं,’ उसने पलटकर कहा था, अपने चिरपरिचित अंदाज में आंखें मटकाते हुए। ‘क्योंकि मैं एक महिला हूं और तुम एक पुरुष?’

‘नहीं, ऐसा नहीं है,’ उसने विरोध करते हुए कहा। अपने मन में उसने राधा के बयान में छिपे ताने पर सोचा। वही थी जिसने उसे टास्क फोर्स में शामिल होने के लिए मनाया था। तो वो कैसे उसके खिलाफ बोल सकता था? अंत में उसने हथियार डाल दिए थे।

अब यही चीज उसे परेशान करने आ रही थी। और उसका सबसे बड़ा डर सच साबित होने जा रहा था। राधा ने पहली बार अपने जीवन में और इमरान के समझाने के बावजूद एक फील्ड मिशन में हिस्सा लिया था। और अब वैद भी नहीं जानता था कि वो कहां है।

उसने वैद को सारी चीजों की जानकारी दी। वैद ने उसके इस अंदाज से सहमति जताई कि नकली आईबी एजेंट और इमरान पर बम से हमला करने वाले लोग मिले हुए हैं।

‘चिंता मत करो,’ वैद ने उसे भरोसा दिलाया। ‘हम इसी वक्त राधा के फोन की निगरानी शुरू कर देंगे। अगर फोन में जीपीएस होगा और वो चालू होगा तो हम तुरंत उसकी स्थिति का पता लगा लेंगे। और मैं तुम्हें इमरान की हालत का ताजा हाल भी बताता रहूंगा। हम सभी चाहते हैं कि वो इस मुश्किल घड़ी से निकल जाएं। तुम अभी वहीं रुको जहां हो। मैं वहां एजेंट्स भेज रहा हूं। तुममें से किसी के लिए भी अभी खतरा टला नहीं है।’

‘शुक्रिया,’ विजय ने फोन काटा और बाकियों को बातचीत की जानकारी दी। बोलते—बोलते उसके दिमाग में एक विचार कौंधा। यह एक बयान था जो वैद ने दिया था। एकाएक

वो समझ गया कि गोरे आदमी को उन सबके किले में एक साथ होने का पता कैसे चला। और इसी से यह भी समझ में आ गया कि उस गोरे को शुक्ला के बारे में पता क्यों नहीं चला।

36

सितंबर, 328 ईसा पूर्व समरकंद, वर्तमान उज्बेकिस्तान

सॉग्डियन महल चिरागों और मशालों से जगमगा रहा था। हर तरफ हलचल और मौज—मस्ती का माहौल था। विजेता ने महल में एक दावत का आयोजन किया था। एक अप्रत्याशित हार के बाद, उसने बाल्ख में वापसी की थी और अपनी सेना को दोबारा संगठित किया था। इसके बाद उसने नदी घाटियों के पार, आज के ताजिकिस्तान में, अपनी चार इकाइयां भेजी थीं और एक इकाई को आज के उज्बेकिस्तान के पार समरकंद में एकत्र होने के लिए भेजा था। बागी कबीलों के सरदार और उनके परिवार वाले सॉग्डियन पर्वत पर जमा हुए थे, जो सिकंदर का अगला पड़ाव होने वाला था। इसकी कई वजह थीं। लेकिन अभी सिकंदर जश्न मना रहा था। वो फारस का बादशाह बन चुका था। और कल, वो इस पर्वत को जीत लेगा। मानो उसके रास्ते में कोई बाधा नहीं थी।

महल के अंदर दावत अपने पूरे शबाब पर थी। शराब पानी की तरह बह रही थी और मेज पर तरह—तरह के सॉग्डियन पकवान सजे हुए थे।

क्या सेनापति क्या सैनिक, चाहे मकदूनियन हों या गैर—मकदूनियन, सभी उस हॉल में मिल—जुलकर खाने—पीने का मजा ले रहे थे। कुछ समय के लिए प्रतिस्पर्धा और राजनीति भुला दी गई थी, अतीत और भविष्य के युद्ध गुमनाम से हो गए थे, और हर तरफ खुशमिजाजी थी।

लेकिन यह बहुत ज्यादा देर तक नहीं रही।

हॉल के एक हिस्से में सिकंदर, हेफेस्टियन और अपने खास आदमियों के साथ अड्डा जमाए बैठा था। ऊंची आवाजें और अट्टहास संकेत दे रही थीं कि हॉल के इस कोने में नशा किस कदर छा चुका है।

इससे पहले कि शराब का नशा सभी लोगों को पूरी तरह अपनी गिरफ्त में लेता, हेफेस्टियन आगे बढा।

‘दोस्तों, शांत हो जाओ!’ पास के कुछ सेनापतियों और सैनिकों ने उसकी बात पर ध्यान दिया लेकिन ज्यादातर ने उस हंगामे के बीच उसकी बात नजरअंदाज कर दी। किसी ने हेफेस्टियन पर भद्दी टिप्पणी की और सिकंदर जोर से हंस पड़ा, अपने साथ हुए मजाक के बावजूद हेफेस्टियन के चेहरे पर भी मुस्कुराहट आ गई।

उसने मौजूद लोगों को दिखाने का फैसला किया कि यहां किसका दबदबा है। वो खाने की चीजों से भरी एक मेज पर कूदकर चढ़ गया, कांसे के दो बर्तनों में रखी चीजें फेंक दीं और दोनों बर्तनों को कई बार जोर—जोर से टकराने लगा।

हॉल में हो रहा शोर—शराबा फुसफुसाहट में बदल गया और कांसे के बर्तनों की आवाज ने लोगों का ध्यान अपनी तरफ खींचा। कुछ हो तो रहा था और लोग जानना चाहते थे कि आखिर क्या हो रहा है। अगर सिकंदर का चहेता एक मेज पर चढ़कर बर्तनों को टकरा रहा है और राजा खुद हंसकर लोटपोट हो रहा है, तो इस पर ध्यान जाना वाजिब था।

इस बात से संतुष्ट होकर कि उसने काफी लोगों का ध्यान खींच लिया है, हेफेस्टियन ने सिकंदर के करीब बैठे एक शख्स की तरफ इशारा किया।

'दोस्तों, हमारे स्थानीय कवि प्रैनिचस की रची कविताओं की तरफ ध्यान दें,' हेफेस्टियन ने हंसते हुए कहा और मेज से नीचे कूद गया।

लोगों की वाहवाही से प्रेरित होकर प्रैनिचस ने मेज पर हेफेस्टियन की जगह ले ली और अपनी कविताएं सुनाने लगा।

यह उस रात को नया मोड़ देने वाली घटना थी। हॉल में मौजूद लोगों का एक बड़ा हिस्सा प्रैनिचस की कविताएं सुनकर हंस रहा था, मजाक कर रहा था या आपस में टीका—टिप्पणी कर रहा था। लेकिन ऐसे भी लोगों का हिस्सा था जिनके चेहरे कविताओं के आगे बढ़ते जाने के साथ ही सख्त होते जा रहे थे।

ये पुराने लोग थे, वरिष्ठ लोग जिन्होंने सिकंदर के पिता फिलिप के अधीन काम किया था। ये लोग भी नौजवान राजा की तरफ से युद्ध में शामिल हुए थे और कई मौकों पर काम के भी साबित हुए थे। इनमें गॉगामेला का युद्ध भी था जिसका पासा मकदूनियन सेना के पक्ष में पलटने का काम इन्होंने किया था। वो जो सुन रहे थे, उन्हें पसंद नहीं आ रहा था।

कविताएं समरकंद में सिकंदर के सेनापतियों की पराजय पर आधारित थीं, जिस पराजय ने सिकंदर को पिछले साल सर्दियों में बाल्ख लौटने पर विवश कर दिया था। कविताओं में उन सेनापतियों का मखौल बनाया जा रहा था जिन्हें बैक्ट्रिया के कबीलाई लोगों ने शिकस्त दे दी थी।

ये वरिष्ठ लोग आपस में फुसफुसाकर बात करने लगे। उनमें से एक, सिल्टस, जिसे हाल ही में बैक्ट्रिया और सॉग्डिया का छत्रप नियुक्त किया गया था, खासतौर पर नाराज था।

'बर्बरों और दुश्मनों के सामने मकदूनियाई लोगों को अपमानित किया जा रहा है,' उसने दांतें भींचकर कहा, उसका गुस्सा बढ़ता जा रहा था। 'हम चुपचाप खड़े रहकर ऐसा कैसे देख सकते हैं? क्या हममें से कोई भी आगे बढ़कर अपनी मर्दानगी नहीं दिखा सकता? क्या हम यहां खड़े रहें और वो हमारा मजाक बनाते रहें?'

'जब जीत मिलती है तो सिकंदर को श्रेय जाता है। जब हार होती है सेनापति जिम्मेदार होते हैं,' एक और वरिष्ठ सेनापति ने शिकायत की। 'फिलिप के समय में ऐसा कभी नहीं

होता था।'

सिल्टस उसकी तरफ घूमा। 'फिर तुम बोल क्यों नही रहे हो? इस बकवास को अभी रोको! हमें फिलिप के राज में हमेशा बोलने की आजादी रही है और सिकंदर के समय भी। निश्चित तौर पर उन्हें हमारी बात समझ में आएगी।'

'वो नशे में हैं,' एक दूसरे शख्स ने चेताया। 'उनके दिमाग में बहुत ज्यादा शराब घुस चुकी है। अच्छा होगा कि इस वक्त कोई दखलंदाजी नहीं की जाए। याद है ना पर्सपोलिस में क्या हुआ था।' वो फारस साम्राज्य की राजधानी पर्सपोलिस में सिकंदर की विजय के बाद हुई दावत का जिक्र कर रहा था। उस जश्न के दौरान नशे में चूर सिकंदर ने पर्सपोलिस को आग के हवाले करने का फैसला किया था। और ऐसा करके उसने उस समय दुनिया के भव्य शहरों में से एक को तहस—नहस कर दिया था।

'और उस घटना को भी नहीं भूलो जब फिलिप शराब के नशे में था और सिकंदर को जान से मारने की कोशिश की थी,' एक और वरिष्ठ सेनापति बोल पड़ा। वो फिलिप की क्लियोपेट्रा, ऊंचे घराने की एक मकदूनियन लड़की, से शादी के मौके का जिक्र कर रहा था। क्लियोपेट्रा के चाचा एटेलस ने टिप्पणी की थी कि फिलिप एक वैध उत्तराधिकारी उत्पन्न करेगा और उसके कहने का मतलब यह था कि सिकंदर अवैध है। और, वैसे तो ओलिंपियास ने खुद ही दावा किया था कि सिकंदर का पिता फिलिप नहीं, बल्कि जियस है, इस टिप्पणी से सिकंदर गुस्से में लाल—पीला हो उठा था। उसने एटेलस पर अपना प्याला फेंक मारा था जिस पर फिलिप ने खड़े होकर सिकंदर को मारने के लिए तलवार निकाल ली थी। नशे की उस हालत में उसने सिकंदर पर हमला किया लेकिन संतुलन खो बैठा और मुंह के बल गिर पड़ा था।

लेकिन इसने दिखाया था कि बहुत ज्यादा पीने के बाद घटनाएं किस हद तक बिगड़ सकती हैं। और आज की रात भी बहुत अलग नहीं है। वरिष्ठ लोग किसी घटना को उकसाना नहीं चाहते थे। लेकिन सिल्टस ने तय कर लिया था। 'इसे रोकना होगा,' उसने जिद पकड़ ली थी। 'अब, अगर तुममें से कोई मर्द नहीं है तो मैं इसे करूंगा। मैंने ग्रैनिकस में सिकंदर की जिंदगी बचाई थी। और भूलो नहीं कि फिलोटस के वध के बाद उसने आधी सेना मुझे और बाकी आधी हेफेस्टियन को दी है। वो मेरी बात को अनसुना नहीं करेगा।'

वो भीड़ को धक्का देता हुआ रास्ता बनाकर उस मेज पर पहुंच गया जहां प्रैनिचस ने कब्जा जमा रखा था।

'बहुत हुआ!' उसने प्रैनिचस को आदेश देते हुए कहा। 'अब और नहीं!'

प्रैनिचस कविता पाठ के बीच में रुक गया और उसने हेफेस्टियन और सिकंदर की तरफ देखा।

नौजवाना राजा शराब के नशे में झूमता हुआ उठा।

'क्यों रुके वो?' सिकंदर ने सिल्टस से पूछा। 'वो सच कह रहा है।'

हॉल में सन्नाटा छा गया। अब यह सिल्टस और प्रैनिचस के बीच का मामला नहीं रह गया था। सिकंदर ने खुद को इसमें डाल लिया था। प्रैनिचस चुपचाप मेज से उतरा और अपनी जगह पर लौट गया, वहीं सिकंदर सिल्टस से उलझा हुआ था।

'महाराज, आपके पिता के समय से परंपरा रही है कि जीत का श्रेय और हार की जिम्मेदारी...' सिल्टस ने बोलना शुरू ही किया था कि सिकंदर ने उसे बीच में ही टोक दिया।

'मेरे पिता!' उसके मुंह से निकला। 'तुम मेरे पिता के बारे में ऐसे बोल रहे हो कि जैसे वो बड़े न्यायप्रिय थे। क्या उन्होंने मुझे उनकी जीत में कभी श्रेय दिया? तुम मेरे पिता की परंपरा के बारे में बोल रहे हो? मैं सिर्फ एक परंपरा जानता हूं कि वो मेरे बारे में क्या सोचते थे, जिस विद्वेष से वो मुझे देखते थे। उनका क्या? क्या ये एक सच्चे आदमी की निशानी हैं?' सिकंदर ने सिल्टस की तरफ गुस्से से देखा और अपने प्याले से शराब का एक और बड़ा घूंट लिया।

'महाराज,' सिल्टस ने जवाब दिया, 'आप अपने पिता की यादों के साथ न्याय नहीं कर रहे। उन्होंने फारस पर हमले की शुरुआत की थी और सालों पहले उन्होंने वो कर लिया होता जो आपने आज किया है, अगर एक हत्यारे के छुरे ने उनकी जिंदगी खत्म नहीं की होती।' वो रुका, अपमान और क्रोध अब उबल रहे थे, तर्क की जगह भावनाओं ने ले ली थी। 'आप भूल रहे हैं महाराज, आप आज जो भी हैं अपने पिता की वजह से हैं। जो आज आपने हासिल किया है इन सबकी बुनियाद उन्होंने ही रखी थी। उनकी उपलब्धियां आपकी आज तक की उपलब्धियों से कहीं ज्यादा हैं। और आज आप खुद को इतना महान मानने लगे हैं कि आप अपने आप को एमन की संतान मानते हैं और अपने ही पिता को मानने से इनकार करते हैं!'

उसके अंतिम शब्दों ने वहां सन्नाटा पैदा कर दिया। ऐसा लग रहा था जैसे उस पल सभी लोगों ने सांस भी लेनी बंद कर दी है।

'दुष्ट!' सिकंदर की प्रतिक्रिया आई, शराब ने उसकी सोचने—समझने की ताकत पर पर्दा डाल दिया था। 'तुम्हें लगता है कि तुम्हें मेरी निंदा करने और मकदूनियाई लोगों में असंतोष फैलाने की इजाजत मिलेगी, और वो भी बिना किसी सजा के?'

लेकिन सिल्टस पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। 'अगर आप सच नहीं सुन सकते तो आपने आजाद ख्याल लोगों को बुलाया क्यों? यही अच्छा होगा कि आप बर्बरों और गुलामों के साथ रहें। वो आपकी खुशामद करेंगे और आपके फारसी कमरबंद और धारीदार कुर्ते को चूमेंगे।'

सिकंदर गुस्से से फट पड़ा। उसने अपना कप सिल्टस की तरफ फेंका, जिससे शराब उस पर और सिल्टस दोनों पर फैल गई। लोग इधर—उधर छितरा गए जब सिकंदर दावत की मेज की तरफ दौड़ा और वहां लगे फल सिल्टस पर फेंकने लगा। उसने चारों तरफ देखा लेकिन आसपास कोई हथियार नहीं था।

'प्रहरियों को बुलाओ!' सिकंदर चिल्लाया, उसकी आवाज लड़खड़ा रही थी। 'प्रहरियों

को बुलाओ! कहां हैं मेरे प्रहरी?'

सिल्टस के कुछ दोस्तों ने उसे पकड़ा और उसे खींचते हुए महल से बाहर ले गए, सिकंदर के गुस्से से दूर और खाई के पार, जहां वो सुरक्षित रहे। एक बार जब सिकंदर का गुस्सा शांत हो जाएगा, सिल्टस वापस लौट सकता है और दावत में शामिल हो सकता है, अगर तब तक यह खत्म ना हो जाए।

सिकंदर के अंगरक्षक तब तक घटनास्थल पर पहुंच गए थे और उसके चारों ओर सुरक्षात्मक घेरा बना लिया था।

सिल्टस को बचाने वाले दोस्त भी लौट आए और उत्सव फिर से शुरू करने का इशारा किया। झगड़ा अब खत्म हो चुका था और रात की दावत के बाद की खुमारी में कल सुबह तक सब कुछ भुला दिया जाएगा।

लेकिन यह रात इस तरह खत्म होने के लिए नहीं आई थी।

दरवाजे पर कुछ हो—हल्ला मचा और सिल्टस अंदर आया। उसके स्वभाव में नहीं था कि वो लड़ाई से भाग जाए। उसने युद्ध का मैदान कभी नहीं छोड़ा और वो यहां भी वो हार नहीं मानेगा।

'ओह मैं! ग्रीस में एक बुरे रिवाज का राज है!' उसकी आवाज हॉल में गूंजी और वो राजा की तरफ बढ़ने लगा, वो यूरीपिडस की एंड्रोमैस का एक वाक्य पढ़ता आ रहा था और उसकी आवाज में गुस्ताखी साफ झलक रही थी।

सिकंदर, जो अपने दोस्तों के पास बैठने के लिए जा रहा था, घूमा। सिल्टस को देखते ही उसकी क्रोधाग्नि भड़क उठी। उसकी प्रतिक्रिया आने में पलक झपकने भर की देर थी। उसने अपने रक्षकों में से एक का भाला लिया और सिल्टस की तरफ दौड़ा, भाला सीधे सिल्टस के आर—पार हो गया।

'तुम बेसस से अलग नहीं हो!' वो चिल्लाया और सिल्टस जमीन पर गिर गया, जहां से भाले ने उसके शरीर में प्रवेश किया था, वहां से खून का फव्वारा फूट पड़ा। दावत कक्ष के फर्श पर खून ही खून फैल गया था और मौजूद लोग ऐसे पीछे हटने लगे थे जैसे खून शापित हो। उन्होंने सिकंदर का ऐसा रूप पहले कभी नहीं देखा था। ऐसा लग रहा था जैसे उसके शरीर में किसी और की आत्मा घुस गई हो।

जब सिल्टस के खून के साथ उसकी आत्मा भी शरीर से बाहर चली गई, सिकंदर उसके घुटनों पर गिर गया। शराब के नशे के बीच ही एकाएक उसे अहसास हुआ कि उसने क्या कर दिया है। वो आंसुओं में डूबा हुआ सिल्टस के निर्जीव शरीर पर लोट गया। सिल्टस के खून से उसकी चप्पलें और चोगा भीग गए लेकिन उसने इसकी परवाह नहीं की।

जिंदगी में पहली बार सिकंदर ने किसी को इस वजह से मारा था कि उसने उसे चुनौती दी थी और उससे अलग राय रखता था। और ऐसा करके, उसने मकदूनिया की दो परंपराओं को तोड़ा था। पहली परंपरा थी कि किसी को सेना की उपस्थिति में बिना किसी मुकदमे के

सजा देना। दूसरी परंपरा था जियस का मेहमाननवाजी का नियम, जो सिकंदर ने अपनी मेज पर एक मेहमान की जान लेकर तोड़ा था। एक ऐसा मेहमान जिसने उसकी जान बचाई थी और शाही परिवार की सेवा वफादारी के साथ की थी।

वो रात ऐतिहासिक थी। इस दिन पहली बार सिकंदर ने अपनी महत्वाकांक्षा को अपने ऊपर हावी होने दिया था।

लेकिन यह आखरी बार नहीं था।

37

वर्तमान

तीसरा दिन

पलायन

राधा ने सूझ—बूझ से काम लिया। जैसे ही वो तीनों चेहरे उसकी तरफ घूमे, उसने दरवाजे के ताले की घुंडी खींची और अपने मोबाइल फोन की लगातार बजती घंटी की परवाह किए बगैर दरवाजे को धड़ से खोल दिया। दरवाजा पास की कार के फेंडर से टकराया, उस कार का ड्राइवर तुरंत रुका और बाहर निकलकर देखने लगा कि क्या नुकसान हुआ है।

राधा उस ड्राइवर की चीख और पीछे के कारों के हॉर्न को नजरअंदाज करते हुए ट्रैफिक के बीच से अपना रास्ता बनाते हुए मेट्रो स्टेशन की तरफ भागी, जो कुछ ही मीटर दूर था।

इधर वो ड्राइवर जब पैर पटकता हुआ टक्कर देने वाली कार के ड्राइवर की तरफ पहुंचा तो उसका सामना ग्लॉक पिस्टल की नली से हुआ। वो तुरंत वापस हो लिया और उसके गुस्से की आग पर जैसे डर और आत्मरक्षा का ठंडा पानी गिर गया।

कार में बैठे तीनों आदमियों ने राधा का पीछा किया और तब तक वो फुटपाथ पार कर मेट्रो स्टेशन की स्वचालित सीढ़ियों की तरफ जा रही थी। सड़क पर ड्राइवरों ने पहले तो गुस्से से उन आदमियों पर हॉर्न बजाया और जब उनके हाथ में बंदूकें देखीं तो उतनी ही तेजी से शांत भी हो गए।

'ट्रेन आ रही है!' उनमें से एक चिल्लाया, जैसे ही आती हुई ट्रेन की पीली रोशनी से स्टेशन का एक हिस्सा नहा गया। उन्होंने अपनी रफ्तार बढ़ाई और बंदूक देखकर रुकी हुई कारों के बीच से निकलते हुए राधा के पीछे—पीछे स्वचालित सीढ़ियों तक पहुंचे।

राधा ने पीछे मुड़कर देखा और पाया कि ट्रैफिक उन आदमियों को नहीं रोक पाया था। उनकी बंदूकें साफ दिख रही थीं हालांकि वो उस पर निशाना नहीं लगा रहे थे। वो नहीं जानती थी क्यों।

लेकिन यह समय अंदाजा लगाने का नहीं था। ट्रेन प्लेटफॉर्म पर पहुंची और कर्कश

आवाज के साथ रुक गई, इतने में राधा स्वचालित सीढ़ियों से उतर चुकी थी। ना तो उसके पास एक जिम्मेदार नागरिक बनने का समय था और ना टिकट के लिए लंबी कतार में लगने का। राधा ने प्लेटफॉर्म तक पहुंचने के लिए बने घूमने वाले दरवाजे के ऊपर से छलांग लगाई और अपने पीछे चिल्लाते लोगों को नजरअंदाज कर दिया। वो प्लेटफॉर्म के अंतिम छोर तक दौड़कर पहुंची और अंतिम कोच में चढ़ गई, इस उम्मीद में कि ट्रेन उन आदमियों के प्लेटफॉर्म तक पहुंचने के पहले ही चल देगी।

ट्रेन का दरवाजा बंद हुआ और उसने डरते—डरते खिड़की से बाहर देखा। उसका पीछा करने वाले तीनों आदमी अभी भी प्लेटफॉर्म पर थे। उनमें से एक से उसकी नजरें मिलीं जिसने उसे धमकी भरी नजरों से देखा, लेकिन तब तक ट्रेन रफ्तार पकड़ चुकी थी और स्टेशन से बाहर जा चुकी थी।

तभी अचानक कुछ हंगामा हुआ और उसकी तरफ घूरकर देख रहे आदमी ने अपने साथियों की चीख सुनकर आसपास देखा और भागने लगा। तेज रफ्तार ट्रेन से भी राधा को समझ आ गया कि उसके अपहरणकर्ता क्यों भाग रहे थे। सादे कपड़ों में पांच आदमी स्वचालित सीढ़ियों से भागते हुए और घूमने वाले दरवाजे से छलांग लगाकर नकली आईबी एजेंट्स का पीछा करते हुए वहां पहुंचे थे। इन लोगों के हाथ में भी बंदूकें थीं। वो नहीं जानती थी कि ये लोग कौन हैं, लेकिन चूंकि वो उसके अपहरणकर्ताओं का पीछा कर रहे थे, वो जरूर अच्छे आदमी रहे होंगे।

वो एक खाली सीट में धंस गई और अपनी भौंहें पोछीं। अब जाकर उसे फोन कॉल की याद आई जिसका वो जवाब नहीं दे सकी थी और कार से भागने की कोशिश में लगी थी। उसने फोन बाहर निकाला और नंबर देखकर अपना सिर हिलाया। यह विजय का फोन था। ऐन वक्त पर ही उसने फोन किया था, राधा ने मन में सोचा और नंबर लगाया।

विजय ने तुरंत फोन उठाया। 'राधा, तुम ठीक तो हो?' उसकी आवाज में झलक रही चिंता और उसकी हिफाजत को लेकर डर ने राधा का दिल छू लिया और उसे काफी राहत महसूस हुई।

'मैं ठीक हूं,' उसने विजय को पूरी आपबीती बताई, साथ ही यह भी कि उसके अपहरणकर्ता कैसे उन पांच लोगों से डरकर भागे थे जो अंतिम मिनटों में ही वहां पहुंचे थे।

विजय ने फीकी मुस्कान दी। 'वो वैद के भेजे गए आईबी के लोग होंगे। उसने तुम्हारे जीपीएस पर निगरानी रखी थी और एक टीम तुम्हारी मदद के लिए भेजी थी। लगता है उसकी योजना काम कर गई।'

राधा मुस्कुराई लेकिन उसकी मुस्कान तुरंत ही गायब हो गई जैसे ही उसे कुछ याद आया। 'इमरान के अस्पताल में होने की खबर झूठी थी?'

'नहीं, झूठी नहीं थी।' अब विजय की बारी थी उसे खबरें देने की। 'तुम दस मिनट में एयरपोर्ट पहुंचो। मैं वहां पहुंच रहा हूं। तुम वहां एक शांत जगह देखकर इंतजार करो जब

तक हम ना पहुंचें।'

राधा विजय के इस अमेरिकी अंदाज पर मुस्कुरा दी। इससे उसे लुइस ला'मूर के वो उपन्यास याद आ गए जो वो पढ़ा करती थी। जिन चीजों से उसे गुजरना पड़ा था, उसके बाद मुस्कुराना और यह जानना कि विजय जल्दी ही एयरपोर्ट पर उसे लेने पहुंचेगा, उसके लिए सुखद था।

उसने फोन को अपनी जींस की जेब में वापस रखा और अपनी आंखें मूंद लीं। उसे नहीं पता था कि उस पर शाम की घटनाओं का तनाव हावी था या जौनगढ़ से गुड़गांव और फिर दिल्ली के सफर की थकान।

उसे बस इतना पता चला कि ट्रेन रुक गई थी और उसे हिलाकर जगाया जा रहा था। वो जगी, खुद में खोई सी और धुंधली नजरों से अपने सामने खड़े आदमियों को देखा।

धीरे—धीरे उसे साफ दिखने लगा और उसे समझ आया कि उसके सामने एक लंबा गोरा आदमी खड़ा है जिसके साथ छह लोग और हैं। उन सभी के हाथों में हथियार थे। गोरे आदमी ने उसके चेहरे पर बंदूक सटा रखी थी। कोच खाली हो चुका था। सभी यात्री या तो चले गए थे या भाग गए थे।

गोरा आदमी उसके चेहरे के भाव देखकर मुस्कुराया। 'हम एयरपोर्ट पर हैं मोहतरमा,' उसके चेहरे पर बनावटी मुस्कान थी। 'इंदिरा गांधी इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर आपका स्वागत है।' उसने एयरपोर्ट पर होने वाली उद्घोषणा की नकल की, उसका लहजा काफी हद तक एयरपोर्ट पर होने वाली अंग्रेजी उद्घोषणा से मिल रहा था। 'अपनी सीटबेल्ट बांध लो बेबी। तुम्हें अभी काफी लंबी दूरी तय करनी है।'

आईजीआई इंटरनेशनल एयरपोर्ट, मेट्रो स्टेशन

विजय हैरान होकर स्टेशन पर चारों तरफ देख रहा था। वो दस मिनट पहले वहां पहुंचा था और सेंट्रल दिल्ली के लिए जाने वाली ट्रेन स्टेशन से निकल चुकी थी। प्लेटफॉर्म पर राधा का नामोनिशान तक नहीं था। उसके आसपास सिर्फ वो यात्री थे जो अभी—अभी अपनी फ्लाइट से वहां आए थे और अगली ट्रेन का इंतजार कर रहे थे।

कहां गई वो?

उसने पूरे स्टेशन का एक बार फिर चक्कर लगाया, हो सकता है वो राधा को देख ना पाया हो। वैसे ऐसा होने की गुंजाइश तो बहुत कम थी, फिर भी वो कोई मौका चूकना नहीं चाहता था।

उसने बाकी लोगों को वैद के वादे के मुताबिक एजेंट्स का इंतजार करने को कह दिया था और एयरपोर्ट के लिए निकल आया था। ट्रैफिक काफी ज्यादा था लेकिन वो जानता था कि राधा बाहर नहीं निकली होगी, खासतौर पर तब जब वो जानती थी कि वो उसे लेने आ

रहा है। उसका दिमाग काम नहीं कर पा रहा था। उसे फोन करके भी कोई फायदा नहीं हो रहा था। फोन बंद था। इस चीज से भी वो परेशान था। वो अपना फोन स्विच ऑफ क्यों करेगी?

किसी भी चीज का कोई मतलब उसे समझ नहीं आ रहा था। जब तक उसका अपहरण ना कर लिया गया हो, जब उन लोगों की बातचीत हुई थी। शायद उसने अपने अपहरणकर्ताओं के दबाव में झूठ बोला हो। यह सोच दुखद थी लेकिन इमरान के साथ जो हुआ था, उसके बाद किसी भी संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता था।

विजय ने कोलिन को फोन किया और उसे सारी जानकारी दी। कोलिन, एलिस और शुक्ला, जिनके साथ तीन आईबी एजेंट भी थे, एयरपोर्ट के रास्ते में थे। विजय के वहां से निकलने के तुरंत बाद ही एजेंट वहां पहुंच गए थे और उनके साथ होने के पहले वैद से उनकी पहचान की पुष्टि कर ली गई थी।

योजना थी कि आईबी एजेंट उनके साथ जौनगढ़ तक चलेंगे। इस बारे में लंबी—चौड़ी बहस हुई थी कि वो कहां जा सकते हैं। कोई भी जगह इस वक्त सुरक्षित नहीं लग रही थी। विजय के इस तर्क में सबको दम लगा कि दुश्मन भले ही यह जानते थे कि एलिस जौनगढ़ में है, उन्होंने तब तक उस पर हाथ नहीं डाला जब तक वो, दूसरों के साथ, किले से बाहर नहीं निकली।

‘मुझे लगता है कि इस वक्त सबसे सुरक्षित जगह किला ही है,’ विजय ने यह कहकर अपनी बात खत्म की थी और बाकी सब उससे सहमत हो गए थे।

राधा को ढूंढ़ पाने का और कोई तरीका नहीं सूझा तो विजय ने इमरान का नंबर एक बार फिर डायल कर दिया। वैद, जो उसे अपना मोबाइल नंबर नहीं दे सकता था, ने उसे फिलहाल इसी नंबर का इस्तेमाल करने की सलाह दी थी।

‘सब ठीक तो है ना?’ वैद ने फोन उठाते ही पूछा।

‘सच पूछो तो नहीं।’ विजय ने उसे पूरी स्थिति की जानकारी दी। ‘मेरी एक गुजारिश है, क्या हम एक बार फिर से राधा के मोबाइल फोन की स्थिति जान सकते हैं?’

‘मैं अभी किसी को इस चीज के लिए लगाता हूं,’ वैद ने जवाब दिया। ‘लेकिन हम जगह का पता तभी लगा पाएंगे जब फोन चालू हो। अगर फोन बंद होगा, जैसा तुमने बताया, तो हम ज्यादा कुछ नहीं कर सकेंगे।’

विजय का दिल बैठ गया। अगर राधा का अपहरण हुआ होगा, जैसा उसे डर था, तो इस बात की संभावना बेहद कम है कि उसके अपहरणकर्ता उसका फोन स्विच ऑन करेंगे। और अगर वो ऐसा करेंगे भी तो यह सुनिश्चित करेंगे कि उसका जीपीएस निष्क्रिय कर दिया जाए ताकि उसकी जगह का पता ना लग सके।

उसने अंदाजा लगा दिया था कि संग्रहालय में उन पर हमला करने वाले लोगों ने आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल करके उन्हें पहचान लिया था, साथ ही उनके स्मार्टफोन के

जीपीएस की मदद से उन पर नजर भी रख रहे थे। शुक्ला के अलावा बाकी सभी लोगों की गतिविधियों और पहचान के बारे में उन आदमियों को पता होना इसी बात की ओर इशारा कर रहा था। सिर्फ शुक्ला के ही पास मोबाइल फोन नहीं था और वो लोग उसके बारे में नहीं जानते थे। इस चीज को महसूस करके उन सभी लोगों ने अपने फोन के जीपीएस बंद कर दिए थे।

विजय डरा हुआ था। जो भी लोग थे, वो शौकिया नहीं थे। और अगर उनके पास वही तकनीक है, जैसी आईबी के पास है, तो इसका मतलब है कि वो लोग ताकतवर भी हैं। उसका सबसे बुरा सपना सच होने वाला था। वो हमेशा के लिए राधा को खो सकता था।

38

कैदी...

राधा ने अपनी आंखें खोलीं और उसके महुं से कराह निकली। पहली चीज उसे दिखी उसके आसपास का रंग।

सफदे, साफ, उज्ज्वल। सफदे छत, सफदे दीवारें, शायद सफेद फर्श भी। जैसे ही उसे यह ख्याल आया, उसने महसूस किया कि उसे एक बिस्तर से बांधा गया है, उसकी कलाई और टखने बंधे हुए थे; वो बिलकुल हिल—डुल नहीं सकती थी। उसके बाएं बाजू में एक सुई चुभोई हुई थी जो एक ड्रिप से जुड़ी थी।

उसने अपने बधंनों से निकलने की कोशिश की लेकिन समझ गई कि इसका कोई फायदा नहीं है और फिर खुद को हालात पर छोड़ दिया।

उसके सिर और पूरे शरीर में एक भारीपन था। कहां है वो? और वो यहां कैसे पहुंची? उसे एक धुंधली सी याद थी कि एक आदमी ने ट्रने में उसकी तरफ बंदकू तान रखी थी। उसे ट्रेन से बाहर निकाला गया था, प्लेटफॉर्म पर। और फिर उसके आगे उसे कुछ याद नहीं आ रहा था।

उसके नथुनों में अभी भी उस केमिकल की तीखी गंध भरी हुई थी, जो उसे जबरन सुंघाया गया था। उसकी गर्दन के निचले हिस्से पर मजबूत पकड़ ने, जिसने उसके चेहरे को एक गीले कपड़े से ढक दिया था, खरोंचे का निशान और हल्का सा दर्द छोड़ रखा था।

उसे अब महसूस हुआ कि वो एक हॉस्पिटल गाउन में है। उसके जींस और टॉप कहां गए जो उसने ट्रेन में पहन रखे थे? उसके कपड़े किसने बदले? एक अनजान शख्स के हाथों शील भंग होने की अपमानजनक भावना उस पर हावी हो गई और इसने उसके अंदर एकाएक गुस्से की आग भड़का दी।

उसे एक झटका लगा, गुस्से से वो कांपने लगी, सभी तर्क एक तरफ हो गए और वो जोर से चीखने लगी। साथ ही वो इस ताकत और जुनून के साथ अपने बंधनों से छूटने की कोशिश कर रही थी जो उसे भी नहीं मालूम थे कि उसके अंदर हैं।

...या गिनी पिग?

डॉक्टर वरुण सक्सेना काफी दिलचस्पी के साथ अपने सेंटर के कंट्रोल रूम में लगे ढेरों मॉनिटरों में से एक पर नजरें जमाए था। वो अपने साथी की तरफ मुड़ा और कहा। 'तुम सही थे, गैरी, मैं नहीं जानता था कि इस दवा का ऐसा असर होता है।'

गैरी फ्रीमैन मुस्कुराया। 'देखो, मैं यह कहना पसंद नहीं करता कि "मैंने तुम्हें ऐसा कहा था" लेकिन मैंने तुम्हें ऐसा ही कहा था।' उसने उस वीडियो मॉनिटर की तरफ अंगूठे से इशारा किया जिस पर राधा की चीख—पुकार दिख रही थी। 'मुझे लगता है कि तुम्हें उसे इसी वक्त एंटीडोट दे देना चाहिए। अगर तुम उसे सही सलामत रखना चाहते हो। इस दवा का असर अगले दो घंटे तक नहीं उतरेगा और तब तक वो अपने हाथ—पैर तोड़ लेगी।'

स्क्रीन पर, राधा अभी भी पूरे जुनून के साथ अपने बंधनों से छूटने की कोशिश कर रही थी, इस बात से भी अनजान कि उसकी बांह में सुई चुभी है। ड्रिप उसमें लगे ट्यूब के साथ बुरी तरह हिलने लगा था और वो गुस्से में अपने हाथ—पांव फेंके जा रही थी।

सक्सेना ने एक बार और वीडियो मॉनिटर की तरफ देखा, फिर इंटरकॉम पर कुछ आदेश दिया। कुछ ही पलों में, एक नर्स कमरे में आई और इंजेक्शन की मदद से ड्रिप में कुछ डाल दिया। एंटीडोट ने तुरंत काम किया, राधा की हरकतें एकाएक शांत हो गईं।

'तुम्हें ऐसा नजारा अपने सामान्य नमूनों के साथ देखने को नहीं मिलता,' फ्रीमैन खिलखिलाते हुए बोला। 'हम उन पर इतने प्रयोग कर चुके होते हैं कि तुम्हें कभी पता ही नहीं चलेगा कि दवा का असर हुआ भी है या नहीं। अच्छा हुआ कि यह यहां आ गई। एकदम सही वक्त पर।'

'वो आई नहीं है,' सक्सेना ने उसे बताया और वो दोनों कमरे से बाहर आ गए। 'उसे यहां कूपर लाया है। हमें उससे जल्द से जल्द छुटकारा पाना है। बस हमें एक बार पता चल जाए कि वो ऑपरेशन महाभारत के बारे में क्या जानती है।'

'सचमुच?' फ्रीमैन चिंतित सा दिखने लगा। 'देखो, तुम लोगों ने मुझे यहां बंद कर रखा है और मुझे पता ही नहीं बाहरी दुनिया में क्या हो रहा है।'

'हमारे पास कोई रास्ता भी नहीं है,' सक्सेना पलटकर बोला। 'हम यहां क्लीनिकल ट्रायल करने के लिए हैं। यहां तक कि मैं भी यहां छिपते—छिपाते आता हूं। हम इस फेसिलिटी को टाइटन के साथ जुड़ा दिखाने का जोखिम बिलकुल नहीं उठा सकते। और जिस चीज का तुम अध्ययन कर रहे हो, उसे सबकी नजरों से दूर रखना है। तुम तो ये जानते ही हो। अगर बाहर पता चल जाए कि इस जगह आनुवांशिकी संबंधी अनुसंधान चल रहे हैं तो अनर्थ हो जाएगा। खासतौर पर अगर यह पता चल जाए कि इस अनुसंधान की अगुवाई टाइटन में आनुवांशिकी विभाग का प्रमुख कर रहा है।'

'हां, मुझे मालूम है। लेकिन मैं इसे लेकर खुश नहीं हूं,' फ्रीमैन ने शिकायत के लहजे में कहा। 'क्या ऑपरेशन पर कोई खतरा है?'

सक्सेना कंधे उचकाते हुए बोला, 'पता नहीं। इसलिए तो वो लड़की यहां है। हमें यही

पता करना है। वो मेरे पास पत्रकार बनकर आई थी, यह मुझे उस वक्त पता नहीं था। यह तो जब कूपर ने हमें बताया कि उसका और स्वरूप से मिलने आए आईबी एजेंट का क्या रिश्ता है, हमें पता चला कि वो एक गुप्तचर है।'

फ्रीमैन के होंठों से सीटी बज गई। 'तो ये आईबी के आदमी के साथ काम कर रही थी? ये भी भारतीय गुप्तचर है?'

'हमें अभी नहीं पता। लेकिन यह मायने नहीं रखता। आईबी का आदमी मर चुका है... या कम से कम मरने वाला है। कूपर उसे देख रहा है। और एक बार जब हमें पता चल जाएगा कि वो क्या जानती है, वो भी उसके पास चली जाएगी। तब तक कूपर उसे एक चारे की तरह इस्तेमाल करने जा रहा है। तो भले ही हम उसे सबकी नजरों से दूर रखेंगे, हम उसका अपने लिए अच्छा इस्तेमाल कर सकते हैं। अच्छे नमूने बड़ी मुश्किल से मिलते हैं।' वो गंदे तरीके से मुस्कुराया और फ्रीमैन दोबारा खिलखिला दिया।

39

कड़ी मिल गई

विजय, कोलिन, एलिस और शुक्ला किले के स्टडी रूम में बैठे थे। आईबी के लोग उन्हें यहां छोड़कर चले गए थे। अगर उनका पीछा किया जा रहा हो या उन पर और कोई निगरानी रख रहा हो, तो वो इस बात को लेकर सतर्क थे कि वो खुद को सामने ना लाएं।

किले में लौटकर विजय को राहत और हिफाजत महसूस हुई। वो लोग यहां महफूज रहेंगे। लेकिन जौनगढ़ तक के सफर में और वापसी के बाद, वो सभी इस बात से परेशान थे कि राधा की कोई खबर नहीं मिल रही। ऐसा लग रहा था कि वो जैसे इस ग्रह से ही गायब हो गई है।

शुक्लाजी मायूस बैठे थे, उनके चेहरे पर अपनी बेटी के लिए चिंता साफ दिख रही थी। 'वैद टाइटन की जांच क्यों नहीं कर रहा है?' वो कई बार ये सवाल पूछ चुके थे। विजय ने उन्हें भरोसा दिलाया था कि वैद ने टाइटन फार्मास्युटिकल्स के सीईओ स्वरूप वर्मा से खुद बातचीत की थी। वो आईबी डायरेक्टर को अपने यहां पाकर चौंक गया था और ऐसा लग रहा था कि इमरान और राधा के साथ जो हुआ, उसे लेकर वो सच में चिंतित था। उसने राधा की तलाश के लिए और इस मामले की जांच के लिए पूरा सहयोग देने का भरोसा दिलाया था, यहां तक कहा था कि वो आईबी एजेंट्स को भारत में टाइटन के सभी दफ्तरों और उससे जुड़ी सभी फेसिलिटीज की जांच करने देने के लिए भी तैयार है।

'आईबी सभी सुरागों की जांच कर रही है,' विजय ने शांत होकर कहा। वो शुक्ला के लिए अपनी चिंता को छिपाने की कोशिश कर रहा था। 'हमें उनमें भरोसा रखना होगा। और उम्मीद करनी होगी कि कुछ नतीजा जल्दी निकले।'

एलिस बोल उठी। 'मैं उस बारे में कुछ सोच रही हूं जो संग्रहालय में उस गोरे ने कही थी।' उसने विजय की तरफ देखा। 'तुम्हें याद है जब वो हमारी गिनती कर रहा था? उसने इमरान और राधा के बारे में कुछ कहा था।'

'उसने कहा था कि "उनका ख्याल रखा जा चुका है",' विजय चिड़चिड़ी आवाज में बोला। उसे उसी समय समझ जाना चाहिए था कि राधा और इमरान दोनों निशाने पर थे। लेकिन वो यह भी जानता था कि वो खुद को या किसी और को उस वक्त यह बात नहीं सोचने के लिए दोषी नहीं मान सकता था। उस वक्त वो सिवाय अपनी जान के और किसी

चीज की परवाह नहीं कर सकते थे, जो एकाएक खतरे में आ गई थी। वो सच में खुशकिस्मत थे कि उससे निकल आए थे। वो आदमी पेशेवर कातिल थे।

'हां, वो तो कहा था, लेकिन उसने यह भी कहा था कि वो लोग इधर—उधर सूंघते घूम रहे हैं।' एलिस ने उसकी ओर चौकस निगाहों से देखा। वो जानती थी कि इस वक्त इस मुद्दे को छेड़ना गलत हो सकता है। लेकिन वो यह भी सोच रही थी कि इससे उन्हें कोई सुराग मिल सकता है।

'हां, मुझे याद है,' कोलिन ने त्योरियां चढ़ाते हुए कहा, और विजय और शुक्ला ने भी अनमने ढंग से सिर हिलाया। कोलिन ने अपनी जांघ पर थपकी दी जैसे ही उसे समझ आया कि एलिस क्या कहना चाह रही है। 'हे भगवान! दोनों चीजें जुड़ी हैं!'

विजय और शुक्ला अभी भी उलझन में थे। एलिस समझ गई थी कि उनके जज्बात उनकी सोच पर हावी हैं इसलिए उसने समझाने की कोशिश की। 'हम लोग अब तक मान रहे थे कि मेरे खनन कार्य में पीटर के शामिल होने और मेरे साथ ग्रीस में जो भी हुआ, उसका भारत में इमरान के जैविक आतंकवाद का पता लगाने से कोई संबंध नहीं है। लेकिन क्या यह संभव हो सकता है कि दोनों चीजें वास्तव में जुड़ी हों?'

शुक्ला ने विजय की तरफ देखा, वो समझ नहीं पा रहे थे कि यह खबर अच्छी है या बुरी। विजय ने तुरंत कोई जवाब नहीं दिया। एलिस समझ गई थी कि विजय के दिमाग में कुछ चल रहा है और वो उनकी बातचीत और संग्रहालय में हुई घटना का विश्लेषण करने की कोशिश कर रहा है। वो विजय को अच्छे से जानती थी। उसके अंदर तथ्यों का विश्लेषण करने की अद्भुत क्षमता थी, लेकिन वो अपने अंतर्ज्ञान पर भी काफी भरोसा करता था। वो जानती थी कि विजय अभी सारे तथ्यों और अपनी समझ को परख रहा है जिससे कि उसकी बात की पुष्टि हो सके।

'तुम सही हो सकती हो,' आखिर विजय ने कहा। 'वो डॉक्टर शुक्ला को छोड़कर हम सबको जानते हैं। उनके पास ऐसी तकनीक है जिससे वो हमारी गतिविधियों पर नजर रख सकते हैं। इसलिए उन्होंने किले में एलिस पर निगरानी रखी और संग्रहालय तक हमारा पीछा करने में कामयाब रहे। वो राधा और इमरान की गतिविधियों पर भी नजर रख रहे थे और जानते थे कि वो टाइटन फार्मास्युटिकल्स गए थे। इतना तो संग्रहालय में उस गोरे की बात से साफ है। और इमरान और राधा दोनों को ही उस मुलाकात के बाद ही निशाना बनाया गया। अब सवाल हैः ग्रीस में खुदाई और जैविक आतंकवाद का आपस में क्या संबंध है? हम जानते हैं कि वो लोग क्यूब के पीछे हैं। हम ये भी जानते हैं कि सिकंदर भारत की यात्रा के दौरान किसी चीज की तलाश में था। कोई ऐसी चीज जिसे यूमेनीज ने "ईश्वर का रहस्य" कहा है।' विजय अब काफी शिद्दत से सोच रहा था ताकि चीजें साफ हो सकें।

बाकी सभी लोग बैठकर सुन रहे थे। कोलिन और एलिस विजय को अच्छे से जानते थे कि जब वो चीजों पर काम कर रहा हो तो उसे टोकना नहीं चाहिए। शुक्ला का ध्यान राधा के बारे में सोच—सोचकर भटक रहा था और वो ढंग से विजय की बात नहीं सुन रहे थे।

विजय ने अपनी बात जारी रखी, 'तो निष्कर्ष तो यही निकलता है कि जो रहस्य सिकंदर ढूंढ़ रहा था वह जैविक आतंकवाद का स्रोत हो सकता है। मैं जो सोच पा रहा हूं, वो यह कि ये कोई वायरस या बैक्टीरिया हो सकता है जो आबादी को तहस—नहस कर सकता है। ऐसी चीज का इस्तेमाल आतंकवादी अपने फायदे के लिए कर सकते हैं। यह और क्या हो सकता है? इसके तार उस फेसिलिटी में मिली कोशिकाओं से भी जुड़ते हैं जो टाइटन के लिए क्लीनिकल ट्रायल कर रहा था। और जांच के नतीजे भी एक अज्ञात बैक्टीरिया और वायरस की तरफ इशारा कर रहे थे। लेकिन इससे कई सवाल खड़े होते हैं। क्यों किसी बैक्टीरिया या वायरस को "ईश्वर के रहस्य" कहा जाएगा? सिकंदर को इस रहस्य की तलाश क्यों थी? और जब उसने इसे हासिल कर लिया तो फिर किया क्या? या ऐसा कुछ और भी है जो हम समझ नहीं पा रहे हैं?'

कमरे में शांति थी और बाकी सभी इन विचारों को आत्मसात करने की कोशिश कर रहे थे। विजय का निष्कर्ष तर्कसंगत लग रहा था। उसने जो सवाल उठाए थे, वो बिलकुल सही थे। लेकिन इन सवालों के कोई साफ जवाब नहीं थे। खासतौर पर सिकंदर की तलाश के बारे में बात समझ नहीं आ रही थी कि क्या रहस्य किसी बैक्टीरिया या वायरस के बारे में था जिसका इस्तेमाल जैविक आतंकवाद के लिए हो सकता है।

शुक्ला उठे। 'मैं सोचता हूं कि मैं सोने चला जाऊं,' वो मायूसी के साथ बोले। वो इस वक्त अकेला रहना चाहते थे। उनकी सिकंदर और जैविक आतंकवाद के साथ संबंध पर चर्चा में बिलकुल भी दिलचस्पी नहीं थी। उनकी बेटी का अपहरण हो गया था। कोई नहीं, यहां तक कि आईबी भी नहीं जानती थी कि वो कहां है। और अगर इन मामलों में जैविक आतंकवादी शामिल हैं तो उसकी जिंदगी निश्चित तौर पर खतरे में है। अगर वो एक वरिष्ठ आईबी अफसर के अपार्टमेंट को बम से उड़ा सकते हैं, तो राधा उनकी कैद में कब तक सुरक्षित रह सकेगी?

विजय ने उनकी बात समझकर हामी भरी। वो भी हताश था, लेकिन इस नई चीज के सामने आने के बाद उसे ऐसा लग रहा था कि उनके पास लड़ाई में वापसी का एक मौका है। वो यह नहीं जानता था कि यह मौका क्या है और कैसे मिलेगा, लेकिन वो अपने मन की आवाज पर भरोसा कर रहा था। 'तुम लोग भी थोड़ा आराम क्यों नहीं कर लेते?' उसने कोलिन और एलिस को कहा। 'मैं इस पहलू पर थोड़ा और काम करने जा रहा हूं और देखता हूं कि क्या कुछ ऐसा सोच पाता हूं जो हमारे लिए उपयोगी हो सके।'

कोलिन जानता था कि उसका दोस्त अंधेरे में तीर चला रहा है। लेकिन उसने कोई बहस नहीं की। बजाय इसके उसने एलिस का कंधा थपथपाया और उठ गया। 'तुम सही कह रहे हो,' उसने विजय से कहा। 'सुबह मिलते हैं।'

जब सभी स्टडी रूम से बाहर निकल गए, विजय खिड़की की तरफ गया जहां से पहाड़ियां दिखती थीं जिन पर किला बनाया गया था, और बाहर अंधेरे में झांकने लगा।

उसके मन में भी वैसा ही अंधेरा था जैसा किले के चारों तरफ। लेकिन कहीं गहरे उसकी नैसर्गिक विद्रोही भावना ऊपर उठने लगी थी। उसके इसी गुण ने जिंदगी में ज्यादातर मौकों

पर उसकी मदद की थी। इसने उसे उन मौकों पर अड़ना सिखाया था जब उसे हार मान लेनी चाहिए थी। कई मौकों पर, इसने उसे दुख भी पहुंचाया है, लेकिन ज्यादातर समय उसने इसके सहारे वो चीज हासिल की है जो वो करना चाहता था।

वो उम्मीद कर रहा था कि इस बार भी वैसा ही हो। राधा उसकी जिंदगी की इकलौती कीमती चीज थी। हां, कोलिन तो था, जो उसका बहुत अच्छा दोस्त था, करीब—करीब भाई जैसा। लेकिन राधा ने उसे वो प्यार दिया था, जो उसके माता—पिता के गुजरने के बाद कभी नहीं मिला। यहां तक कि एलिस के साथ भी, उसे अब महसूस होता था, उसके संबंध वैसे नहीं रहे। राधा का प्रेम निस्वार्थ था, बिना किसी शर्त के। उसने कभी नहीं सोचा था कि ऐसा मुमकिन होगा।

और अब वो उसे खोने जा रहा था।

40

अदला—बदली का प्रस्ताव

कूपर बैठकर हालातों का जायजा ले रहा था। चीजें अब तक योजना के मुताबिक चली थीं, सिवाय संग्रहालय में मिली नाकामी के। राइली ने थोड़ी देर पहले ही उसे सारी जानकारी दी थी। वो अपने शिकारों को खोकर नाराज दिख रहा था। 'तुम इस बारे में चिंता नहीं करो,' कूपर ने उसे कहा था।

'ऐसा हो जाता है। हमारे पास वो लड़की है। अब वो हमारे पास आएंगे। और हमें एक फायदा और भी है। हमारे पास मेटल प्लेट है। इसके बिना क्यूब का कोई इस्तेमाल नहीं है।' कूपर ने फोन उठाया। अब आगे बढ़ने का समय था। एक फोन करने का समय।

उसने विजय का नंबर लगाया। यह तुरंत उठा।

'विजय सिंह?' कूपर ने पूछा। वो सुनिश्चित करना चाहता था कि वो सही आदमी से बात कर रहा है।

'हां, आप कौन?'

'मेरा नाम पीटर कूपर है। तुमने मेरे बारे में अपनी दोस्त एलिस से सुना होगा।'

दूसरी तरफ खामोशी थी। कूपर सिर्फ कल्पना कर सकता था कि विजय को रात में इस वक्त उसका फोन आने से कैसा झटका लगा था। वो यह भी कल्पना कर सकता था कि विजय की उम्मीदें राधा की खबर के लिए बढ़ गई होंगी। और वो यही चाहता था। उसकी योजना की कामयाबी इसी चीज पर निर्भर थी कि विजय उसकी मांगों के आगे कितनी जल्दी झुकता है।

कूपर ने इंतजार किया, खामोशी को और बढ़ने दिया।

'राधा कहां है?' आखिरकार विजय बोला, अब वो रुक नहीं पा रहा था। 'अगर तुमने उसे नुकसान पहुंचाया तो...' उसे समझ नहीं आया कि इस वाक्य को वो कैसे पूरा करे। वो एक अनदेखे, अनजान दुश्मन का क्या बिगाड़ सकता था जब उसे यह तक नहीं पता कि वो कहां छिपे हुए हैं?

'बेवकूफों की तरह धमकी मत दो,' कूपर ने उसे सलाह दी। 'तुम्हारी मंगेतर हमारे पास है। वो अभी सुरक्षित है। और उसकी खैरियत इस बात पर निर्भर करती है कि तुम हमारा

कितना साथ देते हो।'

फिर से खामोशी छा गई। इस बार कूपर ने इंतजार नहीं किया बल्कि बोलता गया।

'मेरा एक प्रस्ताव है,' उसने कहा। 'अदला—बदली का। तुम्हारे पास वो है जो हम चाहते हैं। और हमारे पास वो है जो तुम चाहते हो। तो हम उसे आपस में बदल क्यों ना लें? सब खुश हो जाएंगे और अंत भला तो सब भला।'

'तुम क्यूब चाहते हो?'

'हां, और एलिस टर्नर भी। मुझे दोनों दे दो और अपनी मंगेतर को वापस ले लो।'

फिर से खामोशी। कूपर अंदाजा लगा सकता था कि विजय अपनी भावनाओं से संघर्ष कर रहा है। यह एक मुश्किल चुनाव था। अपनी मंगेतर के लिए पुरानी प्रेमिका। दोनों की किस्मत विजय के हाथों में थी।

'मैं गलत दबाव डालने वाला आदमी नहीं हूं,' कूपर ने अपनी बात जारी रखी। 'मैं तुम्हें कल दोपहर बारह बजे तक का वक्त देता हूं, इस बारे में सोच लो और मुझे बता दो। तब तक मैं तुम्हें भरोसा दिलाता हूं कि तुम्हारी मंगेतर का कोई बाल भी बांका नहीं होगा। लेकिन तब तक मैं तुमसे किसी फैसले पर पहुंचने की उम्मीद कर रहा हूं।'

उसने फोन काट दिया और अंगड़ाई ली। अब सोने का समय था। आज का दिन काफी लंबा था। अब उम्र दस्तक देने लगी थी। एक समय था जब वो बाहर जाकर काम करना पसंद करता था। किसी शिकार का पीछा करना, कभी उसे खो देना, फिर उसे दोबारा निशाने पर लेना, इन चीजों का रोमांच बड़ा आकर्षक होता था। अब शारीरिक मेहनत उसे थका देती है। लेकिन उसे एक काम पूरा करना है। और अगर वो चैतन्य नहीं रहेगा तो वो कुछ नहीं है।

कल वो विजय को दोबारा फोन करेगा। और दोनों महिलाओं की किस्मत का फैसला हो जाएगा।

41

चौथा दिन
आशा की किरण

कोलिन स्टडी रूम में आया और देखा कि विजय गहरी नींद में है, उसका सिर मेज पर है और उसकी बांहों पर टिका है। मेज पर प्रिंटआउट फैले थे, विजय की नोटबुक खुली थी, उसकी कलम उस पर रखी थी। साफतौर पर विजय रात भर व्यस्त रहा है। कोलिन इस बात पर विचार कर रहा था कि उसका दोस्त क्या कर रहा था और उसने ऐसा क्या सोचा है जिससे उन्हें मदद मिलेगी।

वो विजय के पास गया और उसे धीरे से हिलाया। ‘उठो यार।’

विजय ने मेज से अपना सिर उठाया और कोलिन की तरफ धुंधली आंखों से देखा। ‘मैं सो गया था,’ वो बुदबुदाया।

‘नहीं, अपनी हालत देखो। अच्छा होगा कि तुम नीचे जाओ और साफ—सुथरे हो जाओ।’

विजय ने अनमने ढंग से सिर हिलाया। तभी अचानक जैसे उसके दिमाग में कोई विचार आया और वो पूरी तरह जाग गया।

‘मुझे कुछ मिला है,’ उसने कोलिन को बताया। ‘पहले हम लोग नाश्ता करते हैं और फिर मैं तुम लोगों को बताउंगा।’

कोलिन को इस सोच में डालकर कि उसने रात में क्या ढूंढ़ निकाला है, विजय स्टडी रूम से निकल गया।

एक घंटे बाद वो लोग स्टडी रूम में जमा हुए। विजय मेज पर बैठा, कागजों को छांटा और उन्हें मेज पर जमाने लगा। तीन जोड़ी आंखें विजय की तरफ उम्मीद और उत्सुकता से देख रही थीं।

‘मैंने सिकंदर महान के बारे में काफी शोध किया,’ उसने बोलना शुरू किया। ‘मैंने माइकल वुड की एक बीबीसी डॉक्यूमेंट्री डाउनलोड की और पूरी देखी——चार घंटे तक। मैंने उसके बारे में लिखी गई कई किताबों के हिस्से पढ़े। तुम लोग यकीन नहीं करोगे कि कितने लोगों ने उसके बारे में लिखा है। मैंने इस बारे में पढ़ा कि उसने मैसिडोनिया से भारत

आने के लिए कौन सा रास्ता चुना था। रास्ते में उसकी किनसे लड़ाई हुई, अलग—अलग शहरों से गुजरते हुए उसने क्या किया। और मैं उस आदमी के बारे में काफी कुछ जान चुका हूं। वो जिद्दी था। वो विपरीत परिस्थितियों में भी हार नहीं मानता था। और वो दृढ़ निश्चयी था।'

'काफी कुछ तुम्हारी तरह,' कोलिन मुस्कुराया। 'पता है तुम अपने बारे में भी ऐसा कह सकते हो।'

विजय ने उसे आंखें तरेरकर देखा लेकिन कुछ कहा नहीं।

एलिस ने कुछ कहा तो नहीं लेकिन वो भी ऐसा ही सोच रही थी। विजय के दृढ़ निश्चय, मेहनत और सुनी—सुनाई बातों पर यकीन ना करने की क्षमता ने उसे कई तरीकों से कामयाब बनाने में मदद की थी। यही वो खूबियां थीं जिन्होंने उसे विजय की तरफ आकर्षित किया था। एक शख्स जो अपने दिमाग को जानता है। और उस दिमाग की बात मानने से डरता नहीं है। लेकिन उन दोनों के अलग होने की वजह भी यही थी।

'ऐसा लगता है कि सिकंदर को रास्ते में हर कदम पर कोई ना कोई चीज प्रेरणा दे रही थी। जब उसने मैसिडोनिया छोड़ा, यह ख्वाहिश थी——लालसा——फारसियों के हाथों यूनानियों की हार का बदला लेने की। इसलिए वो ईरान आया, डैरियस को हराया और जब डैरियस को उसी के सामंतों ने मार डाला, उसने पहाड़ों के पार जाकर भी उनका पीछा किया जब तक उसने उन्हें पकड़ नहीं लिया और मार नहीं दिया। एक दूसरी ख्वाहिश भी थी जिसने उसे पूर्व की तरफ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। जितने भी लेखकों को मैंने पढ़ा, उन्होंने समझाया है कि यह उसकी महत्वाकांक्षा थी ज्ञात विश्व को जीतने और पृथ्वी के अंतिम छोर तक पहुंचने की। वैसे, सिकंदर को अरस्तू ने सिखाया था कि सिंधु के पार विशाल महासागर है और पृथ्वी का अंतिम छोर है।'

उसने रुककर एलिस की तरफ देखा जिसने उसकी बातों से सहमति जताई। 'आगे बताओ,' उसने कहा, 'तुम बहुत अच्छा कर रहे हो।'

'यहीं पर सारी चीजें काफी रहस्यमय हो जाती हैं,' विजय ने अपनी बात आगे बढ़ाई। 'पहली बात, ऐसा लगता है कि सिकंदर ने ग्रीस से निकलते वक्त अपनी सेनाओं को कभी बताया ही नहीं कि वो पृथ्वी के अंतिम छोर की तरफ जा रहे हैं। यह बात उसने तब बताई जब उन्होंने फारस को जीत लिया था। और इसकी एक वजह भी बताई जाती है। अगर उसने सैनिकों को बताया होता कि उन्हें घर से इतनी दूर जाना है, तो उसकी बात मानते ही नहीं। लेकिन मैं इस तर्क से सहमत नहीं हूं। सिकंदर एक बेहतरीन नेता था। उसने अपने आदमियों का मैसिडोनिया से भारत और फिर बेबीलोन वापसी तक बीस हजार मील के सफर में नेतृत्व किया। उन्होंने खून जमा देने वाले पर्वतों और झुलसा देने वाले रेगिस्तान को, और कभी—कभी बिना किसी भोजन—पानी के, पार किया था। वो लोग हर जगह उसके पीछे गए, बिना किसी विरोध के। इकलौता अपवाद है जब वो पंजाब में व्यास नदी पर पहुंचे और उन्होंने सिकंदर पर दबाव डाला कि घर वापस चला जाए और वो आगे नहीं जाएंगे। ये

लोग उसके साथ पृथ्वी की गहराई में भी चले जाते अगर उसने उनसे कहा होता।'

यह देखकर कि सभी लोग उसकी बात से संतुष्ट हैं, उसने बात आगे बढ़ाई। 'लेकिन हमारे पास इन लेखकों से अलग सिद्धांत है। उन लेखकों के पास क्यूब या यूमेनीज की गुप्त डायरी नहीं थी। वो नहीं जान सकते थे कि एक ऐसा गुप्त अभियान भी था जिस पर सिकंदर गया था; ऐसा अभियान जो सिर्फ उसे और उसकी मां को पता था। लेकिन हमारा सिद्धांत इसकी तर्कसंगत व्याख्या करता है।'

'मैं समझ रही हूं तुम क्या कहने जा रहे हो,' एलिस ने कहा। 'अगर ओलिंपियास के पास क्यूब और चर्म पत्र थे जो उसने सिकंदर को दिए, उसने उसे बताया ही होगा कि अभियान को गुप्त रखा जाए। सिकंदर ने अभियान को ज्ञात विश्व जीतने की शक्ल में छिपाए रखा और दुनिया के दूसरे छोर तक पहुंच गया। लेकिन जब उसने मैसिडोनिया छोड़ा, उसने अपनी सेनाओं को सिर्फ फारस साम्राज्य पर हमले के बारे में बताया, सिंधु की भूमि तक आने की योजना के बारे में नहीं। इसलिए नहीं कि उसे डर था कि उसके आदमी उसकी बात नहीं मानेंगे, बल्कि इसलिए कि वो नहीं चाहता था कि वो "ईश्वर के रहस्य" के बारे में जानें। और अगर मैं सही सोच रही हूं तो तुम यह कहना चाहते हो कि व्यास पर विद्रोह बनावटी था और इस तथ्य को छिपाने के लिए रचा गया था कि सिकंदर का मिशन पूरा हो चुका था और वो खुद वापस लौटना चाहता था।'

'बिलकुल सही,' विजय का चेहरा चमक रहा था। 'उसने व्यास के पास वेदी की नींव में मेटल प्लेट को गाढ़ दिया क्योंकि उसकी तलाश पूरी हो चुकी थी। याद है, यूमेनीज कहता है कि सिकंदर उस गुफा में जाने के बाद भगवान हो गया था, जिस पर पांच सिर वाला सांप पहरा दे रहा था? और हम जानते हैं कि सिकंदर ने उस वक्त से खुद को भगवान घोषित कर दिया था जब उसने बैक्ट्रिया में कबीलाई लोगों को हराया था——और इसलिए कैलिस्थनीज को मार डाला गया था।'

'तो तुम यह कह रहे हो कि,' कोलिन धीरे—धीरे बोल रहा था, 'वो चर्मपत्र जो ओलिंपियास ने सिकंदर को दिया था, उसमें उसी मार्ग का जिक्र था जो सिकंदर ने फारस से भारत आने के दौरान लिया। और इसलिए तुम उस मार्ग का अध्ययन कर रहे थे जो उसने लिया था।'

'वाह!' विजय का चेहरा खुशी से चमक उठा। उसने अपनी बुद्धि से काम लिया था और उसे यह देखकर अच्छा लग रहा था कि बाकी लोग भी उसी तरह सोच रहे हैं जैसा वो सोच रहा था। इससे उसके विचारों को बल मिल रहा था। उसने पहले ही अपने आगे के कदम का फैसला कर लिया था और यह फैसला इस चर्चा के निष्कर्ष पर निर्भर था।

'तो, तुमने क्या पाया?' कोलिन ने पूछा।

42

कैदी

राधा एकाएक जग गई। कुछ पलों के लिए वो कुछ समझ ही नहीं पाई। आसपास का सफेद शांत माहौल उसके लिए अनजान सा था।

और तब उसे सब कुछ याद आ गया। एयरपोर्ट एक्सप्रेस। बंदूक ताने खड़ा शख्स। उसका बेहोश होना। अस्पताल का गाउन, उसके बंधन, बेचैन कर देने वाली अनुभूति जिसके बाद उसका क्रोध फूट पड़ा था। लेकिन इसके बाद की कोई घटना उसे लाख कोशिशों के बावजूद याद नहीं आ रही थी। क्या हुआ था? और उसे समझ आया कि उसे पहले से काफी छोटे कमरे में ले आया गया है, जिसमें वो तब थी जब वो इसके पहले जगी थी।

उसने नीचे की तरफ देखा। वो अभी भी गाउन में थी। लेकिन उसे अब पट्टियों से बांधा नहीं था। वो कितने समय तक बेहोश रही?

सावधानीपूर्वक वो उठी और बिस्तर पर बैठ गई, उसके पैर बगल की तरफ झूल रहे थे। वो बहुत कमजोरी महसूस कर रही थी, जैसे उसने शारीरिक मेहनत करने वाला कोई काम किया हो जिसमें उसकी ताकत खत्म हो गई हो।

तभी उसे अचानक अपनी कलाइयों और टखनों में दर्द का अहसास हुआ। उसने उन्हें एक—एक कर देखा, वो चकित थी कि उन पर गहरे कटने के निशान थे जो नाइलॉन की पट्टियों के बंधने से बन गए थे।

वो बिस्तर से उतरी, नंगे पैरों को सफेद संगमरमर की फर्श का ठंडापन महसूस हुआ। कमरे में कोई चप्पल नहीं थी। दीवारें ठोस थीं। कमरे में एक कांच का दरवाजा था लेकिन वो बंद था। उसने हैंडल पकड़कर उसे खींचा, धक्का दिया लेकिन दरवाजा नहीं खुला। दरवाजे को सिर्फ बाहर से ही खोला जा सकता था। लोग अंदर आ सकते थे लेकिन वो बाहर नहीं जा सकती थी। दरवाजे में लगे सेंसर को एक्टिवेट करने के लिए एक्सेस कार्ड की जरूरत पड़ती। वो अब एक कैदी थी।

जैसे ही उसने दरवाजे का हैंडल छोड़ा, अचानक वो बाहर की तरफ खुल गया। वो पीछे हटी और चौंक पड़ी जैसे ही उसने सक्सेना और फ्रीमैन को कमरे में आते देखा।

‘हमारा मरीज आज कैसा है?’ सक्सेना ने बड़ी ही मिलनसारित से पूछा।

‘मैं मरीज नहीं हूं!’ राधा की आंखें गुस्से में चमकने लगीं। ‘मुझे यहां क्यों लाए हो?’

‘आज मैं सवाल पूछूंगा।’ सक्सेना ने बिस्तर की तरफ इशारा करते हुए कहा, ‘बैठो।’

राधा को एकाएक कमजोरी महसूस हुई और उबकाई सी आने लगी। वो बिस्तर की तरफ वापस लौटी और बैठ गई, उसे अच्छा लगा। किसी वजह से उसके पैर अस्थिर लग रहे थे।

‘नशीली दवाओं का असर है ये,’ फ्रीमैन ने सक्सेना को बताया, राधा की बेचैनी देखकर उसने वजह का सही अनुमान लगाया था। ‘उबकाई और कमजोरी।’

‘कौन है यह?’ राधा की आवाज में अभी भी विद्रोह था।

‘अरे, मैंने तुम्हें मिलवाया नहीं।’ सक्सेना ने फ्रीमैन की तरफ इशारा करते हुए कहा। ‘डॉक्टर गैरी फ्रीमैन। जेनेटिक्स एक्सपर्ट और टाइटन फार्मास्युटिकल्स में जेनेटिक्स विभाग के प्रमुख। वो हमारे लिए कई सालों से एक गुप्त प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं। और ये बहुत जल्दी एक बड़ी खोज करने वाले हैं। अब मुझे मेरे सवालों के जवाब दो। पहला सवाल—— आईबी को हमारे मिशन के बारे में क्या पता है?’

राधा सकते में आ गई। वो बिलकुल नहीं जानती थी कि किस मिशन के बारे में वो पूछ रहा है। लेकिन अब वो इतना जानती थी कि इमरान का संदेह सही निकला है। टाइटन फार्मास्युटिकल्स कहीं ना कहीं बर्बाद हुए मेडिकल सेंटर के क्लीनिकल ट्रायल के पीछे है। लेकिन एक जेनेटिक एक्सपर्ट का क्लीनिकल ट्रायल में क्या काम?

सक्सेना के चेहरे पर खीझ दिखने लगी। ‘मुझे जवाब चाहिए,’ उसने सख्ती से कहा। ‘चुप रहने का कोई फायदा नहीं है। हमारे पास तुम्हारा मुंह खोलने के और भी तरीके हैं, दर्दनाक तरीके। मैं तुम्हारे साथ नरमी से पेश आ रहा हूं। मेरे धैर्य की परीक्षा मत लो।’

‘मुझे नहीं मालूम कि तुम क्या बात कर रहे हो।’ राधा की यह जानने में कोई दिलचस्पी नहीं थी कि सक्सेना के पास उससे जवाब निकलवाने के क्या तरीके हैं।

‘मुझे तुम्हारी बात पर भरोसा नहीं है। तुम मेरे ऑफिस में जासूसी करने आई थी, पत्रकार बनकर। तुम खुफिया ब्यूरो से जुड़ी हो। किस हैसियत में, यह अभी मुझे नहीं मालूम। तुम्हारे पास पूर्वी दिल्ली की मेडिकल फेसिलिटी में लगी आग से जुड़ी सारी जानकारी थी। यहां तक कि मरीजों के लिए बनी कोठरियों तक की। तुम साफतौर पर हमारे बारे में काफी कुछ जानती हो।’

राधा के चेहरे पर आश्चर्य के भाव उमड़ आए। ये लोग कैसे जानते हैं कि मैं आईबी के साथ हूं? ‘मुझे सच में नहीं मालूम कि तुम किस बारे में बात कर रहे हो,’ उसने दबी आवाज में अपना विरोध दर्ज कराया, वो उनकी जानकारी से हक्की—बक्की रह गई थी। ‘मेरा खुफिया ब्यूरो से कोई लेना—देना नहीं है।’

सक्सेना बनावटी ढंग से मुस्कुराया। ‘हमें कम करके ना आंको,’ उसने उसे चेतावनी के अंदाज में कहा। ‘हमारी दूसरी टीम तुम सब लोगों पर नजर रख रही है। हमें मालूम है कि तुम सभी, उस आईबी एजेंट समेत, जौनगढ़ किले में एक साथ थे, जो तुम्हारे मंगेतर का है।’

‘ठीक है, मैं मानती हूं कि मैं इमरान किदवई को जानती हूं। लेकिन मैं तुम्हें सच बता रही हूं,’ राधा ने अपनी बात पर जोर दिया। ‘ये सब हमारा संदेह था। हमारा मानना था कि जो सेंटर जलकर राख हुआ है, वहां हो रही गतिविधियों का टाइटन से संबंध है। लेकिन हम यह नहीं जानते थे कि क्या।’

सक्सेना ने फ्रीमैन की तरफ देखा फिर राधा को घूरते हुए अपनी नजरें उस पर जमा दीं। ‘मुझे नहीं मालूम कि तुम पर यकीन किया जाए या नहीं। जब तुम जानती ही नहीं थी कि हम किस चीज पर काम कर रहे हैं तो तुम हमारी जांच क्यों कर रही थीं?’

राधा हिचकिचाई। उसे बहुत बुरा लग रहा था कि वो इस आदमी को सब कुछ बताती जा रही है। लेकिन वो डरी हुई थी, दर्द से, चोट से, खुद पर काबू नहीं रख पाने से। वो जानती थी कि ये लोग कुछ भी कर सकते हैं। और वो अपना काम निकालने के लिए किसी भी हद तक जाने से नहीं हिचकिचाएंगे।

‘हमारा मानना था कि टाइटन जैविक आतंकवाद में शामिल है। कि तुम लोग एक नए प्रकार का रोगाणु बना रहे हो जिसका इस्तेमाल आतंकवादी और तानाशाह कर सकेंगे।’ वो बोल पड़ी।

एक पल के लिए सक्सेना उसे घूरता रहा। फिर वो जोरों से हंस पड़ा। ‘जैविक आतंकवाद!’ उसने फ्रीमैन को कुहनी से हल्का सा धक्का दिया और वो भी हंस पड़ा। ‘एक नए प्रकार का रोगाणु! तुम हमारे प्रोजेक्ट के बारे में कुछ नहीं जानती हो ना?’ उसने फ्रीमैन की तरफ देखा। ‘मेरा मानना है कि हमें अब इसकी जरूरत नहीं है। हमें कूपर से पूछना होगा कि वो इसका क्या करना चाहता है। लेकिन वो इससे छुटकारा पाए, इसके पहले मैं इसका इस्तेमाल एकाध ट्रायल के लिए और करना चाहूंगा।’

वो कमरे से बाहर निकल गए और राधा को अकेला, दुविधाग्रस्त और डरा हुआ छोड़ गए। उसे अपनी किस्मत को लेकर कोई संदेह नहीं था। अगर उसका इस्तेमाल गिनी पिग की तरह नहीं होना था, तो वो निश्चित तौर पर मरने वाली थी।

43

पहेली का एक हिस्सा

'देखो,' विजय ने कागजों का एक पुलिंदा मेज से उठाकर कॉफी टेबल पर रखा जहां सब बैठे थे। 'इस सफर के दौरान सिकंदर ने जो मार्ग लिया था, उसके इर्द—गिर्द दो रहस्य हैं।'

उसने एक नक्शा निकाला जिसमें आज के अफगानिस्तान, पाकिस्तान और भारत में सिकंदर के लिए गए मार्ग को मोटी लाल लकीरों में दिखाया गया था। 'पहला यहां है,' उसने एक इलाके की तरफ इशारा किया जो पाकिस्तान के दक्षिण में समुद्र के करीब था। 'सिंधु की भूमि से बेबीलोन वापसी के लिए सिकंदर ने अपनी सेना को बांट दिया था। एक हिस्से को उसने समुद्र के रास्ते फारस की खाड़ी के पार भेजा। और दूसरे हिस्से को वो खुद समुद्र तट से तुर्बत की तरफ ले गया।' उसने नक्शे पर शहर को दिखाया। 'फिर वो पसनी के रास्ते से दक्षिण में समुद्र की तरफ गया, जिसके लिए उसने मकरन रेगिस्तान में सौ मीलों का बेहद मुश्किलों भरा रास्ता चुना, क्यों, पता नहीं। उसे मकरन पार करने में 60 दिन लगे और अपनी सेना के एक बड़े हिस्से को उसे खोना पड़ा।'

'अजीब है यह तो,' शुक्ला ने टिप्पणी की। 'वो समुद्र के रास्ते वापस क्यों नहीं गया? सेना को बांटने की क्या जरूरत थी?'

'यही नहीं,' एलिस ने इस कहानी को आगे बढ़ाया क्योंकि वो इससे अच्छी तरह वाकिफ थी। 'तुर्बत से पर्सपोलिस तक जाने का रास्ता सीधा है।' उसने नक्शे पर वो मार्ग दिखाया। 'सिकंदर मकरन से पसनी गया और फिर वहां से पर्सपोलिस। मान लें कि सेना को बांटने के पीछे कोई तार्किक वजह थी, लेकिन अगर वो जमीन के रास्ते भी पर्सपोलिस जाना चाहता था, उसे रेगिस्तान का मार्ग लेने की कोई जरूरत नहीं थी। आधुनिक लेखकों का तर्क है कि सिकंदर रेगिस्तान को जीतना चाहता था, खासतौर पर इसलिए भी कि इसे रानी सेमिरामिस और सायरस महान ने पार कर लिया था।'

'हो सकता है वो सिर्फ अपने लोगों के सामने साबित करना चाहता हो कि वो एक भगवान है?' कोलिन ने अपना अनुमान लगाया।

'यह मायने नहीं रखता कि क्यों,' विजय ने जवाब दिया। 'मैंने यह बात सामने रखी क्योंकि मैं दिखाना चाहता था कि गुप्त अभियान के सबूत जुटाने के लिए मेरे पास दो विकल्प थे। पहला था मकरन रेगिस्तान। अगर सिकंदर किसी गुप्त अभियान पर था तो वो

मकरन रेगिस्तान में उस रहस्य की जगह ढूंढ़ रहा होगा। और इसी बात से उसका यह मार्ग लेना समझ में आता है।'

'लेकिन इससे तो बात साफ नहीं होती,' कोलिन ने कहा। 'क्योंकि तब तक तो उसने व्यास नदी के पास वेदी के नीचे मेटल प्लेट दफना दी थी। इसका मतलब है कि वो पहले ही अपने अभियान के मकसद को हासिल कर चुका था। तो ये दूसरा रहस्य क्या है? मुझे लग रहा है कि तुम्हें यहां कुछ मिला है।'

विजय उसकी ओर देखकर मुस्कुराया। 'मकरन अभियान इकलौता उदाहरण नहीं था, जब सिकंदर ने बिना किसी स्पष्ट कारण के अपनी सेनाओं का विभाजन किया था। दरअसल यह तो दूसरी बार था। पहली बार वो विभाजन यहां हुआ था।' उसने नक्शे पर उन लोगों को एक शहर दिखाया। 'ये है जलालाबाद। यहां से उसने सेना की एक टुकड़ी को हेफेस्टियन के साथ खैबर दर्रे के पार भेजा, जो अब पाकिस्तान में है। सेना के दूसरे हिस्से की अगुवाई खुद उसने की, वो इस नदी घाटी के ऊपर और नावा दर्रे, जो खैबर दर्रे से दूर उत्तरी दिशा में है, के रास्ते से पाकिस्तान पहुंचा।' उसने एक और नक्शा निकाला; यह अफगानिस्तान का नक्शा था। उसने उन लोगों को नक्शे पर दोनों दर्रे दिखाए। 'और, कोई भी भरोसे के साथ यह नहीं बता पाया है कि सिकंदर पहले उत्तरी दिशा में और फिर पूर्व की तरफ क्यों गया। कुछ लेखकों और कुछ वेबसाइटों ने इसकी व्याख्या सैन्य दृष्टि से की है। वो कहते हैं कि सिकंदर को अपनी सेना को पहाड़ी कबीलों से बचाना था। लेकिन पहाड़ी कबीलों को जीतने के लिए उसने जो लड़ाइयां लड़ीं वो कुनार घाटी में नहीं हुई थीं। वो सब यहां लड़ी गई थीं——पाकिस्तानी इलाके में जो आज के अफगानिस्तान के साथ सीमा पर है। वो बड़ी आसानी से खैबर दर्रा पार कर सकता था और फिर सेना का विभाजन कर सकता था, एक हिस्से को पूर्व में भेजता और दूसरे को उत्तर में ताकि पहाड़ी कबीलों पर कब्जा किया जा सके। कबीलों के साथ अंतिम युद्ध पिरसर में लड़ा गया था जिसे यूनानियों ने एयोरनोस कहा। यह पाकिस्तान में है, कुनार घाटी में नहीं। मैं सिकंदर के इस अभियान की सैन्य व्याख्या से सहमत नहीं हूं।'

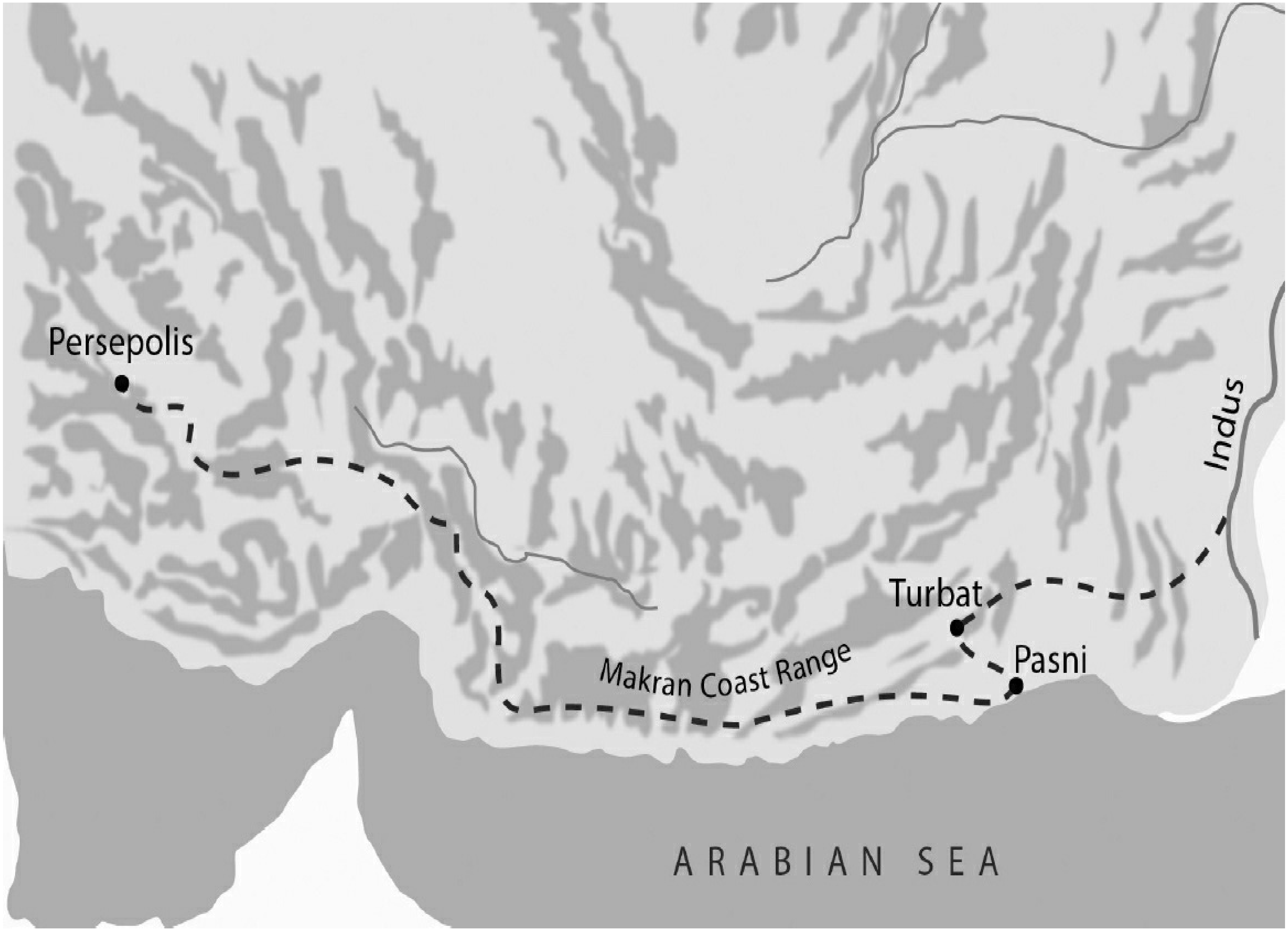
Persepolis
Indus
Turbat
Pasni
Makran Coast Range
ARABIAN SEA

‘कुनार नदी घाटी,’ कोलिन ने नक्शे से नाम पढ़ा। ‘तुम्हारा मानना है कि यही वो जगह है जहां रहस्य छिपा है?’

‘मुझे यह समझ नहीं आ रहा।’ एलिस अभी भी उलझन में थी। ‘इससे यह तो लगता है कि सिकंदर के पास कुनार घाटी जाने की वजह थी और उसका अभियान वो वजह हो सकती है। लेकिन फिर भी है तो यह अंदाजा ही। तो तुम्हारी व्याख्या——हमारे सिद्धांत——को दूसरों से ज्यादा भरोसेमंद क्यों माना जाए?’

‘इस वजह से।’ विजय ने यूमेनीज की अनूदित डायरी दिखाई। ‘और क्यूब के छंद की वजह से।’ वो शुक्ला की तरफ मुड़ा। ‘हमारे लिए एक बार फिर आप क्यबू पर लिखे छंदों का अनुवाद करगें क्या?’

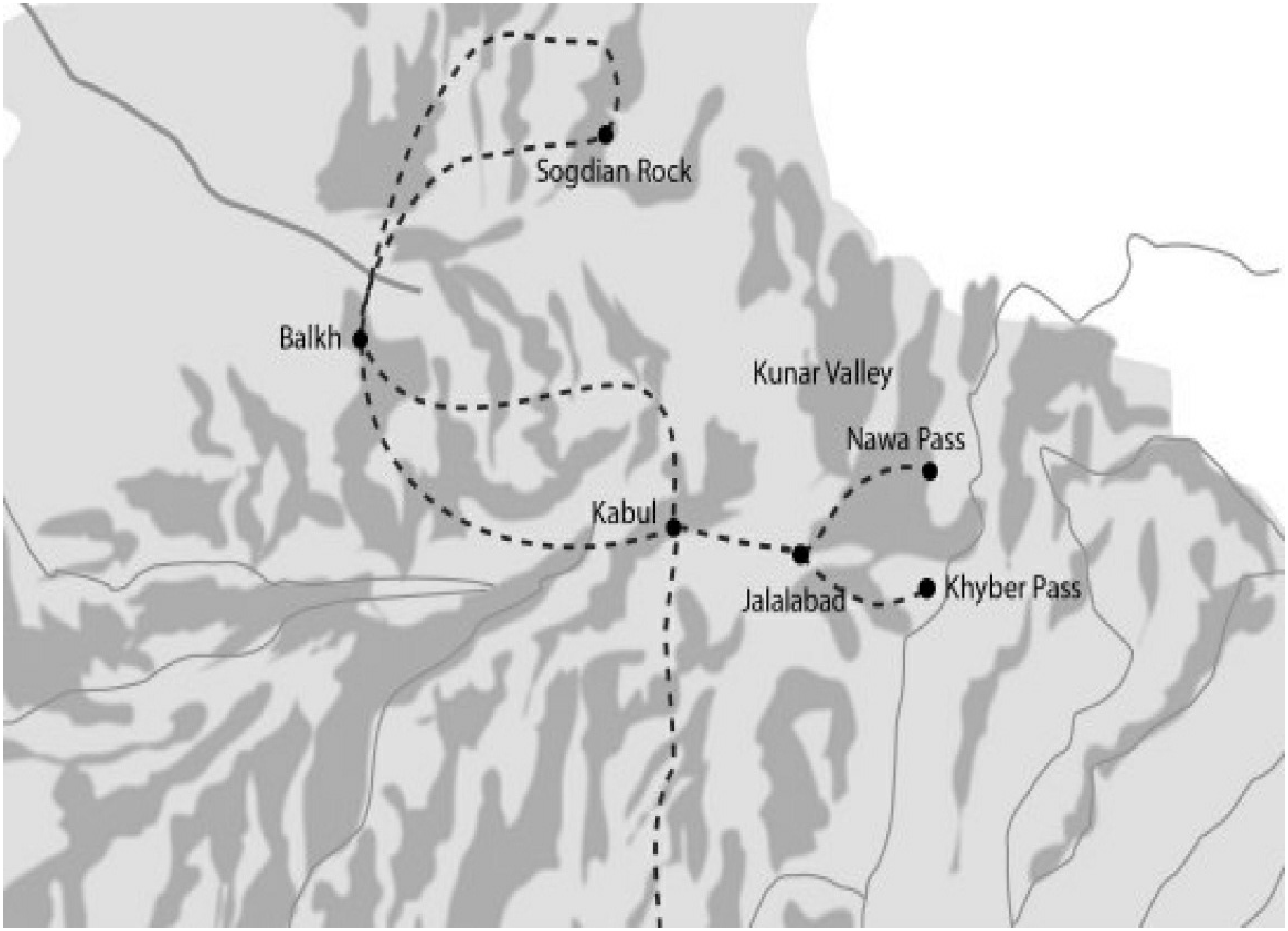
Sogdian Rock
Balkh
Kunar Valley
Nawa Pass
Kabul
Jalalabad
Khyber Pass

शुक्ला ने हामी भरी। वो नहीं जानते थे कि विजय के दिमाग में क्या है लेकिन वो एक चीज जानते थे कि विजय के हिसाब से यह महत्वपर्णू है। ऐसे समय में जब उसकी मंगेतर खतरे में है, विजय सिर्फ एक रहस्य को सुलझाने में समय नहीं गंवाएगा जब तक कि यह किसी ना किसी तरह उसकी मदद ना करे।

उन्होंने क्यबू उठाया और छंदों को पढऩे लगे। विजय अपना सिर हिलाता जा रहा था जैसे—जैसे शुक्ला छंद पढ़ते जा रहे थे। यह सिलसिला तब तक चला जब तक शुक्ला ने तीन छदं पढ़े। चौथे छंद पर विजय ने सकारात्मक तरीके से सिर हिलाया।

‘यही है वो छंद।’ विजय ने उनकी तरफ देखा। ‘क्या आप लागे इसे देख रहे हैं?’

44

पहला सुराग

बाकी लोग विजय की तरफ भाव शून्य होकर देख रहे थे। वो अभी भी नहीं समझे थे। शुक्ला ने जो छंद पढ़ा था वो था:

'अब तुम उसके द्वार में प्रवेश करो

जहां घाटियां पूर्व और पश्चिम को अलग करती हैं

बुद्धिमानी से यहां चुनाव करो, याद रखो

जहां तुम जा रहे हो और जहां सूर्य रहता है।'

'ठीक है,' विजय ने अपने हाथ जोड़ते हुए कहा। 'मानता हूं कि यह आसानी से समझ नहीं आएगा और यह ऐसा ही बनाया गया है। यह एक गुप्त अभियान था। गूढ़ छंदों से सुरक्षित। जब तक आपको यह नहीं पता कि आप क्या तलाश कर रहे हैं, आप किसी भी छंद को समझने में कामयाब नहीं होंगे। ये पहेलियां इसी तरह काम करती हैं ना?'

'तो हम लोग उस चीज की तलाश कर रहे हैं जिसके बारे में सिकंदर जानता था,' कोलिन ने अंदाजा लगाने की कोशिश की। 'अगर इन छह छंदों वाला चर्मपत्र सिकंदर को रहस्य के लिए रास्ता दिखाने वाला था, तो हर छंद एक या ज्यादा जगहों को बताने वाला होना चाहिए।'

'बिलकुल ठीक,' विजय का चेहरा चमक उठा। 'मैंने पूरी रात इस बारे में सोचा था। और घंटों तक सोचने और शोध करने के बाद मुझे इस बारे में जागृति प्राप्त हुई।'

कोलिन ने खर्राटे की आवाज निकाली। 'जागृति, गधे!' तुम खर्राटे भर रहे थे जब मैं सुबह यहां आया।

एलिस नक्शे को ध्यान से देख रही थी। अगर विजय जो कह रहा है, वो सही है तो नक्शे में ऐसा कुछ होना चाहिए जो छंद में वर्णित बातों के अनुरूप हो। कुछ ऐसा जो घाटियों का मार्ग हो।

और तभी उसे एक तेज झटका लगा। 'जलालाबाद!' उसने विजय की तरफ देखा।

'बहुत बढ़िया,' विजय ने उसे शाबाशी दी। 'तुम नक्शे पर देख सकती हो कि जलालाबाद दो नदी घाटियों के प्रवेश मार्ग पर स्थित है। एक पूर्व की तरफ जाता है——

यानी कुनार घाटी। दूसरा पश्चिम की तरफ जाता है——यानी लाघमन घाटी। याद है ना जब हमने पहली बार छंद सुना था तो हम सबने सोचा था कि ये किसी तरह का रास्ता दिखा रहे हैं लेकिन हम नहीं जानते थे कि कहां का रास्ता? अब हमारे पास जवाब है। छंद में वर्णित “द्वार” जलालाबाद है। छंद पाठक को नसीहत दे रहा है कि पूर्व की घाटी को चुनो——जहां सूर्य रहता है। राधा ने सही कहा था।’ विजय राधा का नाम जुबान पर आते ही चुप सा हो गया।

‘और कुनार घाटी ही पूर्व में है।’ कोलिन ने कहा। ‘साफ तौर पर यह छंद यहां उपयुक्त लग रहा है।’

‘लेकिन दूसरे छंदों का क्या मतलब है?’ एलिस ने पूछा। ‘वो भी सिकंदर के मार्ग की जगहों को बता रहे होंगे। लेकिन मैं किसी दूसरी जगह के बारे में नहीं सोच पा रही जो छंद से मिलान रखती हों।’

‘उनमें से एक छंद में किसी पहाड़ का जिक्र है जो सॉग्डियन रॉक हो सकता है,’ विजय ने उसे याद दिलाया। ‘अगर हम थोड़ी गहराई से सोचें और थोड़ा रिसर्च करें तो मुझे यकीन है कि हम दूसरी जगहों का भी पता लगा सकते हैं। लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि जो रहस्य है वो मुझे लगता है कुनार घाटी में ही है।’

‘मैं तुम्हारा मजा किरकिरा नहीं करना चाहती, लेकिन हम तो अटकल ही लगा रहे हैं।’ एलिस खुश नहीं दिख रही थी। ‘हम सही हो सकते हैं लेकिन सिर्फ इस वजह से कि सिकंदर ने कुनार घाटी की गुप्त यात्रा की थी, हम यह मतलब नहीं निकाल सकते हैं कि वो वहां रहस्य की तलाश में गया था। हो सकता है कि यह सिर्फ एक पड़ाव भर हो, अंतिम मंजिल नहीं। मेटल प्लेट के बिना यह पता लगा पाने का कोई तरीका नहीं है कि इन छंदों को किस क्रम में पढ़ा जाए। और जब तक हम इन छंदों का सही क्रम नहीं जानते, हम भरोसे के साथ नहीं कह सकते कि यह छंद हमें रहस्य की जगह तक पहुंचाता है।’

‘यही वो जगह है जहां मैं मानता हूं कि तुम लोग मदद कर सकते हो,’ विजय ने जवाब दिया। ‘मैंने अपने रिसर्च से जुटाई जानकारी के आधार पर काफी प्रिंटआउट निकाले हैं। नक्शे, विवरण, गूगल अर्थ वगैरह। अगर हम लोग इस बात पर सहमत हैं कि मेरे तर्क अभी तक किसी नतीजे पर पहुंचा रहे हैं, तो शायद अगर हम सब लोग इसमें अपना दिमाग लगाएं तो हमें कुछ ना कुछ जरूर मिलेगा।’

‘इससे राधा की मदद कैसे होगी? ‘शुक्ला आखिरकार बोल पड़े। उन्हें विजय और उसके फैसलों में विश्वास था, लेकिन उनसे अब चुप नहीं रहा गया। उनकी बेटी गंभीर मुसीबत में है और वो लोग एक प्राचीन पहेली पर रिसर्च कर रहे हैं। वो खुद को यकीन दिलाना चाहते थे कि उन लोगों की प्राथमिकताएं सही दिशा में हैं।

विजय हिचकिचाया। वो समझ नहीं पा रहा था कि उन्हें बताना चाहिए या नहीं। वो उन लोगों को फोन कॉल के बारे में नहीं बताना चाहता था। वो कैसे बता सकता था? लेकिन उसे महसूस हुआ कि उसे बताना होगा। उसे सफाई देनी होगी।

‘मैंने सोचा था कि मैं इसकी मदद से सौदा कर सकूंगा,’ आखिरकार उसने बोल ही दिया। ‘कूपर ने मुझे पिछली रात फोन किया था। उसे क्यूब चाहिए क्योंकि वो रहस्य जानने के लिए जरूरी है। अगर हम छंदों में लिखी पहले को सुलझा लें तो हम इस जानकारी का इस्तमाल राधा की सलामती के लिए कर सकते हैं। मैं यह मानना नहीं चाहता लेकिन सच यही है कि हमारे लिए राधा को बचा पाने की इकलौती उम्मीद यही है। अगर आईबी अभी तक उसकी स्थिति का पता नहीं लगा पाई है तो मुझे नहीं मालूम कि हम उसे कैसे ढूंढ़ पाएंगे। हमारे पास यही विकल्प है कि वो लोग उसे छोड़ दें और इसके लिए सबसे अच्छा तरीका यही होगा।’

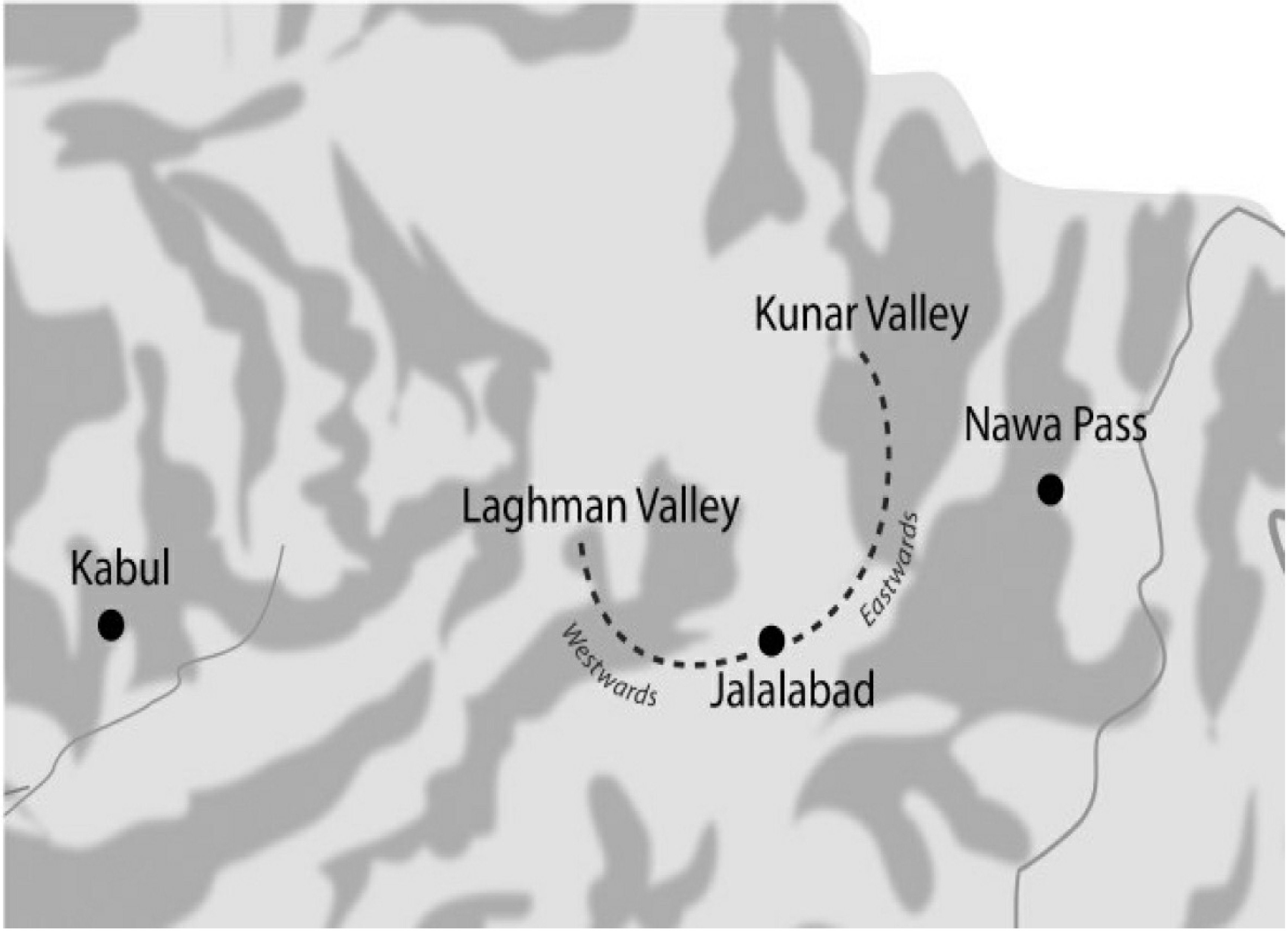
Kunar Valley
Nawa Pass
Laghman Valley
Kabul
Eastwards
Westwards
Jalalabad

शुक्ला ने थोड़ी देर सोचा। 'मेरा अंदाज है कि तुम सही हो,' उन्होंने सहमति जताई। 'देखते हैं कि क्या हम इससे कुछ आगे बढ़ पाते हैं या नहीं।'

उन्होंने अपने विचारों को वहां फैले कागजों के ढेर पर केंद्रित कर दिया जिनमें विजय की रात भर की मेहनत के बाद जुटाई गई जानकारी थी। क्या वो लोग उस सुराग को ढूंढ़ निकालने में कामयाब होंगे, जो उन्हें वो जानकारी दे पाएगा जिसकी कपूर को तलाश है?

45

जवाबी प्रस्ताव

कूपर ने अपनी घड़ी देखी। दोपहर के 12 बजे थे। विजय सिंह को फोन लगाने का समय। उसने विजय का नंबर डायल किया और फोन की घंटी सुनता रहा क्योंकि किसी ने फोन नहीं उठाया। उसकी भौंहें तन गईं। इसका कोई मतलब नहीं निकल रहा था। उस आदमी की मंगेतर उसकी कैद में है। वो तो उम्मीद कर रहा था कि फोन कॉल का जवाब मुस्तैदी से दिया जाएगा।

उसने दोबारा कोशिश की। इस बार फोन तुरंत उठा लिया गया।

'कूपर?' विजय की आवाज में तनाव था जिसे महसूस कर कूपर को खुशी हुई।

'तो, क्या फैसला किया तुमने?' कूपर सीधे मुद्दे की बात पर आ गया। 'तुम्हारी मंगेतर या तुम्हारी पुरानी गर्लफ्रेंड। कौन होगी ये?'

'मेरे पास एक जवाबी प्रस्ताव है।' विजय की आवाज में अब दृढ़ता थी, हालांकि कहीं ना कहीं तनाव बना हुआ था।

कूपर ने अपनी भौंहें चढ़ा लीं। यह तो दिलचस्प है। उसने इसकी उम्मीद नहीं की थी। उसने इसे भी आजमाने का फैसला किया।

'बोलो।' उसने आदेश देने के अंदाज में कहा।

'तुम्हारी दिलचस्पी एलिस या राधा में नहीं है,' विजय ने अपनी बात शुरू की। 'तुम उस रहस्य की जगह के बारे में जानना चाहते हो जिसकी तलाश में सिकंदर सिंधु की भूमि की तरफ गया था।' विजय रुका। 'और मैं उस जगह का पता लगाने में तुम्हारी मदद कर सकता हूं।'

कूपर चौंक पड़ा। उसे याद आया कि वान क्लुएक ने उसे इस आदमी और इसके दोस्तों के बारे में क्या बताया था। उसके मन में विजय के प्रति इज्जत थोड़ी और बढ़ गई। लेकिन इससे एक चीज और साफ हो गई——वो अपनी मंगेतर को किसी भी कीमत पर वापस चाहता है लेकिन वो अपनी पुरानी गर्लफ्रेंड को भी बचाने की कोशिश कर रहा है। अगर वो इतना समय और मेहनत अपने पास मौजूद कुछ सुरागों का विश्लेषण करने के लिए दे रहा है ताकि वो सही जवाब ढूंढ़ सके तो साफ है कि विजय सिंह अपने रिश्तों को लेकर काफी गंभीर है।

इसका ये मतलब भी है कि कूपर ने सोचा, सक्सेना को पता लगाना होगा कि क्या राधा और उसके आईबी के साथियों को मिशन के मकसद के बारे में पता है। क्या विजय ने इसका अंदाजा तब लगाया जब राधा का अपहरण हो गया? वो जानता था कि किसी के लिए भी उस रहस्य के सही मकसद का अंदाजा लगा पाना नामुमकिन है, जो वो लोग ढूंढ़ रहे थे। इस चीज का पता तो सिर्फ ऑर्डर को ही होगा। लेकिन इस प्रोजेक्ट को दशकों से गुप्त रखा गया था। वो इस मिशन को इससे ज्यादा खतरे में नहीं डाल सकता था, जितने खतरे में वो पहले ही आ चुका है, खासतौर पर जब वो कामयाब होने के इतना करीब हो।

तभी कूपर को महसूस हुआ कि उसने जवाब देने में काफी लंबा वक्त ले लिया है। कहीं विजय यह ना समझने लगे कि उसने सही जगह पर हथौड़ा चलाया है। लेकिन एक तरीका है जिससे वो इसे अपने फायदे में कर लेगा। उसके पास अभी एक तुरुप का पत्ता है।

'और तुम हमारी मदद जगह ढूंढ़ने में कैसे कर सकते हो?' उस बात से इनकार करने या उस बारे में नहीं जानने का बहाना करने का कोई मतलब नहीं था, जो अभी विजय ने की थी।

विजय ने जब इसका जवाब दिया तो उसकी आवाज में जीत की धुन आ गई थी। 'हमने क्यूब के एक छंद का मतलब निकाल लिया है। तुम इसे किसी भी तरह खुद से नहीं कर सकते थे। हम सभी पांच छंदों का मतलब निकाल सकते हैं और तुम्हें बिलकुल उसी जगह पहुंचा सकते हैं, जहां रहस्य छिपा है।'

'यहां तुम गलत हो,' कूपर पलटकर बोला। 'हमारे पास वो मेटल प्लेट है जिसे सिकंदर ने व्यास के पास दबाया था। क्यूब और मेटल प्लेट साथ हों तो छंदों का मतलब निकालना बच्चों का खेल होगा। फिर हमें तुम्हारी जरूरत क्यों होगी?'

'इस बारे में सोचो कि हमने मेटल प्लेट का बिना इस्तेमाल किए एक छंद का मतलब निकाल लिया है। हमारे पास वो चीजें हैं जो तुम्हारे पास नहीं हैं——एक एलिस और दूसरे डॉक्टर शुक्ला। हम तुम्हें उससे ज्यादा जल्दी जवाब दे सकते हैं जितना वक्त तुम खुद ढूंढ़ने में लगाओगे।'

कूपर ने इस पर विचार किया। विजय के तर्क में कुछ दम तो था। उसे इस बारे में कोई संदेह नहीं था कि उसकी टीम ऑर्डर के संसाधनों के बल पर छंदों का मतलब निकाल लेगी। लेकिन अगर वो विजय की टीम की मदद से यह काम जल्दी कर दे तो क्या नुकसान है। और अगर इन लोगो ने कोई जानकारी आईबी को देने की कोशिश की तो वो इन सभी को खत्म कर देगा। वान क्लुएक ने वैसे भी उसे इस बारे में खुली छूट दे रखी है।

'मैं कैसे मान लूं कि तुम धोखा नहीं दे रहे हो?'

उसने गौर से वो सब बातें सुनीं जब विजय ने उसे छंद का मतलब समझाया और यह भी कि वो लोग इस निष्कर्ष पर कैसे पहुंचे।

कूपर ने अपना मन बना लिया। 'तुम्हारी क्या शर्तें हैं?' वो जानता था कि शर्तें क्या होंगी

लेकिन वो यह नहीं जताना चाहता था कि वो आसानी से मान रहा है।

'तुम एलिस का पीछा करना छोड़ दोगे और राधा को आजाद कर दोगे।'

कूपर मुस्कुराया। वो विजय के बारे में सही था। उसे दाद देनी होगी कि सब कुछ खिलाफ होते हुए भी विजय ने अपना धैर्य और दृढ़ता नहीं छोड़ी थी।

'ठीक है लेकिन मेरी भी दो शर्तें हैं। पहली, तुम और तुम्हारी टीम आज शाम 4 बजे मुझसे इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर मिलेगी। हम आज रात एक साथ जलालाबाद जाएंगे। वहां से हम कल कुनार वैली जाएंगे। दूसरी, राधा तब तक हमारी हिरासत में रहेगी जब तक मैं तुम्हारे दावों को सही ना मान लूं। अगर तुमने कोई चालाकी की तो उसे वही दवा दी जाएगी जो तुम जानते हो कि मेडिकल फेसिलिटी के मरीजों के खून में मिली थी।'

एक पल के लिए खामोशी रही क्योंकि विजय इस खुली धमकी के बाद अपने गुस्से पर काबू पाने की कोशिश कर रहा था। 'मेरे पास कोई रास्ता नहीं है। लेकिन सिर्फ मैं तुम्हारे साथ आऊंगा। बाकी लोग यहीं रुकेंगे। और मैं कैसे मान लूं कि तुम अपनी बात से नहीं मुकरोगे?'

कूपर ने फिर कुछ सोचा। अगर वो लोग जगह के बारे में सही हैं, उसे इस रहस्य के लिए हर किसी की जरूरत भी नहीं थी। सही मायने में तो कुनार घाटी के लिए सभी लोगों को ले जाने की जरूरत भी नहीं है। उसने तो यह बस इसलिए कहा था कि इससे उसे सभी लोगों को एक साथ खत्म करने का मौका मिलता, उनके देश से बाहर। योजना तो काम फिर भी करेगी अगर विजय उसके साथ रहे और बाकी सब यहां। वो सैटेलाइट फोन की मदद से संपर्क में रहेंगे और अफगानिस्तान में इसकी जरूरत पड़ेगी ही। विजय से काम चल जाएगा। वैसे भी कूपर मान रहा था कि विजय और उसके दोस्त कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकते। राधा के संबंध आईबी से थे, उनके नहीं। और वो इस बात की व्यवस्था करेगा कि बाकी सभी पर निगरानी रखी जाए ताकि वो कहीं जाएं नहीं। वो यह व्यवस्था इस फोन कॉल के तुरंत बाद कर देगा।

उसका जवाब रूखा था। 'जैसा तुमने अभी कहा, तुम्हारे पास कोई रास्ता नहीं है। मैं तुमसे ठीक 4 बजे मिलूंगा। देर नहीं करना।'

46

जुआ

विजय ने फोन काटा और धीरे—धीरे स्टडी रूम की तरफ बढ़ चला। वो कूपर से बात करने के लिए उन लोगों से अलग हटकर नीचे के कमरे में आ गया था। वो नहीं चाहता था कि उसकी और कूपर की बातचीत कोई और, खासतौर पर एलिस, सुने। विजय सोच रहा था कि वो कैसे इस खबर को बाकी लोगों को बताएगा। और वो इस बात पर भी ताज्जुब कर रहा था कि राधा को बचाने के चक्कर में, उसने सभी को कूपर और उसके साथियों के पंजे में और फंसा दिया था। राहत की बात बस इतनी थी कि कूपर के साथ वो खुद जा रहा है। बाकी लोग यहां जौनगढ़ में महफूज रहेंगे।

जैसे ही वो स्टडी रूम में घुसा, उसने सभी के चेहरों पर उत्सुकता देखी। वो जानता था कि ये लोग इस बात से चकित थे कि वो क्यों फोन पर बात करने के लिए स्टडी रूम से बाहर चला गया था।

'कूपर का फोन था,' विजय बोलते वक्त हर शब्द पर गौर कर रहा था। 'उसने कहा था कि वो 12 बजे दोपहर को फोन करेगा। हमने एक सौदा कर लिया है।' उसने कूपर को दिए अपने प्रस्ताव के बारे में उन्हें समझाया, लेकिन वो बातें छोड़ दीं, जो एलिस और राधा के बारे में कूपर ने कही थीं।

जब उसने अपनी बात खत्म की, सबके चेहरों पर घबराहट थी। कोलिन सबसे पहले बोला, करीब—करीब विजय की बात खत्म होने के पहले। 'क्या तुम पागल हो? तुम इन लोगों के साथ... जाओगे, मुझे नहीं पता कौन लोग हैं ये लेकिन खतरनाक हैं! क्या इस बात को समझने के लिए हमें और कुछ देखना बाकी है?'

एलिस भी कोलिन से सहमत थी। 'मैं नहीं जानती कि तुम क्या सोच रहे हो, विजय। ये जानते हुए भी कि उन्होंने ग्रीस में क्या किया और संग्रहालय में उन्होंने हम पर हमला किया, तुम कैसे यह कर सकते हो?'

विजय चुप था। वो उन्हें कैसे बताए कि उसकी दुविधा से निकलने का यही इकलौता रास्ता था? वो उन्हें कैसे बताए कि उसे किस मानसिक अवस्था में यह फैसला लेना पड़ा है, और वो राधा और एलिस की किस्मत में एक साथ संतुलन बनाने की कोशिश कर रहा है? 'राधा को बचाने के लिए यही इकलौता रास्ता था,' उसने यही कहना ठीक समझा। 'तुम

लोग इससे बाहर रहोगे। एलिस, खासतौर पर तुम। मैं चाहता हूं कि तुम लोग छंदों पर काम करो जब तक मैं उनके साथ हूं। कुछ भी नया मिले, मुझे तुरंत बताओ। जितनी जल्दी हम इस पहेली को सुलझाएंगे, उतनी जल्दी राधा हमें वापस मिलेगी।'

'तुम अकेले नहीं जाओगे,' कोलिन खड़ा हुआ, विजय के पास गया और उसकी आंखों में आंख डालकर बोला। 'हम दोस्त हैं, हम चीजें साथ करते हैं। मैं तुम्हारे साथ चलूंगा।'

विजय दलीलें देना बेहतर तरीके से जानता था। और, वैसे वो भी जानता था कि कोलिन का साथ मिलने से उसे खुशी होगी। लेकिन उसने इस बारे में अपना मन पक्का कर रखा था। उसने ठंडी सांस लेते हुए कहा। 'मुझे माफ कर दो दोस्त, तुम बाकी लोगों के साथ इस खेल से दूर ही रहोगे। और मैं इस बारे में कोई बहस नहीं करना चाहता।'

कोलिन ने जवाब देने के लिए मुंह खोला ही था कि विजय का फोन बज उठा। वैद का फोन था।

'मुझे खेद है लेकिन हमारे पास राधा के बारे में कोई ताजा जानकारी नहीं है,' वैद ने उसे बताया। 'हम अभी भी तलाश कर रहे हैं। ये लोग पेशेवर लगते हैं। इस पूरे दौरान वो हमारी नजरों के सामने काम कर रहे हैं लेकिन फिर भी हमारी नजरों से छिपे रहने में उस्ताद हैं। लेकिन हम देर—सबेर उनका पता लगा ही लेंगे।'

'मैं ऐसी ही उम्मीद करता हूं,' विजय ने जवाब दिया। 'मेरे पास तुम्हारे लिए कुछ खबर हैं।' उसने वैद को कूपर के साथ उसके सौदे के बारे में बताया।

वैद ने जवाब देने के पहले थोड़ा वक्त लगाया। 'तुम एक बड़ा खतरा उठा रहे हो,' उसने विजय से कहा। 'बहुत बड़ा खतरा, तुम जानते हो कि वो लोग राधा को इतनी आसानी से नहीं छोड़ेंगे। और तुम लोग वैसे भी खतरे में हो। वो जानते हैं कि तुम सभी, राधा समेत, आईबी से जुड़े हो। जैसा हमें संदेह है, अगर इसमें जैविक आतंकवाद का कोई कोण है तो तुम उनके लिए खतरा तो हो ही।'

'मैं ऐसा नहीं सोचता,' विजय ने जवाब दिया। 'मेरा मानना है कि उन्हें यकीन है कि सिर्फ राधा आईबी से जुड़ी है। वो किले में इमरान की मौजूदगी से उसका आईबी से संबंध जोड़ रहे हैं और मेरे बारे में उनका मानना है कि मैं उसका मंगेतर हूं। नहीं तो वो लोग हमें भी निशाना जरूर बनाते। संग्रहालय में भी उनके निशाने पर एलिस ही थी। अगर हम वहां उसके साथ नहीं होते, तो हमें हमारे हाल पर छोड़ देते।'

'मुझे लगता है कि तुम ऑफिस आ जाओ तो बेहतर होगा,' वैद ने जवाब दिया। 'हमें इस बारे में पैटरसन को बताना चाहिए। वो टास्क फोर्स का प्रमुख है। उसे बताना चाहिए कि क्या हो रहा है। और मुझे नहीं लगता कि वो यह जानकर खुश होगा कि तुमने यह फैसला बिना उसकी सलाह के ले लिया।'

'मैं वहां तुरंत आता हूं,' विजय ने वादा किया। 'मैं वहीं से एयरपोर्ट चला जाऊंगा।'

'उसके पहले तुम अस्पताल भी आ सकते हो।' वैद की आवाज में हल्की सी खुशी थी।

‘इमरान खतरे से बाहर हैं। वो होश में हैं और तुमसे मिलना चाहते हैं।’

विजय ने फोन दूर रखा और कोलिन की तरफ देखा, जिसके चेहरे पर खीझ साफ दिख रही थी।

उसने कहा, ‘खुश हो जाओ, यार। तुम्हारी यहां जरूरत है।’ वो मुस्कुराया ताकि माहौल को थोड़ा हल्का बनाया जा सके। ‘तुम दावा करते हो ना कि तुम्हारे पास मुझसे ज्यादा दिमाग है। तो अब साबित करो। एलिस और डॉक्टर शुक्ला की मदद करो इस पहेली को सुलझाने में। ऐसा करके तुम मेरी सबसे ज्यादा मदद करोगे।’

कोलिन तुरंत जवाब नहीं दे पाया। वो विजय के फैसले को स्वीकार करने की कोशिश कर रहा था। वो अपने दोस्त को जानता था। एक बार उसका मन बन गया तो फिर दुनिया की कोई ताकत उसे हिला नहीं सकती। वो जानता था कि उसे विजय को अकेले ही जाने देना पड़ेगा। आखिरकार उसने सहमति जताते हुए कहा। ‘मैं इस फैसले से खुश तो नहीं हूं। लेकिन तुम यही चाहते हो...’ वो रुका और विजय को गले लगाकर कहा। ‘अपना ख्याल रखना यार, मैं वहां नहीं रहूंगा यह करने के लिए।’

विजय ने बाकी सभी की तरफ देखकर सिर हिलाया और स्टडी रूम से बाहर निकल गया। वो जानता था कि यह एक जुआ है। लेकिन क्या पासा उसके पाले में आएगा?

खुफिया ब्यूरो मुख्यालय, नई दिल्ली

विजय और वैद कॉन्फ्रेंस रूम में मॉनिटर पर पैटरसन की छवि निहार रहे थे। इस एफ्रो—अमेरिकी का सामान्यतया सख्त रहने वाला चेहरा आधी रात में जगाए जाने की वजह से पैदा खिन्नता के चलते और भी कठोर दिख रहा था।

‘बेहतर हो कि जरूरी बात की जाए,’ उसने कॉन्फ्रेंस रूम में बैठे दोनों व्यक्तियों को चेतावनी के लहजे में कहा। ‘मुझे कल राष्ट्रपति से मिलना है और मेरे पास सोने के लिए ज्यादा वक्त नहीं बचा है। मैं सोया ही था कि तुम लोगों का फोन आ गया।’

वैद ने तेजी से उसे पूरे दिन की सभी घटनाओं का ब्यौरा दे दिया जैसा विजय ने उसे बताया था। उसकी बातें सुनते हुए पैटरसन का चेहरा कठोर होता जा रहा था और आंखों में अंगारे चमकने लगे थे। नेवी सील होने की वजह से वो सख्त अनुशासन का पालन करता था और उन लोगों को बिलकुल पसंद नहीं करता था जो नियमों के मुताबिक नहीं चलते थे।

पैटरसन ने वैद की बात खत्म होने के बाद विजय की तरफ गुस्सैल निगाहों से देखा लेकिन तुरंत कुछ नहीं कहा। ऐसा लग रहा था कि वो उन सूचनाओं पर चिंतन कर रहा है जो उसे अभी—अभी मिली हैं।

‘पहले सबसे जरूरी बात,’ पैटरसन कुछ पलों के बाद बोला। ‘मुझे किदवई से माफी मांगनी है। वो सही था। टाइटन फार्मास्युटिकल्स और ग्रीस की घटनाओं में कोई संबंध जरूर

है। हमें इस बारे में गहराई से छानबीन करनी है और मैं सुबह इस बारे में कोई फैसला ले लूंगा। लेकिन हमें होशियार रहना होगा। हो सकता है कि इसमें खुद वॉलेस का हाथ हो। और अगर वो इन सबमें शामिल नहीं है तो हमें इस बारे में सावधानी बरतनी होगी कि हम किससे बात करते हैं और क्या बातें बताते हैं। यह एक संवेदनशील मामला है। वॉलेस कॉन्ग्रेस के लोगों, सीनेटरों और यहां तक कि प्रेसिडेंट का भी करीबी है। हम कुछ भी अटकलों के आधार पर नहीं कर सकते।'

विजय और वैद ने हामी भरी। वो इंतजार कर रहे थे कि पैटरसन अपनी बात आगे बढ़ाए।

'अब अगली बात,' पैटरसन ने विजय की तरफ भेदने वाली निगाहें डालीं। 'मैं पहेलियों को सुलझाने की तुम्हारी योग्यता की तारीफ करता हूं, लेकिन तुम्हें आतंकवादियों के साथ सौदा करने का अधिकार नहीं है। या अनुभव भी नहीं है। तुम शायद भूल गए हो कि तुम टास्क फोर्स के सदस्य हो। और मैं फैसला लेता हूं कि टास्क फोर्स में कौन क्या करेगा। तुम नहीं। तुम अपने मन से कोई भी फैसला नहीं ले सकते।'

वो रुका, जैसे अपने शब्दों को तौल रहा हो। 'लेकिन अब चूंकि तुमने फैसला ले लिया है,' उसने अपनी बात जारी रखी, 'हमारे पास इस मामले में ज्यादा विकल्प नहीं हैं। लेकिन मैं चाहता हूं कि तुम इसे समझो। अगर तुमने इसे अपनी मंगेतर के लिए किया है, तो तुम मूर्ख हो। आशावादी मूर्ख। तुम्हारी मंगेतर मरने वाली है। हां, वो अभी जिंदा हो सकती है, लेकिन अगर तुम सोचते हो कि तुमसे रहस्य जानने के बाद वो लोग उसे तुम्हें सौंप देंगे, तो तुम्हें दोबारा सोचने की जरूरत है। तुम भी मरोगे और वो भी। इसलिए अगर तुम ऐसा कर रहे हो तो यह उसके लिए नहीं। तुम यह टास्क फोर्स के लिए कर रहे हो। तुम सुनिश्चित करोगे कि अफगानिस्तान की कंदराओं में या जहां कहीं भी जो कुछ भी मिले, वो दुनिया के लिए कोई खतरा ना बने। इसी मकसद से टास्क फोर्स बनाया गया है। और यह तुम्हारी जिम्मेदारी है। बात समझ में आई ना?'

विजय ने मुंह में भर आए थूक को निगला। पैटरसन की बातों की सचाई उसके दिमाग में घंटी बजाने लगी थी। पैटरसन के दिए गए तर्कों को उसका पूरा वजूद नकारने की कोशिश कर रहा था लेकिन कहीं गहरे वो भी जानता था कि टास्क फोर्स का यह लीडर सही कह रहा है।

अपने आंसुओं को रोकने की कोशिश करते हुए उसने जवाब दिया। 'समझ गया, अच्छी तरह।'

पैटरसन ने अपनी बात फिर आगे बढ़ाई। 'अब, अगर इस महान रहस्य का कोई भी संबंध जैविक आतंकवाद से है, हम चुपचाप बैठे नहीं रह सकते और इन लोगों को मनमानी करने की इजाजत नहीं दे सकते। हम अभी यह तक नहीं जानते कि ये लोग कौन हैं।'

'तो आप क्या सुझाव दे रहे हैं?' वैद समझ गया कि पैटरसन क्या कहना चाहता है।

‘तुम अपने सौदे के मुताबिक आगे बढ़ो,’ पैटरसन ने विजय को निर्देश दिया। ‘हम तुम्हारी हिफाजत यहां से करेंगे।’

विजय के चेहरे पर उलझन दिखने लगी। ‘आप ऐसा कैसे करेंगे? आप अभी तक यह नहीं जानते कि राधा को कहां रखा गया है।’

‘ध्यान से सुनो।’ पैटरसन ने अपनी आवाज धीमी की और उन्हें बताया। जब उसने अपनी बात पूरी कर ली, उसने विजय की ओर तीखी दृष्टि डाली। ‘वहां सावधान रहना लड़के। हम चमत्कार नहीं करते हैं। पिछले हफ्ते हमने टास्क फोर्स का एक सदस्य करीब—करीब खो दिया था। मैं नहीं चाहता कि अब मैं दो और सदस्यों को खो दूं।’

47

जलालाबाद, अफगानिस्तान

विजय कूपर के साथ लैंड रोवर में बैठा था जो जलालाबाद की गलियों में फर्राटे भर रही थी। जब वो नई दिल्ली के हवाई अड्डे पर पहुंचा था, उसे धक्का देते हुए गल्फस्ट्रीम जी550 जेट में ले जाया गया था, जो वहां इंतजार कर रहा था। वो लोग दिल्ली से काबुल गए थे, जिसमें उन्हें 90 मिनट लगे थे, और उनके साथ कूपर की टीम के पांच सदस्य थे——हट्टे—कट्टे और बलिष्ठ——हथियारों से लैस।

जैसे ही विमान काबुल में उतरा, विजय ने गौर किया कि टर्मैक पर एक और प्राइवेट जेट खड़ा है। यह था गल्फस्ट्रीम 650ईआर, जो लंबी दूरी के सफर के लिए इस्तेमाल होता है। वो सोच रहा था कि आखिर यह है किसका। कूपर ने उसे बताया था कि वो लोग सीधे जलालाबाद नहीं जा सकते क्योंकि हवाई अड्डे का इस्तेमाल सैनिक उद्देश्य से और संयुक्त राष्ट्र के हवाई जहाजों के लिए हो रहा था। वहां कमर्शियल एयरलाइनों के दो बड़े विमान तो थे, लेकिन आसपास कोई छोटा विमान नहीं दिख रहा था।

इमीग्रेशन से निकलने के बाद, वो लोग एक लैंड रोवर में बैठे थे जो उन्हें सड़क मार्ग से 90 मिनट में जलालाबाद पहुंचाने वाली थी। विजय ने वैसे सफर की उम्मीद नहीं की थी जैसा उसे मिला। सड़क अपने आप में चिकनी और पक्की थी, जिसे 2006 में यूरोपीय यूनियन के एक प्रोजेक्ट के तहत बनाया गया था। लेकिन सड़क की यह खासियत शायद अफगानी ड्राइवरों को इस बात के लिए प्रेरित करती थी कि वो आसपास के प्राकृतिक दृश्यों के रेखाचित्रों को चुनौती दें।

एक ओर जहां वो काबुल की पहाड़ियों के बीच के रास्ते में, काबुल नदी से 2000 फीट ऊपर, फैले हुए दिलकश नजारों से अपनी नजरें नहीं हटा पा रहा था, इस पूरे सफर में मौत और खतरे उनके पीछे लगे थे। हाइवे में सिर्फ दो लेन थीं, बमुश्किल इतनी जगह थी कि दो कारें आसपास चल सकें। अंदरूनी लेन पर, सड़क के ऊपर एक उजाड़ सीधी चट्टान थी, जिसकी ढाल करीब—करीब सीधी थी। बाहरी लेन पर मुश्किल से एक फुट ऊंचा हाशिया बना था, जिसके आगे खाली जगह और फिर ढाल थी जो सीधे घाटी में पहुंचती थी।

पुरानी लाडा कारें——जो सोवियत प्रभाव की पहचान बनकर रह गईं थीं——जर्जर बसें और टोयोटा टैक्सियां उसी सड़क पर रफ्तार और जगह के लिए एक दूसरे से मुकाबला कर रही थीं, मानो वो इस सड़क का ज्यादा से ज्यादा फायदा उठा लें; इसके पहले कि यह

सड़क फिर से गड्ढ़ों में उसी तरह बदल जाए जैसे सोवियत हमले के बाद हो गई थी। स्थानीय कारें लैंड रोवर को पार करती जा रही थीं, तीखे मोड़ और घुमावदार रास्ते पर, एक दूसरे से कुछ ही मिलीमीटर की दूरी पर ट्रैफिक के बीच से निकलते हुए तेज रफ्तार के साथ। सिर्फ सामानों से लदे ट्रैक्टर ही इस सड़क पर धीमे चल रहे थे, जैसे उनके लिए समय कोई मायने नहीं रखता।

सफर में दो बार विजय को इस हाइवे पर रोजाना होने वाले हादसों के सबूत दिख गए। पहले उसे एक नाले की पेंदी में एक कार के मुड़े—तुड़े अवशेष दिखे। फिर उसे दिखा कि किस तरह एक कंटेनर ट्रक और सेडान कार आपस में भिड़े पड़े थे। साफतौर पर बदकिस्मत सेडान ड्राइवर समय पर अपनी लेन में लौट पाने में नाकाम रहा था और तेज रफ्तार से आते हुए ट्रक से टकरा गया था। इस हादसे ने हाइवे पर बाधा खड़ी कर दी थी और कार और ट्रक के आपस में उलझे अवशेषों के पास से गुजरते हुए ट्रैफिक की रफ्तार बेहद धीमी हो जाती थी।

हालांकि, आखिरकार वो जलालाबाद पहुंच गए थे और अब वो स्थानीय साथियों से मिलने जा रहे थे, जो उनके साथ सुबह कुनार घाटी चलने वाले थे।

लैंड रोवर एक पुरानी बिल्डिंग के पास आकर रुकी, इसका प्लस्तर उखड़ रहा था और खिड़कियों के कांच टूट रहे थे। साफतौर पर इसे रख—रखाव और मरम्मत की जरूरत थी। लेकिन ऐसा लगता था कि आराम और सुख—सुविधा इन लोगों की प्राथमिकता नहीं थी। विजय को एक बार फिर यह सोचकर आश्चर्य हुआ कि आखिर कूपर किन लोगों के लिए काम करता है।

जब वो लोग इस दोमंजिला भवन के हॉल में पहुंचे, जिसने करीब—करीब पूरे ग्राउंड फ्लोर को घेर रखा था, विजय को अपने सवाल का जवाब मिलता सा दिखा। कपड़े के एक सोफे पर, जो अब कीड़े खा चुके थे और कभी हल्का पीले रंग का रहा होगा, एक लंबा शख्स बैठा था, जिसका ललाट ऊंचा था, नाक किसी पक्षी के चोंच की तरह मुड़ी थी और बाल सिल्वर ग्रे रंग के थे। उसकी भूरी आंखों पर बिना रिम के चश्मे चढ़े थे और उसकी नजरें विजय पर ही जमी थीं।

उसके सामने की मेज पर मेटल प्लेट थी जो विजय ने राष्ट्रीय संग्रहालय में देखी थी—— वही प्लेट जिसे सिकंदर ने व्यास नदी के पास जियस की वेदी की नींव में दबा दिया था।

‘गुड इवनिंग, क्रिश्चियन,’ कूपर ने उस आदमी का सिर हिलाते हुए अभिवादन किया जिसने बिना मुस्कुराए सिर हिलाकर जवाब दिया।

बिन बोले भी उस आदमी ने अपनी ताकत और अधिकार का प्रदर्शन कर दिया था। विजय नहीं जानता था कि वो कौन है, लेकिन निस्संदेह वो कूपर का बॉस था। इस प्रोजेक्ट के पीछे इसी का हाथ था।

वो यह भी नहीं जानता था कि इस अजनबी की यहां मौजूदगी अच्छी है या बुरी। लेकिन

वो उम्मीद कर रहा था कि उसे कुछ सवालों के जवाब जरूर मिलेंगे जिन्होंने उसे अभी तक परेशान कर रखा है।

'आखिरकार,' लंबे शख्स ने विजय को निहारा, उसकी भूरी आंखें विचारपूर्वक उसे आंक रही थीं। उसने पास ही रखे दूसरे सोफे की तरफ इशारा किया, जो उतना ही जर्जर था जिस पर वो बैठा था। विजय दूसरे सोफे पर बैठ गया।

'मेरा नाम है क्रिश्चियन वान क्लुएक,' उस अजनबी ने अपना परिचय दिया। 'तुमने मेरे बारे में नहीं सुना है ना?'

विजय ने अपना सिर हिला दिया। उसका नाम अपरिचित था।

'कोई फर्क नहीं पड़ता। मैं जानता हूं कि तुम कौन हो,' वान क्लुएक ने कहा। उसने कूपर की तरफ देखा। 'बढ़िया काम किया, कूपर तुमने। हमेशा की तरह भरोसेमंद निकले। क्या तुम कल के अभियान के लिए आदमियों की व्यवस्था करोगे, तब तक मैं इससे कुछ बात कर लूं?'

कूपर ने हामी भरी और वो बाहर निकल गया, वान क्लुएक विजय की तरफ घूमा, जो सोच रहा था कि काबुल एयरपोर्ट पर खड़ा गल्फस्ट्रीम जेट इसी आदमी का रहा होगा। था कौन यह आदमी? इस आदमी का लहजा तो यूरोपीय है। शायद जर्मनी या ऑस्ट्रिया से हो। कोई संदेह नहीं कि बेहद अमीर होगा। और वो विजय को जानता कैसे है?

'तुम हमारे लिए एक कांटे की तरह हो,' वान क्लुएक ने विजय को बताया। हालांकि यह बात बोलते हुए भी वो नाराज या खीझा हुआ नहीं लग रहा था। 'मैंने पिछले साल तुम्हारी वजह से अपना एक अच्छा दोस्त खो दिया। और ऑर्डर ने अपना एक वफादार सदस्य।' वो अपना सिर हिलाते हुए बोला। 'मैं तुम्हें हजार सालों में भी नहीं भूल सकता।' अभी भी उसके लहजे या भाव—भंगिमा में कोई नाराजगी नहीं थी। और इस वजह से उसके शब्द और भी डरावने लगने लगे थे।

विजय इन शब्दों को सुनकर अंदर से कांप सा गया था। 'अब यह मायने नहीं रखता,' वान क्लुएक ने बोलना जारी रखा। 'वो सब अतीत की बात थी और मैं अतीत में जीने में यकीन नहीं रखता। भविष्य हमारा इंतजार करता है। और हमें यही देखना चाहिए कि आगे क्या होने वाला है। काफी कुछ है हासिल करने के लिए। हां, अतीत महत्वपूर्ण होता है, नहीं?' उसकी निगाहें विजय को भेद रही थीं। 'हमें अतीत से सीखना चाहिए और अपना भविष्य सुरक्षित करना चाहिए।'

विजय को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि यह आदमी क्या बात कर रहा है। उसके लिए ये सारी बातें बकवास सी थीं। लेकिन उसके सामने बैठा यह आदमी बकवास तो नहीं कर रहा होगा। विजय को वो आदमी पूरी सफाई के साथ, योजनाबद्ध तरीके से, हर कदम को आंककर उठाने वाला लगा। आवेग में कोई कदम नहीं।

'कूपर ने मुझे बताया कि तुमने एक छंद का मतलब निकाल लिया है,' वान क्लुएक ने

अपनी बात जारी रखी, विजय की हैरानी से बेपरवाह। 'तो क्या है कुनार घाटी में?' वो आगे की तरफ झुका और विजय की आंखों में झांकने लगा। 'मुझे बताओ।'

पहली बार अपनी बातचीत में इस यूरोपीय ने ऐसा कुछ कहा जिससे विजय परिचित था। लेकिन अभी भी, विजय के पास कोई जवाब तैयार नहीं था।

'मैं नहीं जानता,' उसने कंधे उचकाते हुए जवाब दिया। 'छंद सिर्फ जलालाबाद की जगह का वर्णन करता है। कुनार घाटी की जगह इस इलाके में सिकंदर के लिए गए मार्ग पर आधारित है।' उसने समझाया कि कैसे उन लोगों ने यह निष्कर्ष निकाला कि कुनार घाटी में ही उस रहस्य के होने की बड़ी संभावना है।

वान क्लुएक ने विजय की बातों पर विचार किया। 'तो तुम बिलकुल सही जगह नहीं जानते। लेकिन तुम्हारा मानना है कि यही वो जगह है जहां हमारी तलाश खत्म होती है।'

विजय जवाब देने के पहले हिचकिचाया। वो इसी मौके का इंतजार कर रहा था। 'अगर मुझे पता चले कि आप ढूंढ़ क्या रहे हैं तो मुझे इससे काफी मदद मिलेगी। अभी हम छंदों की व्याख्या बिना इस जानकारी के कर रहे हैं कि वो किस ओर ले जाएंगे। सिकंदर जानता था। अगर हम भी जानते होते तो शायद हम इन छंदों का मतलब और जल्दी निकाल पाते।'

वो वान क्लुएक की तीखी निगाहों के सामने निडर बनने की कोशिश कर रहा था। पैटरसन ने उसे बताया था कि वो और राधा अब मरने वाले हैं। और अगर वो मरने ही वाला है, तो वो इसके पहले सभी जवाब जानकर रहेगा।

वान क्लुएक सोच में पड़ गया। उसने विजय से ऐसे साहस की उम्मीद नहीं की थी। अंत में उसने सिर हिलाया और मुस्कुरा दिया; एक फीकी मुस्कान। 'शायद तुम सही हो। हो सकता है कि तुम अगर कुछ और जानो तो ज्यादा काम के साबित हो।'

विजय इंतजार कर रहा था और वो यूरोपीय अपने दिमाग में चीजों को तौल रहा था कि उसे क्या बताना चाहिए और क्या राज ही रहने देना चाहिए।

48

सिकंदर का सच

‘मुझे लगता है कि तुमने सिकंदर के बारे में कुछ सच तो पता लगा ही लिया है,’ वान क्लुएक आखिरकार बोला। ‘सच यह है कि उसके जीवन के बारे में हम जितना भी जानते हैं, वो उन तथ्यों पर आधारित है जिन्हें तोड़ा—मरोड़ा गया है, ज्यादातर मौकों पर उस आदमी की सोच, झुकाव और उद्देश्य की वजह से, जिसने उन्हें दर्ज किया है। नतीजतन, हमारे लिए यह पता लगाना बहुत मुश्किल है कि उस शख्स के बारे में ऐतिहासिक रूप से सच क्या है और क्या सिर्फ गौरवान्वित करने वाली कहानी है।’

उसने इंतजार किया कि विजय उसकी बात को समझने का इशारा करे। जब विजय ने सिर हिलाया, उसने अपनी बात आगे बढ़ाई। ‘और यहीं क्यूब जैसी कलाकृतियां काम आती हैं। उनकी मदद से हम कहानी के उन हिस्सों की पुष्टि कर सकते हैं जिनके बारे में अब तक माना जाता है कि वो सिकंदर के किसी घोर प्रशंसक या चापलूस ने चमत्कार की तरह पेश करते हुए लिखा है।’

विजय ने फिर से सिर हिलाया, उसे याद आया कि कैसे एलिस ने भी उसकी व्याख्या पर आपत्ति जताई थी। सिकंदर के बारे में दर्ज चीजों को इतना बढ़ा—चढ़ाकर पेश किया गया है कि उसके बारे में हर लिखी चीज पर भरोसा करना भी मुश्किल है।

वान क्लुएक ने अपना हाथ आगे बढ़ाया। ‘क्यूब देना।’

विजय ने उसे क्यूब दे दिया और देखा कि उसने उसे मेटल प्लेट में जमा दिया। वो पूरी तरह से उसमें जम गया।

‘तो आप कैसे जानते हैं कि सिकंदर की कहानी का कौन सा हिस्सा सच है और कौन सा हिस्सा सिर्फ कल्पना?’ विजय उत्सुक दिख रहा था। इस आदमी को इतनी जानकारी और ताकत कहां से मिली है?

वान क्लुएक के चेहरे पर बनावटी हंसी आ गई। ‘मैं तुम्हें एक चीज बताता हूं। ओलिंपियास हमारे ऑर्डर की सदस्य थी। और वो इस क्यूब के बारे में जानती थी क्योंकि इसे ऑर्डर के ही शुरुआती सदस्यों ने बनाया था। हजारों साल पहले।’

विजय स्तब्ध रह गया। अगर वान क्लुएक जो कह रहा है, वो सच है तब तो ऑर्डर, जो कुछ भी हो अशोक के ब्रदरहुड से कहीं ज्यादा प्राचीन है, जिसे उन लोगों ने पिछले साल ढूंढ़ा

था।

वान क्लुएक विजय के चेहरे पर ताज्जुब को देखकर खुश हो गया था। 'इसलिए हम जानते थे कि सिंधु की भूमि में सिकंदर का अभियान कोई बनावटी कहानी नहीं है। हमने ही उसे वो चीजें उपलब्ध कराई थीं जिनकी मदद से वो उसे तलाश पाया था, जिसे वो चाहता था।'

विजय को उसकी इस बात में एक कमजोर कड़ी दिखी। 'यह मुझे समझ नहीं आया,' वो पलटकर बोला। 'आज, आप वो रहस्य ढूंढ़ रहे हो जो उसे मिला था। लेकिन अगर आपके पास ढाई हजार साल पहले उसे ढूंढ़ने के साधन थे, जैसा आप दावा कर रहे हैं, तो फिर आप इसे ढूंढ़ क्यों नहीं पाए? क्यों सिकंदर को पहले थाली में परोस दिया, फिर उसे मेटल प्लेट छिपाने दिया, और अब दो—ढाई हजार साल बाद फिर से उसकी तलाश कर रहे हैं?'

वान क्लुएक का चेहरा सख्त हो गया। 'वो इसलिए कि ओलिंपियास ने हमें धोखा दिया था। यह रहस्य सिकंदर के पहले भी हजारों सालों से सुरक्षित था। याद रखो कि यह ईश्वरों का रहस्य है। सिंधु की भूमि के ईश्वर। क्यूब और मेटल प्लेट सिर्फ इसी मकसद से बनाए गए थे कि रहस्य सुरक्षित रहेगा। और वैदिक पुरोहितों का एक छोटा समूह बनाया गया था जो इसके प्रहरी थे। सिर्फ उन्हीं की पहुंच इस रहस्य तक थी। ओलिंपियास ने उनमें से एक पुरोहित को ऑर्डर की उत्पत्ति को समझने के बहाने अपने दरबार में बुलाया था। और किसी तरह उसने पुरोहित को रहस्य की जगह बताने के लिए मना लिया था। इस अपराध के लिए ऑर्डर ने सिकंदर की मौत के बाद उसकी सुरक्षा हटा ली थी। अगर ऑर्डर उसकी सुरक्षा करता तो वो इतनी अपमानजनक मौत कभी नहीं मरती।'

'यह ऑर्डर क्या है जिससे आप जुड़े हैं?' विजय ने एक और सवाल दाग दिया।

वान क्लुएक ने न में अपना सिर हिलाया। 'मैं तुम्हें पहले ही काफी कुछ बता चुका हूं। बस इतना जान लो कि हम उतने ही पुराने हैं जितनी कि मानव जाति। एक वक्त था जब पूरी दुनिया हमें जानती और हमसे डरती थी। लेकिन हमने फैसला किया कि हम अपना प्रभाव और ताकत लोगों की आंखों और सोच से दूर रहकर बेहतर तरीके से हासिल करेंगे।'

आगे बोलने के पहले वो रुका। 'खैर, सिकंदर ने रहस्य ढूंढ़ तो लिया था लेकिन चीजें एकाएक बिगड़ गईं और वो मर गया। तुम इतिहास तो जानते ही हो। उसकी शव यात्रा पर टोलेमी ने कब्जा कर लिया था और उसकी ममी को अलेक्जेंड्रिया में दफना दिया गया, जहां वो चौथी सदी तक थी।'

'और तब वो अचानक रहस्यपूर्ण तरीके से गायब हो गई,' विजय अपनी रिसर्च को याद करते हुए बुदबुदाकर बोला।

'यह गायब नहीं हुई थी,' वान क्लुएक ने उसे आत्मसंतुष्ट स्वर में बताया। 'ईसाई धर्म दुनिया भर में फैल रहा था। हमने इसके संकेत देख लिए थे। जो कुछ भी गैर—ईसाई ईश्वरों से जुड़ा था, वो नष्ट किया जा रहा था। और सिकंदर को ईश्वर की तरह पूजा जा रहा था।

इसके पहले कि उसकी कब्र को अपवित्र किया जाता और उसकी ममी को नष्ट किया जाता, हमने इसे खुद संभालने का फैसला किया। हमने अलेक्जेंड्रिया से ममी को हटाया और एक दूसरे गुप्त स्थान पर दफना दिया। हम मानते थे कि किसी को भी इस जगह के बारे में पता नहीं है। लेकिन, उस वक्त ऑर्डर की जानकारी के बगैर, एक नक्शा बना लिया गया था। ऐसा नक्शा जो कई सौ सालों तक सबकी नजरों से दूर रहा। तब तक, जब तक हमें, संयोग से, कुछ दशकों पहले उसका पता नहीं चला। हमने ममी की खुदाई की, जो हमारे लिए एक वरदान साबित हुआ। सदियों से उसके रहस्य की कहानी, जो उसने ढूंढ़ निकाला था, एक मिथक बनी हुई थी। हम यकीन ही नहीं करते थे कि यह मुमकिन भी हो सकता है। इसलिए हमने ममी का परीक्षण किया। और हमें पता चला कि मिथक सच है। ईश्वर का रहस्य सिर्फ एक मिथक भर नहीं है। और सिकंदर ने, सचमुच इसे ढूंढ़ निकाला था। और तब हमने फैसला किया कि हम भी इस रहस्य का पता लगाएंगे। लेकिन हमें क्यूब और मेटल प्लेट नहीं मिल रहे थे। हम जानते थे कि अंतिम बार वो तब देखे गए थे जब उस पुरोहित ने ओलिंपियास से मुलाकात की थी। लेकिन वो उस मुलाकात के बाद गायब हो गया था और कोई नहीं जानता था कि उसका क्या हुआ। जब हमने सुना कि ओलिंपियास की कब्र मिलने की संभावना है, हमें लगा कि हो सकता है वो क्यूब और मेटल प्लेट उसके साथ दफन मिल जाए।'

'इसलिए तुमने कूपर को खनन टीम में शामिल कराया और स्तावरोस को अपने साथ मिला लिया ताकि कलाकृतियां हासिल की जा सकें।'

'बिलकुल। तो अब तुम जान गए हो।'

विजय की भौंहें चढ़ीं। 'इससे हमारे उस सवाल का जवाब तो मिलता है कि ये सब चल क्या रहा है। मैं इससे यह भी अनुमान लगा सकता हूं कि खनन और क्लीनिकल ट्रायल में क्या संबंध है। तुम लोगों ने सिकंदर की ममी का परीक्षण किया... और उससे जो नतीजे निकले उनकी पुष्टि के लिए तुम्हें क्लीनिकल ट्रायल करने की जरूरत थी, ठीक है ना?'

वान क्लुएक फिर से मुस्कुराया। 'तुम करीब तो हो, लेकिन पूरे तौर पर सही नहीं हो। ट्रायल जरूरी थे क्योंकि सिकंदर की ममी पर हमारे परीक्षण के जो नतीजे निकले उनके लिए हम तैयार नहीं थे। देखो, क्यूब उस मिथक के आधार पर बनाया गया था जो तुम लोगों के महाकाव्य महाभारत से लिया गया है। इस महाकाव्य में एक कहानी है जो साफतौर पर उस चीज का वर्णन करती है जो सिकंदर को मिली थी और उन परीक्षणों का भी, जो हमने सिकंदर पर किए थे। उन परीक्षणों के नतीजों को समझने के लिए हमें जिंदा लोगों पर क्लीनिकल ट्रायल करने की जरूरत थी।'

विजय ने अपना दिमाग दौड़ाया, वो उस मिथक के बारे में सोचने की कोशिश कर रहा था, जिसने क्लीनिकल ट्रायल की जरूरत को जन्म दिया, और उस खोज के बारे में भी, जो दो हजार साल पहले मरे एक आदमी की लाश के परीक्षण से हुई। लेकिन वो कुछ भी ऐसा नहीं सोच पाया।

‘मुझे नहीं मालूम तुम किस बारे में बात कर रहे हो,’ आखिर में उसने बोला।

‘इस मिथक को तुम लोग समुद्रमंथन कहते हो।’ वान क्लुएक का इस संस्कृत शब्द का उच्चारण बिलकुल सही था लेकिन विजय का ध्यान उस पर नहीं गया। उसका पूरा ध्यान महाकाव्य के सबसे मशहूर मिथक का जिक्र होते ही उसकी तरफ चला गया था।

‘लेकिन... कैसे?’ वो अभी भी समझ नहीं पा रहा था। ‘वो मिथक पूरी तरह काल्पनिक है——एक पहाड़ की मदद से और वासुकी को रस्सी की तरह इस्तेमाल करके सागर का मंथन, जिससे अमृत मिला। इसमें तो कोई विज्ञान नहीं दिखता।’

वान क्लुएक सहानुभूतिपूर्वक मुस्कुराया। ‘हर किसी को महाभारत को महाकाव्य या काल्पनिक कहानी की तरह देखने की इतनी आदत हो गई है कि वो ये सोच भी नहीं सकते कि इसमें विज्ञान का बेहतरीन इस्तेमाल भी हुआ हो सकता है।’

विजय इंतजार कर रहा था और अपनी उत्तेजना को छिपाने की कोशिश कर रहा था। वो जानता था कि वो महाभारत के एक और रहस्य को जानने की कगार पर है जो दो हजार सालों से छिपा पड़ा है।

‘मैं तुम्हें इसे समझाता हूं।’ वान क्लुएक थोड़ा सा आगे की ओर झुका और बोलने लगा।

49

पांचवां दिन
रहस्य की एक झलक

राधा ने अप्रत्याशित रूप से सक्सेना को अपनी तरफ मुस्कुराते देखकर आश्चर्य से पलकें झपकाईं। वो उसके कमरे में एकाएक आ गया था और बताया था कि वो उसे मेडिकल सेंटर दिखाने ले जाएगा।

'मुझे कहा गया है कि तुम्हारा अच्छे से ख्याल रखा जाए,' उसने नरम शब्दों में उसे बताया था। 'वो क्या है कि कूपर के तुम्हें यहां लाने से बहुत बड़ा फायदा हुआ है। ऐसा लग रहा है कि हम लोग प्रोजेक्ट के इस हिस्से का काम अब जल्दी खत्म कर सकेंगे। इसका मतलब है कि मेरा काम भी जल्दी ही खत्म हो जाएगा।'

राधा उसके शब्दों पर विचार ही कर रही थी कि उसने उसे कमरे से बाहर निकाला और गलियारों की भूल—भुलैया से ले जाने लगा, जिससे वो पहले कभी नहीं गुजरी थी। लेकिन सभी विचार एकाएक उसके दिमाग से उड़ गए, जैसे ही वो एक आयताकर प्रांगण के चारों तरफ फैली एक लंबी बालकनी में पहुंचे। छत पर काफी ताकतवर लाइटें लगी थीं और वो बालकनी में लगे लैंप की मदद से उस विशालकाय स्थान पर उजाला कर रही थीं। बालकनी प्रांगण के चारों तरफ फैली थी और बीच में कोई रुकावट नहीं बनी थी। उसने गिना——बिल्डिंग में आठ मंजिलें थीं।

राधा आश्चर्य और भय से उस भवन की विशालता के बारे में सोच रही थी। उसे अब तक एक गलियारे में सिर्फ उसकी कोठरी से शौचालय तक आने—जाने की इजाजत थी। वैसे उसने इस कैद में रहते हुए शौचालय और स्नानघर में दूसरे कैदियों को भी देखा था, लेकिन उसने कभी नहीं सोचा था कि बिल्डिंग इतनी बड़ी होगी।

'ढाई सौ कोठरियां हैं यहां,' सक्सेना ने उसके चेहरे पर अचरज के भाव देखकर उसे बताया। 'इस बिल्डिंग की आठ मंजिलें जमीन के नीचे हैं——जो तुम अपने सामने देख रही हो। दो मंजिलें जमीन से ऊपर हैं। बाहर से देखने में यह छोटी सी साधारण बिल्डिंग लगती है। कोई नहीं जानता कि हम यहां क्या करते हैं।'

'कूपर कौन है?' राधा ने पूछा, अब तक वो शुरुआती आश्चर्य से उबर चुकी थी।

'तुम नहीं जानती? मुझे लगा कि उस अमेरिकी पुरातत्वविद ने तुम्हें बताया होगा। वो

उसकी खनन परियोजना में को—डायरेक्टर था। उसे हम लोगों ने वहां भेजा था।'

यह राधा के लिए एक और झटका था। तो क्या इन लोगों और ग्रीस में एलिस के साथ हुई घटनाओं में कोई संबंध था? लेकिन क्या? और "हम लोगों" से क्या मतलब है?

उसके दिमाग में एक विचार कौंधा। उसे विजय के साथ अपनी बातचीत याद आई जब बाकी सभी लोग संग्रहालय की तरफ जा रहे थे। विजय ने उसे यूमेनीज की डायरी और "ईश्वर के रहस्य" की सिकंदर की तलाश के बारे में बताया था। क्या सक्सेना के कामकाज और ग्रीस में खुदाई में यही संबंध था?

'तो तुम उस राज को जानने की कोशिश कर रहे हो जो क्यूब की पहेलियों में छिपा है?' उसने अपने मन की बात रखी, बिना डायरी की बात बताए। अगर यह गुप्त था तो वो सक्सेना को इस बारे में नहीं बताना चाहती थी।

सक्सेना ने उसकी तरफ प्रशंसात्मक दृष्टि से देखा। 'तुम उससे कहीं ज्यादा जानती हो जितना बताती हो। और तुम सही हो। मैं अब तक के सबसे बड़े रहस्य पर काम कर रहा हूं जो दुनिया ने कभी नहीं देखा है। ऐसा रहस्य जो ऑर्डर को दुनिया पर राज करने में सक्षम बना देगा और किसी को इस बात का अहसास भी नहीं होगा। हम डोर खींचेंगे और लोगों को अपनी मर्जी पर कठपुतलियों की तरह नचा सकेंगे।'

राधा के मन में कौतूहल था। उसे और ज्यादा जानना था। सक्सेना किस बारे में इतना बढ़—चढ़कर बोल रहा था? उसने सक्सेना को चुनौती देने का फैसला कर लिया। उसने सक्सेना का मजाक उड़ाने के अंदाज में कहा, 'मुझे तो यहां यही दिख रहा है कि क्लीनिकल ट्रायल चल रहे हैं जिनका अंत लोगों की मौत के रूप में होता है। हर कोई मर जाता है। इसमें बड़ा रहस्य क्या है? क्या ऑर्डर मरे लोगों की दुनिया पर राज करेगा? क्या जब वो रोगाणु, जिसे तुम लोगों ने ढूंढ़ा है, दुनिया की आबादी को खत्म कर देगा, तो क्या ऑर्डर इससे बच पाएगा? जब कोई रहेगा ही नहीं तो तुम लोग राज किस पर करोगे?'

सक्सेना ने उसे घूरा। 'हम लोगों को मारने नहीं जा रहे हैं,' उसने जोर देते हुए कहा। 'हम जीवन देंगे, लेंगे नहीं।'

राधा ने उसकी तरफ देखा, साफतौर पर उसके चेहरे के भाव बता रहे थे कि वो इस बात पर यकीन नहीं कर रही है। 'तुम इस बात पर यकीन करना चाहते हो कि ऑर्डर के लिए तुम काफी अहम हो। लेकिन तुम सिर्फ क्लीनिकल ट्रायल कर रहे हो जो नाकाम साबित हो रहे हैं।'

सक्सेना का चेहरा उसके शब्दों को सुनकर गुस्से से तमतमा उठा। वो जिस चीज को हासिल करने की कोशिश कर रहा था, उस पर उसे बेहद गर्व था। वो कामयाबी के काफी करीब था। वो उस सम्मान को पाने के लिए तरस रहा था जिसका वो पात्र था। ऑर्डर को तब तक वो सम्मान हासिल नहीं होगा जब तक कि मिशन पूरा ना हो जाए। लेकिन उसकी अपनी उपलब्धियां काफी बड़ी हैं। और यह औरत, जो उसके काम के बारे में कुछ नहीं

जानती, उसकी उपलब्धियों को नीचा दिखा रही है। वो खुद को काबू में नहीं रख सका।

‘तुम्हें मेरी बात पर यकीन नहीं है?’ उसने राधा को चुनौती भरे शब्दों में कहा। ‘तुम सोचती हो कि यह बस एक तुच्छ वायरस के बारे में है और क्लीनिकल ट्रायल्स का कोई नतीजा नहीं निकलने वाला है? तुम...’

राधा ने उसे बीच में ही रोक दिया। ‘मेरा मानना है कि तुम अपने किसी छोटे मिशन को काफी बढ़ा—चढ़ाकर बता रहे हो। कुछ ऐसा जिसकी अहमियत हो। लेकिन ऐसा है नहीं। मुझे तुम्हारे किसी शब्द पर यकीन नहीं है।’

‘ठीक है, फिर,’ सक्सेना फुफकार उठा, सम्मान और तारीफ सुनने की उसकी भावना उसके दिमाग पर हावी हो गई। यह औरत तो कहीं जाने वाली है नहीं। और कोई तरीका भी नहीं है जिससे कोई उसे ढूंढ़ पाएगा। ‘मेरे साथ आओ। मैं तुम्हें सबूत दूंगा।’

वो राधा को लिफ्ट के पास ले गया और कार्ड रीडर पर अपना एक्सेस कार्ड लगाकर बिल्डिंग की सबसे निचली मंजिल पर जाने के लिए बटन दबाया। लिफ्ट चौंकाने वाली तेजी से नीचे गई और उन्हें उनकी मंजिल पर पहुंचा दिया।

सक्सेना ने उसे संक्षेप में ऑर्डर के बारे में बताया और यह भी समझाया कि ओलिंपियास को क्यूब कैसे मिला था और उसने सिकंदर को कैसे इस बात के लिए राजी किया कि अपनी महत्वाकांक्षा का विस्तार फारस साम्राज्य के आगे भी करे। लिफ्ट का दरवाजा खुला और सामने लंबा, सफेद गलियारा दिखा जिसमें दोनों तरफ दरवाजे बने थे। ज्यादातर दरवाजे बंद पड़े थे लेकिन कुछ खुले हुए थे जिनमें से प्रयोगशालाएं दिख रही थीं जहां तरह—तरह के उपकरण और यंत्र थे, सर्वर और मॉनिटर थे, और सफेद कोट पहने टेक्नीशियन थे।

‘यह है हमारे मिशन के लिए हो रहे कामकाज का केंद्र,’ सक्सेना ने उसे समझाया। ‘फ्रीमैन का प्रोजेक्ट हमारे नीचे दो मंजिलों पर चल रहा है।’ वो राधा को गलियारे के अंत में बने एक ऑफिस में ले गया। इसमें एक बड़ी मेज थी, कमरे के एक कोने में चमड़े की कुर्सी थी, और सामने वाले दीवार पर स्टील का वर्कस्टेशन था। मेज के एक तरफ लंबी किताबों की आलमारी थी, जिसके तख्ते भारी—भरकम मेडिकल किताबों के बोझ से झूल रहे थे। मेज पर एक एलसीडी मॉनिटर, एक कीबोर्ड और एक माउस रखा था।

‘बैठो।’ सक्सेना खुद चमड़े की कुर्सी पर बैठा और अपने सामने मेज की दूसरी तरफ रखी दो कुर्सियों की ओर इशारा करते हुए बोला।

राधा बैठ गई और सक्सेना को कंप्यूटर कीबोर्ड और माउस के साथ खेलते हुए देखती रही।

थोड़ी देर बाद सक्सेना ने मॉनिटर को उसकी तरफ घुमा दिया। उसका बर्ताव ऐसा था जैसे एक वैज्ञानिक अचंभे में पड़े दर्शकों को किसी चीज के बारे में समझाने वाला हो।

‘तुम लोगों का मानना था कि हम लोग रोगाणुओं में बदलाव लाकर जैविक आतंकवाद

फैलाना चाहते हैं,’ वो उपहासपूर्वक मुस्कुराया। ‘यह सचाई से कोसों दूर है। वास्तविकता इसके विपरीत है। हम लोगों को मारना नहीं चाहते। हम उन्हें बीमारियों से बचाना चाहते हैं।’

‘तुम सच में चाहते हो कि मैं इस पर विश्वास करूं,’ राधा ने फिर से मजाक उड़ाते हुए कहा। ‘तुमने और तुम्हारे लोगों ने जितना उत्पात मचाया है, उसके बाद भी तुम चाहते हो कि मैं इसे एक नेक मकसद से किया काम मान लूं?’

सक्सेना ने उसे झिड़कते हुए कहा, ‘हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। तुमने सिर्फ एक पहलू देखा है। हमने जो कुछ भी किया है, सिर्फ पिछले कुछ दिनों में नहीं बल्कि पिछले कुछ दशकों में, वो हमारी कामयाबी के लिए जरूरी था। हम एक बड़ी वैज्ञानिक कामयाबी पाने की कगार पर हैं; ऐसी कामयाबी जो आधुनिक तकनीक तक दे पाने में नाकाम रही है। और, चिकित्सा क्षेत्र में इस क्रांति के पीछे का राज हमारे पास हजारों सालों से रहा है, पहेलियों और मिथकों के पर्दे में छिपा हुआ। ऐसा पर्दा जिसे ज्यादातर लोग पहचान ही नहीं पाते, उसके पार देखने की तो बात ही छोड़ दो।’

‘मुझे बिलकुल समझ नहीं आ रहा तुम क्या बात कर रहे हो,’ राधा ने माना।

‘तुम अखबार तो पढ़ती हो?’

राधा ने सक्सेना की तरफ तीखी नजरों से देखा लेकिन वो गंभीरता से अपना सवाल पूछ रहा था। ‘बिलकुल, मैं पढ़ती हूं,’ उसने जवाब दिया।

‘बहुत अच्छा, फिर तुमने जरूर उस बड़े मुद्दे के बारे में पढ़ा होगा जिसका सामना आज चिकित्सा जगत कर रहा है। यह चिंता काफी लंबे समय से उठाई जाती रही है लेकिन यह मीडिया की नजरों में हाल ही में आया है। सालों से लोग एंटीबायोटिक्स का गलत या जरूरत से ज्यादा इस्तेमाल करते आ रहे हैं। नतीजा क्या होता है? जीवाणु उन्नत हो गए हैं और उन्होंने मानव जाति के लिए जानलेवा कई बीमारियों के प्रति प्रतिरोधक क्षमता विकसित कर ली है। इनमें से कुछ जीवाणुओं में तो कई दवाओं के प्रति प्रतिरोधक क्षमता विकसित हो गई है। इस बात का खतरा बहुत ज्यादा है कि पेनिसिलीन की खोज के बाद से ही जिन एंटीबायोटिक्स ने मानव जाति की जानलेवा बीमारियों से रक्षा की है, वो अब बेकार हो जाएंगे। मिसाल के लिए वो कवच, जो हमें तपेदिक जैसी जानलेवा बीमारी से बचाता था, वो कमजोर हो रहा है और बहुत जल्दी खत्म हो जाएगा। चिकित्सा विज्ञान की दृष्टि से हम प्रागैतिहासिक युग में पहुंच जाएंगे, ऐसे अंधेरे युग में जब जीवाणुओं के जानलेवा संक्रमण लाइलाज होते थे।’

राधा ने सिर हिलाया। अंतर्राष्ट्रीय मीडिया में इस मुद्दे को काफी जोर—शोर से उठाया गया है। नई तकनीकों पर शोध चल रहा है और भविष्य के इस डरावने हालात से निपटने के लिए नई बड़ी खोज का इंतजार है। वो इस समूह, जो भी लोग होंगे वो, के मकसद को समझने की कोशिश कर रही थी। ‘तो क्लीनिकल ट्रायल का मकसद है ऐसी खोज करना जो एंटीबायोटिक्स का विकल्प हों?’ वो अभी भी यह नहीं समझ पाई थी कि सक्सेना इस खतरे से कैसे निपटने की सोच रहा है।

सक्सेना ने कीबोर्ड पर एक बटन दबाया और स्क्रीन पर एक त्रिविमीय छवि आ गई जो धीरे—धीरे घूम रही थी। यह एक बहुभुजी आकृति थी जिसमें बीस भुजाएं थीं। उसने एक दूसरा बटन दबाया और स्क्रीन दो हिस्सों में बंट गया। पहली छवि की दाईं तरफ एक और छवि बन गई, वो भी त्रिविमीय थी, लेकिन अनियमित चक्रों के साथ।

'बाईं तरफ की तस्वीर एक रेट्रोवायरस की है,' सक्सेना ने पहली तस्वीर की तरफ इशारा करते हुए समझाया। 'दाहिनी तस्वीर एक बैक्टीरिया की है।' वो रुका। 'दोनों ही अब तक अनजान रोगाणु हैं। हमें ये दोनों सिकंदर महान के शरीर से मिले हैं।'

50

328 ईसा पूर्व
बाल्ख, वर्तमान अफगानिस्तान

'तुम्हें क्या परेशान कर रहा है, प्रिय कैलिस्थनीज?' सिकंदर ने मुस्कुराते हुए इतिहासकार से पूछा। 'चीजें वैसे ही चल रही हैं जैसे उन्हें चलना चाहिए। मेरी योजना काम कर रही है। हमने फारस को जीत लिया है। बैक्ट्रिया के आदिवासियों को अधीन कर लिया है। यहां तक कि शक्तिशाली सॉग्डियन पर्वत को भी वश में कर चुके हैं।' उसने अपनी एक बांह के घेरे में कैलिस्थनीज को लिया। 'और तुम, मेरे प्रिय इतिहासकार; तुमने वो महान मिशन पूरा कर लिया जिस पर मैंने तुम्हें भेजा था। अब तक का सबसे महान मिशन। ऐसा मिशन जो मुझे भगवान बना देगा!' सिकंदर ने कैलिस्थनीज के कंधे से अपना हाथ हटाया और उसकी ओर देखा। 'तुम परेशान हो। इस बारे में मुझे कोई संदेह नहीं है। मुझे बताओ क्यों। मुझे यह जानना है।'

कैलिस्थनीज ने सिकंदर की आंखों में झांका लेकिन बोलने में हिचकिचा गया। उसकी यादों में सिल्टस का हश्र ताजा था। यह वो सिकंदर नहीं था जिसके साथ वो मकदूनिया से फारस साम्राज्य जीतने निकला था। वो एक ऐसा नौजवान था जिसने अपने पिता के सपनों और जीत को आगे बढ़ाने का फैसला किया था। जिसके पास हौसला और साहस था दुनिया के सबसे ताकतवर साम्राज्य से भिड़ने का। और जिसके पास करिश्माई ताकत थी अपनी सेनाओं को हजारों मील दूर उन इलाकों में ले जाने की, जहां उन्हें भयंकर ठंड और अकाल, थकान और प्यास से लड़ना होता। उस सिकंदर के लिए, कैलिस्थनीज अपना जीवन अपनी इच्छा से त्याग कर सकता था।

लेकिन आज जो सिकंदर उसके सामने खड़ा था, वो अलग था। क्या उसकी कामयाबी ने उसे घमंडी बना दिया था? पहले डैरियस का पतन, फिर बेसस——डैरियस का हत्यारा और फारसी राजगद्दी का दावेदार——की गिरफ्तारी, और अंत में, सॉग्डियन पर्वत पर विजय, साथ ही बैक्ट्रियन कबीलों पर प्रभुत्व... इतना किसी समझदार इंसान का भी दिमाग फिरा देने के लिए काफी था। और सिकंदर तो अभी नौजवान ही था।

या क्या यह उस गुप्त मिशन की वजह से था जिसके लिए सिकंदर तब से जुटा था जब से वो मकदूनिया से चला था? कैलिस्थनीज को यह बात कुछ महीनों पहले तक पता नहीं

थी, जब तक कि सिकंदर ने ओक्सस नदी के पार बैक्ट्रिया के जंगलों में इस मिशन के बारे में नहीं बताया। जब बेसस ने हिंदूकुश के पार भागने और बैक्ट्रिया में शरण लेने का फैसला किया था, इसने सिकंदर को मौका दे दिया था कि वो पूरी सेना को पर्वतों के पार बैक्ट्रिया कूच करने का आदेश दे।

इस दौरान कई लड़ाइयां लड़ी गईं, यहां तक कि सिकंदर को अपने विजय अभियान पर निकलने के बाद से पहली हार भी झेलनी पड़ी, लेकिन किसी को पता नहीं चला कि कैलिस्थनीज अपने तंबू में नहीं था और कई दिनों तक गायब रहा था। ये सारी घटनाएं सिकंदर के पक्ष में घट रही थीं।

हो सकता है कि सच में वो जियस का पुत्र हो और उसके दैवीय पिता उसकी देखरेख कर रहे हों। लेकिन कैलिस्थनीज को लग रहा था कि इन सबके बावजूद उसे वैसा व्यवहार करने का अधिकार नहीं था, जैसा वो कर रहा था।

'महाराज,' वो संभलकर बोल रहा था, 'आप बदल गए हैं।'

'सचमुच मैं बदल गया हूं,' सिकंदर ने खुश होते हुए इतिहासकार की पीठ पर धौल जमाया। हमेशा की तरह आज भी सिकंदर ने काफी शराब पी ली थी और वो प्रफुल्लित मुद्रा में था।

और कैलिस्थनीज ने देखा था कि कितनी तेजी से उसकी मुद्रा डरावनी और प्रतिशोधी में बदल जाती है।

'शायद हमें इस बारे में फिर कभी बात करनी चाहिए,' उसने सुझाव दिया, वो सिकंदर के गुस्से को भड़काना नहीं चाहता था। ऐसा कोई तरीका नहीं था जिससे वो अपने राजा को सच भी बता देता और उसे नाराज भी नहीं करता।

और कैलिस्थनीज अपने राजा से झूठ नहीं बोलता था। उसने उसकी विजय गाथा में कई चीजों का वर्णन बढ़ा—चढ़ाकर जरूर किया था और तथ्यों को कल्पना से गढ़ा भी था ताकि राजा का गौरव बढ़ सके। लेकिन अपने राजा के प्रति वो ईमानदार था। उसका यही तरीका था।

सिकंदर ने उसकी आंखों में झांका। उसने अपनी ठुड्डी रगड़ते हुए कहा, 'तो, मेरे इतिहासकार को कुछ कहना है। कुछ ऐसा जो उसे लगता है कि मैं पसंद नहीं करूंगा।'

कैलिस्थनीज को यह बिलकुल पसंद नहीं होता था जब सिकंदर चीजों को इस तरह भांप लेता था, जो अक्सर ही होता था। उसने कुछ नहीं कहा।

'अरे, कैलिस्थनीज,' सिकंदर ने कहा। 'तुम्हें लगता है कि मैंने कुछ ज्यादा शराब पी ली है? कि मैं वो नहीं सुन सकता जो तुम्हें कहना है? तुम मेरे सम्मानित इतिहासकार हो। क्यों, और किसी की मैं उतनी नहीं सुनता, जितना तुम्हारी! बोलो, तुम्हें क्या परेशान कर रहा है! चलो, मैं वादा करता हूं कि मैं तुम्हारी पूरी बात सुनूंगा।'

कैलिस्थनीज समझ गया था कि वो फंस चुका है। अब अगर उसने इस बातचीत को

मुल्तवी करने की एक और कोशिश की तो सिकंदर के दिमाग में जितने भी नकारात्मक विचार होंगे, उन्हें वो सच समझ लेगा।

‘ठीक है, महाराज,’ कैलिस्थनीज ने गहरी सांस ली। ‘आपने जो घोषणा की है उसने मुझे चिंता में डाल दिया है। कि आप चाहते हैं कि आपकी पूजा फारसी रीति-रिवाजों के मुताबिक हो।’

सिकंदर हंस पड़ा, उसकी हंसी वहां गूंजने लगी थी। ‘और तुम इससे सहमत नहीं हो?’

कैलिस्थनीज चुप रहा।

सिकंदर कुछ सोचने लगा। ‘तुम इसे गलत क्यों मानते हो?’ अंत में उसने कहा। ‘तुम्हीं ने दुनिया के सामने एलान किया है कि मैं जियस—एमन का पुत्र हूं। तुम्हारी किताब में, जो एक दिन इतिहास रचेगी, सिवा में देवस्थल पर मेरे देवत्व की घोषणा का वर्णन है। तुमने समुद्र के रास्ता देने की बात की है।’ उसने अपना सिर एक तरफ झुकाया और कैलिस्थनीज की तरफ देखा। ‘याद है? और भी काफी कुछ है।’ सिकंदर ने कैलिस्थनीज के कंधे पर अपना हाथ रखा। ‘तुम विश्वास करते हो कि मैं एक भगवान हूं, कैलिस्थनीज। निश्चित तौर पर तुम झूठ नहीं बोल सकते जब तुम लिखते हो। और जब तुम विश्वास करते हो कि मैं भगवान हूं, तो फिर तुम्हें इसमें क्या गलत लगता है जब मैं लोगों को अपनी पूजा करने को कहता हूं?’

कैलिस्थनीज ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने महसूस किया कि उसके पास सिकंदर के सवालों का कोई जवाब नहीं था। जो भी उसके राजा ने कहा था, सब सच था। सिवाय इसके कि कैलिस्थनीज सिकंदर के देवत्व में विश्वास करता था। लेकिन वो यह कैसे बता सकता था कि उसकी किताब एक तरह की खुशामद थी? सिकंदर के भगवान बन जाने के बाद भी उसके दरबार में अपनी हैसियत बनाए रखने की कोशिश थी?

‘तुम्हारी खामोशी परेशान कर रही है।’ सिकंदर सोच में पड़ गया।

‘क्या मैं इसे तुम्हारी हां मानूं? या ना? सिर्फ तुम यह बता सकते हो। मैंने अपने वादे के मुताबिक तुम्हारी बात सुनी है।’

‘आपने जो कहा, वो सच है महाराज।’ कैलिस्थनीज इस उलझन में से निकलने की कोशिश कर रहा था। ‘एक—एक शब्द सच है।’ उसने अपनी आवाज बेहद धीमी कर ली थी। ‘लेकिन महाराज, मिशन अभी खत्म नहीं हुआ है। जब आप गुप्त जगह पर पहुंच जाएंगे और निर्देशों के मुताबिक पानी पी लेंगे, तभी आप सच में भगवान होंगे! अभी नहीं।’

सिकंदर की आंखें चमकने लगीं। ‘तो तुम मानते हो कि मैं भगवान नहीं हूं जब तक कि मैं उस नक्शे का हर कदम ना पूरा कर लूं, जो मेरी मां ने मुझे दिया था?’

कैलिस्थनीज ने अपनी आंखें झुका लीं।

सिकंदर ने उसकी इस हरकत को अपने सवाल का जवाब ‘हां’ में मान लिया।

‘और मेरे दैवीय जन्म का क्या? क्या मेरी मां झूठ बोलती है कि मैं जियस का बेटा हूं?

तुम सुन लो कि मैं उस गंदे और नीच फिलिप का बेटा नहीं हो सकता!' सिकंदर का गुस्सा उसके मुंह से निकले हर शब्द के साथ बढ़ता जा रहा था। 'और सिवा में ओरेकल के शब्दों का क्या—क्या उनका तुम्हारे लिए कोई मतलब नहीं है? क्या वो भी एक झूठ है?'

वो लोग एक लकड़ी की मेज से गुजर रहे थे, जिसके पैरों पर कांसे की प्लेट रखी थी। सिकंदर झुका और अपने गुस्सा निकालते हुए कांसे की उस प्लेट को गलियारे में लुढ़का दिया। 'और तुम हो कौन, कैलिस्थनीज, मेरे जन्म और देवत्व पर फैसला करने वाले? तुम सिर्फ एक इतिहासकार हो! तुम्हारा काम घटनाओं को दर्ज करना है। यह सुनिश्चित करना कि इतिहास को घटनाओं की जानकारी रहे। कोई फैसला देना नहीं। कभी नहीं भूलना कि मैं तुम्हारा राजा हूं। तुम्हारा जीवन मेरे हाथों में है। उसी तरह जैसे मेरे राज्य की हर प्रजा का जीवन मेरे हाथों में है, जो अब मकदूनिया से बैक्ट्रिया तक फैल चुका है। क्या यह भगवान की ताकत नहीं है? जीवन छीन लेना?'

कैलिस्थनीज समझ चुका था कि बातचीत को संभालने की कोशिश बेकार है। वो अपने राजा को बहुत अच्छी तरह से जानता था। सिकंदर ने उसके बारे में अपनी राय जता दी थी। वो जानता था कि वो अब दोषी हो चुका है। और मौत को सामने देखकर वो कायर नहीं बनना चाहता था।

'भगवान की ताकत,' उसने क्रोध से फुफकारते राजा से शांत भाव से कहा, 'जीवन छीनने में नहीं, जीवन देने में है। और इस चीज को करने में आप नाकाम रहे हो।'

सिकंदर का गुस्सा अब ज्वालामुखी में बदल चुका था। 'मैं सिकंदर हूं। मुझे भगवान की तरह पूजे जाने के लिए तुम्हारी या तुम्हारी सहमति की जरूरत नहीं है,' वो चीखते हुए बोला, क्रोध उसके होशो—हवास छीन चुका था। 'मुझे भगवान होने के लिए तुम्हारी गुप्त चीजों की जरूरत नहीं है। मैं भगवान हूं और उसी की तरह पूजा जाऊंगा। तुम और तुम्हारी तरह सोचने वाले को नरक जाना होगा! प्रहरी!'

कैलिस्थनीज खड़ा रहा और सिकंदर की आंखों में झांककर देखा।

'पैट्रोक्लस तुमसे कहीं बेहतर इंसान था, सिकंदर। फिर भी मौत ने उसे भी नहीं छोड़ा।'

प्रहरी आगे आए और उन्होंने कैलिस्थनीज को पकड़ लिया, सिकंदर क्रूरता से मुस्कुराया। 'तुम्हें पता है..' उसने कैलिस्थनीज को कहा, 'अब मैं समझा कि उस नौकर को इतनी हिम्मत कहां से मिली जो उसने मुझे मारने की कोशिश की। उसे विद्रोह करने के लिए वैसा ही कोई उकसा सकता था जो मेरे काफी करीब होता। और मौका भी वही दे सकता था। मैं सोचता था कौन था वह। लेकिन अब मैं जान चुका हूं। ये तुम थे, कैलिस्थनीज। और कल, तुम्हें इसकी सजा मिलेगी। राजद्रोह की सजा सूली है। तुम यह अच्छे से जानते हो। अलविदा, दोस्त।'

वो अपनी अकड़ में चलते हुए पीछे मुड़ा लेकिन कैलिस्थनीज की बात खत्म नहीं हुई थी। उसके प्रहरी उसे घसीटते हुए ले जा रहे थे लेकिन कैलिस्थनीज के अंतिम शब्दों ने

सिकंदर के पैर जकड़ लिए थे।

'तुम भगवान होने का दिखावा कर सकते हो, सिकंदर। तुम मान सकते हो कि तुम भगवान हो। लेकिन तुम कभी भी भगवान नहीं होगे। तुम मकदूनिया लौटने के पहले मर जाओगे! तुम अपनी मातृभूमि में अपने पैर दोबारा कभी नहीं रख पाओगे!'

51

वर्तमान

पांचवां दिन

सिकंदर का रहस्य

‘तुम मजाक कर रहे हो!’ राधा खुद को रोक नहीं सकी। यह विश्वसनीयता की सीमा के परे था। ‘सिकंदर की लाश अलेक्जेंड्रिया से सैकड़ों साल पहले गायब हुई थी। हर कोई जानता है।’

‘वास्तव में चौथी शताब्दी में,’ सक्सेना ने उसे सही किया। ‘ठीक—ठीक कहो तो 391 ईस्वी में। ऑर्डर ने अलेक्जेंड्रिया से उसकी ममी चुराई और एक दूसरी जगह दफना दी जहां वो अपवित्र होने से बची रहे।’

‘लेकिन ऑर्डर ने तो उसके शरीर से पैथोलॉजिकल टेस्ट के जरिए वायरस और बैक्टीरिया निकालकर उसे वैसे ही अपवित्र कर दिया।’ राधा को लगा कि ऑर्डर सिर्फ एक चीज की परवाह करता था। अपनी। कुछ भी पवित्र नहीं था। कुछ भी सीमा से परे नहीं था। उस बिल्डिंग की तरह जहां वौ कैद थी। उसे अब समझ आया, जब उसने सभी तथ्यों का मिलान किया कि यही दो रोगाणु थे जो उन परीक्षणों में मिले थे जिनका जिक्र इमरान ने किया था। सक्सेना और उसकी टीम इन अनजान रोगाणुओं का परीक्षण भोले—भाले स्वयंसेवकों पर कर रही थी। उन्हें एक निश्चित मौत की तरफ बढ़ा रही थी। एक धीमी मौत। उसे अपने अंदर गुस्सा फूटता महसूस हुआ और उसने उसे रोकने की कोशिश की। उसे इस चीज का भरोसा नहीं थी कि उन्होंने उसे जो दवाएं दी थीं, उनका असर खत्म हुआ है या नहीं। इस वक्त गुस्से में आने का फायदा नहीं होगा। वो खुद को बहुत बुरी तरह नुकसान पहुंचा सकती है अगर उसे संभाला नहीं गया तो।

सक्सेना ने कंधे उचकाए। ‘देखो, विज्ञान की उन्नति के लिए ऐसा करना पड़ा था,’ उसके लहजे में व्यवहारिकता थी। ‘जो भी हो, ये दो जीवाणु उस राज को दबाए हुए हैं जो हमें बीमारियों के खिलाफ एक और कवच बनाने में मदद करेगा।’

‘मुझे अभी भी समझ नहीं आ रहा।’ राधा का अविश्वास उसके लहजे और चेहरे के भाव

से साफ झलक रहा था। 'तुम कहते हो कि सिकंदर इस महान रहस्य की खोज कर रहा था। उसे यह मिल भी गया था। फिर भी, दो साल बाद वो मर गया। और क्लीनिकल ट्रायल के सभी शिकारों में कुछ सालों बाद वही लक्षण दिखाई दिए जैसे सिकंदर में थे। ये जीवाणु तो सिर्फ मौत लाते हैं।'

'यहीं तुम गलत हो!' सक्सेना फुफकार उठा, उसकी चिढ़ साफ दिख रही थी। 'ये जीवाणु जिंदगी देते हैं! तुमने कंप्यूटर स्क्रीन पर जो देखा वो सिकंदर को संक्रमित करने वाले असली जीवाणु नहीं थे। रेट्रोवायरस जीवाणुभोजी होता है। एक ऐसा वायरस जो बैक्टीरिया को संक्रमित करता है।'

उसने स्क्रीन की तस्वीर को बदल दिया। 'वायरस अपने आप बढ़ नहीं सकते। उन्हें बढ़ने के लिए कोशिकाओं पर कब्जा करने की जरूरत होती है। यह वायरस के बढ़ने की प्रक्रिया है।' उसने स्क्रीन पर दिख रहे डायग्राम की तरफ इशारा किया। 'एक वायरस खुद को किसी शिकार कोशिका पर चिपका लेता है और फिर उसकी दीवार को या तो कोशिका के खोल के साथ फ्यूजन के जरिए या खोल के पार जनन पदार्थ को स्थानांतरित करके भेद देता है। एक बार जब शिकार कोशिका का भेदन हो जाता है, वायरस उस कोशिका की मशीनरी का इस्तेमाल कर खुद को बढ़ाता है और फंक्शनल और स्ट्रक्चरल वायरल प्रोटीन बनाता है। नए—नए तैयार हुए वायरल न्यूक्लिएक एसिड और स्ट्रक्चरल प्रोटीन मिलकर वायरस का न्यूक्लियोकैप्सिड बनाते हैं। इसके बाद नए बने वायरस या वायरियॉन कोशिका अपघटन नामक प्रक्रिया के जरिए बाहर आते हैं। इस प्रक्रिया में शिकार कोशिका फट जाती है और वायरियॉन बाहर आ जाते हैं और शिकार कोशिका की मौत हो जाती है।'

स्क्रीन पर एक और तस्वीर आई। 'हम जिस वायरस पर काम कर रहे हैं,' सक्सेना ने अपनी बात जारी रखी, 'वो रेट्रोवायरस है। इसकी आनुवांशिक जानकारी डीएनए के बजाए आरएनए में लिखी होती है। रेट्रोवायरस में आरएनए पर निर्भर डीएनए पोलीमरेज भी होता है, जो एक रिवर्स ट्रांसक्रिप्टेज है, और जो शिकार कोशिका के संक्रमण के बाद वायरल जीनोम के डीएनए रूप को बनाने का काम करता है।'

वो रुक गया जब उसने राधा के चेहरे के भाव देखे, जो बता रहे थे कि उसे एक शब्द भी समझ नहीं आ रहा। 'ठीक है,' उसने दोबारा कोशिश की। 'तुम इतना तो समझती हो कि हर प्राणी में उसकी आनुवांशिक जानकारी डीएनए में लिखी होती है, जो दोहरी लड़ी वाले होते हैं? रेट्रोवायरस में आनुवांशिक जानकारी आरएनए में लिखी होती है जो एक लड़ी वाले होते हैं। आमतौर पर, किसी भी प्राणी में कोशिका की प्रतिकृति बनाते समय जब आनुवांशिक जानकारी की नकल बनानी होती है, डीएनए इस जानकारी का आरएनए में अनुलेखन कर देता है, जो इसके बाद प्रोटीन बनाने के लिए जरूरी आनुवांशिक जानकारी आगे पहुंचाता है और इसी प्रोटीन का इस्तेमाल डीएनए की प्रतिकृति बनाने में होता है।'

सक्सेना ये देखने के लिए रुका कि राधा को उसकी बात समझ आ रही है या नहीं। राधा ने सिर हिलाया और सक्सेना ने अपनी बात आगे बढ़ाई। 'रेट्रोवायरस की प्रतिकृति बनाते

वक्त, हालांकि, आरएनए को डीएनए में बदलना होता है इसलिए यह प्रक्रिया रिवर्स ट्रांसक्रिप्शन या विपरीत अनुलेखन कहलाता है। और इसलिए रिवर्स ट्रांसक्रिप्टेज प्रोटीन की जरूरत होती है इस प्रक्रिया को शुरू करने के लिए। एक बार जब शिकार कोशिका रेट्रोवायरस का समावेशन कर लेती है, इसका आरएनए बाहर निकल आता है और एक लड़ी वाले डीएनए में रिवर्स ट्रांसक्राइब हो जाता है। इसके बाद यह एक लड़ी वाला डीएनए फिर से रिवर्स ट्रांसक्राइब होकर दोहरी लड़ी वाले प्रो—वायरल डीएनए में बदल जाता है। यह प्रोवायरस शिकार कोशिका के जीनोम में एक और एंजाइम—जिसे इंटेग्रेज कहते हैं——का इस्तेमाल करके घुस जाता है और फिर इसका अनुलेखन आरएनए में हो जाता है। इसके बाद सामान्य प्रक्रिया की तरह आरएनए नया वायरस बनाने के लिए प्रोटीन का निर्माण करता है, और फिर वायरॉन जमा होकर शिकार कोशिका से बाहर निकल जाते हैं।'

राधा सोच में थी कि सक्सेना इतने विस्तार से क्यों समझा रहा है। 'यानी एक रेट्रोवायरस वास्तव में शिकार कोशिका के जीनोम का हिस्सा बन जाता है?'

'बिलकुल। तभी जीवन भर रहने वाला संक्रमण शुरू होता है। रेट्रोवायरस में शिकार कोशिका की संरचना पर कब्जा करने और उसे बदल डालने की क्षमता होती है। यहां तक कि वो शिकार कोशिका के जर्म लाइन जीनोम में घुस सकते हैं और एक जगह से दूसरी जगह जा सकते हैं। इसका मतलब यह है कि वो ऐसे डीएनए हैं, जो मनमर्जी से जीनोम में इधर—उधर कूद—फांद कर सकते हैं, उनमें बदलाव कर सकते हैं और शिकार कोशिका के डीएनए में उत्परिवर्तन यानी म्युटेशन ला सकते हैं। वो जीनोम में जींस को सक्रिय या निष्क्रिय बना सकते हैं। वो वातावरण में कुछ चुनिंदा स्टिम्युलस पाकर अपने ही जीनोम में तेजी से बदलाव कर सकते हैं। इसलिए एचआईवी वायरस इतना जानलेवा है। यह एक रेट्रोवायरस है। और यह डीएनए को उत्तेजित कर सकता है जो तंदुरुस्त लोगों में आमतौर पर सुप्त रहता है।'

राधा का दिमाग घूमने लगा था। वो उन सारी जानकारी का मतलब निकालने की कोशिश कर रही थी जो उसे अभी—अभी मिली थीं। 'मैं समझ गई। लेकिन अगर एक रेट्रोवायरस इतना जानलेवा है, तो यह बीमारियों के खिलाफ कवच बनाने में कैसे मदद कर सकता है?'

52

अमरत्व

'यही तो दिक्कत है,' सक्सेना लंबी सांस लेते हुए बोला। 'वायरस बदनाम हैं और सही भी है। ज्यादातर वायरस गंभीर और लाइलाज संक्रमण की वजह बनते हैं। वायरस को मारना बेहद, बेहद मुश्किल है क्योंकि वो छोटे मगर ताकतवर प्राणी हैं। यहां तक कि जब उनका शिकार मर भी जाता है, वो सुप्त पड़े रहते हैं, किसी दूसरे शिकार को संक्रमित करने और वायरल साइकिल को जारी रखने का मौका ढूंढ़ते रहते हैं। वायरस को हजारों साल तक अपनी ताकत गंवाए बगैर सुप्त रहने की क्षमता के लिए जाना जाता है। लेकिन वायरस का एक और पक्ष है जो बहुत कम लोगों को पता है। तुम्हें पता है माइक्रोबायोम क्या होता है?'

राधा को याद आया कि उसने इस बारे में कहीं पढ़ा है। 'माइक्रोस्कोपिक जीवाणुओं का समुदाय जो लोगों के अंदर होता है।'

'बिलकुल सही। यह सहजीविता का उदाहरण है। मित्रतापूर्ण सहयोग। सबसे अच्छे उदाहरण हैं हमारी आंत में रहने वाले बैक्टीरिया। भोजन और आश्रय के बदले बैक्टीरिया पाचन क्रिया में मदद करते हैं और हमारे उपापचय को नियमित बनाते हैं। लेकिन सहजीवी वायरसों के बारे में बहुत कम लोगों को पता है जो हानिकारक बैक्टीरिया को निशाना बनाते हैं। और यहीं पर हमारा रेट्रोवायरस आता है। जैसा मैंने पहले समझाया, यह एक बैक्टीरियोफेज है। मिसाल के लिए, इंसानों के म्युकस मेम्ब्रेन——गले और नाक में पाए जाने वाले नरम ऊतक——में बड़े पैमाने पर बैक्टीरियोफेज होते हैं। और यह हमारे लिए अच्छा होता है क्योंकि बलगम में बैक्टीरिया काफी तेजी से पनपते हैं। तो ये वायरस उन बैक्टीरिया को अपना शिकार बनाकर, जो बलगम से जुड़े संक्रमण पैदा कर सकते हैं, हमारे लिए वास्तव में एक कवच या रोग प्रतिरोधक तंत्र बना देते हैं।'

'तो क्या तुम्हें सिकंदर के शरीर में जो रेट्रोवायरस मिले, वो बैक्टीरिया पर काबू रखते हैं?'

'उससे कहीं ज्यादा। और यहीं पर क्लीनिकल ट्रायल काफी उपयोगी साबित हुए हैं। उनके बिना हम वो खोज नहीं कर सकते थे जो हमें कामयाबी दिलाता। तुम जानती हो कि हमें सिकंदर की ममी में से वायरस और बैक्टीरिया मिले। लेकिन हमें उनका संबंध तब तक समझ नहीं आया जब तक हमने उनका संक्रमण लोगों में अलग—अलग कराकर नतीजों पर निगरानी नहीं रखी। एक नतीजे में हमें पता चला कि रेट्रोवायरस बैक्टीरिया की अनुपस्थिति

में मानव शरीर को ही पोषक जीव की तरह मानकर खुद को उसके अनुकूल बना लेता है। और एक बार जब ये ऐसा कर लेता है, यह आगे जाकर ऐसे जींस को सक्रिय करने लगता है जो उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा करने वाले प्रोटीन बनाते हैं। मिसाल के लिए आईजीएफ 1, जो मांसपेशियां बनाने का काम जारी रखने के लिए अहम प्रोटीन है। इस प्रोटीन की कमी से मांसपेशियां कमजोर होने लगती हैं और मांसपेशियों की मरम्मत करने और फिर से पैदा होने की क्षमता कमजोर पड़ जाती है। इसके अलावा एक और अहम प्रोटीन है टेलोमरेज, जो उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को धीमा करने के मुद्दे पर काफी चर्चा में रहा है। इस बात के मजबूत प्रमाण हैं कि टेलोमरेज की गैर—मौजूदगी हमारे बूढ़े होने और मरने की बड़ी वजहों में एक है। टेलोमरेज के साथ दिक्कत यह है कि इसकी मौजूदगी से कोशिकाएं बिना रुके लगातार पैदा होती रहती हैं——इसे हम कैंसर कहते हैं। लेकिन रेट्रोवायरस की मौजूदगी से बीआरएएफ नाम का प्रोटीन भी पैदा होता है, जो स्वस्थ कोशिकाओं की वृद्धि और विभाजन के चक्र को नियंत्रित करता है——यानी एक तरह से कैंसर को रोक देता है। रेट्रोवायरस एक और प्रोटीन पी53 को भी सक्रिय कर देता है, जो सभी कोशिकाओं में सुप्त अवस्था में रहता है। पी53 उन जींस को बढ़ावा देता है जो नुकसानदेह कोशिकाओं को फैलने से रोकते हैं। यह तो आसानी से समझ में आ जाता है। शरीर में एक नए रेट्रोवायरस की मौजूदगी इंटरफेरॉन नाम के एक प्रोटीन का उत्पादन बढ़ाने का काम करती है, और यह प्रोटीन कोशिकाओं में पी53 प्रोटीन की मात्रा बढ़ा देता है।' सक्सेना रुका और राधा की तरफ देखा। 'मैं इस मसले पर लगातार बोल सकता हूं। कई नए जींस हैं जिन्हें यह सक्रिय कर देता है, कई अनजान प्रोटीन हैं जो हमारे रिसर्च के मुताबिक मानव शरीर को ताकत, पुनरोत्पत्ति और मरम्मत से जुड़े बड़े फायदे पहुंचाते हैं।'

'यह तो अद्भुत है,' राधा ने स्वीकार किया। यह तो चिकित्सा विज्ञान में बड़ा आविष्कार हो सकता है। 'तुमने यह भी कहा था कि वायरस बैक्टीरिया को संक्रमित कर देते हैं। तो क्या ये उन्हें मार देता है? क्या इसी वायरस कवच की बात तुम कर रहे थे?'

सक्सेना ने अपना सिर हिलाया। 'यह उससे कहीं बड़ा है। जब हमने लोगों को सिर्फ बैक्टीरिया से संक्रमित कराया, हमें दो चीजें पता चलीं। पहली कि बैक्टीरिया इंसानों के लिए जानलेवा हैं। लेकिन तुरंत नहीं। एक बार अंदर जाने के बाद वो एक बायोफिल्म बनाते हैं जिसमें कोशिकाएं बड़ी तादाद में मैट्रिक्स पदार्थ से घिरी होती हैं। इससे बैक्टीरिया को शरीर की प्राकृतिक रोग प्रतिरोधी क्षमता से सुरक्षा मिलती है। इस वक्त कोशिका की रोग प्रतिरोधी कार्रवाई की वजह से बैक्टीरिया भी सुप्त हो जाते हैं, जो संक्रमित तो होती है लेकिन उसे दूर नहीं कर पाती। इसलिए कुछ समय तक किसी तरह के रोग संबंधी लक्षण नहीं दिखते। हमारा संदेह है कि जब रेट्रोवायरस बैक्टीरिया को संक्रमित करता है, यह बैक्टीरिया के जीनोम में बदलाव ले आता है जिससे वो प्रोटीन बनने रुक जाते हैं जो इंसान की जान ले सकते हैं। हो सकता है कि बैक्टीरिया को इस लायक भी बना देता है कि वो इंसान के लिए फायदेमंद प्रोटीन बनाने लगे। हम पक्के तौर पर नहीं जानते। उसके लिए हमें असली वायरस चाहिए।'

'लेकिन तुमने कहा था कि तुम्हें सिकंदर की ममी से वायरस और बैक्टीरिया अलग—अलग मिले थे,' राधा ने इस बात की तरफ इशारा किया। 'क्या वो असली वायरस नहीं है?'

'नहीं। मैंने कहा था कि क्लीनिकल ट्रायल के नतीजे में हमने दो चीजें खोजी थीं। मैंने अभी तुम्हें सिर्फ पहली खोज के बारे में बताया है। दूसरी चीज हमें पता चली कि बैक्टीरिया के जीनोम में प्रोफेज के रूप में वायरस पहले से मौजूद थे। किसी वक्त रेट्रोवायरस ने बैक्टीरिया को संक्रमित तो कर दिया लेकिन उस तरह से प्रतिकृति बनाने में कामयाब नहीं हो पाया जैसा मैंने पहले बताया था। शायद यह किसी वजह से खत्म हो गया, और बैक्टीरिया के जीनोम में सिर्फ एक आनुवांशिक पदार्थ की तरह बच सका। और यहीं पर चीजें दिलचस्प हो जाती हैं। हमें अभी भी नहीं मालूम कि क्या——लेकिन किसी चीज ने बैक्टीरिया के संक्रमण के बाद प्रोफेज इंडक्शन को प्रेरित किया। फिर रेट्रोवायरस मानव कोशिकाओं में लाइसोजोनिक चक्र के जरिए प्रतिकृति बनाता है।'

सक्सेना को महसूस हुआ कि उसकी बातचीत में काफी ज्यादा मेडिकल शब्दों का इस्तेमाल हो रहा है और उसने अपने हाथ ऊपर करते हुए कहा। 'इसका मतलब यह है कि रेट्रोवायरस का गुप्त रूप——प्रोफेज——बैक्टीरियल क्रोमोसोम से निकलता है। यह प्रोफेज इंडक्शन कहलाता है। एक बार यह होने के बाद वायरस सामान्य तरीके से मानव कोशिकाओं को अधिगृहीत कर अपनी प्रतिकृति बनाता है। यह तभी होता है जब रेट्रोवायरस का संक्रमण होता है। लेकिन, जैसा मैंने पहले समझाया, यह पोषक के लिए अच्छा है क्योंकि रेट्रोवायरस फायदेमंद है।'

सक्सेना ने अपनी बांहें मोड़ीं और राधा की और विजय भरी दृष्टि से देखा।

'तो तुमने देखा यह वायरस कितना शक्तिशाली है? और किस तरह के फायदे इससे मानव जाति को हो सकते हैं? और सोचो——ऑर्डर इस पर नियंत्रण रखेगा। उम्र को बढ़ने से रोकने की ताकत। किसी भी बीमारी से लड़ने की ताकत। एंटीबायोटिक्स को भूल जाओ! हमारे पास अमरत्व की ताकत होगी! दुनिया इसे हासिल करने के लिए हमारे कदमों में होगी। इसलिए इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि उन्होंने इसे ईश्वर का रहस्य कहा है!'

राधा की भौंहें तन गईं। कुछ कमी अभी भी है। 'अगर वायरस इतना ही महान है, तो सिकंदर इसे लेने के बाद मर कैसे गया? इसने बैक्टीरिया के जीनोम को बदला क्यों नहीं?'

'क्योंकि जब उसने इसे लिया कुछ तो गलत हुआ था। हमें असली वायरस नहीं मिला। सिर्फ प्रोफेज मिला। मुझे नहीं मालूम कि क्या गलत हुआ था। लेकिन असली वायरस के बिना बैक्टीरिया में कोई बदलाव नहीं आया। वो तब तक सुप्त बने रहे जब तक किसी वजह से उनकी रोगजनक ताकत फिर से लौट नहीं आई। और जब ऐसा हुआ, सिकंदर को कोई मौका नहीं मिला। हमने इसे अपने मरीजों में देखा है। बार—बार देखा है। एक बार जब बैक्टीरिया सक्रिय हो जाते हैं, तो मरीज कुछ ही दिनों में मर जाता है। कभी—कभी वो एकाध महीने तक जिंदा रह जाता है। और इसलिए हमें असली वायरस और असली बैक्टीरिया की जरूरत है। हमें उस जगह को ढूंढ़ने की जरूरत है, जहां से सिकंदर को वो

मिले थे। एक बार जब हमें वो मिल जाएंगे, हम पता लगा पाएंगे कि रेट्रोवायरस कैसे काम करता है।'

'तो ओलिंपियास की कब्र खोदने के पीछे यही वजह थी कि तुम्हें क्यूब चाहिए था जो असली जीवाणुओं के स्रोत तक तुम्हें ले जाता।' राधा अब सारी कड़ियों को जोड़ पा रही थी।

'बिलकुल सही। एक बार जब हमें वो मिल जाएगा, हमारे हाथ में वो रहस्य होगा।'

'तो तुम इतने भरोसे के साथ कैसे कह सकते हो कि सिकंदर ने भूल की थी? हो सकता है न की हो। हो सकता है कि ये जीवाणु घातक ही हों। मौत और पीड़ा देने वाले।'

सक्सेना ने त्योंरियां चढ़ाईं। 'दो वजहें हैं। एक, हमारे क्लीनिकल ट्रायल। उनसे वही साबित होता है जो मैंने तुम्हें अभी बताया। और दूसरी वजह काफी पुरानी है, और कहीं ज्यादा भरोसेमंद।' वो रुका। 'क्योंकि वो प्रमाण महाभारत में है।'

राधा को झटका सा लगा। उसे इस जवाब की कोई उम्मीद नहीं थी। सक्सेना उसकी प्रतिक्रिया देखकर खुशी से मुस्कुराया। 'हां, तुमने मिथक सुना तो होगा। लेकिन तुम जानती नहीं हो कि इसका वास्तविक अर्थ क्या है।'

वो फिर कुछ पलों के लिए रुका और फिर उसे समझाता चला गया। जब उसने अपनी बात खत्म की, राधा पत्थर की तरह शांत बैठी रही। उसने अभी—अभी जो सुना था, वो दुनिया को सिर के बल खड़ा कर देगा।

और अगर वो सही था, दुनिया इस ऑर्डर की गुलाम बन जाएगी।

53

सिकंदर की राह पर

एलिस, कोलिन और शुक्ला ने एक दूसरे को निराशा भरी नजरों से देखा। दिन का ज्यादातर हिस्सा बीत चुका था और उन्हें कोई सफलता नहीं मिली थी। उन्होंने सभी दस्तावेजों की छानबीन कर ली थी, नक्शे और तस्वीरों का अध्ययन कर लिया था और क्यूब के बाकी चार छंद पर चर्चा भी कर ली थी, साथ ही यूमेनीज की डायरी में लिखे एक अतिरिक्त छंद पर भी। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ था। वो अभी तक एक छंद का ही मतलब निकाल पाए थे, वही जिसमें कल कामयाबी मिली थी।

आज ही थोड़ी देर पहले विजय ने उन्हें किले के लैंडलाइन पर फोन किया था। उसने उन्हें बताया था कि कूपर ने उसे सैटेलाइट फोन दिया है जिसकी मदद से वो उन लोगों के साथ कुनार घाटी के पहाड़ों से भी संपर्क कर सकेगा, जहां मोबाइल फोन के सिग्नल काम नहीं करते। बातचीत काफी छोटी थी और वो बहुत ज्यादा नहीं बता पाया था हालांकि उसकी आवाज से रोमांच झलक रहा था। और उसने उन्हें बताया था कि 'ईश्वर का रहस्य' अमृत था——अमरत्व का रहस्य——जिसका वर्णन महाभारत के एक मिथक में मिलता है। लेकिन वो इस बारे में कुछ समझा नहीं पाया था क्योंकि उसे फोन करने के लिए सीमित समय मिला था। अंत में वो बस इतना बता पाया था कि उसके पास काफी कम समय है। उन लोगों को कुछ और जवाब जल्द ढूंढ़ने पड़ेंगे।

उन्होंने उम्मीद की थी कि उनके पास अब तक विजय के लिए कोई खबर तैयार होगी। उसके संभावित आतंकवादियों और पक्के हत्यारों से घिरे होने की सोचकर ही वो लोग कांप जाते थे। और राधा समेत उनकी जिंदगी, उसी वादे पर निर्भर थी जो विजय ने किया था, यह सोच उन्हें लगातार डरा रही थी।

'एक बार फिर कोशिश करते हैं,' एलिस ने शुक्ला पर दबाव डाला। शुक्ला भी अपनी बेटी के बारे में सोचकर चिंतित थे। अभी भी उसकी कोई खोज—खबर नहीं मिली थी।

एलिस ने कागजों को एक बार फिर उलट—पलटकर देखा और उसके माथे पर बल पड़ गए। एक नक्शे पर कुछ ऐसा था जो उसे शुरू से परेशान कर रहा था। लेकिन वो अभी तक उसकी पहचान कर पाने में नाकाम थी। क्या था यह?

उसने नक्शे को अपनी तरफ खींचा और एक बार फिर से ध्यान से देखा। इस नक्शे में

अफगानिस्तान से होते हुए सिकंदर का मार्ग दिखाया गया था। वो लोग इस नक्शे को कई बार देख चुके थे। छंदों में इसी मार्ग पर जगहों का वर्णन था। लेकिन वो लोग अभी तक छंदों और उन जगहों के बीच कोई संबंध निकाल पाने में नाकाम रहे थे, जहां सिकंदर भारत आने के दौरान गया था।

कोलिन ने गौर किया कि एलिस नक्शे को ध्यान से देख रही है। 'वहां कुछ दिख रहा है क्या?' उसने पूछा।

एलिस ने अपने होंठ सिकोड़े। 'मुझे कुछ परेशान कर रहा है, लेकिन पता नहीं क्या। कुछ ऐसा है जो जाना—पहचाना सा है।' उसने अपना सिर हिलाया।

कोलिन ने नक्शे को थोड़ा व्यवस्थित किया ताकि वो भी उसे अच्छे से देख सके। 'सिकंदर का मार्ग,' उसने कहा। 'दिलचस्प है यह। वो अफगानिस्तान आया और उत्तर के पहले दक्षिणी दिशा में गया कांधार, गजनी और काबुल होते हुए। इसके बाद वो हिंदूकुश पहाड़ों के पार उत्तरी दिशा में गया, सॉग्डियन पर्वत का चक्कर लगाया और जलालाबाद और कुनार घाटी की तरफ मुड़ने के पहले बाल्ख लौट गया। देखने में यह योजना बनाकर लिया हुआ रास्ता लगता है। मैं यह नहीं मान सकता कि ऐसा रास्ता अनजाने में लिया गया होगा।'

एलिस ने नक्शे पर नजरें गड़ा दीं जैसे उसे अपनी आंखों पर भरोसा नहीं हो रहा हो। कोलिन ने अभी—अभी कुछ ऐसा कहा, जिसने उसके दिमाग की बत्ती जला दी थी। उसे नक्शे में वो चीज अब दिखी। इस पूरे दौरान वो चीज उसे मानो घूर रही थी। और वह उसका पता लगा पाने में नाकाम हो रही थी।

'मिल गया!' उसने अपनी उंगलियां चटकाईं और कोलिन ने उसे उत्सुक निगाहों से देखा।

'क्या मिल गया?' उसने पूछा।

'विजय सही कह रहा था,' एलिस ने जवाब दिया। 'मुझे ये पहले ही देख लेना चाहिए था। राज कुनार घाटी में ही है। यही उनकी मंजिल है।'

शुक्ला असमंजस में थे। 'तुम इस निष्कर्ष पर कैसे पहुंची, एलिस?'

'यहां देखो।' एलिस ने नक्शे पर सॉग्डियन पर्वत को दिखाने वाली जगह पर उंगली रखी। 'यह क्रम देखो। सॉग्डियन पर्वत जलालाबाद के पहले आता है। हमें मेटल प्लेट की जरूरत ही नहीं पड़ती। यह मुमकिन है कि यूमेनीज की डायरी में छंदों को भौगोलिक क्रम में लिखा गया हो और सिकंदर ने अपना मार्ग इसी क्रम में लिया हो। अगर हम उन जगहों की पहचान कर लें जो शुरुआती दो छंद में बताए गए हैं, तो हम इस बात को साबित कर सकते हैं कि मेरा तर्क सही है या नहीं।'

वो लोग एक बार फिर नक्शे पर झुक गए।

थोड़ी देर बाद, शुक्ला ने ऊपर देखा। 'मुझे लगता है कि मेरा ध्यान भटक गया था,' उन्होंने संकोच करते हुए कहा। 'मुझे यह पहले ही देख लेना चाहिए था। विजय ने, आज

सुबह फोन पर, हमें एक सुराग दिया था। और इसके बाद भी मैं समझ नहीं सका। लेकिन जब एलिस ने डायरी में छंदों के क्रम का संबंध सिकंदर के मार्ग से होने की बात की, तो इसने मेरा ध्यान खींच लिया।' वो एलिस की ओर देखते हुए बोले। 'मुझे लगता है कि तुम सही हो।'

उन्होंने नक्शे में एक नदी की तरफ इशारा किया। 'यह अमू नदी है। और मुझे लगता है कि दूसरा छंद इसी नदी की तरफ इशारा कर रहा है। इस छंद में एक संस्कृत शब्द "चक्षु" इस्तेमाल किया गया है जिसका मतलब होता है "आंख"। और मैं हमेशा से इसका अनुवाद ऐसे ही करता रहा हूं। लेकिन महाभारत में अमु को चक्षु कहकर संबोधित किया गया है। और अमु की तरफ इशारा करने वाला छंद सॉग्डियन पर्वत वाले छंद के पहले आता है। अगर ईश्वर का रहस्य महाभारत में वर्णित अमृत है, तो इस बात की काफी संभावना है कि सुराग का संबंध भी महाभारत से हो। इससे शुक्र के संदर्भ की भी व्याख्या हो जाती है जिसका वर्णन महाभारत में भी है।'

एलिस ने नक्शे को एक बार फिर गौर से देखा। 'मुझे लगता है आप सही हैं, डॉक्टर शुक्ला,' उसने कहा। 'इसका मतलब निकल रहा है। छंद एक निर्देश है अमु नदी को पार करने के लिए। सिर्फ एक नदी ही "तेजी से बहती हुई" हो सकती है।'

'और, पहला छंद भी है——जो क्यूब पर नहीं है, लेकिन डायरी में जिसका वर्णन है,' शुक्ला ने अपनी बात जारी रखी। 'अब जब हम जानते हैं कि रहस्य का संबंध महाभारत से है, इस छंद का मतलब समझ में आ रहा है। जिस शक्तिशाली राजा का वंश मार गिराया गया, वो कौरवों का था। इस छंद में शक्तिशाली राजा से तात्पर्य धृतराष्ट्र से है। कौरव उसके बेटे थे। वो सभी मारे गए थे। अंतिम दो पंक्तियों में उस "छल" के बारे में सुराग दिया गया है जो कौरवों की बर्बादी का कारण बनाः "पासा फेंको"। इसका अर्थ शकुनि के पासा फेंकने से है। वो कौरवों का मामा था और धृतराष्ट्र की पत्नी, गांधारी का भाई। धृतराष्ट्र सौ कौरव भाइयों का पिता था। गांधारी गांधार की राजकुमारी थी। और शकुनि गांधार का राजकुमार। महाभारत के एक संस्करण के मुताबिक——मेरा ख्याल है कि यह आंध्र प्रदेश से है—— शकुनि के पिता सुबल को उसके पूरे परिवार के साथ भीष्म ने बंदी बना लिया था। शकुनि ने उन्हें मरते हुए देखा था क्योंकि उन सभी ने अपना खाना इसलिए छोड़ दिया था ताकि वो जिंदा रहे और उनका प्रतिशोध ले। उस कथा के मुताबिक, सुबल ने शकुनि को कहा था कि वो उसकी हड्डियों से पासा बनाए और उन्हीं पासों का इस्तेमाल महाभारत में हुआ था। यही था "छल, मृत्यु, प्रतिशोध की शपथ से जन्मा।" पासा, सुबल की मृत्यु और शकुनि की प्रतिशोध की शपथ के बाद बनाया गया था। गांधार कांधार का ही प्राचीन नाम है।'

वो लोग नक्शे को चुपचाप देख रहे थे। सिकंदर ने जो मार्ग लिया था अब वो उन छंदों का पूरा मतलब बता रहा था, जिस पर उन्होंने चर्चा की थी। कांधार से काबुल, काबुल से बाल्ख। बाल्ख से अमु नदी के पार सॉग्डियन पर्वत का क्षेत्र और जलालाबाद जाने के पहले फिर से काबुल।

‘हम अभी भी नहीं जानते “लवणविहीन समुद्र” का क्या मतलब है,’ कोलिन सोच रहा था। ‘छदं के मुताबिक कुछ महत्वपूर्ण चीज होगी वहां पर। “अभियान का सार”।’

‘यह कुछ ऐसी चीज है जो अमु नदी के उत्तर या पश्चिम में है,’ शुक्ला ने सोचते हुए जवाब दिया। ‘लेकिन अभी इसका मतलब समझ नहीं आ रहा। “तीन भाई” कौन हैं? और तीर का सिरा क्या है? और “सर्प की मुहर” भी है।’

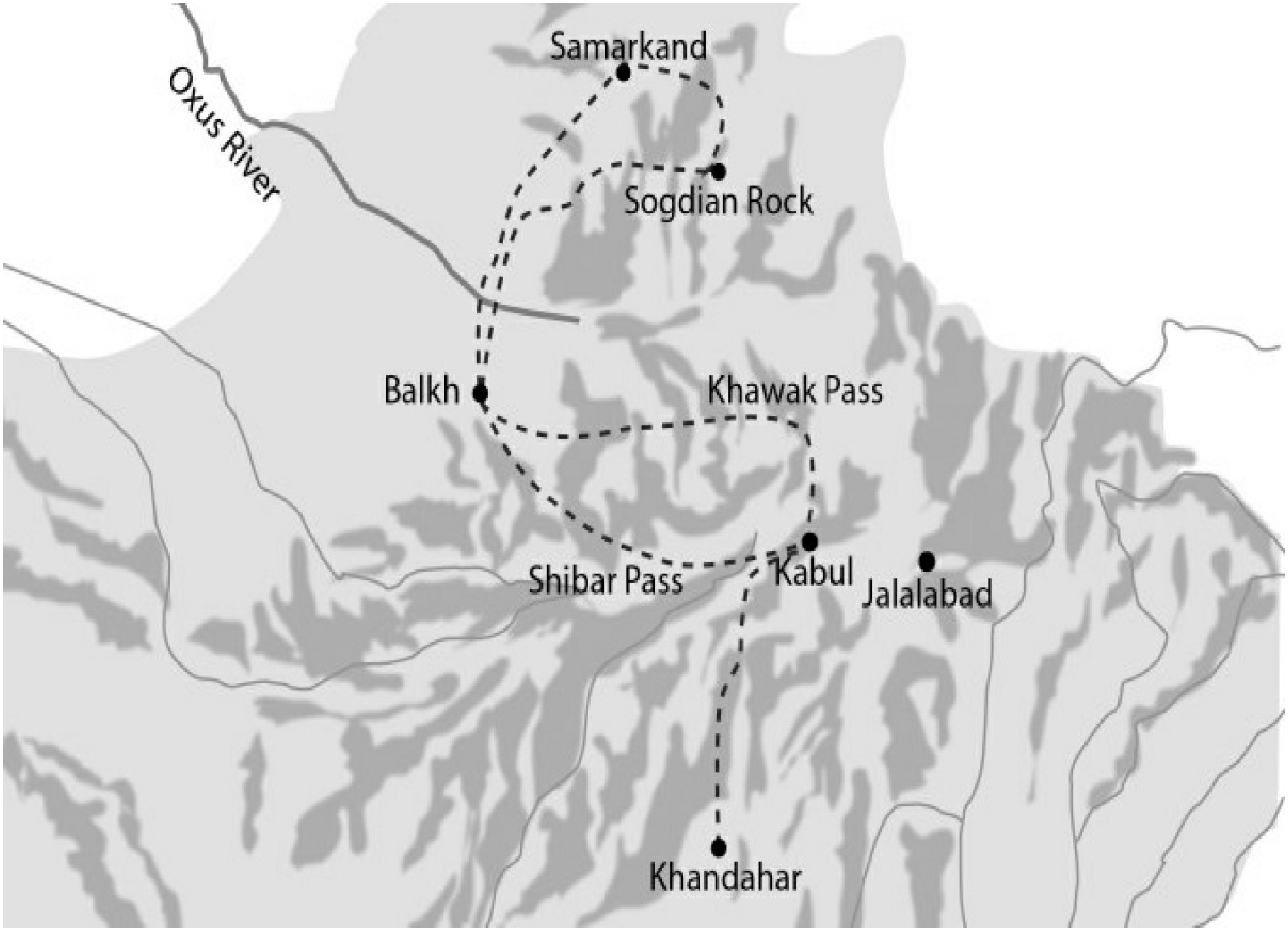
Oxus River
Samarkand
Sogdian Rock
Balkh
Khawak Pass
Shibar Pass
Kabul
Jalalabad
Khandahar

‘सिकंदर के पास तो बने-बनाए नक्शे का फायदा था,’ कोलिन झुंझला गया था। ‘और हम यहां मुश्किल पहेलियों का मतलब निकालने की कोशिश कर रहे हैं।’

‘खास बात यह है कि हमने यह सिद्ध कर दिया है कि इस सफर का अंतिम पड़ाव कुनार घाटी थी,’ शुक्ला ने निष्कर्ष निकालते हुए कहा। ‘इसका मतलब यह भी है कि अंतिम दो छंदों में जो जगहें बताई गई हैं वो घाटी में ही हैं। आखिरकार, हमारे पास विजय के लिए कुछ तो है।’ उसकी आवाज में उम्मीद की झलक थी।

जैसे संकेत मिला हो, मेज पर रखा फोन बज उठा। कोलिन दौड़कर वहां तक गया और फोन उठाया। विजय का फोन था। कोलिन ने उसे उनके विश्लेषण की जानकारी दी।

‘बात में तो दम लग रहा है,’ विजय भी उनसे सहमत दिखा। ‘कोलिन, मेरी तरफ से सबको शुक्रिया कहना। मुझे अब जाना है। वो लोग यहां से निकलने के लिए इंतजार कर रहे हैं। अब हमारे पास आगे बढ़ने के लिए काफी कुछ है।’

54

जलालाबाद, अफगानिस्तान

वान क्लुएक ने विजय की ओर सवालिया नजरों से देखा जैसे ही उसने फोन काटा। वो दोनों ही फोन कॉल के दौरान वहां मौजूद था, जब विजय ने घर पर फोन किया था, और उसे बातें करते देख रहा था। विजय और कुछ तो नहीं कर सकता था लेकिन बाकी टीम के साथ बातचीत करके पहेली सुलझाने में मदद जरूर कर सकता था।

'कुनार घाटी ही अंतिम पड़ाव है।' विजय ने वान क्लुएक को कोलिन के साथ अपनी बातचीत संक्षेप में बता दी। 'दोनों छंद, जिनमें से एक में दिन और रात और दंड का जिक्र है और दूसरे में सांप की डरावनी नजर का, कुनार घाटी के ठिकानों की तरफ ही इशारा कर रहे हैं।'

वान क्लुएक ने कूपर की तरफ देखा जो पास ही खड़ा था। 'हमारा गाइड क्या कह रहा है?'

'वो समझ नहीं पा रहा है कि पर्वतों में शिव के दंड का क्या अर्थ है,' कूपर ने शांत स्वर में जवाब दिया। 'लेकिन वो यह भी कह रहा है कि वो घाटी का स्थानीय निवासी नहीं है। वो जलालाबाद से है। हमें घाटी में बसे गांवों में पूछताछ करनी पड़ेगी। यहां से असदाबाद पहुंचने में 90 मिनट लगेंगे। सड़क अच्छी हालत में है। कुछ साल पहले ही यह बनी थी और अमेरिकी मदद से बने उस प्रोजेक्ट का हिस्सा थी जिसमें काबुल को पाकिस्तान की सीमाओं से जोड़ना था। मेरा मानना है कि हमें जाकर देखना चाहिए।'

'मुझे नहीं लगता कि हमें असदाबाद जाने की जरूरत है,' वान क्लुएक कुछ सोचते हुए बोला। 'कोई ना कोई रास्ता होगा जो मुख्य सड़क से हटकर पहाड़ों में जाता होगा। सिकंदर ने उस ठिकाने को और कैसे ढूंढ़ा होगा?'

विजय चुप था लेकिन उसकी बात से सहमत था। गुप्त डायरी के मुताबिक, यूमेनीज और सिकंदर उस ठिकाने पर घुप्प अंधेरे में गए थे, उनकी मदद के लिए सिर्फ मशाल की रोशनी थी। वो लोग ठिकाने पर तभी पहुंच सके होंगे, जब घाटी के चारों तरफ फैले पहाड़ों में जाने के लिए कोई ऐसा रास्ता था, जिस पर पैदल चला जा सके और वो भी बिना किसी कठिनाई या पहाड़ की चढ़ाई के सामानों के।

लेकिन उसने कुछ कहा नहीं। वो उन्हें गुप्त डायरी के बारे में नहीं बताना चाहता था। वो

चुपचाप देखता रहा कि वान क्लुएक ने निकलने की मंजूरी दे दी और कूपर यात्रा की तैयारी के लिए अपने आदमियों को जुटाने के लिए चला गया।

गायब है एक कड़ी

कोलिन ने हाथीदांत के क्यूब पर लिखे छंदों के प्रिंटआउट पर नजर डाली। इसके ज्यादातर राज सामने आ चुके थे। लेकिन सिकंदर के लिए हुए मार्ग का एक ठिकाना बताने वाला एक छंद अभी भी ऐसा था जिसका मतलब निकालना बचा था। वो छंद जिसमें तीन भाइयों और सांप की मुहर का जिक्र है।

'मैं संतुष्ट नहीं हूं,' उसने कहा। 'अगर क्यूब के सभी छंद बराबर महत्व रखते हैं, तो हम इसे नजरअंदाज नहीं कर सकते। इस लापता जानकारी के बिना पहेली पूरी नहीं हो सकती। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वो कुनार घाटी में क्या ढूंढ़ते हैं, लेकिन उन्हें वो नहीं मिलेगा जिसकी उन्हें तलाश है। और यह "अभियान का सार" है। अगर रहस्य कुनार घाटी में है, तो सार क्या है? यह तो सबसे अहम हिस्सा होना चाहिए ना?'

एलिस की भौंहों पर शिकन दिखने लगी जब वो छंद पर माथापच्ची कर रही थी। 'यह तो सच में उलझाने वाला है। हमने अमु नदी वाला हिस्सा तो समझ लिया है। लेकिन इस छंद में और कुछ समझ नहीं आ रहा है।'

शुक्ला चुपचाप बैठे थे, उनका चेहरा भावहीन था। वो लोग उनके दिमाग में मच रहे बवंडर का सिर्फ अंदाजा ही लगा सकते थे।

'इसे सुलझाने का एक ही तरीका है,' कोलिन ने अंत में कहा।

'मैं वही करने जा रहा हूं जो इस तरह के हालातों में आमतौर पर विजय करता है। इंटरनेट पर खोजते रहना जब तक समय का अंत ना हो जाए। कुछ ना कुछ तो मिलेगा ही।'

कुनार घाटी, अफगानिस्तान

विजय, जो सबसे आगे की लैंड रोवर में बैठा था, ने अपने पीछे आ रहे लैंड रोवर के बेड़े को देखा। कुल मिलाकर छह एसयूवी थीं, जिनमें सिर से पैर तक हथियारबंद आदमी भरे थे। उसने गौर किया था कि उनके गाइड को छोड़कर जो स्थानीय अफगान था, सभी आदमी गोरे थे। उसने अंदाजा लगाया कि ये सब यूरोप और अमेरिका से आए भाड़े के सैनिक होंगे। या ऑर्डर की निजी सेना के अंग होंगे। जो भी हो, ऑर्डर के पास मौजूद बाहुबल डराने वाला था।

यह सड़क उस जैसी नहीं थी जैसी काबुल से जलालाबाद वाली थी। गड्ढ़े और तीखी ढाल गायब थीं। अभी तक, सड़क कुनार नदी के रास्ते के साथ चल रही थी, जो इसके साथ ही एक सपाट घाटी में बह रही थी और इसके दोनों तरफ मैदान थे। घाटी कई जगहों पर

संकरी हो जाती थी, अभी तक ये ठीक—ठाक चौड़ी थी। उनके दाहिनी तरफ सड़क की सीमा कुनार नदी तक जाकर खत्म होती थी जो घाटी में बह रही थी। दूर दक्षिण में, विजय सफेद कोह पर्वत देख पा रहा था, जो पाकिस्तान के नॉर्थ वेस्ट फ्रंटियर प्रोविंस की सीमा पर था।

उनकी बाईं तरफ हिंदू कुश पर्वत थे, अफगानिस्तान की रीढ़ की हड्डी, जो ऊंचे और डराने वाले अंदाज में खड़े दिखते थे। इन्हीं पर्वतों में कहीं ईश्वर का रहस्य छिपा है।

विजय को सिकंदर पर किया हुआ अपना शोध याद आया। फारस साम्राज्य का बादशाह, डैरियस को सिकंदर से हारने के बाद उसी के एक सामंत बेसस ने मार डाला था और उसे अपमान में मरने के लिए छोड़ दिया था। बेसस ने इसके बाद अपना नाम अर्टाजेरजेस पंचम रख लिया था और हिंदू कुश पर्वतों के पार बैक्ट्रिया भाग आया था, यह सोचकर कि सिकंदर वहां उसका पीछा नहीं करेगा। लेकिन सिकंदर ने हिंदू कुश को खावक दर्रे के रास्ते पार किया, सफर के दौरान खतरों की परवाह किए बगैर। उसकी सेना को इस सफर में खाने—पीने की चीजों की कमी पड़ गई थी। उन्हें अपने जानवरों को मारकर उनका कच्चा मांस खाने को मजबूर होना पड़ा था। लेकिन सिकंदर ने आखिरकार बेसस को पकड़ लिया था, जिसे प्रताड़ित किया गया और मार डाला गया।

इसके बाद सिकंदर सॉग्डियन पर्वत की तरफ चला गया था। और वहीं कहीं, कैलिस्थनीज सेना को छोड़कर अपने गुप्त मिशन पर सॉग्डियन पर्वत के इलाके में और एक दूसरे ठिकाने पर, जिसका जिक्र एक छंद में किया गया था और उसका पता लगाना अभी बाकी है, निकल गया था। उसने वहां क्या हासिल किया था जो वह सिकंदर के लिए लेकर आया था? क्या उन्हें कुनार घाटी में सभी जवाब मिलेंगे?

55

एक कैदी के विचार

राधा अपनी कोठरी में फर्श पर घुटनों को बांहों से घेरकर बैठी थी। सक्सेना ने उसे जो बातें दिन की शुरुआत में बताई थीं, उन्होंने उसे स्तब्ध कर दिया था। और उसके अलावा यह बात कोई नहीं जानता था। उसे पूरा भरोसा था कि ऑर्डर को उसका मिशन पूरा करने और लक्ष्य हासिल करने से कुछ नहीं रोक सकता था।

उसके लिए सबसे दुखद बात यह थी कि वो इस बारे में कुछ नहीं कर सकती थी। यह बात उसे खाए जा रही थी। वो यहां से बाहर निकलना चाहती थी और दुनिया को बताना चाहती थी कि सच में हो क्या रहा है, क्लीनिकल ट्रायल क्यों किए जा रहे हैं? लेकिन वो यह भी जानती थी कि सक्सेना ने उसके सामने ऑर्डर की योजना का खुलासा इसी वजह से किया था कि उसके यहां से निकल पाने की कोई उम्मीद नहीं है। वो एक ऐसी कोठरी में बंद थी जिसे अंदर से नहीं खोला जा सकता था। चौबीसों घंटे उसकी कोठरी की सीसीटीवी कैमरे से निगरानी होती थी जो बाहर गलियारे में लगे थे। किसी भी तरह की असामान्य गतिविधि का तुरंत पता लग जाता था। नियमित अंतराल पर एक पहरेदार उसकी निगरानी के लिए वहां आता था। और, अगर वो किसी भी तरह पहरेदार को अपने कब्जे में लेकर कोठरी से बाहर निकलने में कामयाब भी हो जाती है, तो उसने बाहर पूरी बिल्डिंग देखी ही थी। यह जमीन के नीचे बनी थी और उसने बाहर निकलने का कोई दरवाजा नहीं देखा था।

उसे इस कड़वी सचाई से मुकाबला करना था। यहां से बच निकलने का कोई रास्ता नहीं है। यहां से उसके बाहर निकलने के लिए इकलौता तरीका था कि कोई इस जगह को ढूंढ़ निकाले और उसे बचा ले।

लेकिन ऐसा होने की संभावना बहुत कम थी क्योंकि कोई जानता ही नहीं था कि वो कहां है।

दिशासूचक की तलाश

जलालाबाद से उनके निकलने के बाद से ही चढ़ाई धीरे—धीरे बढ़ती जा रही थी। घाटी अब काफी संकरी हो चुकी थी। दोनों तरफ के मैदान गायब हो चुके थे और अब सड़क हिंदू कुश की तलहटी से गुजर रही थी, उसकी दाहिनी तरफ नदी अभी भी साथ बह रही थी।

उन लोगों ने रास्ते में गुजरते वक्त कई गांवों में पूछताछ की थी लेकिन उस दिशासूचक के बारे में कोई सुराग नहीं मिल पाया था जो उन्हें वांछित ठिकाने पर ले जाने वाला था।

अब वो लोग खतरनाक इलाके में प्रवेश कर रहे थे। बीच—बीच में उनके कानों में रॉकेट दागने के धमाके सुनाई पड़ रहे थे। यह घाटी अफगानिस्तान में हो रहे युद्ध का सक्रिय मैदान थी। सिकंदर के दो हजार साल बाद भी यहां खून—खराबा रुका नहीं था। कूपर ने वान क्लुएक को भरोसा दिलाया था कि तालिबान की स्थानीय इकाई को उनके घाटी में होने की बात बता दी गई है।

'वो हमारे रास्ते में आज मिसाइलें नहीं दागेंगे,' उसने वान क्लुएक को बताया था। अब तक तो यह वादा सच साबित होता दिख रहा था। विजय उम्मीद कर रहा था कि यह वादा तब तक ऐसा ही रहे, जब तक वो लोग जलालाबाद ना लौट जाएं।

आगे एक और गांव दिखने लगा था जिसमें मिट्टी की झोपड़ियां बनी थीं। काफिला रुका और स्थानीय गाइड उतरकर अपनी पूछताछ करने लगा।

इस बार, लग रहा था कि उसे कुछ पता चल गया है। वो लोग उसके चेहरे पर चौड़ी मुस्कान और पहाड़ों की तरफ उसके इशारे देख सकते थे।

वो तेजी से लंबे—लंबे कदमों से पहली एसयूवी की तरफ आया जिसमें वान क्लुएक कूपर और विजय के साथ बैठा था। कूपर बाहर निकला और उसके साथ कुछ बातचीत करने के बाद वान क्लुएक की तरफ मुड़ा। 'गांव वालों के मुताबिक, यहां से करीब एक किलोमीटर दूर एक पगडंडी है जो पहाड़ों में जाती है। दो घंटे की चढ़ाई के बाद हम चट्टान के बने हुए कुछ ढांचे और अभिलेखों के बीच होंगे जो प्राचीन काल के लगते हैं। हमारा गाइड कह रहा है कि हमें अपना दिशासूचक वहीं ढूंढ़ना चाहिए।'

वान क्लुएक ने एक तीक्ष्ण दृष्टि गाइड पर डाली। 'हम कैसे मान लें कि वो हमें कुछ बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बता रहा है? जब हम वहां पहुंचे तो हो सकता है कि सिर्फ चट्टानों पर बनीं कुछ आकृतियां मिलें जो चालीस हजार साल पहले गुफाओं में रहने वाले लोगों ने बनाई हों।'

कूपर मुस्कुराया। 'मैंने उससे इस बारे में भी बात की है। वो हमारे साथ आ रहा है। और अगर हमें वो चीज नहीं मिली जो हम ढूंढ़ रहे हैं तो वो नतीजों के बारे में भी जानता है।'

'ठीक है, फिर तो। चलो।'

काफिला फिर से चल पड़ा।

भागने की योजना

राधा के दिमाग में एक विचार जम गया था। यह विचार इस सचाई को समझने के बाद आया था कि बाहर से कोई जब तक इस बिल्डिंग की सुरक्षा व्यवस्था को भेदकर अंदर नहीं आता, उसे कोई नहीं ढूंढ़ सकता। और यह असंभव नहीं था, बशर्ते किसी को पता हो कि ढूंढ़ना

कहां है।

अगर वो यहां से बाहर किसी तरह से अपना मेसेज भेजने का तरीका ढूंढ़ ले तो? अनवर ने इमरान को मेसेज ऐसे ही भेजा था। अनवर की किस्मत की दुखद याद इस विचार के साथ ही आई और उसे उबकाई आने लगी। तुरंत ही उसने इसे अपने दिमाग से हटा दिया।

वो जानती थी कि किसी भी तरह उसकी मौत तो तय है। वो लोग उसे सिर्फ मोल—तोल के लिए इस्तेमाल कर रहे थे ताकि विजय उनकी मदद करे। एक बार उनका मकसद पूरा हो जाएगा, उसे मार दिया जाएगा। या इससे भी बुरा, उनके डरावने प्रयोगों में गुलाम की तरह इस्तेमाल किया जाएगा। उसे फ्रीमैन के प्रोजेक्ट के बारे में सक्सेना की टिप्पणी याद आई। वो लोग क्या कर रहे थे जिसमें आनुवांशिकी की जरूरत है?

अभी यह मायने नहीं रखता था। अहम यह था कि वो किसी तरह आईटी सेक्शन में पहुंचे और देखे कि क्या वो कोई मेसेज भेज सकती है।

राधा ने ठान लिया कि वो कोशिश तो करेगी ही। वो नाकामी के नतीजे भी जानती थी। लेकिन वो इस तरह सिर्फ बैठकर यह देख नहीं सकती कि सक्सेना और उसकी टीम अपने मिशन पर इस तरह काम करे जैसे उनकी गलती पकड़ी ही ना जाएगी।

आशा की किरण

कोलिन लैपटॉप लेकर बैठा और अपनी थकी आंखों को मला। बाहर अंधेरा छाने लगा था और वो पिछले कई घंटों से काम कर रहा था। वो खड़ा हुआ और खिड़की के पास गया, वहां से पहाड़ी के तल में बसे छोटे से गांव की लाइटें दिख रही थीं।

वो छंद के एक हिस्से का मतलब निकाल पाया था। या ये कहें कि वो ऐसा सोच रहा था। लेकिन उससे किसी तरह की कोई मदद मिल नहीं रही थी। लंबे समय तक सोच—विचार करने, बाकी लोगों के साथ चर्चा करने और इंटरनेट पर रिसर्च के बाद, उसने यह निष्कर्ष निकाला था कि “लवणरहित समुद्र” अरल सागर को कहा गया है, एक झील जो अमू नदी से निकलती है, जिसे अमू दरिया भी कहा जाता है।

भले ही अरल सागर अब उस चीज की फीकी परछाई भर हो, जो वो 60 साल पहले थी, लग रहा था कि यही सबसे उपयुक्त दावेदार है। पहली वजह तो यह कि ये अमू नदी के सबसे करीब थी। दूसरी वजह यह कि अरल सागर तक पहुंचने के लिए अमू नदी को पार करने की जरूरत पड़ती, अगर कोई बाल्ख से आ रहा हो। तीसरी वजह, अरल सागर मूल रूप से ताजे पानी का सागर था। पिछले कई दशकों के दौरान इसका पानी नमकीन हो गया था, क्योंकि इसमें जिन नदियों का पानी गिरता था, उनके रास्ते मोड़ दिए गए थे, और सागर खुद भी पहले के मुकाबले काफी सिकुड़ चुका था। इस वजह से पानी में विषैले पदार्थों और लवण की मात्रा ज्यादा हो गई थी।

लेकिन जहां अरल सागर छंद में वर्णित सागर होने के लिए तीन शर्तों को पूरा करता था,

उसके आगे छंद में उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था। अमू नदी या अरल सागर से जुड़े तीन भाइयों की खोज से अब तक कुछ नहीं निकला था। उसे "आंख" के उस अनुवाद पर संदेह होने लगा था जो शुक्ला ने किया था। मान लो कि वास्तव में यह एक आंख ही हो और नदी की तरफ इशारा ना हो तो? लेकिन यह तो एक नई पहेली की तरफ ले जाएगाः "तेजी से बहती आंख" का क्या मतलब है?

कोलिन ने ठंडी सांस भरी। यह उतना आसान नहीं था जितना उसने सोचा था। वो सोच रहा था कि विजय क्या कर रहा होगा। उसकी तरफ से कोई खबर नहीं थी।

वो फिर से लैपटॉप पर बैठ गया। समय तेजी से बीत रहा था।

उसके लिए। और विजय और राधा के लिए भी।

56

पहाड़ों में

वान क्लुएक एक शिलाखंड पर बैठा था और अपनी टीम को चारों तरफ दिशासूचक की तलाश करते हुए देख रहा था। दिन ढलना शुरू हो चुका था लेकिन वो लोग ताकतवर पोर्टेबल सर्चलाइट लेकर आए थे जिन्होंने उनके इर्द—गिर्द पहाड़ों और चट्टानों में रोशनी कर रखी थी।

चढ़ाई कहने के मुताबिक ही दो घंटे में खत्म हो गई थी। यहीं पर उनके गाइड ने रुकने को कहा था और संकेत दिया था कि इसी ठिकाने पर उन्हें छंद में वर्णित निशानियों की तलाश शुरू करनी चाहिए।

उनके आसपास की जगह कम से कम छंद के एक हिस्से की तरफ तो इशारा कर रही थी। वो लोग अब कुनार नदी से ऊंचाई पर थे। वान क्लुएक ने अंदाजा लगाया था कि वो लोग घाटी के तल से कम से कम 2000 फीट ऊपर थे, एक तरह के टीले पर। और छंद ने ऐसी जगह की बात की थी जहां टीला नदी के ऊपर हो।

वो वहां बैठकर सोच रहा था कि यहां उसका लक्ष्य पूरा होने का मतलब क्या होगा। ऑर्डर में उसका कद बढ़ना। शीर्ष के थोड़ा और करीब। हो सकता है वो उस गुप्त समूह में शामिल हो जाए, जो ऑर्डर को चलाता है। उसका परिवार सदियों से ऑर्डर का सदस्य रहा है। उन्होंने वफादारी के साथ अपना काम किया था, यहां तक कि उन दिनों में भी, जब वो समुद्री डाकू हुआ करते थे। लेकिन इसके बाद से वान क्लुएक के परिवार ने लंबी दूरी तय की थी। वो ज्यादा समृद्ध हुए थे, ज्यादा शक्तिशाली, ज्यादा सम्मानित। और वो इन सालों में ऑर्डर में एक के बाद एक ऊंचे ओहदे पाने लगे थे।

आज, वो ऑर्डर में सबसे बड़े इनाम को पाने के काफी करीब था; ऐसा पद जो उसे उस आदमी की बराबरी पर बैठा देता जो ऑर्डर को चलाता था। ऐसा आदमी जो मूल वंश का था। वो वंश जो ऑर्डर के साथ ही शुरू हुआ था और हजारों साल से चला आ रहा था, अछूता और खालिस।

जब वो अपने आदमियों को गौर से देख रहा था, उसकी निगाहें विजय पर जाकर टिक गईं। उसे विजय समझ नहीं आया था। क्या वो जानता नहीं था कि उसकी मंगेतर और वो मरने वाले हैं? वो यकीनन बेवकूफ नहीं था। फिर भी, वो विपरीत परिस्थितियों में भी

जबरदस्त दृढ़ता दिखाने की कोशिश कर रहा था। क्या पीछे से कोई उसकी मदद कर सकता है? लेकिन वान क्लुएक जानता था कि विजय निहत्था है। उसने अपना सिर हिलाया। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यह आदमी पहेलियां सुलझाने और उलझनों को दूर करने में उस्ताद था। और आज, वो उनकी मदद अपनी मर्जी से कर रहा था। वान क्लुएक इससे ज्यादा क्या मांग सकता था।

विजय शाम के धुंधलके में घूम रहा था, उसके साथ दो हथियारबंद लोग सर्चलाइट के साथ मौजूद थे। वो कोशिश कर रहा था कि वो अपनी किस्मत के बारे में ना सोचे और चट्टानों और पहाड़ पर ही ध्यान लगाए। गांववालों और गाइड ने अभिलेखों और रेखाचित्रों को लेकर सही कहा था। आसपास के शिलाखंडों पर आड़े—तिरछे तरीके से कलाकृतियां और लेख उकेरे गए थे। लेकिन अभी तक कुछ ऐसा नहीं मिला था जो छंद के वर्णन से मेल खाता हो।

पहाड़ के एक दूसरे हिस्से की तरफ जाने पर, उसे वहां एक गहरी गुफा दिखी, जो एक छोटे रास्ते की तरह ज्यादा दिख रही थी, कुछ फीट लंबी ये गुफा चट्टानों की दीवार पर खत्म होती थी। इसका प्रवेश द्वार आयताकार था, और द्वार के ठीक ऊपर एक वर्गाकार छेद बना था जो चट्टान को काटकर बनाया हुआ लगता था। लेकिन यह इतना छोटा था कि कोई इससे रेंगकर भी नहीं जा सकता था। उसने सोचा कि आखिर इस छेद का क्या मकसद हो सकता है, क्योंकि यह तो तय था कि इससे होकर गुफा में नहीं जा सकते, भले ही इसका प्रवेश द्वार बंद हो जाए। उसने अपने साथ आए गार्ड्स को कहा कि वो अपनी सर्चलाइट से गुफा के पिछले हिस्से में रोशनी करें, जहां घुप्प अंधेरा था।

विजय ने देखा कि वहां एक खड़ी चट्टान पर, जो गुफा से घिरी हुई थी, शिकार का दृश्य उकेरा गया है। दो तीरंदाज अपने धनुष खींचकर एक अनिश्चित जानवर का शिकार कर रहे हैं, शायद एक हिरण का, और शिकारियों में से एक के पास एक छोटा जानवर बैठा है। यह एक कुत्ता हो सकता था, हालांकि कहना मुश्किल था क्योंकि रेखाचित्रों में सफाई नहीं थी।

उसकी पहली प्रतिक्रिया भी वान क्लुएक की शुरुआती प्रतिक्रिया की ही तरह थी। ये सब अस्पष्ट चित्रकारी लग रही थी जो हजारों सालों पहले की गई होगी, और उन लोगों ने की होंगी जो इन गुफाओं में रहते होंगे और जीवनयापन के लिए शिकार करते होंगे। इनमें से किसी भी रेखाचित्र का उनकी खोज से क्या संबंध हो सकता है?

विजय उन आकृतियों से अब अपना ध्यान हटाने ही वाला था कि एकाएक किसी चीज पर उसकी नजरें अटक गईं।

उसने तस्वीर की एक खास बात पर ध्यान नहीं दिया था। उसने जो दृश्य अभी—अभी देखा था, उसके थोड़े ऊपर, पत्थरों में कटाई करके, पांच फलकों वाला एक तारा और एक वृत्त बने थे, जिनके चारों तरफ छोटी—छोटी सीधी लकीरें थीं जो बाहर की तरफ निकल रही थीं। उसे समझ आ गया कि वो क्या देख रहा है।

'यहां है यह,' उसने पुकारा। 'पहला दिशासूचक।' उसने चित्र को ध्यान से देखा। इस

तस्वीर में शुक्र कहां है? ऋषि भृगु का बेटा? क्या वो यहां दिखाए गए शिकारियों में से एक है?

वान क्लुएक तेजी से विजय की खोज को देखने के लिए वहां पहुंच गया था, बाकी सारे आदमियों के साथ।

'दिन और रात मिलते हैं,' विजय ने समझाया। 'सूरज और तारा, दिन और रात को दिखाते हैं। एक साथ एक ही चित्र में। यही है वो।'

'हम्म।' वान क्लुएक उस चित्र को देख रहा था। 'मुझे लगता है तुम सही हो। लेकिन अब, हम शिव के दंड को कैसे ढंढ़ें?'

इस खोज से पैदा हुआ विजय का रोमांच ठंडा पड़ गया। उसके पास कोई जवाब नहीं था।

57

पहला कदम

राधा ने फैसला कर लिया था कि अब सही समय आ गया है। वो तब तक इंतजार नहीं करना चाहती थी जब काफी देर हो जाए। उसने एक गहरी सांस ली और उस कॉल बटन को दबा दिया जो गार्ड को बुलाने के लिए इस्तेमाल किया करती थी, जब भी उसे शौचालय या स्नानघर का इस्तेमाल करना होता था। इस मंजिल पर एक बड़ा बाथरूम बना था, जिसमें ढेरों छोटे कंपार्टमेंट बने हुए थे और जो मंजिल पर रहने वाले सभी लोग एक साथ इस्तेमाल कर सकते थे। बाथरूम के करीब ही शौचालय बने थे।

अपने नियम के अनुसार गार्ड वहां आ गया, उसके हाथ में एक छोटी बेंत थी जो टेजर की तरह काम करती थी। इससे बिजली के झटके लगते थे, जो किसी को अचेत कर सकता था, या सिर्फ झटका और चोट पहुंचाने के लिए भी इस्तेमाल हो सकता था। गार्ड ने इसका इस्तेमाल राधा पर कभी नहीं किया था, लेकिन राधा ने देखा था कि दूसरे कैदियों पर वो कभी—कभी इसका इस्तेमाल करता है। साफ लगता था कि उसे अपने कैदियों को, खासकर महिलाओं को चीखते देखकर मजा आता था। राधा अपनी योजना को लेकर बेचैन तो थी, लेकिन उसे गार्ड से कोई सहानुभूति नहीं थी, ना ही उस चीज से बेचैनी थी जो वो गार्ड के साथ करने वाली थी।

राधा तेजी से गलियारे में चलने लगी, जैसे उसे काफी जल्दी हो। गार्ड ने भी अपनी रफ्तार बढ़ा दी ताकि वो उसके साथ ही रहे। अपनी कनखियों से राधा ने पीछे की तरफ देखा तो पाया कि उसके चेहरे पर बड़ी सी मुस्कान है। साफतौर पर उसके मन में गंदी भावना थी। इससे राधा को अपनी योजना पर अमल करने की ज्यादा ताकत मिल गई।

वो शौचालयों की कतार तक पहुंच गई थी; हर शौचालय एक छोटा क्युबिकल था जिसके दरवाजे बाहर की तरफ खुलते थे। जब वो दरवाजा खोल रही थी, इस बारे में सोचती भी जा रही थी। दरवाजा काफी पतला सा था, परतदार पार्टिकल बोर्ड का बना हुआ। क्या यह उसके काम आएगा?

यह पता करने का एक ही तरीका था। वो क्यूबिकल में घुस गई। अंदर की तरफ दरवाजा बंद करने की कोई चिटकनी नहीं थी। मान लिया गया था कि लोगों की निजता में दखल नहीं होगा।

उसने इंतजार किया। उसकी योजना कई चीजों पर टिकी थी जिनके होने की संभावना को लेकर पूरा भरोसा उसे खुद भी नहीं था। उसने इस ख्याल को अपने दिमाग से निकाल दिया और मनाने लगी कि उसकी योजना काम कर जाए।

मिनट बीतते जा रहे थे।

कुछ नहीं हुआ।

क्युबिकल के अंदर शांति थी।

और बाहर भी।

उसने खुद को मजबूत किया। धैर्य की जरूरत है।

अभी भी, कुछ नहीं हुआ।

तब जैसे ही वो हार मानने वाली थी, उसने गार्ड के दरवाजे के पास आने की आहट सुनी।

वो खड़ी हो गई। यही मौका था। उसे हमला करने के लिए बिलकुल सही समय का अंदाजा लगाना होगा।

यह अनुमान लगाकर कि गार्ड दरवाजे से इतनी ही दूरी पर खड़ा है कि उस पर हमला किया जा सकता है, उसने दरवाजे को पूरी ताकत से धक्का दिया।

दरवाजा तेजी से बाहर की तरफ खुला, और गार्ड के चेहरे पर जोर से टकराया। इस हमले की ताकत से वो लड़खड़ाता हुआ पीछे की तरफ गया, अपना संतुलन खोया और लुढ़क गया।

जितनी जोर से राधा ने धक्का दिया था, उसकी वजह से वो भी ठोकर खाकर गार्ड के ऊपर गिर पड़ी, जो फर्श पर अपनी नाक पकड़कर पड़ा हुआ था।

लेकिन वो जल्दी ही संभल गया था। यह समझकर कि राधा क्या करने की कोशिश कर रही है, उसने बैठने की कोशिश की, हालांकि उसकी टूटी नाक से खून उसके चेहरे पर बह रहा था। उसने दाहिने हाथ में इलेक्ट्रिक केन पकड़ी और राधा पर इस्तेमाल करने को तैयार हुआ।

एक पल के लिए तो राधा घबरा गई। उसकी योजना नाकाम होने वाली थी। उसने सोचा था कि वो गार्ड पर काबू पा लेगी।

तभी, उसका फौलादी संकल्प जाग उठा। उसे याद आया कि टास्क फोर्स से जुड़ते वक्त उसे लड़ाई के प्रशिक्षण में क्या सिखाया गया था। उसने अपने कूल्हों को लीवर की तरह इस्तेमाल करते हुए, अपना एक पैर पूरी मजबूती से गार्ड की तरफ लहरा दिया। उसकी एड़ी का तेज प्रहार गार्ड के सिर पर लगा, उसी ताकत के साथ जैसा कराटे की राउंडहाउस किक में होता है।

गार्ड फिर से नीचे गिर पड़ा।

राधा ने उसका इलेक्ट्रिक केन उठाया और देखा। जैसा उसने सोचा था, यह वैसा ही था——टेजर का बेहतर संस्करण। उस पर बिजली का झटका देने के अलग—अलग स्तर बने थे। उसने उसे स्टन पर सेट किया और गार्ड के शरीर से सटा दिया।

गार्ड का शरीर एक—दो बार तेज झटके से उछला और फिर स्थिर हो गया। लेकिन वो अभी भी पूरी तरह बेहोश नहीं हुआ था, सिर्फ असहाय हुआ था। राधा को नहीं पता था कि उसे फिर से संभलने में कितनी देर लगेगी। उसे इस समय का बेहतर इस्तेमाल करना था।

राधा को महसूस हुआ कि उसकी सांस तेजी से चल रही है और उसे काफी पसीना आ रहा है। वो यहां तक तो पहुंच चुकी थी।

लेकिन मुश्किल काम तो अब शुरू होने वाला था।

शिव के दंड की तलाश

विजय बैठकर अपना दिमाग दौड़ा रहा था। वो लोग छंद के बारे में सही सोच रहे थे। इसने कुनार घाटी की ही तरफ इशारा किया था। उन लोगों ने नदी के ऊपर टीला ढूंढ़ लिया था। उन लोगों ने दिन—रात का मिलन ढूंढ़ लिया था।

लेकिन शुक्र कहां है? वो शिव के दंड को कैसे ढूंढ़ेंगे?

'मैं बाकी लोगों को फोन कर रहा हूं,' उसने वान क्लुएक को बताया और सैटेलाइट फोन से किले का लैंडलाइन नंबर लगाया।

'जल्दी खत्म करो तो बेहतर होगा,' वान क्लुएक ने जवाब दिया था। अब अंधेरा होने लगा था और, वैसे तो उनके पास ऐसे हालातों में रात बिताने के लिए जरूरी सामान थे, वो चाहता था कि तलाश खत्म हो और वो इन सबसे निपटे।

फोन एक—दो बार बजा और फिर उस पर एक थकी सी आवाज ने जवाब दिया। 'हां?' यह कोलिन था।

'सुनो, मुझे मदद चाहिए।' विजय ने कोलिन को तुरंत सारी बातें बता दीं। 'क्या बाकी लोग वहां हैं? क्या हम लोग इसे सुलझाने के लिए साथ आ सकते हैं?'

'मुझे नहीं मालूम कि वो कहां हैं,' यह जवाब था। 'लेकिन देखते हैं क्या मैं और तुम मिलकर इसको सुलझा पाते हैं। तुम कह रहे हो कि एक शिकार का दृश्य है और उसके ऊपर एक सितारा और सूर्य है।'

'हां, और छंद के मुताबिक दिन और रात मिलते हैं और शुक्र शिव के दंड का रास्ता दिखाता है। लेकिन मुझे कुछ ऐसा नहीं दिख रहा जो शुक्र को दर्शाता हो।'

'हम्म, यह तो उलझाने वाला है। ठीक है, एक बार फिर से मुझे तस्वीर के बारे में बताओ।'

‘क्या पागलपन है,’ कोलिन ने शिकायती लहजे में कहा। ‘हमने सोचा था कि तस्वीर के सभी हिस्से एक साथ होंगे। दिन, रात, शुक्र। एक खुशहाल परिवार। सभी एक त्रिशूल की तरफ इशारा कर रहे होंगे। लेकिन इतना आसान नहीं है ना ये?’

विजय कोलिन की बकबक सुन रहा था, जानता था कि उसके दोस्त का सोचने और विश्लेषण करने का यही तरीका है।

‘तो, अगर तस्वीर तुम्हें रास्ता नहीं दिखा रही है तो कुछ और दिखाएगा।’

‘हां, लेकिन क्या?’

‘यह है तो दूर की कौड़ी, लेकिन तुम इसे आजमा सकते हो। जब हम लोग बात कर रहे थे, मैंने शुक्र को गूगल किया। पता है मुझे क्या देखने को मिला?’

58

राधा के अभियान की शुरुआत

राधा फर्श से उठी, उसने टेजर पकड़ रखा था। उसने तय किया था कि वो इसे अपने पास ही रखेगी। गार्ड का एक्सेस कार्ड भी काम आने वाला था, इसलिए उसने इसे उठा लिया। उसकी जेब में और कुछ ऐसा नहीं था जो उसके काम आता।

यह पता नहीं था कि वो होश में कब आ जाएगा इसलिए राधा ने और समय बर्बाद नहीं करने का फैसला किया और शौचालय से तुरंत निकल आई। एक बार वो गार्ड अगर होश में आ गया तो वो जाहिर तौर पर शोर मचाएगा और फिर सब किए कराए पर पानी फिर जाएगा।

वो सोच रही थी कि फिर क्या होगा। उसके लिए कुछ अच्छा तो नहीं ही होगा, इसका उसे पूरा भरोसा था। लेकिन जब उसने ओखली में सिर डाल ही दिया है तो अब मूसल से क्या डर है।

उसका अगला पड़ाव थी लिफ्ट। इन मंजिलों पर कुछ नहीं था। इस बिल्डिंग का मुख्य केंद्र तहखाने में स्थित था।

सबसे नीचे की तीन मंजिलें, उसने याद किया। कैदियों के लिए बनी कोठरियों की आठ मंजिलें वैसे भी जमीन के नीचे ही बनी थीं।

सक्सेना उसे जिस मंजिल पर ले गया था, वहां उसने आईटी रूम नहीं देखा था। हो सकता है कि यह उन मंजिलों में से एक पर हो, जो फ्रीमैन के प्रोजेक्ट के लिए इस्तेमाल होते हैं।

लेकिन वो अस्पताल के गाउन में उन मंजिलों पर नहीं जाना चाहती थी। वो तुरंत ही कैदी के रूप में पहचान ली जाएगी। दिक्कत यह थी कि उसके पास बदलने के लिए कपड़े नहीं थे और ना ये पता लगाने का कोई तरीका था कि उसके अपने कपड़े कहां रखे हैं, अगर उन्हें रखा गया हो।

उसने एक मिनट तक सोचा, उसके दिमाग में एक विचार घर कर रहा था। उसे इस पर पक्का भरोसा तो नहीं था, लेकिन उसके पास यही इकलौता विकल्प था। लिफ्ट के दरवाजे खुले। वो सांस रोककर, इलेक्ट्रिक केन के साथ तैयार खड़ी थी अगर कोई लिफ्ट से निकले और उसे इसका इस्तेमाल करना पड़े।

लेकिन लिफ्ट में कोई नहीं था। वो उसमें घुस गई और उस मंजिल का बटन दबा दिया, जिसमें वो पहले जा चुकी थी। लिफ्ट को चलाने के लिए उसने गार्ड का एक्सेस कार्ड इस्तेमाल कर लिया था।

लिफ्ट बिना कोई आवाज किए तेजी से उस मंजिल पर पहुंच गई जो उसने चुनी थी।

दरवाजे चुपचाप खुल गए।

राधा एक पल के लिए खड़ी रही, उसका कलेजा मुंह को आ रहा था। वो आगे बढ़ने का निश्चय कर चुकी थी लेकिन उसे बार-बार अंदर से ऐसी आवाज सुनाई दे रही थी कि दरवाजा बंद कर दो और अपनी कोठरी में चली जाओ।

लेकिन अब पीछे लौटने का कोई मतलब नहीं था। वो काफी दूर आ चुकी थी। गार्ड पर हुआ हमला छिप नहीं पाएगा, और इसका बदला भी लिया जाएगा।

राधा ने एक गहरी सांस ली और लिफ्ट से बाहर निकली।

जादू का इंतजार...

विजय ने फोन काट दिया। कोलिन ने उसे जो बताया था, उसका मतलब तो निकल रहा था। वो इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता चुनने की नहीं सोच सकता था। वो बस यही उम्मीद कर रहा था कि वो दोनों सही निकलें।

वान क्लुएक ने विजय की तरफ सवालिया निगाहों से देखा जब वो बाकी लोगों के पास आया।

'हमें इंतजार करना होगा,' विजय ने उसे कहा और समझाया कि कोलिन ने फोन पर क्या कहा है। 'बस थोड़ी देर और। सूरज करीब—करीब डूब चुका है। हमें उत्तर-पश्चिम की तरफ देखना होगा।'

कूपर को संदेह था। 'तुम पक्का कह सकते हो कि यह काम करेगा? मुझे तो यह जादुई खेल जैसा लग रहा है।'

'जो तुम अबसे थोड़ी देर में देखने जा रहे हो, उसमें उतना ही विज्ञान है जितना ईश्वर के रहस्य में है,' विजय ने पलटकर जवाब दिया।

सूरज क्षितिज के नीचे चला गया और पहाड़ों पर अंधेरा उतर आया। माहौल में एक भारीपन सा छा गया था जब सभी लोग इंतजार करते हुए आसमान की तरफ देख रहे थे।

कई मिनटों तक कुछ नहीं हुआ।

विजय को पसीना आने लगा था। कुछ हो क्यों नहीं रहा है?

अस्पताल में

इमरान अस्पताल में अपने बिस्तर पर लेटा था और उसके मुंह से आह निकली। दर्द से नहीं, बल्कि इस सोच से कि वो यहां लेटा हुआ था जबकि उसे राधा की तलाश में लगा होना चाहिए था। और उन लोगों को ढूंढ़ निकालना चाहिए था जिन्होंने उसे जान से मारने की कोशिश की थी।

विजय कल उससे मिलने आया था और सारी घटनाओं की जानकारी दी थी। इमरान विजय को देखकर खुश हुआ था। और विजय भी उससे मिलकर खुश था।

'हम सब सोच रहे थे कि तुम मरने वाले हो,' विजय ने इमरान को कहा। 'भगवान का शुक्र है कि तुम बच गए।'

'मरने ही वाला था,' इमरान ने फीकी मुस्कान दी थी। बम के टुकड़े उसके जरूरी अंगों को और महत्वपूर्ण धमनियों को चोट नहीं पहुंचा पाए थे और उसकी जिंदगी बच गई थी। जैसे ही खिड़की के कांच छितराने की आवाज आई थी, उसने होशियारी दिखाते हुए बगल के कमरे में छलांग लगा दी थी और इसी से उसकी जान बच पाई थी। उसकी चोटों से खून काफी बह गया था और उसे काफी कमजोरी आ गई थी लेकिन वो फिर से लड़ाई के लिए जिंदा था। वो लड़ेगा, इमरान की सोच में दृढ़ता थी।

उसे राधा के बारे में सुनकर झटका लगा था और वो इस बात से भी चकित था कि उसके अपहरण के दो दिनों बाद भी उसका कोई पता नहीं चल पाया था। ये तो ऐसा था जैसे उसके अपहरणकर्ता उसके साथ हवा में गायब हो गए हों।

इमरान ने विजय के जाते ही वैद को फोन किया था और मांग की थी कि उसे भी राधा की तलाश और टास्क फोर्स की गतिविधियों से जोड़ा रखा जाए, अस्पताल के उसके कमरे से ही।

वैद अनिच्छा से राजी हो गया था, वो जानता था कि इमरान से बहस का कोई फायदा नहीं है। और वो समझ सकता था——अगर इमरान बाहर आकर काम नहीं कर सकता था, तो वो चाहता था कि वो अपने कमरे से ही इसकी निगरानी कर सके। आखिरकार, वो भारत में टास्क फोर्स का प्रमुख था।

इसके बाद, इमरान का कमरा एक मिनी आईटी सेंटर की तरह दिखने लगा था, कमरे में कई आलमारियों में आईटी उपकरण, रूटर, सर्वर रखे थे और हर तरफ तार फैले हुए थे। अलग—अलग कोणों पर तीन फ्लैट स्क्रीन मॉनिटर लगाए गए थे, जिनमें अलग—अलग जगहों से सीधा प्रसारण हो रहा था, जहां पर टीमें इस केस पर काम कर रही थीं। एक मॉनिटर ने उसे सीधे पैटरसन से जोड़ रखा था।

इमरान ने पूरा दिन टीमों से बात करने में बिताया था, वो समझने की कोशिश कर रहा था कि वो क्या कर रहे हैं, और सुरागों का विश्लेषण कर रहा था। लेकिन कुछ भी ऐसा नहीं था जो मदद कर पाता।

कुछ भी नहीं।

ऐसा लग रहा था जैसे राधा का अस्तित्व ही नहीं हो।

59

मदद के हाथ

राधा उस कमरे की तरफ बढ़ी जहां सक्सेना उसे पहले ले गया था। वो तेजी से चल रही थी, कोशिश कर रही थी कि जहां तक मुमकिन हो, वो सतर्क रहे। अभी तक उसकी किस्मत ने साथ दिया था। पहले की ही तरह, गलियारे के ज्यादातर दरवाजे बंद पड़े थे। और जहां दरवाजे खुले भी थे, अंदर प्रयोगशालाओं में काम कर रहे लोग इतने व्यस्त थे कि उन्हें गलियारे में हो रही गतिविधि पर ध्यान देने का वक्त ही नहीं था।

जब वो गलियारे में आगे बढ़ रही थी, उसने बंद पड़े दरवाजों में बनी कांच की छोटी खिड़कियों से अंदर झांका। उनमें भी प्रयोगशालाएं थीं जहां कई लोग सर्जिकल मास्क और दस्ताने पहने अपने काम में व्यस्त थे।

उसने गौर किया कि कहीं भी कोई औरत नहीं थी। सिर्फ मर्द थे। वो सोच रही थी कि ऐसा क्यों। लेकिन इस वक्त यह सोचना जरूरी नहीं था। उसके मन में घबराहट मच रही थी। और इसका डर उसके संदेह को बढ़ाता जा रहा था।

राधा ने सक्सेना के साथ हुईं मुलाकातों में उसे गौर से देखा था। वो इस निष्कर्ष पर पहुंची थी कि वो दबंग है। और दूसरे दबंगों की तरह वो सबसे ज्यादा खुश तब रहता था जब उसे दूसरे लोगों पर अधिकार जताने का मौका मिलता था। उनकी जिंदगी पर हुक्म चलाने, उनके सुख—दुख का फैसला करने, उनका जीना—मरना तय करने की उसकी ताकत उसे आत्मसंतोष देती थी। वो मानकर चल रही थी कि दूसरे दबंगों की ही तरह, कहीं अंदर से वो भी कायर ही होगा। राधा इस बारे में निश्चित थी कि उसके व्यवहार और चाल—ढाल के पीछे उसके अंदर की मनोग्रंथि और असुरक्षा की भावना का हाथ है। उसने अपनी उम्मीदें इस तथ्य पर टिका रखी थीं कि अगर किसी ज्यादा ताकतवर से उसका सामना होगा, तो आसानी से झुक जाएगा और हथियार डाल देगा।

वो सिर्फ उम्मीद कर सकती थी कि वो सही निकले। अगर वो नहीं हुई तो...

राधा आगे बढ़ी, इस उम्मीद में कि सक्सेना अपने ऑफिस में होगा।

उसे राहत महसूस हुई, जब वो उसे वहां अपने कंप्यूटर मॉनिटर के सामने बैठा दिखा। वो एक नोटबुक में नाराजगी में कुछ लिखता जा रहा था।

राधा एक पल के लिए हिचकिचाई। लेकिन अब वो यहां पहुंच चुकी थी। यहां से वो

वापस नहीं जा सकती थी। और समय तेजी से बीतता जा रहा था। सीसीटीवी कैमरों ने अब तक उसकी गतिविधियां जरूर दर्ज कर ली होंगी। किसी ना किसी ने तो गौर किया ही होगा कि वो यहां पहुंच गई है। उसे तेजी से काम करना होगा।

वो कमरे में घुसी, दरवाजे को बंद किया और अंदर से ताला लगा दिया, तब तक सक्सेना चौंककर उसे देख रहा था।

उसका आश्चर्य पहले झटके में, और फिर गुस्से में बदल गया, जब उसे समझ आया कि क्या हो रहा है।

‘चुपचाप रहना।’ राधा ने सक्सेना के कोई प्रतिक्रिया देने के पहले ही उसकी मेज पर इलेक्ट्रिक केन से थपकी दी।

सक्सेना ने केन को देखा और पहचान गया कि यह क्या है। वो तुरंत पीछे की तरफ सिकुड़ सा गया। राधा मुस्कुराई। इस आदमी के बारे में उसका ख्याल सही था। वो अंदर तक दबंग था, और अब वो डरा हुआ था।

‘तुम जानती हो कि तुम ऐसा करके बच नहीं सकती,’ सक्सेना ने उसे चेतावनी देते हुए कहा, उसकी आंखें घबराहट में कभी केन तो कभी राधा की ओर देख रही थीं। ‘तुम्हें क्या लगता है कि कितनी देर तक सुरक्षाकर्मियों के आने के पहले तुम ऐसा कर सकोगी?’

‘इतनी देर तक तो जरूर जिसमें मैं वो कर लूं, जो मुझे करना है,’ राधा ने पलटकर जवाब दिया। ‘इंटरनेट ब्राउजर खोलो।’ उसने डरावने ढंग से इलेक्ट्रिक केन लहराई।

‘तुम ऐसा नहीं कर सकतीं।’ सक्सेना ने उसे घूरते हुए कहा।

‘कोशिश करके देख लो।’ राधा जानती थी कि यहां से बच निकलने की संभावनाएं काफी कम हैं। और सक्सेना इस चीज की पूरी कीमत वसूलेगा जो वो अभी कर रही है। लेकिन उसे दुनिया को इस जगह की सचाई बतानी थी। उसकी किस्मत का फैसला तो हो ही चुका था। यह एकमात्र मौका था जब वो बाहर की दुनिया को अपना संदेश भेज सकती थी। उसे दूसरा मौका नहीं मिलेगा।

सक्सेना को उसके चेहरे पर दृढ़ निश्चय दिखा। एक अजीब सी भावना उसके ऊपर हावी हो गई। उसे अब तक दबदबा दिखाने की आदत थी, सजा देने की या इनाम देने की। और उसे ऐसा करने में काफी मजा आता था। अभी, पासा पलट चुका था। और उसे यह बिलकुल पसंद नहीं आ रहा था। उसे बीमार सा महसूस हुआ, और वो ठंडा पड़ गया। ऐसा ही उसे तब महसूस हुआ था जब वो स्कूल में लड़कों के कमरे में सिगरेट पीता हुआ पकड़ा गया था। इस अपराध का जो दंड उसे मिला था, वो अभी तक उसकी याददाश्त में ताजा था। उस घटना के बाद से उसने पक्का इरादा किया था कि वो हमेशा दबदबा दिखाएगा। हमेशा वही होगा जो सजा देगा।

और आज, इतने सालों बाद वो फिर से “लड़कों के कमरे” में था। और कोई ऐसा था जो उसके सामने केन लेकर खड़ा था। कोई ऐसा जो उसे चोट पहुंचा सकता था, उसका अपमान

कर सकता था।

कई सालों बाद सक्सेना को फिर से डर का अहसास हुआ। यह न्यायोचित लड़ाई नहीं थी। और वो इस चीज के लिए तैयार नहीं था कि उसे किसी तरह की मानसिक या शारीरिक चोट पहुंचे। 'ठीक है, मैं तुम्हारा साथ दूंगा। लेकिन तुम यहां से ईमेल नहीं भेज सकती। यह सुरक्षित जगह है। कोई ईमेल नहीं। कोई फोन नहीं। हमें ऊपर जाना होगा। ग्राउंड फ्लोर पर।'

'ठीक है, चलो।' राधा दरवाजे की तरफ बढ़ चली। वो दोनों ऑफिस से एक साथ बाहर निकले, राधा सक्सेना के काफी करीब चल रही थी, ताकि जरूरत पड़ने पर वो इलेक्ट्रिक केन का इस्तेमाल कर सके।

उसे आश्चर्य हुआ, जब लिफ्ट की तरफ बाईं ओर मुड़ने की बजाय, जिस तरफ से वो आई थी, सक्सेना दाईं तरफ मुड़ गया——गलियारे के अंत में बने बड़े सफेद दरवाजे की तरफ। राधा ने अनुमान लगाया था कि ये दरवाजे सीढ़ियों तक जाते होंगे लेकिन वो गलत थी।

सक्सेना ने अपना एक्सेस कार्ड लहराया और दरवाजे खुले, जिनसे दूसरी लिफ्ट दिखी। यह जगह तो राधा के अनुमान से कहीं बड़ी थी। लेकिन उसे इससे आश्चर्य नहीं हुआ, जिस तरह का काम ये लोग कर रहे थे, उसमें ऐसा होना स्वाभाविक था।

वो लोग लिफ्ट में चढ़े और सक्सेना ने एक बार फिर अपना एक्सेस कार्ड इस्तेमाल किया और ग्राउंड फ्लोर चुना। लिफ्ट तेजी से ऊपर चल पड़ी।

लिफ्ट जब ऊपर जा रही थी, राधा ने महसूस किया कि यह लिफ्ट उन आठ मंजिलों पर नहीं जाती, जहां कैदी रखे जाते हैं। प्रयोगशाला में काम कर रहे कर्मचारियों की पहुंच उन मंजिलों तक नहीं थी। लिफ्ट रुकी और दरवाजे खुल गए। उसके बाईं और दाईं तरफ सफेद दरवाजे थे, जिन्होंने दोनों छोरों से गलियारे को बंद कर रखा था।

सक्सेना दाईं तरफ मुड़ा और राधा उसके पीछे चलने लगी।

'उस दरवाजे के पीछे क्या है?' उसने पूछा, उस दरवाजे की तरफ इशारा करते हुए जो वो पीछे छोड़ आए थे।

'वो दरवाजा मुख्य क्लीनिक और रिसेप्शन का है,' सक्सेना ने रूखे स्वर में जवाब दिया। उसने राधा को विचारपूर्वक देखा। 'तुम मेसेज भेजने का अपना इरादा बदल सकती हो। तुम्हारे लिए उस चीज से मुझ पर काबू पाना बेहद आसान रहेगा,' उसने इलेक्ट्रिक केन की तरफ इशारा किया, 'और मेरे एक्सेस कार्ड का इस्तेमाल कर उन दरवाजों को खोलकर आजाद हो सकती हो।'

राधा के मन पर उसका दर्द हावी हो गया। वो जानती थी कि सक्सेना उसका मजाक बना रहा है। वो आजाद होने के कितने करीब थी। उसके और बाहरी दुनिया के बीच में सिर्फ कुछ दरवाजे थे। लेकिन वो जानती थी कि कोई ऐसा तरीका नहीं है जिससे वो खुद से यहां

से भाग सकती थी। अब तक खतरे की सूचना दे दी गई होगी और लोग सीसीटीवी मॉनिटर पर देख रहे होंगे कि वो कहां है।

आज उसके पास विकल्प नहीं था। उसे अपनी किस्मत के आगे सोचना था। इंसानों की उम्र पर नियंत्रण के जरिए ऑर्डर के पास सबसे बड़ी ताकत हो जाएगी। दुनिया उसकी गुलाम हो जाएगी, और किसी को पता भी नहीं चलेगा। वो ऐसा नहीं होने दे सकती। वो ऐसा नहीं होने देगी।

उसके लिए सबसे अच्छा यही है कि वो अपनी योजना पर टिकी रहे। वो करीब—करीब वहां पहुंच चुकी थी।

'चलते रहो,' उसने सक्सेना से कहा।

सक्सेना उसे एक ऑफिस में ले गया और मेज पर रखे एक लैपटॉप पर वेब ब्राउजर खोल दिया। 'आगे बढ़ो,' उसने लैपटॉप की तरफ इशारा किया जिसकी स्क्रीन पर ब्राउजर खुला था।

राधा ने चारों तरफ देखा। वो ईमेल टाइप करते वक्त सक्सेना के पास खड़ा रहने का जोखिम नहीं उठा सकती थी। उसे इलेक्ट्रिक केन नीचे रखना पड़ता और फिर वो असुरक्षित हो जाती। लेकिन कमरे में कोई और ऐसी चीज भी नहीं थी जो उसके काम की होती।

उसने तुरंत एक फैसला लिया। 'वहां बैठो।' उसने मेज के पास रखी कुर्सी की तरफ इशारा किया। सक्सेना चुपचाप वहां बैठ गया और देखता रहा कि राधा ने लैपटॉप को उसके पावर केबल से अलग किया और दरवाजे की तरफ बढ़ गई। वो जानता था कि राधा क्या करने जा रही है।

'इससे पहले कि तुम जाओ,' उसने कहा, 'यह समझ लो कि जब यह सब खत्म हो जाएगा और तुम अपनी कोठरी में वापस चली जाओगी, मैं खुद यह पक्का करूंगा कि तुम्हारी बाकी जिंदगी तकलीफ में बीते। मैं इसका वादा करता हूं।'

राधा अंदर तक डर से कांप गई थी। वो जानती थी कि सक्सेना अपने कहे पर अमल जरूर करेगा। लेकिन उसने खुद को अपनी किस्मत के हवाले उसी वक्त कर दिया था जब उसने इस योजना के बारे में सोचा था। उसे यह सब तो झेलना ही था।

कमरे से बाहर आकर उसने इसे बाहर से बंद कर दिया और तेजी से अपना ईमेल अकाउंट खोलने लगी। सक्सेना पक्के तौर पर कमरे के अंदर से खतरे की घंटी बजा देगा अगर कोठरी से उसका भागना अब तक किसी की नजर में नहीं आया होगा। उसके पास अपना काम पूरा करने के लिए कुछ मिनट भर थे।

उसने तेजी से अपना ईमेल मेसेज टाइप किया और जितने ज्यादा लोगों को मुमकिन हो सकता था, भेज दिया। इस बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता था कि वो कब इसे देखेंगे। वो सिर्फ उम्मीद कर सकती थी कि यह जल्दी से जल्दी देख लिया जाए। ईमेल मेसेज के भेजे जाने की जब पुष्टि हो गई, उसने लैपटॉप नीचे रखा और फर्श पर गिर पड़ी, उसके मन पर

आतंक और आशंका की भावनाएं हावी हो गई थीं, जिन्हें उसने अब तक अपने से दूर रखा था।

अपने जज्बातों से लड़ते हुए उसने खुद को संभाला। अभी तक सुरक्षाकर्मियों का कोई नामोनिशान नहीं था। शायद वो अभी भी भाग निकलने की कोशिश कर सकती है।

वो उठी और उन सफेद दरवाजों की तरफ बढ़ चली जिनकी तरफ सक्सेना ने इशारा करके कहा था कि उनके पार आजादी है।

अभी तक तो सब अच्छा था

बस कुछ फीट और।

और तभी, उसकी सबसे बड़ी आशंका सच साबित हो गई। आजादी के दरवाजे एकाएक नरक के दरवाजे में बदल गए। वो झटके से खुले और तीन हथियारबंद सुरक्षाकर्मी अंदर दाखिल हुए, गलियारे में दौड़ते हुए वो उसकी तरफ आ रहे थे, उन्होंने अपने हथियार तान रखे थे।

राधा ने समझ लिया था कि खेल खत्म हो चुका है। अब वो बाहर की दुनिया कभी नहीं देख सकेगी।

60

शुक्र ने मार्ग दिखाया

विजय उत्तर पश्चिमी आकाश को एकटक निहारता रहा, इस उम्मीद में कि घटना उसी तरह हो, जैसी कोलिन ने बताई थी। वान क्लुएक, जो उसके पीछे खड़ा था, व्याकुल हो रहा था।

पास खड़े कूपर का चेहरा उदासीन था। उसने पहले ही इस बारे में अपनी आशंका जता दी थी।

सूरज की आखरी किरण भी गायब हो गई और रात का राज शुरू हो गया।

'तुम जानते हो,' वान क्लुएक ने बोलना शुरू किया, फिर वो रुक गया।

विजय ने भी इसे देखा।

यह शुरू हो चुका था।

'देखते रहना,' उसने बाकियों को रोमांचित होते हुए निर्देश दिया। 'ठीक उस जगह को ध्यान में रखना जहां यह दिखेगा।' उसने जल्दी से पीछे की तरफ देखा यह पक्का करने के लिए कि छोटी गुफा में कोई भी उस तस्वीर के सामने तो नहीं खड़ा है।

उन्होंने देखा कि रात के आसमान में ऊंचाई पर एक चमकीला प्रकाश बिंदु साफ—साफ दिख रहा था। यह दूसरे सितारों के मुकाबले ज्यादा चमकदार था, जो इसकी चमक के आगे टिमटिमा रहे थे।

जैसे ही इस प्रकाश बिंदु ने खुद को दिन के प्रकाश की गिरफ्त से मुक्त किया, जिसने मानो इसे अपना कैदी बना रखा था, एक प्रकाश पुंज ने गुफा में चट्टान पर उकेरे गए पांच फलकों वाले सितारे को जगमगा दिया।

'ये रहा!' विजय चीख पड़ा। 'यही शुक्र है। वो ग्रह जिसे पश्चिमी देशों में वीनस कहते हैं। और पहाड़ का वो सिरा, जो इसके ठीक नीचे है, वहीं हमें शिव का दंड मिलगे! वो यहां से ज्यादा दूर नहीं है।' उसे अब समझ आया था कि गुफा के प्रवेश द्वार पर वो छेद क्यों बनाया गया है। यह प्रकाश संदूक था, जो इस तरह बनाया गया था कि गुफा के पिछले हिस्से में उकेरे गए पांच फलकों वाले सितारे को जगमगा दे।

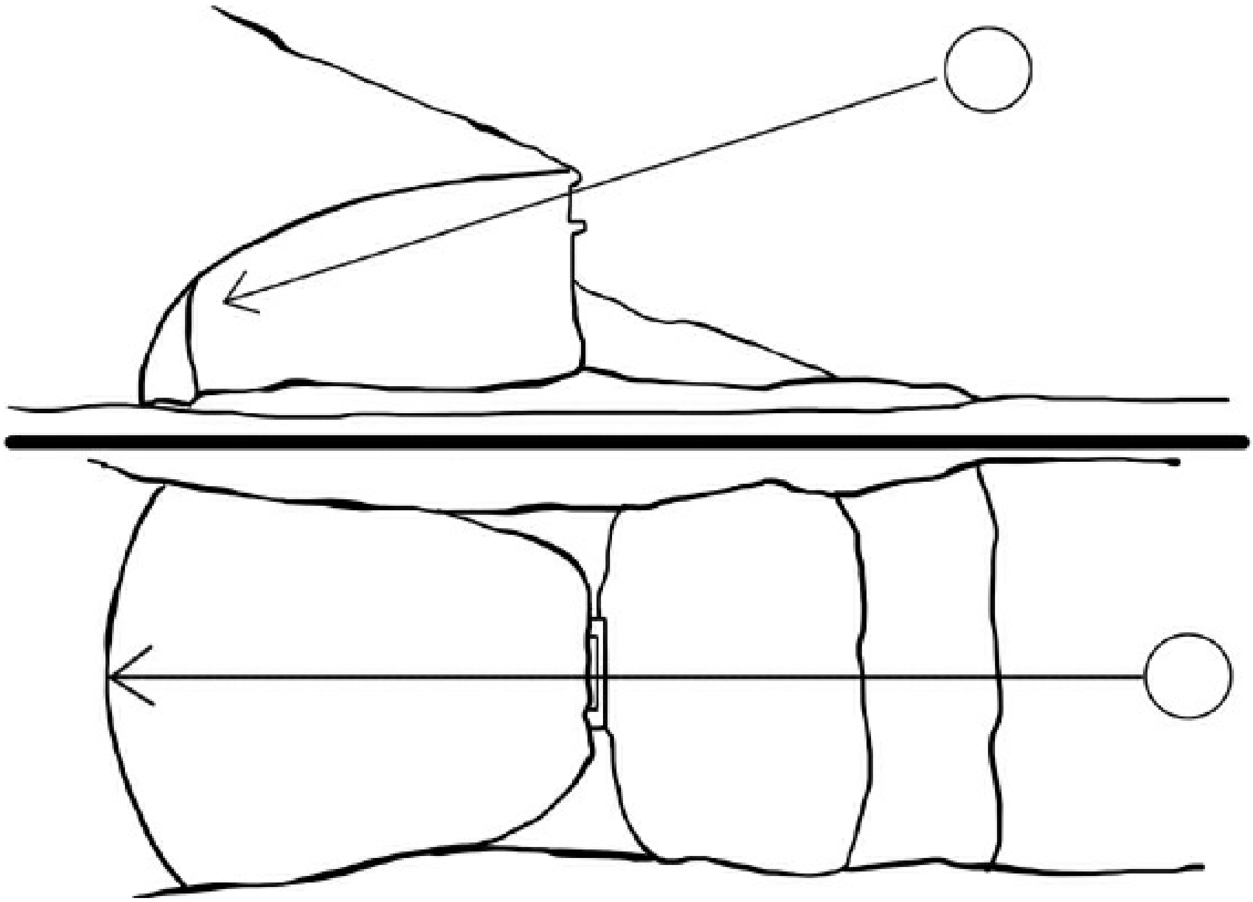

सभी लोग शांत थे जब वो उस जगह की चढ़ाई शुरू कर रहे थे जिस तरफ विजय ने संकेत दिया था। कूपर ने गुफा पर एक बार और दृष्टि डाली जैसे उसे यकीन नहीं हो रहा था, जो उसने देखा था।

कोई आश्चर्य नहीं कि सिकदंर यहां रात में आया था, विजय ने सोचा। यह सिर्फ इस मिशन को उसकी सेनाओं से गुप्त रखने के लिए नहीं था। उसका मुख्य उद्देश्य यही था कि वो शुक्र ग्रह को शिव के दंड वाली जगह को जगमगाता देख सके।

शक्तिशाली सर्चलाइट पहाड़ों में उजाला कर रही थीं जब वो लोग अपनी मंजिल की तरफ एक प्राकृतिक पगडंडी पर चल रहे थे।

जब वो उस बिंदु के पास पहुंच रहे थे, विजय सोच रहा था कि वहां उन्हें क्या देखने को मिलेगा।

क्या वो कर पाएगी?

जब सुरक्षाकर्मी गलियारों में दौड़कर आ रहे थे, आगे की तरफ का एक सुरक्षाकर्मी रुका और निशाना साधकर राधा पर गोलियों की बौछार कर दी।

राधा को ऐसा महसूस हुआ जैसे उसके सीने में डायनामाइट की छड़ घुस गई है और वो

लड़खड़ा गई। उसे लगा जैसे उसे कम से कम पांच फीट पीछे फेंक दिया गया हो और उसके पैरों ने उसका साथ छोड़ दिया। जब वो फर्श पर गिरी, उसके आसपास की सारी चीजें जैसे धीमी रफ्तार में चलने लगी थीं। उसके पूरे शरीर में अजीब सी संवेदनाएं होने लगी थीं, उसका दायां फेफड़ा सिकुड़ने लगा था और उसकी सांसें छोटी और दर्दभरी हो गई थीं। हर सांस ऐसी लग रही थी जैसे उसके दायें फेफड़े में चाकू घुमाया जा रहा हो। इस दर्द के बीच भी वो एक और संवेदना महसूस कर सकती थीः गोली से हुए जख्मों से गर्म खून बाहर आ रहा था और उसके अस्पताल वाले गाउन को भिगो रहा था जो उसके शरीर से चिपका था। वो सोचना चाहती थी लेकिन उसे आघात पहुंचा था और उसके सुन्न दिमाग में विचार नहीं आ पा रहे थे।

गोलीबारी रुक गई थी और उसके चारों तरफ शोर—शराबा हो रहा था। उसने सक्सेना की आवाज को थोड़ा बहुत पहचान लिया था। वो नाराज लग रहा था और किसी को डांट रहा था। शब्द अस्पष्ट थे। ऐसा लग रहा था कि उसके आसपास की हर चीज को एक सफेद फिल्म ने ढक रखा है और उसकी दृष्टि धुंधली पड़ने लगी जब बहुत ज्यादा खून बह जाने के कारण उसकी हालत काफी बिगड़ गई।

और फिर, चारों तरफ अंधेरा छा गया।

61

शिव का दंड

विजय खड़ा होकर विस्मय से देख रहा था। वो लोग उसी जगह पर खड़े थे जहां शुक्र प्रकट हुआ था। इस जगह पर एक पर्वत श्रेणी थी।

इसी पर्वत श्रेणी में मोटी नक्काशी में उत्कीर्ण था, और सर्चलाइटों की रोशनी में साफ—साफ दिख रहा था——बीस फीट लंबा त्रिशूल, शिव का दंड।

या, जैसा यूमेनीज ने लिखा था, यूनानी संदर्भ में, पोजीडॉन का दंड।

यह त्रिशूल का दृश्य था या यह तथ्य कि वो लोग अपनी मंजिल के इतना करीब थे, इसने पूरे समूह को इस तरह मंत्रमुग्ध कर दिया था कि कोई भी कई पलों तक हिला नहीं।

वान क्लुएक ने इस जादू को तोड़ा। 'ठीक है। तब हमारा अंतिम पड़ाव कहां होगा? पांच सिर वाला सांप।' उसने विजय को इस तरह देखा मानो कह रहा हो 'इसलिए तुम यहां हो। मुझे बताओ।'

विजय ने याद करने की कोशिश की कि यूमेनीज ने डायरी में क्या लिखा था। सिकंदर को त्रिशूल पार करने के बाद सांप को ढूंढ़ने में ज्यादा दिक्कत नहीं हुई थी। यानी वो असामान्य सी चट्टानी संरचना आसपास ही होनी चाहिए।

यूमेनीज ने क्या कहा था?

'हमलोग फैल जाएं और यहां से एक किलोमीटर के दायरे में तलाश करें,' विजय ने निर्देश दिया। उसे जहां तक याद आ रहा था, यूमेनीज ने जिक्र किया था कि उन्हें सर्परूपी चट्टान को ढूंढ़ने में ठीक—ठाक समय लग गया था। यह किसी भी दिशा में हो सकता था।

सभी आदमी तीन लोगों के समूह में बंट गए और तलाश शुरू कर दी। वो सभी जानते थे कि उन्हें किस चीज की तलाश है। और एक बार उन्होंने उसे ढूंढ़ लिया तो ईश्वर का रहस्य उनकी मुट्ठी में होगा।

टूटी कड़ी

कोलिन लैपटॉप पर नजरें गड़ाए बैठा था। उसे इस चीज की आदत नहीं थी। विजय आमतौर पर रिसर्च का काम करता था। हर वो चीज जो उन्होंने साथ की थी, वो कंपनी भी जो उन्होंने

बनाई थी और वो प्रोजेक्ट जिसने उन्हें अमीर बना दिया था, उसमें विजय ने ही सारी रिसर्च की थी। कोलिन विश्लेषण और तर्क—वितर्क में और कामकाज संभालने में अच्छा था जबकि विजय उन दोनों में विचारक की भूमिका में होता था। वो दोनों एक दूसरे की कमियों को अच्छे से पूरा करते थे।

लेकिन अभी, जब हालात गंभीर थे, वो उस चीज को करने में जूझ रहा था, जिसे विजय आसानी से पूरा कर लेता था।

उसने गहरी सांस ली और अपने बालों में हाथ फेरे, तभी एलिस अंदर आई।

‘कुछ मिला?’ उसने पूछा। कोलिन ने उसे और शुक्ला को विजय के साथ हुई बातचीत और शुक्र को लेकर हुई चर्चा के बारे में बताया।

‘मेरी विजय से उसके बाद बात नहीं हुई है, इसलिए मैं मानकर चल रहा हूं कि शुक्र वाली बात सही निकली होगी। लेकिन मैं अभी भी अंतिम छंद को समझ पाने में कामयाब नहीं रहा हूं। वो छंद जिसमें आंख और तीन भाइयों का जिक्र है। मैंने हर मुमकिन चीज की तलाश गूगल पर कर ली है। लेकिन कुछ भी काम नहीं आ रहा है।’

एलिस ने उस नक्शे को देखा जो कोलिन ने स्क्रीन पर निकाल रखा था।

‘अगर हम अरल सागर के बारे में सही हैं,’ उसने कहा, ‘तब “तीन भाई” इसके दक्षिणी दिशा में कहीं होंगे। हम जानते हैं कि सिकंदर अरल सागर के आगे नहीं गया था। और अगर हम दक्षिण में देखें, हमें यहां दो देश दिखते हैं——उज्बेकिस्तान और कजाखस्तान।’

‘बिलकुल सही।’ कोलिन के अंदर एक नई ऊर्जा आ गई। ‘मैंने देशों को आधार मानकर कुछ ढूंढ़ने की कोशिश नहीं की।’

‘एक बार कोशिश तो करो,’ एलिस ने उसका हौंसला बढ़ाया। ‘देखते हैं।’

कोलिन ने टाइप किया “तीन भाई उज्बेकिस्तान” और सर्च इंजन से मिले सभी नतीजों को देखने लगा। वो पहले छह पन्ने देख गया और फिर एलिस की तरफ निराशा भरी निगाहें डालीं। ‘हम यह मान भी कैसे सकते हैं कि गूगल तीन भाइयों को जानता होगा? आखिरकार, क्यूब तो हजारों साल पहले बना था।’

‘कजाखस्तान डालकर कोशिश करो,’ एलिस ने उसे नरमी भरे स्वर में प्रेरित किया। ‘हम लोग हर चीज से कोशिश करेंगे।’

कोलिन ने हामी भरी और टाइप किया “तीन भाई कजाखस्तान”।

फिर से, पहले पन्ने पर कुछ भी काम का नहीं था। उसने अगले पन्ने पर क्लिक किया।

फिर भी कुछ नहीं।

तीसरा पन्ना।

वो जम गया। वह एलिस की सांसों को महसूस कर सकता था जो उसके पास खड़ी थी।

स्क्रीन पर तस्वीरों की एक श्रृंखला थी जिसका शीर्षक था: “तीन भाई कजाखस्तान” की छवियां।

62

उम्मीद का एक टुकड़ा

इमरान पैटरसन की बात को ध्यान से सुन रहा था। इमरान के अस्पताल के इस कमरे में उपकरण लगवाने के बाद यह उनकी दूसरी बातचीत थी। वो मौजूदा हालात में संभावित विकल्पों पर चर्चा कर रहे थे। इमरान की पैटरसन के बारे में शुरुआती राय अब उस आदमी की समझ और रणनीतिक कौशल की तारीफ में बदल गई थी। हालांकि वो अभी भी मानता था कि पारस्परिक संबंधों के मामले में पैटरसन कम बुद्धि का आदमी है, लेकिन आज वो उसके बताए एक भी रणनीतिक बिंदु पर उसकी बात काट नहीं पाया था।

निस्संदेह, पैटरसन की योजना के कुछ हिस्से थे जिन्हें लेकर इमरान खुश नहीं था। मिसाल के लिए वो हिस्सा जिसमें वो मानकर चल रहा था कि वो लोग राधा को खो चुके हैं। पैटरसन इस बात पर जोर दे रहा था कि उन्हें उम्मीद नहीं रखनी चाहिए। जबकि इमरान महसूस कर रहा था कि उन्हें उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए और वो लोग एक न एक दिन राधा को तलाश लेंगे और बचा लेंगे।

'युद्ध में उम्मीद करने से जीत नहीं मिलती है, काम करने से मिलती है,' उस अफ्रीकी अमेरिकी की आवाज फ्लैट स्क्रीन मॉनिटर में से गूंज उठी थी। 'जहां तक राधा का सवाल है, अगर हमें कोई सुराग मिलता है, उसकी जगह का कोई संकेत मिलता है, हम उसे ढूंढ़ने की अपनी कोशिशें दोगुनी कर देंगे। लेकिन अभी के लिए, हम कुछ नहीं कर सकते। दूसरी ओर, इस मामले के दूसरे पहलुओं के लिए हम अभी भी काफी कुछ कर सकते हैं। हमें बैठे रहने, उम्मीद करने और प्रार्थना करने की बजाय उस पर ध्यान देना चाहिए। अगर वो जिंदा रहती है, तो बहुत बढ़िया। हम टास्क फोर्स के सदस्य को खोना नहीं चाहते। लेकिन अभी हम इस पर भरोसा ना करें।'

योजना के कुछ दूसरे हिस्से भी थे, जिन्हें लेकर इमरान खुश नहीं था। लेकिन वो राजी हो गया था क्योंकि उनके पास विकल्प नहीं था। इसमें बहुत ज्यादा जोखिम था। या तो सब कुछ या कुछ नहीं।

'ठीक है, फिर। तुम आज की रात अच्छी नींद लो। कल का दिन काफी बड़ा है। इस पार या उस पार। उम्मीद है कि हम बाजी मारेंगे,' पैटरसन ने विदाई ली।

इमरान ने गहरी सांस ली और वो स्क्रीन को काला होते देखता रहा। तभी उसे अपने

फोन की याद आई। जब वो पैटरसन से बात कर रहा थे, एक ईमेल मेसेज आया था। वो सोच रहा था कि कौन होगा। मेसेज खोलने के पहले ही भेजने वाले का नाम देखकर उसकी आंखें फटी की फटी रह गईं।

इमरान को अपनी आंखों पर यकीन नहीं हुआ। यह राधा थी! वो जिंदा थी! राधा ने उसे मेसेज भेजा था। किसी तरह, कहीं से, उसने रास्ता ढूंढ़ निकाला था, उन लोगों को यह बताने के लिए कि उन्हें उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए।

अपनी चादरें फेंकते हुए, उसे दर्द का अहसास हुआ जब वो अपने बिस्तर से उठा और अस्पताल का गाउन उतारकर अपने कपड़े पहने, साथ-साथ उसने अपने ऑफिस में फोन लगाया।

'अर्जुन, मुझे इसी वक्त लेने आओ। मैं तुम्हें एक ईमेल फॉरवर्ड कर रहा हूं। मुझे इसकी लोकेशन तुरंत जाननी है। अभी के अभी इसे करो।'

स्रोत

एक घंटा बीत चुका था और पांच सिर वाले सांप का कोई पता नहीं था जो उन्हें रहस्य तक पहुंचाने वाला था। लेकिन समूह में एक नई ऊर्जा थी, वान क्लुएक उन्हें प्रोत्साहित कर रहा था, अब वो लोग अपने लक्ष्य को हासिल करने से कुछ ही दूरी पर थे।

कूपर का सैटेलाइट फोन बज उठा। वो एक बगल में चला गया और धीमी आवाज में बातें करने लगा। विजय ने सुनने की कोशिश की कि वो क्या कह रहा था लेकिन वो सिर्फ कुछ शब्द ही सुन पाया। 'जो करना है करो... सुनिश्चित करो... मैं करूंगा..।' लेकिन वो चिंतित लग रहा था। उसने थोड़ी देर ही सही, जल्दी से फोन करने वाले से बात की और फोन को पॉकेट में रख दिया।

विजय बाकी लोगों के बारे में नहीं जानता था लेकिन वो थकने लगा था। इस ऊंचाई पर लगातार मेहनत का असर उस पर पड़ने लगा था। उसने थोड़ी देर आराम करने का फैसला किया। इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा अगर उन्हें उस दुष्ट सांप को ढूंढ़ने में पंद्रह मिनट ज्यादा लग जाएंगे।

जैसे ही वो जमीन पर लेटने को हुआ, उसने वान क्लुएक की आवाज सुनी, जिससे रोमांच छलक रहा था। 'यहां देखो!'

आराम करने के सभी विचार भूलकर विजय भी दूसरों के साथ हो लिया जहां वान क्लुएक खड़ा था। सर्चलाइट की रोशनी में जमीन से बाहर निकली एक विशालकाय चट्टान दिख रही थी, कम से कम पंद्रह फीट ऊंची। यह एक लहर की तरह दिख रही थी लेकिन इसे पांच सिर वाले सांप की तरह भी देखा जाना बहुत मुश्किल नहीं था। विजय सोच रहा था कि यह चट्टानी संरचना कितनी पुरानी रही होगी। किसी वक्त, उसने सोचा, यह जरूर एक सांप की तरह दिखती होगी, तभी तो छंद में इस आकृति का संकेत दिया गया है। हजारों सालों के

घिसाव के बावजूद इस संरचना की मूल आकृति में बदलाव नहीं आया है। उसे अब समझ में आया कि क्यूब कितना पुराना है। उससे कहीं ज्यादा पुराना जितना उन्होंने सोचा था।

'इस गुफा का प्रवेश द्वार ढूंढ़ो,' वान क्लुएक ने आदेश दिया और समूह के लोग तलाश में इधर—उधर फैल गए।

बहुत ज्यादा देर नहीं लगी और वो संकीर्ण छिद्र ढूंढ़ लिया गया जिससे होकर एक बार में एक ही आदमी अंदर जा सकता था।

'तुम पहले जाओ,' वान क्लुएक विजय की तरफ देखकर मुस्कुराया। 'हमें बताओ कि अंदर जाना सुरक्षित है या नहीं।'

विजय ने कूपर के एक आदमी के हाथ से सर्चलाइट ली और उस छेद से होकर अंदर जाने लगा।

उसने खुद को चट्टानों के एक संकीर्ण गलियारे में पाया, जो एकाएक खत्म होकर सीढ़ियों में बदल जाती थी, जो पहाड़ के अंदर काटकर बनाई गई थीं। उसने सीढ़ियों पर उजाला किया। वो काफी दूरी तक नीचे जा रही थीं, पहाड़ की गहराई में अंदर तक। 'सब ठीक दिख रहा है,' वो जोर से चिल्लाया। 'यहां सीढ़ियां हैं जो कम से कम पांच सौ फीट नीचे तक जाती हैं। मैं अगर नीचे चला गया तो तुम मुझे सुन नहीं पाओगे।'

जवाब की प्रतीक्षा किए बगैर, उसने सीढ़ियां उतरनी शुरू कर दीं।

वो भी ये देखने के लिए काफी उत्सुक था कि नीचे क्या है। इस राज को लेकर इतनी रहस्यपूर्ण बातें थीं और अब जब वो जानता है कि ईश्वर का रहस्य वास्तव में है क्या, तो वो इसे खुद देखना चाहता था। क्या यह सच में वैसा ही है जैसा महाभारत में वर्णित किया गया है?

जब वो नीचे जा रहा था, उसके आसपास उजाला बढ़ने लगा क्योंकि बाकी लोग भी उसके पीछे आने लगे थे। उसने सीढ़ियां उतरनी तब तक जारी रखीं जब तक कि वो नीचे नहीं पहुंच गया। उसने चारों तरफ उजाला किया। वो एक बहुत बड़ी गुफा में था। इतनी बड़ी कि वो शब्दों में बयान भी नहीं कर सकता था। ऐसा लग रहा था कि यह गुफा पूरी हिंदू कुश श्रेणी के अंदरूनी हिस्से को समेटे हुए है। इसकी दीवारें कहीं नहीं दिख रही थीं।

इकलौती चीज जो उसे दिख रही थी, वो उसके सामने फैली थी और जिसने गुफा के ज्यादातर हिस्से को घेर रखा था।

मिथक का स्रोत। रहस्य का उद्गम।

और यह बिलकुल वैसा ही था जैसा महाभारत में बताया गया था। वो वहां खड़ा था जिसके आधार पर अब तक के सबसे बड़े मिथकों में से एक की रचना हुई थी।

63

तलाश की शुरुआत

इमरान ने अपने टांकों पर हाथ फेरा जब कार तेजी से एयरपोर्ट की तरफ बढ़ रही थी। राधा से मेसेज मिले हुए एक घंटा बीत चुका था। मैसेज जहां से भेजा गया था, उसकी भौगोलिक स्थिति का जब तक पता लगाया जा रहा था, इमरान ने 30 मिनट के अंदर उसके लिए एक हवाई जहाज और कमांडो टीम तैयार रखने की मांग रख दी थी। दस मिनट पहले, उस जगह का पता चल गया था जो जयपुर से एक घंटे की दूरी पर एक मेडिकल फेसिलिटी थी। अजीब बात यह थी कि यह फेसिलिटी टाइटन फार्मास्युटिकल्स के क्लीनिकल ट्रायल के लिए अनुबंधित केंद्र की सूची में शामिल नहीं थी।

जब तक कि तलाश का काम बिना किसी सुराग और सिर्फ कभी ना खत्म होने वाली चर्चाओं के जरिए हो रहा था, इमरान ने खुद को अस्पताल के बिस्तर तक सीमित कर रखा था। अब, जब उसके ठिकाने का पता लग चुका था, वो खुद को रोके नहीं रख सकता था। उसे बचाव दल के साथ आना ही था। उसने ऐसा पहले भी किया था और वो इस बार भी यह करना चाहता था। और उसका राधा के साथ एक बेहद खास बंधन था। वो एड़ी—चोटी का जोर लगा देता, अगर किसी ने उसे यह सलाह दी होती कि वो अस्पताल के अपने बिस्तर से राधा को बचाने की कोशिशों पर निगरानी रखे।

वो एक घंटे से भी कम समय में जयपुर पहुंच जाएंगे। एयरपोर्ट से वो अपनी मंजिल की तरफ हेलीकॉप्टर से जाएंगे।

इमरान ने टाइटन फार्मास्युटिकल्स से यह बताने के लिए भी कहा था कि उनका सीनियर मैनेजमेंट इस वक्त कहां है। उनमें से कुछ बाहर काम से गए थे लेकिन एक शख्स आधिकारिक रूप से जयपुर के दौरे पर था, जहां वो एक मेडिकल कन्वेंशन में बोलने वाला था।

यह था चीफ मेडिकल ऑफिसर डॉक्टर वरुण सक्सेना। यह सिर्फ एक संयोग नहीं हो सकता था।

इमरान का चेहरा सख्त बना हुआ था जब वो लोग एयरपोर्ट पर पहुंचे और तेजी से उस हवाई जहाज की तरफ बढ़ चले जो उनका इंतजार कर रहा था।

वो राधा को सही—सलामत वापस लाने के लिए जा रहा था।

जाने का समय

सक्सेना और फ्रीमैन देख रहे थे कि राधा के निष्क्रिय शरीर को कमरे से निकालकर एंबुलेंस में लादा जा रहा है। उसके शरीर के साथ ड्रिप, एक फीडर ट्यूब और ऑक्सीजन मास्क जुड़े हुए थे।

'तुम वाकई में बहुत हताश होगे,' फ्रीमैन ने कहा जब अर्दली राधा के शरीर के साथ चले गए। 'वो मरने वाली है। इतनी गोलियां खाने के बाद कोई नहीं बच सकता। अगर वो सदमे से नहीं तो खून बह जाने की वजह से ही मर जाएगी। तुम्हारे पास इतना वक्त ही नहीं होगा कि उसके शरीर में खून पहुंचाया जा सके। और अगर किसी जरूरी अंग को चोट पहुंची होगी, तो तुम उसे बचाने की उम्मीद ही छोड़ दो।'

सक्सेना का चेहरा सख्त था। 'बेवकूफ सुरक्षाकर्मी थे वो। उन्हें उस पर गोली नहीं चलानी थी। वो एक बंदी थी। आप एक बंदी पर तब तक गोली नहीं चलाते जब तक आपको कहा ना जाए।'

'अरे, वो लोग तो सिर्फ अपना काम कर रहे थे,' फ्रीमैन ने उसकी बात का विरोध किया। 'वो कैसे जान सकते थे कि वो एक बंदी है? सुरक्षाकर्मियों ने सीसीटीवी पर उसकी गतिविधियां देखीं, उन्होंने जांच की, पाया कि उसकी मंजिल पर शौचालय में एक गार्ड झटका खाकर बेहोश पड़ा है। और फिर तुम्हें उसने बंद कर दिया था। तुमने खतरे की घंटी बजाई। जब सुरक्षाकर्मियों ने उसे ग्राउंड फ्लोर पर देखा, उन्हें बस इतना समझ आया कि एक कैदी भाग निकला है और उसने तुम्हें खतरे में डाल दिया है। इसलिए उन्होंने वही किया जो उन्हें करना चाहिए था। याद है ना? "कोई जीवित नहीं, कोई गवाह नहीं"? उन्होंने यही किया। उन्हें उनके काम के लिए नहीं फटकारो।'

'वो लोग निरे मूर्ख हैं,' सक्सेना बड़बड़ाया। 'उन्होंने चीजों को और उलझा दिया है। लेकिन मैं हताश नहीं हूं। अगर वो मर भी जाती है तो विजय सिंह को पता नहीं चलेगा। मैंने कूपर को बता दिया है। वो इसे संभाल लेगा।'

फ्रीमैन को एक बात जानने की इच्छा हुई। 'फिर तुमने उसे वायरस और बैक्टीरियम के मिश्रण का इंजेक्शन क्यों दिया? अगर गोलियों से वो नहीं मरती है, तो ऐसे मर जाएगी। हम यह जानते हैं। अब तक कोई भी इस ट्रायल में जिंदा नहीं बच पाया है। और तुमने उसे काफी बड़ी तादाद में दवा दी है।'

सक्सेना ने अपना सिर हिलाया। 'मैंने सोचा कि यह हमारे प्रयोग के लिए काफी अच्छा मौका है। हमारे पास कभी कोई ऐसा तंदुरुस्त शख्स नहीं पहुंचा जिसे घातक जख्म हों, और जिसे हमने यह दवा दी हो। देखते हैं क्या होता है। ज्यादा से ज्यादा बुरा क्या होगा, वो मर जाएगी। लेकिन हो सकता है कि हमें कुछ दिलचस्प चीज देखने को मिले। याद है ना हमें सिकंदर की ममी में क्या मिला था?'

फ्रीमैन ने हामी भरी। 'मुझे याद है। बस छह महीने और तुम मेरे प्रयोगों के नतीजे

देखना।' उसने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मेरा अंदाज है कि इससे कोई तकलीफ नहीं होगी।'

सक्सेना ने चारों तरफ देखा। 'चलो, यहां से निकलें। एक तरीके से अच्छा हुआ कि जब उसने ईमेल भेजा, मैं वहां था। कम से कम हमें इस जगह को खाली करने का वक्त तो मिल गया। सर्वर हटाए जा रहे हैं ताकि आईबी को किसी तरह के आंकड़े ना मिलें। कोई ऐसा रास्ता नहीं है जिससे वो इस फेसिलिटी के तार टाइटन से जोड़ पाएंगे। लेकिन मैंने आईबी के देखने के लिए कुछ चीजें यहां छोड़ दी हैं।'

फ्रीमैन ने हामी भरी। वो जानता था कि सक्सेना किस बारे में बात कर रहा है। 'हालांकि अफसोस इस बात का है कि हमें सारे नमूनों को यहां छोड़ना पड़ रहा है।'

'कोई फर्क नहीं पड़ता है,' सक्सेना ने जवाब दिया। 'हमारे पास उनकी सारी जानकारी और जांच के नतीजे हैं। हम अपने पास मौजूद नतीजों की मदद से, नए नमूनों के साथ फिर से शुरुआत कर सकते हैं। और हो सकता है कि हमें नमूनों की जरूरत ही ना पड़े। अगर कूपर स्रोत के सैंपल हासिल करने में कामयाब हो जाता है तो हमारा काम हो जाएगा।'

उन दोनों ने एक—दूसरे की तरफ चमकते चेहरों से देखा, जिन पर साफतौर पर खुशी झलक रही थी। कुछ भी हो, मिशन कामयाब होने वाला था। उनके रास्ते में अब कोई बाधा नहीं थी।

64

दूध का महासागर

विजय अपने सामने के दृश्य को निहार रहा था। उसके सामने विशाल जलराशि फैली हुई थी। इतनी विशाल कि इसके किनारे नहीं दिख रहे थे, सिवाय उस तट के जिसके पास वो खड़ा था। ऐसा लगता था कि इस झील ने करीब—करीब पूरी गुफा को घेर रखा है।

लेकिन उसे इस झील की खोज ने नहीं चौंकाया। वान क्लुएक ने उसे इस बारे में बताया था और वो इतनी बड़ी जलराशि को देखने के लिए तैयार था। उसे जिस चीज ने चौंकाया था, वो था झील का रंग—रूप।

जितनी दूर तक उसकी नजर जा सकती थी, झील की सतह सर्चलाइट के उजाले में चांदी की तरह सफेद दिख रही थी। जब बाकी लोग भी वहां आ गए और झील को निहारते हुए वैसे ही अभिभूत हो गए, जैसे विजय हो गया था, तो उसने सर्चलाइटों के उजाले में देखा कि चांदी के समान सफेद पानी दूर—दूर तक फैला है, शांत और स्थिर, बिना किसी तरंग के।

‘कोई ताज्जुब नहीं कि उन्होंने इसे दूध का महासागर कहा,’ वान क्लुएक विजय के पास आकर बोला। ‘और अब हम जानते हैं क्यों।’

लेकिन इस विशाल गुफा में कई और चौंकाने वाली चीजें भी थीं। जब सर्चलाइटों का उजाला उन दीवारों पर पड़ा जिनसे होकर सीढ़ियां लगी हुई थीं, एक क्रम में धातु की नलियां और पत्थर की नालियां बनी हुई दिखीं। पत्थर की एक बड़ी नाली दीवार के साथ बनी हुई थी, जो झील की दिशा से आ रही थी, और पत्थर के ही एक बड़े कुंड में खत्म होती थी। दूसरी नलियां और नालियां पत्थर के कई छोटे—छोटे कुंडों को आपस में जोड़ती थीं और साथ ही में धातु की एक मशीन से जुड़ रही थीं जो उनके ऊपर लगी थी। इस मशीन और नलियों में इस्तेमाल की गई धातु काली थी। सर्चलाइटों की रोशनी में भी उस धातु पर किसी तरह के जंग का कोई निशान नहीं था। उसके लिए यह पूरी प्रणाली शराब बनाने वाली हौज की तरह थी जो उसने अमेरिका में कई छोटी शराब की भट्टियों में देखी थी।

तभी उन आदमियों में से एक चिल्लाया। ‘वहां कुछ चल रहा है!’

सभी सर्चलाइटें उस दिशा में घूम गईं जिस तरफ उसने इशारा किया था। हर कोई चुपचाप खड़ा था। कुछ देर तक कोई चीज चलती नजर नहीं आई। तभी, कुछ लहराता हुआ दिखा। यह आकृति बड़ी और गोलाकार रूप लिए हुए थी। हर किसी को चौंकाते हुए एक

विशालकाय कछुआ सर्चलाइटों से निकल रही रोशनी में धीमी गति से चलता हुआ दिखा। यह एक बड़ी प्रजाति थी, कम से कम बीस फीट लंबा। विजय को अपनी आंखों पर यकीन नहीं हुआ। कछुआ धीरे—धीरे उजाले को पार करता हुआ दूसरी तरफ अंधेरे में कहीं गुम हो गया।

'ठीक है, काम पर लग जाओ,' वान क्लुएक ने आदेश दिया। 'मैं चाहता हूं कि हम अगले दस मिनट में सैंपल जमा कर लें और सुरक्षित रख लें। इसके बाद हम यहां से बाहर जाएंगे।'

विजय झील के किनारे तक पहुंचा और चांदी की तरह दिख रही सतह को गौर से देखने लगा। यह विश्वास करना असंभव था कि यह वही जलराशि है जिसका जिक्र मिथक में किया गया था। लेकिन अब वो जान गया था कि पानी के इस रंग के पीछे की असली वजह क्या है। यह उसी बैक्टीरिया का स्रोत था, जो ऑर्डर को सिकंदर की ममी में मिले थे। उसने इसी झील से आज से दो हजार तीन सौ साल पहले उस रात पानी पिया था।

लेकिन वो मर क्यों गया? इसने उसके लिए काम क्यों नहीं किया?

'जाने का वक्त आ गया है,' वान क्लुएक की तीखी आवाज ने उसके विचारों को भंग किया। 'सभी लोग बाहर चलें।' वो विजय की ओर मुड़ा। 'बेहतर होगा कि तुम अंतिम छंद का मतलब हमारे जलालाबाद लौटने तक ढूंढ़ लो।'

पहेली सुलझ गई

कोलिन और एलिस स्टडी रूम में बैठकर विजय के फोन का इंतजार कर रहे थे। वो उससे संपर्क नहीं कर सकते थे क्योंकि विजय को सैटेलाइट फोन नंबर किसी को देने की इजाजत नहीं थी। शुक्ला अपने कमरे में चले गए थे, सोने के मकसद से। हालांकि कोलिन सोच रहा था कि कितनी नींद वो ले पाएंगे, क्योंकि अभी भी राधा की कोई खबर नहीं आई थी।

फोन की घंटी बजी, जिसकी आवाज ने रात के सन्नाटे को बिखरा दिया। कोलिन तेजी से फोन उठाने दौड़ा, उसे स्पीकर पर डाल दिया ताकि एलिस भी बातचीत कर सके।

'हलो विजय,' उसने अपने दोस्त को कहा। 'साथ में एलिस भी है।'

'दोस्तों, मुझे उम्मीद है कि तुम लोगों के पास मेरे लिए कुछ है। कुछ भी।'

'बिलकुल।' कोलिन की आवाज में गर्व झलक रहा था। 'आखरी जगह है उस्तुर्त पठार जो कजाखस्तान और उज्बेकिस्तान में फैला है। छंद में जिस जगह का जिक्र किया गया है वो एक प्राकृतिक संरचना है जिसे तीन भाई कहा जाता है, और जो पठार के कजाख हिस्से में है। यह कजाखिस्तान के दूर दराज में झाड़ियों से भरे इलाके में है। वहां जाना बहुत मुश्किल है। एलिस और मैंने इस खौफनाक चीज पर पैंतालीस मिनट तक रिसर्च किया है।'

'शानदार! और तीर की नोक? जो रास्ता दिखाती है?'

कोलिन ने विजय को बताया कि उसने इंटरनेट की मदद से क्या ढूंढ़ा है।

‘सुनने में तो ठीक लग रहा है। आश्चर्यजनक तो है लेकिन बिलकुल मुमकिन है। मैं इस पर शर्त लगाने को तैयार हूं।’

‘मैं भी, लेकिन सच पूछो तो मुझे कुछ नहीं पता कि तुम्हें वहां क्या मिलेगा। मैं “अभियान का सार” का मतलब समझ नहीं पाया हूं।’

‘मैं जानता हूं कि यह क्या है। यह वायरस है। पठार उस वायरस का स्रोत है। हमें कुनार घाटी में बैक्टीरिया का स्रोत मिल गया है। यह वही जगह है जहां अमृत बनाया गया था। इसलिए इकलौती चीज जो अब तक गुम है, वो है वायरस का असली संस्करण। और चूंकि वायरस अमृत का महत्वपूर्ण अवयव है, यही अभियान का सार हो सकता है।’ विजय ने उन्हें बताया कि उसने कुनार घाटी में क्या देखा था।

‘तो अब सिर्फ उस छंद का मतलब निकालना रह गया है, जिसमें उस चीज का वर्णन है जो कैलिस्थनीज ने बैक्ट्रिया से इकट्ठा की थी,’ एलिस ने कहा। ‘क्या तुम हमसे उस पर भी रिसर्च कराना चाहते हो?’

थोड़ी देर तक विजय कुछ नहीं बोला, फोन पर सिर्फ अस्पष्ट सी आवाजें आती रहीं। फिर विजय फोन पर वापस आया। वो वान क्लुएक के साथ सलाह—मशविरा कर रहा था। ‘कोई जरूरत नहीं है,’ विजय ने जवाब दिया। ‘वो लोग इस पर काम कर रहे हैं। अब जब उन्हें मालूम है कि छंद किस बारे में है और साथ में यह भी कि छंद में बताई चीज कहां मिलेगी, वो लोग इसे खुद सुलझाएंगे। तुम लोगों का शुक्रिया दोस्तों। तुम लोगों ने बहुत मदद की है।’ विजय ने विदा ली और फोन काट दिया।

कोलिन ने उदासी से एलिस की तरफ देखा। ‘उसने एक बार भी राधा का जिक्र नहीं किया।’

एलिन ने इस बारे में सोचते हुए जवाब दिया। ‘तुम सही कह रहे हो। वो खुश नहीं लग रहा था कि अब वो राधा को आजाद करने के बारे में मोल—तोल करने की स्थिति में है।’

‘ऐसा नहीं है कि अगर वो कोशिश करेगा तो कामयाब ही हो जाएगा,’ कोलिन ने जवाब दिया। “लेकिन मुझे ऐसा लगा कि उसने राधा को वापस पाने की उम्मीद ही छोड़ दी है।’

वो दोनों चुपचाप बैठे रहे, इस सोच में कि इस वक्त विजय किस दौर से गुजर रहा होगा। वो उन लोगों के बीच अकेला था जिन्होंने उसकी मंगेतर का अपहरण किया था। और अगर उसे यकीन है कि राधा के लिए कोई उम्मीद नहीं है तो फिर काफी गंभीर बात है।

65

जयपुर, राजस्थान

इमरान एमआई—26 हेलीकॉप्टर में बैठा, उन दो में से एक में, जो जयपुर एयरफोर्स बेस से मांगे गए थे। एमआई—26 दुनिया का सबसे तेज हेवी लिफ्ट मिलिट्री ट्रांसपोर्ट हेलीकॉप्टर है, जो इसे इस मिशन के लिए आदर्श बनाता था। ये दोनों हेलीकॉप्टर कमांडोज को उस जगह पर पहुंचाने के लिए इस्तेमाल हो रहे थे, जिसकी पहचान उन लोगों ने राधा का मेसेज मिलने के बाद की थी।

वो लोग जयपुर के बाहरी इलाके के ऊपर उड़ान भर चुके थे, शहर की रोशनी को अपने पीछे छोड़ते हुए, और अब वो अंधेरे इलाके के ऊपर उड़ान भर रहे थे, जिसमें कहीं—कहीं रोशनी दिख जाती थी। रात के आसमान में इमरान दूसरे हेलीकॉप्टर की छाया को देख सकता था, जिसकी चमकीली लाल वॉर्निंग लाइट एक लय में चमक रही थी।

शहर छोड़ने के करीब दस मिनट बाद, इमरान को बिलकुल सामने एक बड़े से इलाके में रोशनी दिखी। यह उसी मेडिकल फेसिलिटी का अहाता था, जहां उन लोगों को जाना था। जैसे ही उन लोगों ने ठिकाने का ठीक—ठीक पता लगा लिया था, जयपुर पुलिस को इस अहाते के आसपास नाकाबंदी के लिए अलर्ट भेज दिया गया था। लेकिन अभी तक, पुलिस को कोई भी नहीं दिखा था, जो मेडिकल सेंटर से बाहर निकलने की कोशिश कर रहा हो।

इमरान चिंतित था। इसके सिर्फ दो मतलब हो सकते थे। या तो वरुण सक्सेना ठिकाने पर था नहीं या वो पुलिस नाकाबंदी के पहले ही वहां से निकल चुका था। इन दोनों में से कुछ भी हो, उसे डर था कि टाइटन का सीएमओ उसके जाल में आने से पहले ही बचकर निकल गया था।

जब वो लोग अपने तय ठिकाने पर पहुंचे, विशालकाय हेलीकॉप्टर नीचे उतरने लगा। इस ठिकाने के मुख्य प्रवेश द्वार के पहले काफी चौड़ा रास्ता था। इसी रास्ते में उन लोगों ने हेलीकॉप्टर उतारने की योजना बनाई थी।

जैसे ही हेलीकॉप्टर नीचे आए, उनके दरवाजे खुले और कमांडोज चारों तरफ फैल गए, पूरे अहाते को अपने सुरक्षा घेरे में ले लिया, वो महत्वपूर्ण जगहों पर जम गए थे। कमांडोज का मुख्य दस्ता छिपकर बिल्डिंग की तरफ बढ़ रहा था और उनके पीछे इमरान भी था। बिल्डिंग में हथियारबंद लोगों के होने की उम्मीद कम थी जो उनके काम में रुकावट डालती,

लेकिन वो नहीं जानते थे कि कब क्या हो जाए।

रिसेप्शन में अंधेरा था। बिल्डिंग वीरान और शांत लग रही थी। कोई भी आसपास नहीं था। यहां तक कि रात में रहने वाला सुरक्षाकर्मी भी नहीं। कमांडोज ने रात में दिखने में मदद करने वाले चश्मे लगा लिए थे और बिल्डिंग में घुस गए। लाइट स्विच ढूंढ़ी गईं। लेकिन वहां कोई नहीं था। कमांडोज बिल्डिंग की दो मंजिलों पर फैल गए थे। वहां कुछ भी नहीं मिला था। साफतौर पर इस जगह को खाली करा लिया गया था।

'सीसीटीवी आर्काइव देख डालो। अगर उन्होंने इसे पूरा नहीं मिटाया होगा तो हो सकता है कि तुम्हें कुछ सुराग मिल जाए,' इमरान ने अर्जुन को निर्देश दिया। वो बाकी आईबी टीम के साथ आर्काइव देखने चला गया, जबकि इमरान ग्राउंड फ्लोर की जांच करता रहा। जब वो लिफ्ट के पास पहुंचा, उसे दिल्ली में पिछले मेडिकल सेंटर में तहखाना ढूंढ़ने की बात याद आई।

इमरान ने लिफ्ट की जांच की और उसे तहखाने की तीन मंजिलों के बटन मिले। उन तक कार्ड सिक्योरिटी सिस्टम से ही पहुंचा जा सकता था। इस बार, इमरान पूरी तैयारी के साथ आया था। उसकी टीम के इलेक्ट्रॉनिक्स एक्सपर्ट के पास ऐसा मास्टर प्रोग्रामर था, जो लिफ्ट की सिक्योरिटी सिस्टम को तोड़कर उन्हें हर मंजिल तक पहुंचा सकता था।

उसके ईयरफोन में आवाज आई। यह अर्जुन था। 'सर, यहां कुछ है जो आपको देखने की जरूरत है।'

'मैं अभी आ रहा हूं,' इमरान ने उसे कहा। वो कमांडो टीम के कमांडेंट की तरफ मुड़ा। 'हर फ्लोर को छान मारो। जब तुम्हारा काम हो जाए मुझे बताओ। मैं जानना चाहता हूं कि नीचे क्या है।'

थोड़ी देर बाद ही, वो सिक्योरिटी सेंटर में अर्जुन के पास खड़ा था।

'सर, यहां कुछ बेहद अजीब चीज है,' अर्जुन ने उस वीडियो क्लिप को चलाने के पहले कहा, जिसे वो इमरान को दिखाना चाहता था। 'आर्काइव्स को पूरा मिटा दिया गया है। इस रिकॉर्डिंग के अलावा बाकी कुछ नहीं है। मुझे यह समझ नहीं आ रहा। वो लोग हर चीज मिटा गए लेकिन बस इसे क्यों छोड़ गए?'

'चलो देखते हैं।' इमरान का चेहरा सख्त था। उसके मन में इसे लेकर एक बुरी भावना थी। अगर सिर्फ एक क्लिप को नहीं मिटाया गया है तो यह एक मकसद से किया गया है। चिंतित मुद्रा में वो क्लिप के चलने का इंतजार करने लगा।

वीडियो क्लिप में दिखा कि राधा फर्श पर बैठकर लैपटॉप पर तेज—तेज हाथ चला रही थी।

इमरान तुरंत सतर्क हो गया और उसके मन पर एक दुख हावी हो गया। यह ठीक नहीं था। कुछ सेकेंड बाद, राधा ने लैपटॉप नीचे रखा और उठ गई। उसने चारों तरफ सतर्क निगाहों से देखा और फिर आगे बढ़ी। जब वो आगे बढ़ रही थी, अर्जुन ने स्क्रीन के किनारों

पर हो रही गतिविधियों की तरफ इशारा किया। क्लिप में कोई आवाज तो नहीं थी लेकिन तीन सुरक्षाकर्मी अपनी बंदूकों से साफतौर पर राधा पर गोलियां चला रहे थे। इमरान कांपते हुए देखता रहा कि राधा खून से लथपथ नीचे गिर गई। फर्श पर हर तरफ खून फैला था, जो गोलियों से हुए जख्म से निकल रहा था।

क्लिप यहां पर एकाएक खत्म हो गई थी।

इमरान उस जगह पर जम सा गया। वो सुन्न हो गया था। उसने अभी—अभी राधा को मरते देखा था।

66

छठा दिन

समुद्रमंथन

विजय वान क्लुएक के आलीशान गल्फस्ट्रीम जेट में बैठा था। वो लोग कजाखस्तान के अकताऊ अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के लिए उड़ान भर रहे थे, जहां से वो हेलीकॉप्टर से उस जगह जाने वाले थे जो कोलिन ने बताई थी। एक हथियारबंद दस्ता तैयार खड़ा था, और उनके आने का इंतजार कर रहा था। ऐसा लगता था कि ऑर्डर, जहां भी वो चाहता था, लोगों और हथियारों को आसानी से जुटा लेता था।

बाहर अभी भी अंधेरा था। वान क्लुएक ने जोर दिया था कि तुरंत निकला जाए। वह चाहता था कि वो लोग सूरज उगने के पहले पठार पर पहुंच जाएं। वैसे तो वो जानते थे कि उन्हें किस चीज की तलाश है, लेकिन वो अभी भी यह नहीं जानते थे कि दिन के किस वक्त उन्हें वायरस के स्रोत के लिए गुप्त प्रवेश द्वार दिखेगा। उसका विचार था कि सबसे सुरक्षित समय वही होगा, जब वो सूरज उगने के पहले वहां पहुंच जाएं।

अकताऊ से एक एडवांस टीम पहले ही निकल चुकी थी, जिसे करीब 400 किलोमीटर की दूरी चौपहिए वाहन से तय करनी थी, रेत और मिट्टी के रास्तों पर जिस सफर में उन्हें करीब आधा दिन लग जाता। उनका काम था इलाके का साफ करना, सुरक्षित बनाना और मुख्य टीम का इंतजार करना।

Russia
Russia
Kazakhstan
Aktau
USTYURT
plateau
Aral
Sea
Syr Darya River
Caspian
Sea
Uzbekistan
Amu Darya River
(Oxus)
Turkmenistan
Tajikistan
China
Iran
Afghanistan
Pakistan

विजय को अचानक एक ख्याल आया। कुनार घाटी में झील वाली गुफा से उन्हें वो चीज मिल गई थी जिस बारे में वान क्लुएक ने उसे पहले बता दिया था। लेकिन वो अभी भी उसका सामंजस्य महाभारत के मिथक वाली चीज से नहीं बैठा पा रहा था।

उसने वान क्लुएक को अपने मन की बात बताई।

'साफतौर पर महाभारत में उस चीज की व्याख्या है जो हमें मिली है,' वान क्लुएक नाक चढ़ाकर बोला। 'तुम्हें बस छंद की सही व्याख्या करनी है।' वो खड़ा हुआ और एक अलमारी की ओर गया, एक मोटी किताब निकाली और अपनी सीट पर लौट आया, किताब को उसने मेज पर रख दिया। 'क्या तुम संस्कृत समझते हो?'

विजय ने न में अपना सिर हिला दिया।

'मुझे कोई शक नहीं था, ज्यादातर भारतीयों की तरह।' वान क्लुएक की आवाज में तिरस्कार की भावना थी। 'मैं इस भाषा को बहुत अच्छे से जानता हूं, इसलिए मैं तुम्हें समझाता हूं।'

उसने किताब खोली और पन्ने पलटता रहा। 'यह आदि पर्व है, महाभारत की पहली किताब। यही वो किताब है जिसमें समुद्रमंथन का मिथक मिलता है।'

पहली बार विजय को महसूस हुआ कि इस यूरोपीय शख्स का संस्कृत उच्चारण कितना शुद्ध है। इसके उच्चारण में वो लहजा बेहद कम है, जो सामान्य तौर पर यूरोपीय लोगों का इस भाषा को बोलते वक्त होता है। उसने जरूर काफी शुरुआती उम्र में ही इसे सीख लिया होगा और साल दर साल, इसे बोलते और पढ़ते हुए अभ्यास किया होगा, विजय सोच रहा था।

'हां, यहां,' वान क्लुएक ने पन्ने पर अपनी उंगली रखी। 'आदि पर्व में कुछ श्लोक हैं जो बताते हैं कि हजारों साल पहले क्या हुआ था। हालांकि श्लोकों के वास्तविक अर्थ पर पारंपरिक व्याख्या हावी हो गई और घटना की सचाई धीरे—धीरे मिटती चली गई। सच यह है कि इस कहानी को दिया गया अंग्रेजी नाम अपने आप में गलत है। यह सच है कि समुद्रमंथन की व्याख्या "महासागर के मंथन" के रूप में की जा सकती है। लेकिन मंथन की उत्पत्ति मंथ या मथ से हुई है। जिसके अंग्रेजी में कई अर्थ हो सकते हैं। मथना उनमें से सिर्फ एक है। मथ का मतलब हिलाना, उकसाना या मिश्रित करना भी हो सकता है। इसलिए, अगर हम इस शीर्षक की पारंपरिक व्याख्या को भूल जाएं तो इसका मतलब हो सकता है या तो "महासागर को हिलाना" या "महासागर को मिश्रित करना"। जो, जैसा तुम देखोगे, ज्यादा उचित है उस चीज का वर्णन करने के लिए जो हुआ था। और जो मशीन हमें झील के पास मिली थी, वही थी जहां मिश्रण हुआ था। झील का पानी दीवार से सटाकर बनी पत्थर की नाली के जरिए मशीन में जाता होगा और पत्थर के कुंड दूसरी सामग्रियों को जमा करने और मशीन में उन्हें पहुंचाने के लिए इस्तेमाल होते होंगे। यह संभव है कि पानी निकालने के लिए बना यंत्र इस बात का भ्रम पैदा करता था कि झील के पानी का मंथन हो रहा है,

इसलिए मथ की व्याख्या 'मंथन' के तौर पर की जाने लगी। मैं इसे थोड़ा और समझाता हूं।'

उसने किताब देखी, और साथ—साथ अपने सिर के ऊपर लगी बत्ती जलाई। 'इस श्लोक को लेते हैं:'

देवैरसुरसंघै श्च मथ्यतां कलशोदधिः
भविष्यत्यमृतं तत्र मथ्यमाने महोदधौ।।12।।

इस श्लोक का पारंपरिक अर्थ है: "देवों और दानवों के द्वारा महासागर के मंथन के बाद, सागर का जल अमृत कलश में परिवर्तित होगा"। लेकिन अगर तुम "मंथन" शब्द को "हिलाना" या "मिश्रण करना" से बदल दो, मथ की उत्पत्ति का इस्तेमाल करते हुए, तो पूरा अर्थ बदल जाता है। तुम अब इसकी व्याख्या इस तरह कर सकते होः देवों और दानवों ने सागर के जल को मिश्रित किया या हिलाया और यह एक अमृत कलश बन गया।'

वो अगले श्लोक की तरफ बढ़ा और उसे पढ़ा।

सर्वौषधीः समावाप्य सर्वरत्नानि चैव हि।
मन्थध्वमुदधिं देवा वेत्स्यध्वममृतं ततः।।13।।

'यहां, पारंपरिक अर्थ है: "सभी औषधीय पौधों और रत्नों को प्राप्त करने के बाद, हे ईश्वर, महासागर का मंथन करो तब तुम अमृत प्राप्त करोगे।" फिर से "मंथन" की जगह "मिश्रित करना" या "हिलाना" रखो और तुम देख सकते हो कि क्या क्यूब पर पौधों और फलों का वर्णन करने वाला छंद प्रासंगिक है या नहीं।'

विजय उस पर यकीन नहीं कर सका जो वो सुन रहा था। यहां एक ऐसा मिथक था जो उसने बचपन से अब तक दर्जनों बार सुना था और वान क्लुएक उस व्याख्या से बिलकुल अलग बातें कर रहा था जो उसने सीखी थी।

'अब एक श्लोक है जो सीधे उस चीज की बात करता है जो हमें कुनार घाटी में मिलीः

ततस्तेन सुराः सार्धं समुद्रमुपतस्थिरे।
तमूचुरमृतार्थाय निर्मथिष्यामहे जलम्।।8।।

इस श्लोक का पारंपरिक अर्थ है: "तब देव और दानव महासागर के तट पर खड़े हुए और कहा कि अमृत के लिए हम जल का मंथन करेंगे"। यहां, दिलचस्प है कि समुद्रम की व्याख्या "पानी के एकत्र होने" के रूप में की जा सकती है। साफतौर पर यह एक विशाल जलराशि की बात करता है। और यही हमें मिला ना? इसलिए इस श्लोक का वास्तविक अर्थ हो सकता है: "तब देव और दानव उस तट पर खड़े हुए जहां पानी एकत्र होता था और कहा कि अमृत के लिए हम पानी को हिलाएंगे या मिलाएंगे"।'

उसने कुछ और पन्ने पलटे और एक दूसरे श्लोक को दिखाया।

'यहां विज्ञान आ जाता है। हां, तुम्हें बिलकुल अलग सोच से, खुले दिमाग से इस श्लोक की सही व्याख्या करनी होगीः

तत्र नानाजलचरा विनिष्पिष्टा महाद्रिणा।

विलयं समुपाजग्मुः शतशो लवणाम्भसि।।19।।

पारंपरिक रूप से इसकी व्याख्या इस तरह की जाती हैः “तब, विशाल पर्वत के प्रहार से, विभिन्न प्रकार के जलीय जंतु अपने विनाश की ओर बढ़ गए और उन्होंने लवणयुक्त जल में सैकड़ों गुना होकर पुनर्जन्म लिया”। यहां जलचर शब्द का अर्थ “जलीय जानवर” से लगाना गलत है। इस शब्द का अर्थ है “पानी में चलने वाले या पानी में रहने वाले” और पानी के किसी भी प्राणी से इसका संबंध हो सकता है। बैक्टीरिया समेत जो उस झील में रहते हैं जो हमें मिला। ये भी ध्यान रखो कि विनिष्पिष्टा शब्द का अर्थ हो सकता है “पीस डालना, चूर्ण में बदल डालना”। फिर, लवणयुक्त जलराशि का भी जिक्र है। अम्भसि का मतलब पानी और लवणम् मतलब नमकीन, यानी हम बात कर रहे हैं नमकीन पानी के एक कुंड की जो पूरी तरह उस झील के लिए उपयुक्त है जो हमें मिला। इसलिए नया अनुवाद इस तरह हो सकता हैः “नमकीन पानी में समुद्री प्राणी, या बैक्टीरिया, नष्ट हो गए और सैकड़ों गुना होकर फिर पैदा हुए”। इसे तुम उसी घटना का चित्रण मान सकते हो, जब रेट्रोवायरस बैक्टीरिया को संक्रमित करता है और उनका जीनोम बदल देता है——एक तरह का पुनर्जन्म कह सकते हैं ना इसे?’

‘मिस्टर वान क्लुएक,’ पायलट की आवाज स्पीकर में गूंजी। ‘हम अकताऊ में उतरने जा रहे हैं। 30 मिनट में जमीन पर होंगे।’

वान क्लुएक ने किताब बंद की और विजय की तरफ उसे आंकने के अंदाज में देखा। ‘ऐसे कई श्लोक हैं। लेकिन तुमने देखा कि कैसे महाभारत में हमें बताया गया है कि हजारों साल पहले एक वैज्ञानिक घटना हुई थी? और यह कोई महासागर या सागर नहीं था, बल्कि एक बड़ा लवणयुक्त जलकुंड था जिसने इस घटना का आधार तैयार किया। जो तुमने अपनी आंखों से अब देख लिया है।’

विजय ने सकारात्मक अंदाज में सिर हिलाया। उसके पास शब्द नहीं थे। वो सिर्फ श्लोकों के पीछे छिपे गूढ़ अर्थ को आत्मसात करने की कोशिश कर रहा था, जो एक अद्भुत घटना का वर्णन सतही तौर पर करते थे।

67

सर्वश्रेष्ठ योजना के जोखिम

पैटरसन ने कैमरे की तरफ त्योरियां चढ़ाकर देखा। यह उसकी पूरी रात लेने वाला था। इमरान जयपुर से लौट आया था और अस्पताल के अपने कमरे में वापस आ गया था। उसके टांके दर्द कर रहे थे और वो पूरी रात मेहनत करके काफी थक चुका था। जयपुर आने—जाने का असर दिख रहा था क्योंकि वो खून बहने और सर्जरी होने की वजह से अभी भी कमजोर था।

इमरान ने पैटरसन को राधा के बारे में बता दिया था। उस आदमी ने इस खबर को भावहीन तरीके से लिया था। यह युद्ध था और उसने पहले भी अपनी टीम के सदस्य खोये थे। दुखी होने का समय बाद में होगा। अभी काफी कुछ करने की जरूरत थी।

लेकिन वो इस खबर से खुश नहीं था जो कोलिन ने उसे दी थी।

‘उन्हें सभी जगहों को छोड़कर कजाखस्तान चुनने की जरूरत क्यों थी?’ वो गुर्राया था। ‘हम अभी—अभी किर्गिज्तान के सैन्य अड्डे से हटे हैं। मध्य एशिया में कोई और अमेरिकी अड्डा नहीं है। जब तक वो लोग अफगानिस्तान में थे, हम विजय को अपने ड्रोन अड्डों की मदद से कुछ ना कुछ मदद कर सकते थे और वहां से उसे बाहर निकालने में ज्यादा दिक्कत नहीं आती। हमारे पास वहां अभी भी सेनाएं हैं। कजाखस्तान में मुश्किल हो सकती है। वो पागलों का इलाका है। अफगानिस्तान से किसी भी उड़ान को उज्बेक और कजाख हवाई क्षेत्रों से गुजरना होगा। और हम अफगानी सैन्य अड्डे से हेलीकॉप्टर का इस्तेमाल नहीं कर सकते——उनकी इतनी क्षमता नहीं होगी। मुझे नहीं लगता कि इनमें से कोई भी देश इतनी जल्दी हमें अपने हवाई क्षेत्र में हमारे लड़ाकू विमान लाने की इजाजत देगा।’

‘क्या इसका यह मतलब है कि विजय अब पूरे तौर पर अपनी किस्मत पर निर्भर है?’ इमरान ने आश्चर्य जताया।

पैटरसन ने कंधे उचकाए। ‘मैं इस बात को सुनिश्चत करने के लिए जी—जान लगा दूंगा कि हम उसे अभी भी मदद कर पाएं। वो मेरी बड़ी चिंता नहीं है। मैं वॉशिंगटन में जितनी भी पहचान है, उनका इस्तेमाल कर लूंगा। लेकिन मैं यह पक्के तौर पर नहीं कह सकता कि हमारे पास पर्याप्त समय है या नहीं। अगर वो लोग कल सुबह तक, कजाख के स्थानीय समय के मुताबिक, अंतिम ठिकाने पर पहुंच जाते हैं, तो इसका मतलब है कि मेरे पास कुछ

ही घंटे हैं। उसके बाद विजय की किस्मत। बेहतर होगा कि मैं अभी से लग जाऊं।'

'मेरी शुभकामनाएं तुम्हारे साथ हैं।' इमरान ने विदा लिया और मॉनिटर बंद कर दिया। उसके मन में एक खालीपन सा भर आया। वो पहले ही राधा को खो चुका था। और पैटरसन विजय की मदद करने का पक्का भरोसा भी नहीं दिला पा रहा था। इमरान जानता था कि चीजें खिलाफ जा रही हैं। और, वो इस ख्याल से लड़ तो रहा था, लेकिन इसे हटा नहीं पा रहा था कि वो अपना एक और दोस्त आज खो देगा।

तीन भाई

विजय ने हेलीकॉप्टर से बाहर झांका जब वो लोग उस्तुर्त पठार के ऊपर से गुजर रहे थे। काफी नीचे सपाट ऊंची जमीन फैली हुई थी, जिस पर रेत बिछी थी। सुबह होने के पहले की रोशनी में बहुत थोड़ी सी हरियाली दिख रही थी और जहां तक नजरें जाती थीं, पानी का कोई स्रोत नहीं दिख रहा था। यह बिलकुल उजाड़ इलाका था।

रेगिस्तान की रेत के बने विशालकाय टीले और चूना पत्थर की लंबी तीखी ढाल ऐसी दिख रही थी, जैसे वो उनके ऊपर उड़ रहे घुसपैठियों को छूना चाहती हों। तेज धार वाली और टूटी—फूटी पहाड़ियां कम से कम 300 मीटर ऊंची थीं और अलग—अलग रंगों की दिख रही थीं, झक सफेद से लेकर नीली और गुलाबी तक। ऐसा लग रहा था मानो आप किसी दूसरे ग्रह का चक्कर लगाते हुए उसे ऊपर से देख रहे हों।

क्या यही वो जगह है जहां वायरस का स्रोत मिलेगा? उन्हें जल्दी ही पता लग जाएगा।

जैसे उसे इसी इशारे का इंतजार था, पायलट पीछे घूमा और उन्हें बताया कि तीन भाइयों के नाम से मशहूर चट्टानी संरचना दिखने लगी है।

'तीर की नोक की तलाश करो,' वान क्लुएक ने निर्देश दिया। 'मैं चाहता हूं कि हर आंख जमीन पर रहे।'

विजय को काफी आश्चर्य हुआ, जब उसने देखा कि सपाट ऊंची जमीन, जिसके ऊपर वो लोग उड़ान भर रहे थे, में बड़े—बड़े तीर तराशे गए थे। उसे जमीन पर तराशे गए नाजका चित्रों की याद आ गई, जो मीलों तक फैले हुए हैं। लेकिन यहां, तीरों के अलावा कोई दूसरी आकृति नहीं दिख रही थी।

सभी तीर मिलकर यू आकार का एक थैला बना रहे थे जिसमें से दो नुकीले तीर बाहर की ओर निकले थे।

विजय को अब छंद का मतलब समझ में आया। वो यह भी समझ गया कि वान क्लुएक यहां सूरज उगने के पहले क्यों आना चाहता था।

तीन भाइयों वाली संरचना अब उनके आगे दिखने लगी थी——एक साथ प्रभावशाली भी और भयंकर भी। चूना पत्थर के एक विशालकाय टीले से तीन बिलकुल सीधे पत्थर के

स्तंभ गर्व से सीना ताने खड़े थे। ये स्तंभ नंगे थे, कोई पेड़—पौधे नहीं, उनके पूर्वी हिस्से पर नवोदित सूर्य ने जैसे आग जला दी थी।

विजय प्रकृति की इस अद्भुत कृति से अपनी आंखें नहीं हटा सका जिसने इस वीरान पठार की खूबसूरती को, जितना उसने अब तक देखा था, कहीं पीछे छोड़ दिया था। अगर प्रकृति में कहीं भी कोई ऐसी रचना हो सकती थी जो अविनाशी जीवन दे सके, तो ये जगह उसके लिए बिलकुल सही लग रही थी।

'तीन भाई,' वान क्लुएक बुदबुदाया, वो भी चट्टान की इस संरचना की खूबसूरती से प्रभावित हो गया था। फिर वो अपने में लौट आया और सैन्य कुशलता के साथ निर्देश देने लगा। नीचे, जमीन पर, एक एसयूवी दिख रही थी, जिसके साथ एडवांस टीम के लोग चींटियों के समान दिखाई दे रहे थे।

और तब विजय ने देखा। नुकीले तीरों का एक और संग्रह। पठार के पत्थरों पर अंकित ठीक उसी तरह जैसा उसे रास्ते में दिखा था। इसकी नोक तीन भाई की तरफ थी, पिछले तीरों की तरह नहीं, जिनकी नोक उत्तर दिशा की तरफ थी।

तीर की नोक जो मार्ग का संकेत देती है।

लेकिन छंद में बताया गया तीर कौन सा है?

हर तीर चट्टानी संरचना की तरफ इशारा कर रहा था लेकिन चट्टान के अलग—अलग हिस्सों की तरफ।

'कौन सा है यह?' कूपर ने हेलीकॉप्टर के पंखों की गरज के बीच से चिल्लाकर पूछा।

'परछाई उसे स्पर्श करेगी जो हमें मुहर तक पहुंचाएगा!' वान क्लुएक ने भी चिल्लाकर जवाब दिया। 'देखो, वो पीछे हटने लगे हैं।'

वो सही था। सुबह के सूरज से बनी लंबी परछाईं सिकुड़ रही थीं, वो चट्टानी संरचना की तरफ खुद को समेट रही थीं।

'हम यहां काफी देर तक मंडरा नहीं सकते।' कूपर चीखते हुए बोला। 'हमारे पास इतना ही ईंधन बचा है कि हम अकताऊ तक वापस पहुंच सकें।'

'वो लोग तीरों पर निशान लगा रहे हैं।' वान क्लुएक ने जवाब दिया। 'अब हम नीचे जाएंगे।'

हेलीकॉप्टर ने नीचे की तरफ उतरना शुरू किया जबकि जमीन पर एडवांस टीम अलग—अलग तीरों के चारों तरफ तेजी से दौड़ लगा रही थी। विजय समझ गया कि क्या हो रहा था। दिन की रोशनी के आने के साथ ही एडवांस टीम हर तीर के घेरे पर सफेद झंडे लगा रही थी। जब चट्टानी संरचना की परछाई सही तीर पर पड़ेगी, वो सफेद झंडों पर बनने वाली परछाई देखकर पता लगा लेंगे। हेलीकॉप्टर धूल और रेत के तूफान के बीच जमीन पर उतरा, पंखे की आवाज धीरे—धीरे कम होकर सन्नाटे में बदल गई थी। यह एक खूबसूरत दृश्य था।

उनके चारों तरफ एक बड़ा पथरीला रेगिस्तान था, जिसके बीचोंबीच तीन भाई के नाम से मशहूर चट्टानी संरचना खड़ी थी। कुछ दूरी पर, पहाड़ियों ने अपना रंग बदलना शुरू कर दिया था जैसे—जैसे सूरज आसमान में ऊपर चढ़ता जा रहा था।

'इसका कोई मतलब नहीं है,' विजय ने कहा। 'दोनों तीर अभी परछाई के घेरे में हैं। जब चट्टान की परछाई पीछे हटेगी, यह दोनों तीरों की नोक को स्पर्श करेगी। वो एक ही दिशा की तरफ संकेत कर रहे हैं।'

'धीरज रखो,' वान क्लुएक ने कहा। 'याद रखो, क्यूब को ऑर्डर ने बनाया था। जो हम लोग करते हैं, हर उस चीज का एक मकसद होता है। अगर छंद कहता है कि हम इसी तरीके से ठिकाने पर पहुंचेंगे, तो मेरा विश्वास है कि हम पहुंचेंगे।'

सब लोग इंतजार करते रहे और तीन सिर वाले चट्टान की परछाई पीछे हटती रही। दो तीरों में से कौन था जिसकी उन्हें तलाश थी?

68

सांप की मुहर

हथियारबंद लोग एक साथ चिल्ला उठे जब सिकुड़ती हुई परछाई ने दोनों तीरों की नोक को पार किया और फिर उस तीर की नोक पर टिक गई जो बिलकुल दाएं था। यह तीन भाई में सबसे छोटे की तरफ संकेत कर रहा था।

विजय को अब वान क्लुएक के शब्दों की सचाई समझ में आई। वो अब तक इस पर संदेह कर रहा था। लेकिन सिकुड़ती परछाई, जब तीरों के ऊपर से गुजर रही थी, खुद एक तीर बन गई थी जिसकी नोक चट्टान से दूर जा रही थी। चट्टान और सूर्य दोनों की अनूठी स्थिति की वजह से, तीर की आकृति वाली परछाई और पठार पर बने तीर की नोक अब मिल गई थी।

वान क्लुएक ने विजय पर एक विजयी दृष्टि डाली, जिसने सिर हिलाकर उसका लोहा मान लिया। 'चलो।' वो यूरोपीय आगे बढ़ने लगा और बाकी लोग हेलीकॉप्टर से बड़े संदूक घसीटते हुए उसके पीछे तीर की दिशा में चल दिए।

जब वो लोग सबसे छोटे शिखर की तरफ पहुंचे, विजय को पूर्वानुमान का रोमांच महसूस हुआ। क्या होगी सांप की मुहर?

कूपर ने तीर की तरफ पीछे मुड़कर देखा। वो अपने मन में कुछ हिसाब लगा रहा था। 'तीर की ढाल ऊपर की तरफ है,' अंत में उसने कहा। 'इसका मतलब है कि जहां हमें खुदाई करनी चाहिए, वो जगह ढाल पर है। मेरा मानना है कि यह जगह इसके आसपास होगी।' उसने चट्टानी संरचना की सीधी ढाल पर एक जगह की तरफ इशारा किया।

आदेश मिलते ही पांच आदमी आगे बढ़े। एक संदूक खोला गया और उसमें से औजार निकाले गए। उन पांच आदमियों में आपस में चर्चा होने लगी और वो बीच—बीच में चट्टान की तरफ देखते जाते थे। विजय पर्वतारोही तो था नहीं, उसे चर्चा तो समझ नहीं आई लेकिन उसने अंदाजा लगा लिया था कि वो ये तय कर रहे हैं कि कौन सा औजार इस्तेमाल किया जाए।

उसने देखा कि उनमें से एक आदमी ने एक बेलनाकार औजार चुना और उसका निशाना उन तीन चोटियों में से सबसे छोटी के शिखर पर साधा। एक हुक उसमें से गोली की रफ्तार से निकली और चट्टान के शिखर की तरफ जाने लगी, उसके पीछे पहाड़ पर चढ़ाई करने

वाली रस्सी लगी थी। विजय को समझ आ गया कि यह एक तरह की कंप्रेस्ड एयर कैनन है जो पहाड़ों पर हुक दागती है। हुक शिखर पर एक झनझनाहट की आवाज के साथ धंस गई। दूसरे आदमी ने रस्सी खींची, जो कुछ इंच तक आगे फिसली, फिर कसकर तन गई, यानी हुक चट्टान में अच्छे से धंस चुकी थी।

एक और उपकरण खोला गया और उसे रस्सी से जोड़ दिया गया।

विजय को नहीं पता था कि वो क्या है, जब तक कि एक आदमी ने हारनेस नहीं पहना और उसे उस उपकरण से जोड़ा। उसने एक बटन दबाया और एक मोटरयुक्त घिरनी उसे रस्सी पर ऊपर की तरफ तेजी से खींचने लगी।

'तुम या तो पहाड़ में कोई प्रवेश द्वार ढूंढ़ना या एक मुहर जिसमें ऑर्डर का प्रतीक हो,' कूपर ने उस पर्वतारोही को अपने माइक्रोफोन से निर्देश दिया। पर्वतारोही के पास, विजय और वान क्लुएक को छोड़कर बाकी सभी आदमियों की तरह, बातचीत करने के लिए माइक्रोफोन और छोटा ईयरपीस था।

घिरनी उस आदमी को ढाल पर तब तक खींचती रही, जब तक कि करीब सत्तर फीट की ऊंचाई पर, वो रुका और रस्सी को चट्टान से बांधने लगा ताकि वो हवा में झूलता ना रहे।

'उसे मुहर मिल गई है,' कूपर ने वान क्लुएक को बताया। 'यह सही—सलामत है।'

वान क्लुएक ने सिर हिलाया। 'मैं भी यही सोच रहा था। अब हम जानते हैं कि सिकंदर को किसने मारा।' विजय ने उसकी ओर सवालिया नजरों से देखा लेकिन वान क्लुएक ने अपने रहस्यमय बयान पर विस्तार से कुछ नहीं बताया।

सभी आदमी बाकी संदूकों को खोलने में लग गए। उनमें हल्के जेनरेटर, पावर ड्रिल, जैकहैमर, छेद करने वाली इलैक्ट्रिक मशीनें और बेलचे, कुदाल और कुल्हाड़ियों के साथ—साथ पत्थर तोड़ने के लिए बड़े—बड़े हथौड़े भी थे। बाकी चार आदमियों ने भी शिखर पर हुक दागे और पहले पर्वतारोही की ही तरह वहां पहुंच गए, जिसने एक रस्सी अपनी कमर से बांधकर नीचे लटका दी थी। औजारों से भरा एक थैला रस्सी से बांध दिया गया जिसे पर्वतारोहियों ने ताकत लगाकर ऊपर खींच लिया। बिजली से चलने वाले औजारों के मोटे तार नीचे जमीन पर जेनरेटरों से जोड़ दिए गए थे।

'तुम्हें मुहर तोड़नी है,' कूपर ने ढाल पर खड़े उन आदमियों को कहा। 'इस बारे में नरमी बरतने की जरूरत नहीं है। हम प्रवेश द्वार को बाद में बंद करेंगे।'

जेनरेटर चला दिए गए थे, जिनका शोर विशाल पथरीले पठार में गूंजने लगा था और जिसने कुछ खरगोशों और पक्षियों को डराकर उनके घोंसलों से बाहर निकाल दिया था। पर्वतारोही चट्टान पर चोट करने लगे, ड्रिलों और हथौड़ों की मदद से मुहर को तोड़ने में लग गए। इतनी दूरी से विजय यह नहीं देख सकता था कि मुहर दिखने में कैसी है। लेकिन वो यह समझ गया था कि यह छिपे हुए रूप में है। कोई नहीं जानता था कि इस चट्टानी संरचना पर कहीं एक मुहर छिपी है।

आखिरकार, पर्वतारोहियों की तरफ से चिल्लाने की आवाज आई, एक धमाके के साथ चट्टान के टुकड़े ढाल से नीचे आने लगे। मुहर टूट चुकी थी।

चट्टान में एक वर्गाकार, काला छेद झांकने लगा था, जो उजली ढाल के सामने और ज्यादा गहरे रंग का दिख रहा था। यह दिखने में काफी बड़ा नहीं था और, जब मुख्य पर्वतारोही उसमें प्रवेश कर गया, विजय को समझ आया कि यह हर तरफ से तीन फीट से ज्यादा बड़ा नहीं है। बस इतना बड़ा था कि एक बार में एक आदमी अंदर जा सके।

बिजली से चलने वाले औजार पांचों घिरनियों के साथ नीचे कर लिए गए थे और वो पर्वतारोही एक—एक करके उस मुहाने में अंदर जा चुके थे। वो अपने साथ हाथ से चलने वाले औजार ले गए थे।

'यह एक सीधी सुरंग है जो पहाड़ के भीतर ले जा रही है,' कूपर ने वान क्लुएक को जानकारी दी। 'काफी पतली है, इसलिए वो अपने हाथों और घुटनों के बल चल रहे हैं।' थोड़ी देर बाद, ऐसा लगा कि वो आदमी रुक गए थे और कूपर उनकी बात पूरे ध्यान से

ईयरपीस पर सुन रहा था। वो वान क्लुएक की तरफ घूमा। 'वो एक कमरे में हैं। वहां से सीढ़ियां नीचे की तरफ जाती हैं। हम अब उनके साथ हो सकते हैं। एक बार वो नीचे उतरने लगेंगे, हमारा संपर्क उनसे टूट सकता है।'

'चलो,' वान क्लुएक ने आदमियों को उसके पीछे आने का संकेत दिया, और वो चट्टान की पेंदी तक पहुंचा और एक घिरनी को पकड़ लिया।

'यह देखने का वक्त है कि ऑर्डर के पुराने अड्डे कैसे होते थे।'

करीब—करीब उसी स्थान पर

विजय ने खुद को घिरनी से बांध लिया, वो दो सुरक्षाकर्मियों के बीच में दबा हुआ था। उसे ज्यादा कुछ नहीं करना पड़ा; घिरनी ने सारा काम कर दिया था। उसके सामने वाला सुरक्षाकर्मी उस मुहाने में चला गया जो बस इतना बड़ा था कि एक बार में एक ही आदमी जा सकता था। विजय उसके पीछे—पीछे गया, उसके हेलमेट लैंप की रोशनी सुरक्षाकर्मी के पिछले हिस्से पर पड़ रही थी। सुरंग सीधी पहाड़ के भीतर जा रही थी। यह उतनी संकीर्ण नहीं थी कि बेचैनी महसूस हो। दोनों तरफ और ऊपर की तरह जगह थी, लेकिन विजय अपना सिर बहुत ऊंचा नहीं उठा सकता था। सुरंग की फर्श और दीवारें चिकनी थीं।

करीब तीस फीट तक जाने के बाद, सुरंग एक बड़े कमरे में खुलती थी। विजय सुरंग से बाहर निकला और वान क्लुएक और उन आदमियों के साथ हो लिया, जो उससे पहले यहां पहुंच चुके थे और बाकी लोगों को उस रास्ते से आते देख रहे थे।

'रोशनी करो,' वान क्लुएक ने आदेश दिया और ताकतवर पोर्टेबल सर्चलाइटें जल उठीं, रोशनी में सीढ़ियां दिखीं जो गहरे अंधेरे में उतर रही थीं और उनकी पेंदी तक सर्चलाइटों की रोशनी नहीं पहुंच पा रही थी।

कूपर का संकेत पाकर, चार आदमियों की एक एडवांस टीम सीढ़ियों से नीचे उतरने लगी। कूपर उनकी गतिविधि की निगरानी अपने ईयरपीस की मदद से कर रहा था, और वो लोग अपनी गतिविधि की जानकारी उसे देते जा रहे थे।

सभी लोग कमरे में चुपचाप, धैर्य के साथ इंतजार करते रहे, काफी मिनट बीत गए। विजय ने अनुमान लगाया कि कम से कम बीस मिनट बीत चुके हैं, तभी कूपर ने वान क्लुएक को जानकारी दी, 'सब कुछ ठीक है।'

वान क्लुएक ने सहमति में सिर हिलाया और बाकी लोगों ने सीढ़ियों से नीचे उतरना शुरू कर दिया।

69

अमृत और रत्न

विजय अंतिम सीढ़ी से उतरा और चारों तरफ आश्चर्य से देखा। सर्चलाइटों की रोशनी में एक बड़ा कमरा दिखा जो चट्टान को काटकर बनाया गया था। यह कोई गुफा नहीं थी, ना तो प्राकृतिक या इंसान की बनाई हुई। जिस कमरे में वो लोग खड़े थे, वो साफ ज्यामितिक आकार का था। यह आयताकार था, जिसकी दीवारें चिकनी थीं। दोनों तरफ दीवारों में कई दरवाजे थे, जो अंधकार में खुल रहे थे। दूर की तरफ, उस दीवार में जिसके सामने सारे लोग खड़े थे, एक आयताकार पत्थर दीवार से उभरकर निकला हुआ था।

वान क्लुएक और कूपर के निर्देशों के तहत, समूह छोटे—छोटे दलों में बंट गया और इस तलाश में लग गया कि दरवाजों के पीछे क्या है। विजय, जिसके साथ लगातार दो सुरक्षाकर्मी लगे हुए थे, वान क्लुएक के पीछे था जो एक कमरे से दूसरे कमरे में जा रहा था।

पहले कमरे में दीवार से लगी अलमारियों में कलश रखे थे, जिनकी ऊंचाई करीब एक फुट रही होगी। वहां कम से कम सौ कलश रखे थे, जो उसी काली धातु के बने थे, जिसकी वो मेटल प्लेट बनी थी।

जब सर्चलाइटों की रोशनी दीवार के ऊपरी हिस्से पर पड़ी, देवनागरी लिपि में लिखा एक शब्द दिखाई पड़ा। 'रसकुंड।' विजय ने उसे पढ़ तो लिया लेकिन उसे नहीं मालूम था कि इसका अर्थ क्या है।

वान क्लुएक ने उसका उलझन भरा चेहरा देखा और उसके मुंह से दबी हंसी निकल गई।

'इन बरतनों में एक विशेष तरह का पेय पदार्थ रखा है जिसे महाभारत में अमृत कहा गया है,' उसने कृपा भाव से समझाना शुरू किया। 'इस पेय में वो क्षमता है जो इसे पीने वाले को अद्भुत शक्ति देती है। महाभारत में, जब भीम को दुर्योधन ने जहर दे दिया था और वो नागों के राज्य में पहुंच गया था, उसे यही पेय दिया गया था ताकि वो स्वस्थ हो जाए और अपनी ताकत बढ़ा सके। महाकाव्य के मुताबिक, भीम ने अमृत के आठ कलश पिये थे, हर कलश से उसे एक हजार हाथियों के बराबर की शक्ति मिली थी।'

'तुम्हारे कहने का मतलब है कि ये वही कलश हैं जो महाभारत में वर्णित हैं?' विजय उस चीज पर विश्वास नहीं कर सका जो वो सुन रहा था। वो अभी तक तो यही जानता था कि महाभारत वास्तविक घटनाओं पर आधारित है जो हजारों साल पहले हुई थीं। उसने

इसके प्रमाण देखे थे। लेकिन उस दौर की वास्तविक चीजों को देखना बिलकुल अलग बात थी।

वान क्लुएक ने कंधे उचकाए। ‘हो सकता है वही कलश ना हों। लेकिन लिखावट तो यही कहती है।’ वो कूपर की तरफ मुड़ा। ‘सैकड़ों सालों के बाद कलश तो खाली होंगे। अमृत सूख गया होगा। पानी में रेट्रोवायरस जरूर घुले रहे होंगे। तभी तो ये पीने वालों को तुरंत अद्भुत ताकत देता होगा। हो सकता है कुछ बचा—खुचा हो जिसमें वायरस हों। उनमें से पर्याप्त नमूने इकट्ठा कर लो।’

कूपर ने सहमति दी और थैले निकाले गए। विजय ने गौर नहीं किया था, लेकिन हर किसी ने अपनी कमर से सिमट जाने वाले नायलॉन के थैले बांध रखे थे। सभी आदमी कलश की जांच करने और उनमें रखे पदार्थ को थैलों में भरने में लग गए।

वान क्लुएक लंबे डग भरता हुआ हॉल के दूसरी तरफ वाले कमरे में चला गया। इस कमरे की दीवारों पर गहने थे जो सर्चलाइटों की रोशनी में जगमगा रहे थे। उस यूरोपीय शख्स ने सिर का इशारा किया। ‘हर चीज वैसी ही है जैसी होनी चाहिए,’ उसने विजय के मुकाबले खुद से यह बात ज्यादा कही। ‘श्लोक का यही मतलब था।’ विजय समझ गया कि वान क्लुएक क्या बुदबुदा रहा था।

कजाखस्तान आते हुए विमान में उसने विजय को जिन श्लोकों का मतलब समझाया था, उनमें से एक में औषधीय पौधों और रत्नों का जिक्र था। औषधीय पौधों का संदर्भ तो बिलकुल साफ था——इसका मतलब उन पौधों से था जो कैलिस्थनीज ने बैक्ट्रिया के जंगलों से जमा किए थे। लेकिन उस समय, विजय रत्नों का संदर्भ नहीं समझ पाया था। अब, वो समझ गया कि रत्न यहां हैं। और वायरस के साथ।

जब चट्टान पर मुहर तोड़ी जा रही थी, वान क्लुएक ने इस बारे में कुछ बुदबुदाया था कि किस वजह से सिकंदर की मौत हुई थी।

विजय अब जान गया था कि उस बयान का क्या मतलब था। वो भी, अब जानता था कि सिकंदर अमृत पीने के बावजूद क्यों मरा था।

अंतिम बाधा

‘यह एक दरवाजा है,’ वान क्लुएक ने उस पत्थर के आयताकार टुकड़े की जांच के बाद तुरंत बता दिया, जो सामने की दीवार से निकला हुआ था। बाकी लोगों ने तेजी से मुख्य कक्ष के दोनों तरफ बने सभी छोटे कमरों की तलाशी ले ली थी।

लेकिन पहले कमरे में मिले बरतन और दूसरे कमरे में मिले रत्नों के अलावा बाकी कमरों में उन्हें कुछ खास महत्व की चीजें नहीं मिली थीं। एक कमरे में जरूर दीवार पर कुछ अभिलेख उत्कीर्ण थे। ऐसा लग रहा था कि जो लोग भी पहले यहां रहते थे, उन्होंने इसे बंद करने के पहले इसकी सफाई कर दी थी, सिर्फ कलश और आभूषण ही यहां छोड़ गए थे।

इस चीज को पूरे तौर पर समझना मुश्किल था कि इन चीजों को वो यहां से क्यों नहीं ले गए, लेकिन अभी इसका विश्लेषण करने या अटकल लगाने का वक्त नहीं था। वान क्लुएक वायरस के और ज्यादा भरोसेमंद सैंपल हासिल करने की हड़बड़ी में था। और उसे पूरा भरोसा था कि यह उसे पत्थर के दरवाजे के पीछे ही मिलेगा।

हालांकि, इस निष्कर्ष के बावजूद, कोई तरीका नहीं दिख रहा था जिससे दरवाजा खोला जा सके।

'तोड़ दो इसे,' वान क्लुएक ने आदेश दिया, अब वो ज्यादा इंतजार नहीं कर सकता था।

पत्थर तोड़ने वाले बड़े-बड़े हथौड़े लाए गए और तीन आदमी उस दरवाजे को तोड़ने में लग गए।

साफतौर पर चट्टानी दरवाजे के पीछे कुछ महत्वपूर्ण था तभी वो इतनी आसानी से नहीं खुल रहा था। तीनों आदमियों ने आधे घंटे तक मेहनत की, तब जाकर उसमें दरारें दिखनी शुरू हुईं। और इस पूरे दौरान, उनके प्रहारों से पत्थर के छोटे—छोटे टुकड़े उड़कर पूरे कक्ष में बिखरते रहे। दूसरे लोगों को अपने चेहरों को हाथों से बचाना पड़ रहा था ताकि पत्थर के टुकड़े चेहरे पर ना लगें। पत्थर तोड़ रहे पहले के तीन लोग अब पीछे हट गए और उनकी जगह तीन दूसरे आदमियों ने ले ली, ताकि काम पूरा करने में आसानी हो। और आधे घंटे की जी—तोड़ मेहनत के बाद पत्थर का दरवाजा आखिरकार टुकड़ों में बिखर गया।

एक काला सा छेद मुंह बाए सामने था।

इस मुहाने के पीछे क्या छिपा था?

70

327 ईसा पूर्व

वर्तमान अफगानिस्तान

मानव से ईश्वर

यूमेनीज ने मशाल ऊपर उठाई जब सिकंदर पूर्व को जीतने के अपने अभियान पर प्रस्थान से पहले उस चर्म—पत्र को तिरछी निगाह से देख रहा था, जो उसकी मां ने उसे दिया था। उसकी मां ने उसे बताया था कि यह उसे उसी भूमि से आए एक दार्शनिक ने दिया है, जहां पर अभी उसकी सेना ने अपना पड़ाव डाला है। लेकिन उसे चर्म—पत्र के स्रोत में दिलचस्पी नहीं थी। उसकी दिलचस्पी मिथक की कथा——ईश्वर का रहस्य——में थी जिसने उसे अपनी सेना को एशिया के पार लाने और सिंधु की भूमि में आने के लिए प्रेरित किया था।

उसने अपने आसपास के क्षेत्र पर नजर डाली और जहां तक उसकी नजरें पहुंच रही थीं, उनकी भौगोलिक स्थिति को चर्म—पत्र पर लिखे श्लोकों के अर्थ से मिलाने की कोशिश की, जो उसकी मां ने उसे समझाए थे।

'वो चीज यहीं कहीं आसपास होनी चाहिए,' वो बुदबुदाया, कुछ खुद को और कुछ यूमेनीज को समझाने की कोशिश कर रहा था। 'हमने अभी—अभी पोजीडॉन के दंड को पार किया है।'

यूमेनीज ने सिर हिलाया। 'क्या हम आगे बढ़ें? शायद वो आगे हो?'

सिकंदर भुनभुनाया। वो लोग करीब एक घंटे से तलाश में लगे थे, उनके काम को अंधेरे और उबड़—खाबड़ चट्टानी जमीन ने और मुश्किल बना दिया था। लेकिन सिकंदर को अपनी तलाश अंधेरे में ही जारी रखनी थी। पोजीडॉन के दंड को ढूंढ़ने का यही इकलौता तरीका था।

उसने चालाकी से अपनी सेना को इतनी दूर तक आने के लिए प्रेरित किया था और अब वो अपनी कामयाबी के रास्ते में किसी को नहीं आने दे सकता था। शुरुआत में, उसने अपने सैनिकों को बताया था कि वो प्रतिष्ठा के लिए लड़ रहे हैं। मकदूनिया की प्रतिष्ठा के लिए। फारसियों के हाथों हुए अपमान का बदला लेने के लिए। वो लोग फारसियों से लड़ेंगे और

उन्हें परास्त कर देंगे। सिकंदर फारस पर राज करेगा। इससे उसकी सेनाओं में अच्छा संदेश गया था, खासतौर पर युद्ध का अनुभव रखने वाले वरिष्ठ सैनिकों में, जिन्होंने उसके पिता फिलिप द्वितीय की अगुवाई में कई लड़ाइयां लड़ी थीं। वो उसकी योजनाओं में फिलिप की महत्वाकांक्षा और उसकी विजय का विस्तार देख सकते थे। सिकंदर, उनके लिए, अपने पिता का सच्चा पुत्र था।

पिछले कुछ सालों के दौरान उन्होंने डैरियस को नेस्तनाबूद किया था, उन सामंतों का खात्मा किया था जिन्होंने फारसी बादशाह को धोखा दिया था और सिकंदर को फारस के शासक के तौर पर स्थापित किया था। और फिर, बाल्ख में जब सेनाएं घर वापसी की सोच रही थीं, सिकंदर ने उन पर बम गिरा दिया था। वो लोग एशिया की तरफ कूच करने वाले थे। उसने उन्हें विश्व विजय, पृथ्वी के दूसरे छोर तक कूच करने और सिंधु की भूमि पर मकदूनिया के प्रभुत्व की कहानियों से प्रेरित किया था। उसके लोग, अपनी जीत से और अपने राजा और सेना की अजेयता से उत्साहित, उसके साथ जुट गए थे।

अब, वो उस कारण, जिसके लिए वो यहां आया था, के काफी करीब था। ईश्वर का रहस्य। अपनी सेना को दो भागों में बांटकर, चर्म—पत्र पर दिए निर्देशों के अनुरूप, उसने एक भाग की अगुवाई कुनार घाटी तक की थी। कैलिस्थनीज ने मिशन का अपना हिस्सा पहले ही पूरा कर लिया था, जिसमें उसने चर्म—पत्र के कुछ निर्देशों पालन किया था, जब सिकंदर ने अपनी सेना की अगुवाई सॉग्डियन पर्वत के विरुद्ध की थी और बैक्ट्रियन कबीलों को अधीन बना लिया था।

सिकंदर के पास अब वो सारी चीजें थीं जो उसे चर्म—पत्र के निर्देशों के अनुरूप चाहिए थीं। वो और यूमेनीज आज रात अपने खेमे से चुपचाप निकल आए थे, और अंतिम निशानियों की तलाश कर रहे थे जो उन्हें रहस्य के ठिकाने तक पहुंचाते।

धीरे—धीरे, सावधानीपूर्वक वो आगे बढ़ते गए। वो अपने आसपास खड़ी उन चट्टानी संरचनाओं के किनारे चल रहे थे, जो उनके ऊपर मूक समाधि की तरह उठी हुई थीं। काफी नीचे, पर्वतों और अंधेरे के पर्दे में, नदी बह रही थी लेकिन वो उन्हें दिख नहीं रही थी। इसने कई विजेताओं को आते—जाते देखा था और इस राजा की उपस्थिति से भी अनजान थी, जो सार्वकालिक महान विजेताओं में एक होने वाला था।

यूमेनीज ने चिंतित होकर चारों तरफ देखा। सिकंदर ने अपने साथ कोई भी प्रहरी लाने से मना कर दिया था, और उसे अपनी तलवार और सैन्य कौशल पर भरोसा था। 'उस आदमी पर कौन आक्रमण करेगा जिसने दुनिया जीती है?' उसने यूमेनीज का मजाक उड़ाया था, जब उसने सुझाव दिया था कि उन्हें अपने साथ कुछ सैनिक ले चलने चाहिए। लेकिन यूमेनीज सिकंदर के इस आत्मविश्वास से सहमत नहीं था। सिकंदर इस इलाके के पहाड़ी कबीलों को अधीन बनाने की इच्छा रखता था और उसका तर्क था कि ये कबीले उसकी सेना के लिए खतरा हैं। यूमेनीज जानता था कि दरअसल यह उस गुप्त मिशन को छिपाए रखने की चाल थी जिस पर आज रात वो आए थे। लेकिन स्थानीय कबीले उनके आते ही भाग गए

थे और अपने गढ़ एयोरनॉस में वापस चले गए थे, उस दर्रे से कुछ मील दूर जो उन्हें पूर्व की तरफ ले जाने वाला था। कौन बता सकता था कि कहीं कोई गुस्सैल कबीलाई चट्टानों और पेड़ों की आड़ में घात लगाकर बैठा हो, और सभ्य दुनिया के शासक का वध करने के लिए सही मौके का इंतजार कर रहा हो?

'वहां!' सिकंदर की रूखी फुसफुसाहट ने उसके विचारों को भंग किया।

यूमेनीज तनकर देखने लगा कि सिकंदर ने क्या देख लिया था। एक और अजीबोगरीब चट्टानी संरचना उनके सामने खड़ी थी। लेकिन यह थोड़ी अलग थी। ऐसा लगता था कि यह दोनों तरफ से काफी घिस चुकी है, जिसकी वजह से यह एक विशालकाय लहर की शक्ल में दिख रही थी, जो उनके ऊपर से होती हुई आसमान तक पहुंच रही थी।

एक विशालकाय लहर। या पांच सिर वाला सांप। जो चर्म—पत्र के श्लोक से मेल खाता था।

सिकंदर सांप की शक्ल वाली चट्टान की तरफ आगे बढ़ा, यूमेनीज उसके पीछे लड़खड़ाता हुआ चला, अपने राजा की चाल से चाल मिलाने की कोशिश करता हुआ। अब, वो चट्टान के सामने खड़े थे। यह उससे कहीं ज्यादा ऊंचा था, जो उन्हें तब लगा था जब उन्होंने पहली बार देखा था, उनके सिर से करीब पंद्रह फीट ऊपर फैला हुआ।

यूमेनीज ने मशाल चट्टान के पास कर दी, वो ये ढूंढ़ने की कोशिश कर रहा था कि क्या इस भूमिगत गुफा में जाने का कोई रास्ता है, जो चर्म—पत्र के मुताबिक इसी चट्टान के नीचे था।

सिकंदर ने इसे ढूंढ़ लिया। यह एक संकीर्ण मुहाना था, जो चट्टान में एक मोड़ के पीछे छिपा था। जब तक किसी को यह मालूम ना हो कि वो वहां है, दिन के उजाले में भी इसे देख पाना असंभव था।

'यहां इंतजार करो,' सिकंदर ने आदेश दिया और यूमेनीज से मशाल ले ली। 'मैं जल्दी लौटता हूं।'

यूमेनीज ने इस पर आपत्ति की, लेकिन सिकंदर ने उसे तुरंत चुप कर दिया। 'यह एक पवित्र जगह है,' सिकंदर ने उसे कहा। 'सिर्फ एक भगवान के लिए उपयुक्त है। इसके आगे मैं खुद जाऊंगा।'

सिकंदर उस मुहाने में गायब हो गया, और यूमेनीज को अंधेरे में अकेला छोड़ दिया। लेकिन वो अपनी सुरक्षा को लेकर चिंतित नहीं था। उन दोनों में से कोई नहीं जानता था कि मुहाने के पीछे क्या है। वो सिर्फ एक अजनबी की बात पर विश्वास करके चल रहे थे। अगर यह सिकंदर को मारने की चाल हुई तो?

समय बीतने लगा, धीरे—धीरे, परेशानी बढ़ाते हुए और यूमेनीज सख्त पथरीली जमीन पर बैठकर अपने राजा की वापसी का इंतजार करने लगा।

समय, जो बीतने का नाम नहीं ले रहा था, आखिरकार बीता और सिकंदर मुहाने से

बाहर आया। उसका कवच भीगा हुआ था, और उसका चेहरा चमक रहा था।

'हो गया,' उसने यूमेनीज को मशाल लौटाते हुए कहा। 'अब, अंततः मैं भगवान हो गया हूं।'

71

वर्तमान

छठा दिन

अभियान का सार

नए खुले दरवाजे के पीछे खाली जगह थी, जिसका हर हिस्सा कालेपन से भरा हुआ था और वो मानो दरवाजे से बाहर निकलकर उस छोटे कक्ष को भर देना चाहता था जिसमें वो लोग खड़े थे।

एक साथ सबके कलेजे धक से रह गए जब सर्चलाइटों की रोशनी ने उस अंधेरे को चीर दिया जिसने पत्थर के दरवाजे के पीछे एक गुप्त गुफा बना रखी थी।

गुफा के फर्श पर हर प्रकार के और हर आकार के सांपों का झुंड था। इनमें कोबरा और मूषाद सांपों को आसानी से पहचाना जा सकता था। दूसरे सांप भी थे जो मुश्किल से एक फीट लंबे होंगे। वहां काले, हरे, भूरे और गेरूए सांप भी थे।

सिर्फ वान क्लुएक शांत था। विजय ने उसकी ओर नजर फेरी और यह देखकर चौंक गया कि उसके चेहरे पर सख्ती लेकिन संतुष्टि के भाव थे। ऐसा लग रहा था कि उसे इसका आभास था।

‘इन्हें इकट्ठा करो,’ वान क्लुएक ने आदेश दिया। ‘मैं हर तरह के दो सांप चाहता हूं। जितने ज्यादा मुमकिन हो, उतने पकड़ लो।’

वो आदमी हिचकिचाए। उनमें से कुछ सांपों के जहरीले नहीं होने की संभावना थी, लेकिन ज्यादातर सांप जहरीले लग रहे थे।

कूपर ने चीखते हुए आदेश दिया और एक बंदूक लहराई। ‘मैं चाहता हूं कि हर आदमी वहां जाए। तुम लोगों के पास बंदूकें हैं। अंदर जाओ और उन्हें इकट्ठा करो। जरूरत पड़ने पर गोली चलाओ, वो काफी बड़ी तादाद में हैं। दो लोगों की टीम बनाओ और एक दूसरे की मदद करते रहो।’

आदमियों ने एक दूसरे की तरफ देखा और, हिचकिचाते हुए, गुफा में चले गए। दस

आदमी दरवाजे पर खड़े होकर सर्चलाइटें पकड़े रहे ताकि उनके साथियों का काम आसान हो।

सांपों का झुंड और ज्यादा चिढ़ गया जब उन आदमियों ने दहलीज पार की। एक हाथ में उनके थैले थे और दूसरे में बंदूक और वो सांपों के बीच संभलकर चल रहे थे, ताकि उनके पैर सांपों पर ना पड़े।

इस काम में कई जानों का नुकसान हुआ। एक आदमी का पैर कोबरा पर पड़ा जिसने बिजली की तेजी से उस पर हमला कर दिया। वो आदमी फर्श पर गिर गया और बाकी अपना काम करते रहे। दूसरा बदकिस्मत आदमी एक कोबरा पर पैर रखने से बचाने के चक्कर में सांपों के एक जमघट पर लड़खड़ा गया। उस पर तुरंत कुंडली मारकर फुफकारते सांपों ने हमला कर दिया, कई जगह पर डस लिया और वो एक चीख के साथ नीचे गिर गया।

बाकी लोग सांपों के बीच सावधानी से अपना काम करते रहे, अपने साथियों की गलतियों से सीख लेते हुए। दो लोगों के समूह में काम करते हुए उन लोगों ने सतर्कता बरतते हुए अपने राइफल के बैरल की मदद से सांपों को उठाया और उन्हें थैले में डालते गए। यह काम बहुत धीमी रफ्तार से हो रहा था लेकिन आगे किसी और तरह का नुकसान नहीं हुआ।

विजय खड़ा होकर बेचैनी से यह सब देख रहा था। वो गुफाओं में आदमियों की किस्मत से बेचैन नहीं था। उसे इस बात की चिंता थी कि अब आगे क्या होगा। उसका। और राधा का।

उसके देखते—देखते गुफाओं में उन आदमियों ने लौटना शुरू कर दिया। उसने गौर किया कि, जब तक वो आदमी सांपों के बीच की खाली जगह में पैर रखते थे जिससे कि सांप छिड़े नहीं, वो सुरक्षित थे। मोटे तौर पर, भले ही सांप इस घुसपैठ से नाराज दिख रहे थे, उन्होंने आदमियों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया।

आखिरकार, अंतिम जोड़ा भी टूटे हुए पत्थर के दरवाजे के पार मुख्य कक्ष में आ गया। उन सभी लोगों के ललाट पर पसीने की बूंदें थीं और उनके कपड़े शरीर से चिपके हुए थे। यहां वैसे तो ठंड थी लेकिन उन्होंने जो काम किया था, उसके दबाव ने उन्हें पसीने से तर—बतर कर दिया था।

'बढ़िया।' वान क्लुएक ने तारीफ करते हुए मुस्कान बिखेरी। 'अब हमारे पास वायरस है। यहां हमारा काम खत्म हुआ।'

विजय ने अपनी भौंहें सिकोड़ीं। उसे समझ नहीं आया कि वान क्लुएक का क्या मतलब था। उन्होंने तो सांप इकट्ठे किए थे। वायरस कहां था?

लेकिन वो यूरोपीय फिर से बोल रहा था। 'चलो चलें।' उसने विजय को सख्त नजरों से देखा। 'और अब, मेरा मानना है कि, जैसा अमेरिकी कहते हैं, "कर्ज चुकाने का समय है"। पिछले साल तुमने हमलोगों को काफी तकलीफें दी थीं। मुझे लगता है कि यही समय है उस

पर रोक लगा दी जाए। वैसे भी, तुम हमारे बारे में और इस ऑपरेशन के बारे में काफी कुछ जानते हो। तो तुम समझ जाओगे जब मैं तुम्हें यह बताऊंगा कि हम तुम्हें अपने साथ नहीं ले जा रहे हैं। तुम यहीं रहने वाले हो।'

विजय घबरा गया। भले ही वो जानता था कि ऐसा होने की संभावना हमेशा थी, उसने उम्मीद की थी कि यह यूरोपीय आदमी अपना वादा निभाएगा। उसे यह पहले ही जान लेना चाहिए था। खासतौर पर जब उसे यह पता चल गया था कि वो किस चीज की तलाश में थे।

लेकिन उसके मन में एक उम्मीद अभी भी थी। लेकिन यह उसके स्वयं के लिए नहीं थी।

'लेकिन तुम राधा को तो जाने दोगे ना?' उसने साहस करके पूछा।

कूपर मुस्कुराया। 'हम जाने देते अगर हम ऐसा कर सकते।'

'वो मर चुकी है,' वान क्लुएक ने अपने चिरपरिचित उदासीन अंदाज में उसे बताया। 'उसने भागने की कोशिश की और हमारे सुरक्षाकर्मियों की गोलियों का शिकार हो गई।' वो उन लोगों की तरफ मुड़ा जो वहां खड़े थे। 'चलो, हम बाहर चलें।'

विजय खड़ा रहा, जैसे उसके पैर उस जगह पर जम गए थे। वो सुन्न पड़ गया था। उसका दिमाग जैसे खाली सा हो गया था, जिससे सारे विचार बाहर निकल गए थे। उसे एक गहरा, अंधेरा खालीपन सा महसूस होने लगा। उसके पैरों ने उसका साथ छोड़ दिया और वो फर्श पर गिर पड़ा, पीठ झुकी हुई और चेहरा हाथों में छुपा हुआ।

उसने पहले भी अपने करीबी खोए थे। उसके माता—पिता। उसके चाचा। लेकिन कभी भी उसे इतनी चोट नहीं पहुंची थी जितनी राधा को खोकर पहुंच रही थी। पैटरसन ने उसे इसके लिए तैयार कर दिया था। लेकिन कभी भी आप उस व्यक्ति को खोने के लिए कैसे तैयार हो सकते हैं, जिसे आप अपनी जिंदगी से ज्यादा प्यार करते हैं?

धुंधली आंखों के साथ उसने महसूस किया कि वो लोग जा रहे हैं। कोई उससे कुछ कह रहा था। उसके हाथ में एक सर्चलाइट थमा दी गई थी। लेकिन उसे तो गहरे अंधेरे ने घेर रखा था। दिमाग को भी और शरीर को भी। इस नुकसान की भरपाई नहीं हो सकती थी। बाकी कुछ भी उसे समझ नहीं आ रहा था।

वो आदमी सीढ़ियां चढ़कर वापस लौटने लगे। कूपर ने विजय को एक सर्चलाइट थमा दी थी। 'हम निर्दयी नहीं हैं,' वो मुस्कुराया। 'हम तुम्हें रोशनी के साथ छोड़ रहे हैं। कम से कम तब तक जब तक बैट्रियां चलें।'

विजय बैठा रहा, घुटनों के बल, उसकी नजरें किसी पर नहीं थीं जब वान क्लुएक और कूपर सीढ़ियों के रास्ते गायब हो गए।

वो अपने दुख में इतना डूबा था कि एक बेहद जरूरी सवाल उसके मन में नहीं आ रहा था।

कितनी देर तक सांप इस खुले दरवाजे से कक्ष में नहीं आएंगे?

भागने की जगह नहीं

विजय नहीं जानता था कि वो कितनी देर वहां सुन्न बैठा रहा। उसे घरघराहट की एक तेज आवाज ने जगाया, जिससे कमरा हिल गया था और टूटे दरवाजे के पत्थर के टुकड़े फर्श पर कांपने लगे थे।

एक पल के लिए तो वो कुछ समझ नहीं सका। फिर उसकी चेतना जगी और उसे याद आया कि वो कहां है। उसके नुकसान का तेज दर्द अब मंद वेदना में बदल चुका था। उसके मन की शक्ति लौट आई थी।

सर्चलाइट की रोशनी में उसने देखा कि धूल के कण सीढ़ियों के रास्ते पर नीचे की तरफ गिर रहे हैं। वो समझ गया कि क्या हुआ था। वान क्लुएक और उसकी टीम गुफा से बाहर निकल गई थी और उन्होंने सुरंग के मुहाने को उड़ा दिया था, जिससे वो बंद हो जाए। और इस वजह से पत्थर के टुकड़े और धूल सीढ़ियों पर बिखर रहे थे।

वो फंस चुका था।

लेकिन इससे भी बुरा होने जा रहा था। उसने अपने आसपास कुछ खरोंचने की आवाज सुनी। सर्चलाइट की रोशनी के किनारों से फुफकार आ रही थी, जो उजाले के दायरे के बाहर से निकल रही थी।

विजय ने कमरे के फर्श की ओर सर्चलाइट की और डर से जम सा गया।

सांपों ने कमरे का पता लगा लिया था और वो अंदर आ रहे थे।

72

गोलाबारी

वान क्लुएक ने देखा कि उसका आखरी आदमी भी घिरनी के सहारे ढाल से नीचे आ गया और बाकी सभी लोगों के साथ हो लिया। पकड़े गए सांप और कलश हेलीकॉप्टर में सुरक्षित रख दिए गए थे। वो आदमी अब सारे औजारों को संदूकों में भरने में और उन्हें हेलीकॉप्टर पर चढ़ाने में व्यस्त थे।

'क्षितिज पर पक्षी दिख रहे हैं,' तभी एक आदमी ने अचानक कहा।

सभी की आंखें उस दिशा में मुड़ गईं जिस तरफ उस आदमी ने इशारा किया था। औजारों को जमाकर रखने और संदूकों को चढ़ाने का काम रुक गया।

पश्चिम की तरफ फैली बंजर भूमि के ऊपर दो छोटे बिंदु दिख रहे थे। वो तेजी से बड़े होते जा रहे थे।

ये हेलीकॉप्टर थे, जो उनकी ही तरफ आ रहे थे।

कूपर ने आदमियों से जल्दी करने को कहा। वो नहीं जानता था कि उन हेलीकॉप्टरों में कौन था, लेकिन पक्के तौर पर वो दोस्त नहीं थे। उनके सहयोगियों में से कोई भी मिशन के इस हिस्से के बारे में नहीं जानता था। अगर हेलीकॉप्टर इस तरफ आ रहे थे, तो यह अच्छी खबर नहीं थी।

'जल्दी, जल्दी, जल्दी,' वो चिल्लाया और आदमियों को हाथ तेजी से चलाने को कहा।

उन आदमियों ने उसके लहजे की गंभीरता को समझा और अपनी रफ्तार बढ़ा दी, पहले जहां वो धीरे—धीरे चल रहे थे, अब दौड़ने लगे और संदूकों में सामानों को सावधानी से रखने की बजाय ठूंसने लगे।

हेलीकॉप्टर आकार में बढ़ते गए और अब उनके पंखों की तीखी आवाज उनके कानों तक पहुंचने लगी। वो तेज हेलीकॉप्टर थे और चट्टान और अपने बीच की दूरी को तेजी से पूरा कर रहे थे।

कूपर को समझ आ गया कि उन लोगों के पास सारे औजारों को लादने का समय नहीं है। 'हमें सामान यहीं छोड़ना होगा,' उसने वान क्लुएक को बताया जिसने इस पर रजामंदी दे दी।

उन आदमियों ने संदूक छोड़ दिए और अपने हेलीकॉप्टरों में चढ़ने लगे।

कूपर ने आसमान की तरफ देखा जहां दोनों हेलीकॉप्टर अब इतने बड़े हो गए थे कि वो नंगी आंखों से पहचाने जा सकें।

'बुरी खबर है,' उसने वान क्लुएक को बताया। 'कजाख एयरफोर्स के हेलीकॉप्टर हैं ये, यूरोकॉप्टर ईसी725एस।'

वान क्लुएक ने सिर से इशारा किया। 'चलो उड़ते हैं। और उम्मीद करते हैं कि उनके पास सिर्फ मशीनगन और बंदूकें हों। रॉकेट लॉन्चर नहीं हों।'

कूपर हेलीकॉप्टर में कूदकर चढ़ गया और दोनों हेलीकॉप्टर ऊपर उठ गए।

कजाख एयरफोर्स के हेलीकॉप्टर तेजी से पास आ रहे थे। वान क्लुएक के हेलीकॉप्टर रफ्तार के लिए नहीं बने थे। उसके लोग एमआई—26 में थे, दुनिया का सबसे बड़ा सबसे भारी हेलीकॉप्टर, जिसमें 82 लोग समा सकते थे, और 60 आदमियों के लिए बिलकुल सही था जिनकी जरूरत वान क्लुएक को इस मिशन के लिए थी। इसकी उड़ान क्षमता 432 नॉटिकल मील थी और इस मिशन के लिए जितना सफर करना था, उस हिसाब से बिलकुल सही थी। उसका अपना हेलीकॉप्टर अगुस्ता वेस्टलैंड एडब्ल्यू139एम था, जो 15 यात्रियों के लिए बना था और जिसकी उड़ान क्षमता 537 नॉटिकल मील थी।

दूसरी ओर, कजाख हेलीकॉप्टर छोटे थे। उनकी अधिकतम रफ्तार 324 किलोमीटर प्रति घंटा थी, अगुस्ता की 306 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से थोड़ी ज्यादा और वजनदार एमआई—26 की 295 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से कहीं ज्यादा। इसके अलावा, वो शायद जासूसी मिशन पर थे और उनमें सैनिक नहीं थे जिस तरह से ऑर्डर के हेलीकॉप्टर में थे। इस वजह से कजाख हेलीकॉप्टर हल्के थे, और तेज भी।

'हम उनसे बच नहीं पाएंगे,' कूपर ने सख्त लहजे में कहा।

'रॉकेट लॉन्चर निकालो,' वान क्लुएक ने आदेश दिया। 'वो हथियारों से हमले की उम्मीद नहीं कर रहे होंगे। हमें उनसे पीछा छुड़ाना है।'

कूपर ने आदेश का पालन किया। अगुस्ता हेलीकॉप्टर के केबिन के पिछले हिस्से में दो रॉकेट लॉन्चर रखे थे, जिन्हें जल्दी—जल्दी खोला गया और हमले के लिए तैयार किया गया। दो लोग उन्हें दागने के लिए तैयार खड़े हो गए।

बिना कोई संदेह किए कजाख हेलीकॉप्टर पास आते गए।

'रुको,' वान क्लुएक ने आदेश दिया। 'हम नहीं जानते कि उनके पास रॉकेट लॉन्चर है या नहीं। उन्हें हमारे दायरे में आने दो। हमारे पास एक ही मौका है। इसका पूरा फायदा उठाना है।'

खोजबीन

विजय सावधानी से खड़ा हुआ और सोच रहा था कि उसे क्या करना चाहिए। वो यहां सैकड़ों सांपों के साथ कैद हो गया था। बाहर निकलने का इकलौता रास्ता वान क्लुएक ने बर्बाद कर दिया था।

उसके दिमाग में एक विचार आया। इससे बहुत ज्यादा उम्मीद तो नहीं थी लेकिन आजमाया जा सकता था। अगर यह कमरा महाभारत से जुड़ा है तो यह हजारों साल पहले बनाया गया होगा। सांप इतने पुराने नहीं हो सकते थे। उनके पालन—पोषण और उनकी आबादी को बने रहने देने के लिए उन्हें खिलाने की जरूरत पड़ती होगी।

इसका मतलब था कि यहां से सतह पर पहुंचने का कोई साधन जरूर होगा। शायद चट्टान में ऐसे छेद बने हों, जिससे सांप अपने घर से बाहर निकलते होंगे और पठार में रहने वाले जीव—जंतुओं को खाते होंगे। यहां की हवा सैकड़ों सालों तक बंद रहने के बावजूद ताजी लग रही थी। हो सकता है उनमें से कोई छेद इतना बड़ा हो कि वो रेंगकर बाहर निकल सके? इस चीज की खोजबीन तो की जा सकती थी। उसके पास जिंदा बचने की और कोई उम्मीद नहीं थी।

लेकिन सबसे पहले, वो उस काम को करना चाहता था जो उसके दिमाग में काफी समय से घूम रहा था। वो अब तक यह करने में कामयाब नहीं हो पाया था क्योंकि वान क्लुएक और उसके आदमी हमेशा आसपास रहते थे। वह उस कमरे में घुसा जिसकी एक दीवार पर उसकी याददाश्त के मुताबिक कुछ अभिलेख थे और उस जगह पर उसने सर्चलाइट से रोशनी की। वो अभिलेख विचित्र आकृतियों के थे, जैसे उसने पहले कभी नहीं देखे थे। एक हाथ से सर्चलाइट को पकड़े हुए, उसने अपना स्मार्टफोन निकाला और उस अभिलेख के कुछ फोटो क्लिक कर लिए, इसके बाद वो मुख्य कक्ष में चला आया।

अब, इस झमेले से निकलने का रास्ता ढूंढ़ा जाए।

उसने जमीन पर पड़े कुदालों, फावड़ों और कुल्हाड़ियों के ढेर में से, जो वो आदमी अपने साथ लाए थे और वापस जाते वक्त छोड़ गए थे, एक फावड़ा उठाया। यह काम आ सकता था।

बस एक दिक्कत थी। उसे सांपों के ढेर में से जगह बनाकर निकलना पड़ेगा, जो उसके सामने फैले हुए थे।

73

तनावपूर्ण स्थिति

'वो हेलीकॉप्टरों पर हमला करने जा रहे हैं,' पैटरसन ने जानकारी दी। वो इमरान के साथ टेली—लिंक पर था, जो अभी भी अस्पताल में अपने बिस्तर पर था, लेकिन अपने कमरे के उपकरणों की मदद से बाकी दुनिया से जुड़ा था।

पैटरसन ने वॉशिंगटन में एक के बाद एक टेलीफोन खड़काए थे, सुरक्षा बलों और कांग्रेस में अपने नेटवर्क से संपर्क साधा था। वो अमेरिका के राष्ट्रपति तक जा पहुंचा था। बाहर उसकी टीम का एक सदस्य मुसीबत में था और वो उसे इस हालत में छोड़ नहीं सकता था। यह उसका तरीका नहीं था।

आखिरकार, कूटनीतिक और सैन्य मार्गों के जरिए, वो कजाख रक्षा मंत्रालय तक जा पहुंचा था और उन्हें हालात की गंभीरता समझाई थी। हालांकि, पैटरसन के हाथ इस तथ्य ने बांध रखे थे कि जो जानकारी उसके पास थी, वो बेहद गुप्त थी और उसे एक पूर्व सोवियत राज्य के साथ नहीं बांटा जा सकता था। कजाख लोगों को यह भरोसा दिलाना बहुत मुश्किल था कि हालात काफी गंभीर हैं और उन्हें उस्तुर्त पठार में मौके पर अपने सैनिक या कमांडोज भेजने चाहिए। अंत में वो दो हेलीकॉप्टरों को पठार पर खोजबीन करने और हालात की जानकारी देने के लिए भेजने को राजी हो गए थे।

पूरा ऑपरेशन कजाख एयर कमांड की निगरानी में हो रहा था और इसका वीडियो लिंक पैटरसन और इमरान को उपलब्ध कराया गया था।

कजाख हेलीकॉप्टरों में लगे कैमरों ने जमीन पर इंतजार कर रहे दोनों हेलीकॉप्टरों को जब बड़ा करके दिखाया था, तो उन्होंने देखा था कि कैसे उन लोगों ने पहले अपने हेलीकॉप्टरों में सामान लादने में तेजी दिखाई, फिर उसे आधे में ही छोड़कर उड़ गए।

फिर, उन्होंने देखा कि जमीन पर से एक हेलीकॉप्टर उड़ा और वहां से भागने के इरादे से पूर्वी दिशा में बढ़ चला, जबकि दूसरा हेलीकॉप्टर उसी जगह मंडरा रहा था, जैसे समझ नहीं पा रहा था कि उसे क्या करना चाहिए।

तभी पैटरसन को महसूस हुआ कि अगुस्ता वेस्टलैंड एडब्ल्यू139एम हेलीकॉप्टर पास आ रहे हेलीकॉप्टरों पर हमला करने की सोच रहा है। वैसे तो अगुस्ता सिर्फ मशीनगन से लैस था, अगर वो लोग हमला करने का इंतजार कर रहे हैं, तो इसका मतलब है कि उनके पास

रॉकेट लॉन्चर हैं।

कजाख एयर कमांड ने भी इस चीज को महसूस कर लिया था। पैटरसन और इमरान सुन सकते थे कि वो लोग चीखते हुए अपने पायलटों को चेतावनी दे रहे थे और जवाबी हमले के लिए तैयार रहने को कह रहे थे। वो हथियारों से हमले की उम्मीद नहीं कर रहे थे। वैसे तो कोई नहीं जानता था कि वो लोग कौन थे, लेकिन उनसे यह उम्मीद नहीं थी कि उनके पास किसी तरह का गोला—बारूद रखा होगा। और ईसी725 हेलीकॉप्टर सिर्फ मशीनगन और बीस मिलीमीटर तोप से लैस थे।

पैटरसन और इमरान आतंकित होकर देख रहे थे कि एडब्ल्यू139एम के केबिन के एक दरवाजे से दो रॉकेट लॉन्चरों के सिरे बाहर निकले।

हवाई लड़ाई

रॉकेट लॉन्चर दागे गए लेकिन, एयर कमांड से मिली चेतावनी के मुताबिक दोनों कजाख हेलीकॉप्टर इस हमले के लिए तैयार थे और उन्होंने तुरंत खुद को बचाने की कार्रवाई की। दागे गए रॉकेट हवा में होते हुए सीधे तीन भाई की तरफ जाने लगे।

वान क्लुएक के आदमी फिर से रॉकेट लॉन्चर को तैयार करने लगे थे, और पहले दागे गए रॉकेट उस चट्टानी संरचना की ढाल पर दो बड़ी चोटियों के ठीक नीचे जाकर फट गए। इससे हुई गर्जना बहरा कर देने वाली थी लेकिन अगुस्ता हेलीकॉप्टर में बैठे आदमियों को नीचे हो रही गतिविधियों में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

वो कजाख हेलीकॉप्टरों को निशाना बना रहे थे।

उन्होंने फिर से रॉकेट दागे।

एक खोज

गुफा की कोई सीमा नहीं पता लग रही थी। विजय के चारों तरफ अंधेरा फैला था और वो सांपों के बीच पंजों के बल चल रहा था।

वो चिंतित था। अब तक, वो किसी तरह सांपों से बचे रहने में कामयाब रहा था। उन्होंने ज्यादातर उसे नजरअंदाज किया था, बस एकाध मौकों पर उसे उनके पास से गुजरने पर फुफकारने की आवाज सुनाई पड़ी थी। लेकिन कब तक उसकी किस्मत उसका साथ देगी?

अपने आसपास सर्चलाइट की रोशनी में उसने अंदाजा लगाने की कोशिश की कि वो कितनी दूर आ गया है। अंधेरे ने गुफा के प्रवेश द्वार को ऐसे ढक रखा था जैसे किसी खिड़की पर लगा काला मोटा पर्दा सूरज की रोशनी को रोक देता है। उसके दिमाग में चिंता बढ़ाने वाला एक और सवाल आया। सर्चलाइट कब तक चलेगी?

लेकिन उसे आगे बढ़ना था। उसके पास और कोई विकल्प नहीं था। अभी रुकना आत्महत्या के समान होगा।

तभी, नीचे की जमीन हिली और गुफा में एक थरथराहट सी दौड़ गई। गुफा की अदृश्य छत और दीवारों से जैसे एक लंबी कराह निकली हो।

वो रुका और स्थिर खड़ा हो गया। कुछ हुआ था। नहीं, कुछ हो रहा था। जमीन लगातार कांप रही थी और सांप छितराने लगे थे। वो उससे दूर जा रहे थे, उस रफ्तार से जिससे उसने कभी सोचा भी नहीं था कि सांप भाग सकते हैं।

ऐसा लग रहा था जैसे वो किसी चीज से भाग रहे थे। लेकिन क्या?

एकाएक उसे अहसास हुआ कि अगर वो भाग रहे सांपों का पीछा करे, वो उसे यहां से बच निकलने की जगह पहुंचा सकते हैं। बशर्ते सांप जिस चीज से दूर भाग रहे हैं, वो उसके सामने पहले ना आ जाए।

वो सांपों के पीछे हो लिया, जो उसे तेजी से पार करते जा रहे थे, उसके पैरों के बीच से, उसके बगल से और कभी—कभी पैरों के ऊपर से भी। वो उसकी मौजूदगी से उदासीन से हो गए थे और उनका सिर्फ एक लक्ष्य था——दूर जाना।

विजय ने आगे बढ़ना जारी रखा। सांप अंधेरे में इतनी तेजी से गायब हो रहे थे कि वो उनका पीछा नहीं कर पा रहा था। तभी वो रुक गया। उसे उस पर यकीन नहीं हो रहा था जो उसे दिख रहा था। मुश्किल से पंद्रह या बीस फीट आगे, उसकी दाहिनी तरफ पत्थर की सीढ़ियां थीं। उसकी उम्मीदें उछाल मारने लगीं। वो तेजी से आगे बढ़ा, सीढ़ियों पर जल्द से जल्द पहुंचने के लिए।

और यह कदम गलत समय पर उठाया गया था। जैसे ही वो आगे बढ़ा, दो कोबरा पास से गुजर रहे थे। उनमें से एक उसके पैरों के नीचे आ गया और फुफकारते हुए हमला करने को तैयार हो गया।

जैसे ही सांप ने हमला किया, विजय पीछे की ओर हट गया, सांप उसे डसने से बस कुछ मिलीमीटर ही दूर रह गया, लेकिन पीछे हटते—हटते विजय का पैर उस कोबरा पर पड़ गया जो सुस्त चाल से उसी दिशा में अपना रास्ता बना रहा था। सांप ने हमला करने के लिए अपनी कुंडली समेट ली।

क्या सर्चलाइट का कोई हिस्सा गिरने की वजह से टूट गया था या बैट्रियां खत्म हो गईं, विजय को समझ नहीं आया। रोशनी बंद हो गई और गुफा में अब सिर्फ घना अंधकार था।

अपने चारों तरफ उसे सिर्फ सांपों के रेंगने की आवाज सुनाई पड़ रही थी। लेकिन उसे यह नहीं मालूम था कि पत्थर की सीढ़ियां किस दिशा में हैं।

74

पहला आक्रमण

दूसरे दौर में भी रॉकेट दागने के नतीजे पहले जैसे ही निकले। एक बार फिर, कजाख पायलट अनुमान लगाने में तेज निकले और उन्होंने खुद को बचा लिया।

वान क्लुएक की खीझ बढ़ रही थी। 'क्या तुम लोग भेंगे हो?' उसने अपने बंदूकचियों को डांटा। 'हम यहां से तब तक नहीं निकल सकते जब तक हम उनसे पीछा ना छुड़ा लें।' उसने पूर्व की तरफ देखा जहां उसका दूसरा हेलीकॉप्टर लगातार छोटा होता जा रहा था।

एक कजाख हेलीकॉप्टर अब उनकी तरफ सीधा बढ़ रहा था, मशीनगनें आग उगल रही थीं। वान क्लुएक जानता था कि अब क्या होने वाला है। या तो बीस मिलीमीटर की तोप निकलेगी या 68 मिलीमीटर रॉकेट लॉन्चर।

'दागो,' वो चिल्लाया।

एक बंदूकची ने निशाना लिया और तीसरी बार रॉकेट लॉन्चर दाग दिया।

इस बार, निशाना सही लगा।

हेलीकॉप्टर आग के गोले में फट गया और तीन भाई की तरफ गिरने लगा, सबसे छोटी चोटी पर टकराया और ढाल से फिसलते हुए पठार पर आ गिरा, अब वो जलता हुआ मलबा था।

फंदे में

कुछ पलों के लिए विजय चुपचाप खड़ा रहा, वो अगले कदम के बारे में कोई फैसला नहीं कर पा रहा था। रोशनी खत्म होने के बाद से रेंगने और खरोंचने की आवाज तेज हो गई थी। वो नहीं जानता था कि देखने में असमर्थ होने की वजह से उसकी सुनने की क्षमता बढ़ गई है या सांप ज्यादा बेचैन होते जा रहे हैं। लेकिन यह उसे डरा रहा था। उसके ऊपर घबराहट हावी होने का खतरा मंडरा रहा था।

उसने दिमाग पर जोर लगाकर सोचा। उसने कुछ कदम आगे बढ़ाए और अंधेरे में कुछ टटोलने की कोशिश की।

वहां कुछ नहीं था।

उसने कदम पीछे ले जाकर फिर कोशिश की। इससे भी फायदा नहीं हुआ।

विजय निराश होने लगा था। जब उसे सीढ़ियां दिखने लगी थीं, उसने सोचा था कि उसके पास, छोटा सा ही सही, यहां से बाहर निकलने का एक मौका है।

अपने अंदर पनप रहे डर और आतंक को दबाते हुए, उसने अपने चारों ओर सांपों की आवाज पर ध्यान लगाने की कोशिश की। क्या वो यह पता लगा सकता है कि वो किस दिशा में जा रहे हैं?

बड़ा भाई

'मिसाइल की चेतावनी!' हेलीकॉप्टर का पायलट चिल्लाया। 'ईसीएम चालू हो गया है!'

'शिखर!' वान क्लुएक चिल्ला उठा। 'शिखरों की मदद लो और यहां से बाहर निकलो।' वो समझ गया था कि क्या हुआ था। कजाख एयर फोर्स निश्चित रूप से उनके हेलीकॉप्टर की निगरानी कर रही होगी। उसने उम्मीद नहीं की थी कि वो लोग इतनी तेजी से जवाब देंगे। उन्होंने जरूर हेलीकॉप्टरों पर हमले की उसकी नीयत समझ ली होगी। इसके अलावा कोई और वजह नहीं हो सकती जिस तेजी से उन्होंने अपने लड़ाकू विमान तैयार किए हैं।

'मिग29 हैं!' उसका पायलट चिल्लाया और हेलीकॉप्टर को नीचे की ओर गहरा गोता खिलाया ताकि उनके और हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइलों के बीच में तीन भाई आ जाए। अगुस्ता में मिसाइल की चेतावनी देने वाला सिस्टम लगा था, जिसने पायलट को मिसाइल के बारे में सावधान कर दिया था। लेकिन हेलीकॉप्टर में काउंटर मेजर्स डिस्पेंसिंग सिस्टम भी था जो मिसाइलों को दूर रखने के लिए इलेक्ट्रॉनिक काउंटर मेजर्स का इस्तेमाल करता था।

वान क्लुएक ने देखा कि तीन भाई के ऊपर से लपटें निकल रही हैं और समझ गया कि उसका पायलट कोई मौका नहीं छोड़ना चाहता। ईसीएम के अलावा वो फ्लेयर डिकॉय और स्पेशल मैटीरियल एक्सपेंडेबल डिकॉय का इस्तेमाल कर मिसाइलों को धोखा देने की कोशिश कर रहा है।

हेलीकॉप्टर नीचे की तरफ उतरा और तीन भाई को सुरक्षा कवच की तरह इस्तेमाल करते हुए पूरी रफ्तार से पूर्व दिशा की तरफ बढ़ चला। उज्बेकिस्तान की सीमा ज्यादा दूर नहीं थी और कजाख लड़ाकू विमान सीमा के नजदीक कोई आक्रामक चाल नहीं चलेंगे।

मिशन कामयाब होने वाला था।

स्वर्ग की सीढ़ी

विजय झुककर नीचे बैठ गया, उसने आंखें बंद कर रखी थीं और सांपों की हरकतों को सुनने की कोशिश कर रहा था। उसने अपनी सांसें स्थिर रखने की कोशिश की ताकि ये सांपों के

बाहर निकलने की प्रक्रिया में पैदा हो रही आवाज सुनने में बाधा ना बने।

सांप उसके पास से निकल रहे थे, कुछ उसके पैर को भी छूते हुए निकल रहे थे। वो कोशिश कर रहा था कि वो स्पर्श और श्रवण शक्ति को मिलाकर फैसला कर पाए कि किस दिशा में उसे जाना है। कुछ मिनटों के बाद उसने आगे बढ़ने का फैसला कर लिया। उसने पहले फर्श पर एक पैर रखा, फिर अगला, ताकि वो सांपों के ऊपर ना तो पैर रखे और ना ही फिसले।

एक और विचार उसके दिमाग में कौंधा। ये सीढ़ियां कहां ले जाती हैं? उसने अपना सिर हिलाया। उसे यह पहले ही सोचना चाहिए था। उसने ऊपर की तरफ देखा। काफी ऊपर, अंधेरे से होते हुए, उसे उजाले का एक चमकीला बिंदु दिखा। बाहरी दुनिया का एक दरवाजा।

उसकी उम्मीदें फिर से जिंदा हो उठीं, वो किसी तरह आगे बढ़ता रहा, उसकी बांहें आगे की तरफ फैली हुई थीं और आंखें बंद। घुप्प अंधेरे के बावजूद, उसे आंखें खोलने की अपनी इच्छा पर काबू पाना पड़ रहा था। यह बेचैन कर देने वाली अनुभूति थी।

तभी, उसका फावड़ा जो उसके आगे की तरफ फैला था, किसी सख्त चीज से टकराया। वो तेजी से आगे बढ़ा और उसके हाथ चट्टान से रगड़ गए। उसने अंधेरे में ही हाथ फेरते हुए एक सीढ़ी की आकृति महसूस की, फिर दूसरी। वो खुशी से चिल्ला सकता था। उसने कर दिखाया था। लेकिन अभी जश्न का समय नहीं था। उसे यहां से बाहर निकलना था। जिस चीज ने भी सांपों को डराया था, उसे ढूंढ़ने का इंतजार करना सही नहीं रहता।

उसने फावड़ा नीचे रखा, सबसे नीचे वाली सीढ़ी पर पहुंचा और ऊपर की तरफ चढ़ाई शुरू कर दी। फावड़े को पीछे छोड़ना पड़ेगा। यह एक खतरनाक चढ़ाई थी। सीढ़ियां चट्टान काटकर बनी थीं और तीन फीट से ज्यादा चौड़ी नहीं थीं। उसकी बाईं तरफ गुफा की दीवार थी। उसकी दाईं तरफ खाली जगह थी जिससे वो गुफा के फर्श पर गिर सकता था। बस एक बार पैर फिसलने की देर थी। वो कांप गया और अपनी बाईं तरफ की दीवार से चिपककर ऊपर चलता रहा।

यह काफी लंबी चढ़ाई थी और ऐसा लग रहा था कि सीढ़ियां कभी खत्म नहीं होंगी। पसीने से उसके कपड़े भीग गए थे और उसके हाथ चट्टान से रगड़ खा—खाकर थोड़े जख्मी भी हो गए थे क्योंकि वो फिसलने से बचने के लिए लगातार मजबूत पकड़ बनाए रखना चाहता था। उसकी जांघें इस लंबी और धीमी चढ़ाई से दुखने लगी थीं। लेकिन वो हार नहीं मानने वाला था।

विजय को अब समझ आया कि वो कहां था। वो तीन भाई में से एक के अंदर था। सीढ़ियों का यह रास्ता एक विशाल शिखर में काटकर बनाया गया था जो इस चट्टानी संरचना की ढाल से उठता था। कौन सा था, यह वो अंदाजा नहीं लगा सका——लेकिन यह सबसे छोटा तो नहीं हो सकता था क्योंकि प्रवेश द्वार उसके नीचे था। लेकिन यह चीज उतनी मायने नहीं रखती थी। वो यह सोचने के लिए नहीं रुका कि जब वो शिखर पर पहुंच जाएगा तो क्या

करेगा। चट्टान से उतरने की समस्या से तब वो निपटेगा जब वो वहां पहुंच जाए। अभी तो, बस वो यह चाहता था कि इस अंधेरे से, इस गुफा से बाहर निकले और खुले में पहुंच जाए।

धीरे-धीरे ही सही, उसके ऊपर का मुहाना बड़ा होता जा रहा था। और ज्यादा चमकदार भी। उसने अपनी रफ्तार बढ़ा दी और अपनी कोशिशें दोगुनी कर दीं। वो अब करीब था। बेहद करीब।

मुहाने से आ रही रोशनी ने सीढ़ियों पर उजाला करना शुरू कर दिया था और वो हर सीढ़ी की धुंधली आकृति देख सकता था।

उम्मीद से वो सराबोर हो उठा। अब बस चालीस या पचास फीट और जाने की जरूरत थी। वो कामयाब होने जा रहा था।

उसने बची हुई सीढ़ियां तेजी से चढ़नी शुरू कर दीं।

तभी, अचानक जैसे सब कुछ अस्त—व्यस्त हो गया। उसके ऊपर दिख रही चोटी पर एक तेज धमाका और गरजदार आवाज हुई। सीढ़ियों पर अचानक चमकीली रोशनी पड़ी और पत्थर के टुकड़ों की बारिश होने लगी।

उसने अपने चेहरे को बचाने की कोशिश में अपने हाथ सिर पर रख लिए और गिरते हुए पत्थरों से बचने की कोशिश करता रहा जिनमें से कई तो फुटबॉल के आकार के थे। पत्थर नीचे गिरते गए, उसके हाथों, सीने और उसके पैरों से टकराते रहे, और सीढ़ियों से लुढ़कते हुए अंधेरे में गुम होते गए।

तभी साथ—साथ एक और धमाका हुआ, यह धमाका किसी विस्फोटक पदार्थ का लग रहा था। सीढ़ियों के रास्ते को अपने घेरे में ले रखी चट्टान की मीनार कांप उठी। विजय को चट्टान के हमलों ने पीछे धकेल दिया। पत्थर के कुछ बड़े टुकड़े उसे सीने और कूल्हे पर लगे, और खून बहने लगा। एक और पत्थर उसके पैर पर लगा और उसकी जांघ में असहनीय दर्द होने लगा।

उसे अपने सिर के ऊपर जेट हवाई जहाज की गर्जना और हेलीकॉप्टर के पंखों की आवाज सुनाई दी। उसका दाहिना पैर सीढ़ियों से फिसल गया। बांहें लहराते हुए उसने अपना संतुलन बनाए रखने की कोशिश की। एक पल के लिए, वो सीढ़ियों पर लड़खड़ा गया। उसने हताशा में अपनी बांहें तेजी से दीवार की तरफ घुमाईं ताकि वो सीढ़ियों पर टिका रहे।

तभी, वो नियंत्रण खो बैठा और फिर अंधेरे में लुढ़कता चला गया।

75

हताश और विफल

पैटरसन और इमरान अपने मॉनिटर पर उन दृश्यों को देख रहे थे। वो आतंक भरी नजरों से देख रहे थे कि कैसे पहले हेलीकॉप्टर को मार गिराया गया। जब दूसरा हेलीकॉप्टर बचने की कोशिश कर रहा था, उन्हें अगुस्ता हेलीकॉप्टर दिखना बंद हो गया। लेकिन कुछ ही सेकंडों में, उन्हें आसमान में एक मिसाइल दिखी जो पूर्व दिशा की तरफ जा रही थी, इसका इंफ्रारेड होमिंग डिवाइस अगुस्ता की तलाश में लगा था।

जब अगुस्ता से रॉकेट लॉन्चर निकलते हुए दिखे, कजाख एयर फोर्स ने फौरन अपने हेलीकॉप्टरों की मदद के लिए कुछ मिग29 रवाना कर दिए थे।

तभी, जैसे ही दूसरा कजाख हेलीकॉप्टर स्क्रीन पर आया, जो कजाख जेट की मदद आने और अगुस्ता को भागता हुआ देखकर उत्साहित हो गया था, उन्होंने देखा कि अगुस्ता पूर्व दिशा की तरफ भाग रहा है, उसके पीछे से लपटें निकल रही हैं।

पैटरसन के मुंह से गालियों की बौछार हो गई। 'बेवकूफ हैं साले! उन्हें मैंने कहा था कि एयरफोर्स की सुरक्षा में अपने सैनिक भेजें। वो लोग पूरी तैयारी के साथ गए हैं। उनके पास ईसीएम और मिसाइलों से बचने के लिए डिसपेंसेबल डिकॉय भी हैं।'

उन्होंने देखा कि मिसाइलें डिकॉय की तरफ बढ़ रही हैं। एक मिसाइल बीच के शिखर से जा टकराई, चट्टान को चूर—चूर कर दिया, उसके टुकड़े ढाल से नीचे गिरने लगे। जब यह बीत गया, तब शिखर पहले के मुकाबले कम से कम पचास फीट छोटा हो चुका था।

दूसरी मिसाइल चट्टानी संरचना में शिखर के आधार पर जा टकराई, जहां से यह ऊपर उठना शुरू हुआ था, और जो पठार की सतह के डेढ़ सौ फीट ऊपर था।

दोनों शख्स चुपचाप बैठकर सिर्फ देख भर सकते थे कि अगुस्ता भागने में कामयाब हो रहा है। विमानों की गर्जना थोड़ा भरोसा तो दिला रही थी लेकिन इस बात को कौन नकार सकता था कि दुश्मन भाग निकला है।

मौत के जबड़े

जैसे ही विजय सीढ़ियों के किनारे से गिरने लगा, उसने बेतहाशा दोनों हाथों से सीढ़ियों को

दबोचने की कोशिश की। एक हाथ किसी तरह अटका भर था कि वो अपनी पकड़ खो बैठा। लेकिन तब तक उसने एक और कोशिश करते हुए पत्थर की सीढ़ियों पर हाथ जमा लिया।

इस बार, एक हाथ से ही सही, उसकी पकड़ बेहतर थी और वो दूसरे हाथ को भी चट्टान पर जमाने के लिए आगे झपटा। लेकिन वो जानता था कि वो बहुत देर तक ऐसे नहीं रह पाएगा। उसकी अंगुलियों में जख्म हो गए थे और वो इस वजह से दुख रही थीं। उसके कूल्हे पर गहरा घाव हो गया था जहां एक बड़ा पत्थर उससे टकराया था और उसकी जांघ में काफी तेज दर्द हो रहा था।

उसने बस किसी तरह एक लाजमी घटना को कुछ पलों के लिए टाल दिया था।

और जैसे उसकी सोच सही होने जा रही थी, सीढ़ियां कांपने लगीं और उसे एक के बाद एक जोरदार धमाके सुनाई दिए।

विजय ने नीचे की तरफ अंधेरे में देखा। कुछ हो रहा था। थरथराहट और बढ़ गई और सीढ़ियों में दरारें आने लगीं।

अब वो जान गया था कि सांप गुफा से क्यों भाग रहे थे। वो सिर्फ अपनी छठी इंद्रिय की बात सुन रहे थे। हर जानवर में आपदा को महसूस करने की अद्भुत क्षमता होती है, जो मानवों में नहीं होती। और सांप उस चीज को जान गए थे, जो वो तब समझ नहीं पाया था।

शिखर टूट रहा था।

दो भाई

हेलीकॉप्टर पायलट ने चट्टान के ऊपर का एक चक्कर लगाया। उसे टास्क फोर्स के एक सदस्य को ढूंढ़ने का निर्देश मिला था, जो उस समूह का बंदी था जिसने उसके साथी को मार गिराया था। हालांकि यह संभव था कि उसे अभी भी उन दो हेलीकॉप्टरों में से एक में बंदी रखा गया हो, जो भाग निकले थे, उसने इलाके को छान लेने की सोची। शायद वो वहां हो। लेकिन वहां कुछ नहीं दिख रहा था, सिवाय आसमान में उठ रहे काले धुएं के, जो गिराए गए कजाख हेलीकॉप्टर और शिखर से टकराए मिसाइलों के मलबे से निकल रहा था।

कोशिश बेकार थी। या तो वो आदमी मर गया होगा। या चला गया होगा। कुछ भी हो, उसका मिशन तो नाकाम हो गया। और उसने दो साथी खो दिए थे। वो अच्छे आदमी थे।

ठंडी सांस लेकर, उसने हेलीकॉप्टर को पश्चिम दिशा में एयरफोर्स अड्डे की तरफ वापस घुमा लिया।

उसका साथी पायलट अचानक जोर से चीख उठा। वो उत्सुकतावश शिखर के मलबे में झांक रहा था और एक आदमी उसे दिखा जो चट्टान से चिपका हुआ था।

पायलट ने तुरंत हेलीकॉप्टर को ठीक शिखर के ऊपर स्थिर कर दिया और बाहरी हाइड्रॉलिक उत्तोलक प्रणाली को सक्रिय कर दिया, जो सामान या आदमी को ऊपर उठाने

के लिए इस्तेमाल होती थी।

क्या वो कर पाएगा?

जब शिखर की चट्टानी दीवारें और सीढ़ियां बिखर रही थीं, विजय को अपने सिर के ऊपर हेलीकॉप्टर के पंखों की आवाज सुनाई दी।

उसने ऊपर देखा और पाया कि एक उत्तोलक उसकी तरफ ही झूल रहा है।

सीढ़ियों को एक झटका सा लगा और वो बिखरना शुरू हो गईं।

उत्तोलक विजय की ओर थोड़ा और नीचे आया। उसने सख्ती से उसे पकड़ा।

बस कुछ इंच और।

करीब—करीब हो ही गया।

अब।

तभी एक कानफोड़ू आवाज के साथ शिखर की दीवारें ढह गईं और सीढ़ियां बिखर गईं, विजय उन चट्टानों को पकड़े हवा में लटक सा गया।

विजय को महसूस हुआ कि उत्तोलक ने उसके कंधे को छुआ है और उसने उसे दबोच लिया। उसके आसपास, शिखर अंतःविस्फोट से धूल के विशालकाय बादल में बदल गया था जिसने उसे अपने घेरे में ले लिया था। उसे तेज खांसी आ गई और आंखें जलनी लगीं, जब वो उत्तोलक पर अपनी पकड़ को बनाए रखने की कोशिश कर रहा था।

तभी, उसे ऊपर खींच लिया गया और मजबूत हाथों ने उसे हेलीकॉप्टर में बैठा लिया। केबिन का दरवाजा बंद हुआ और हेलीकॉप्टर विजय को सही—सलामत लेकर ऊपर उठने लगा।

76

खुफिया ब्यूरो मुख्यालय, नई दिल्ली

'ऐसा लगता है कि हमने दुश्मन को काफी कम करके आंका,' पैटरसन ने अपनी बात समाप्त की। टास्क फोर्स उस ऑपरेशन की समीक्षा कर रही थी जिसने उस्तुर्त पठार की घटनाओं को जन्म दिया और विजय मौत के मुंह से निकलकर बाहर आया।

विजय को कजाख एयरफोर्स अड्डे पर जरूरी मरहम—पट्टी के बाद अगले दिन भारत के लिए रवाना कर दिया गया था। वो खुशकिस्मत था कि वो बिना किसी टूटी हड्डी या गंभीर चोट के लौट आया था। उसने थोड़ी देर आराम किया था और फिर कोलिन और शुक्ला के साथ मीटिंग में शामिल होने के लिए दिल्ली चला आया था जो पैटरसन ने बुलाई थी। किले में, हालांकि, विजय और शुक्ला अपने—अपने कमरों में तब तक बंद रहे थे जब तक निकलने का समय नहीं हो गया। दोनों में से कोई भी एक—दूसरे से मिलने का इच्छुक नहीं था।

आईबी ऑफिस में, कॉन्फ्रेंस रूम में, उन्होंने सभी घटनाओं पर चर्चा की थी——ग्रीस में खुदाई से लेकर कजाखस्तान की घटनाओं और राधा को बचाने में नाकाम मिशन तक पर। अंतिम चर्चा के बाद थोड़ी देर तक वहां चुप्पी छाई रही। टीम ने अपना एक सदस्य खो दिया था। राधा ने साहस और दृढ़ निश्चय दिखाते हुए, अपने जीवन से ज्यादा टास्क फोर्स के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, अपनी जान गंवाई थी।

इमरान इस मीटिंग के लिए अस्पताल के बिस्तर को छोड़कर आया था। उसने जोर दिया था कि वो इसमें स्वयं शामिल होगा। अमेरिकी पक्ष से, रॉयसन और टास्क फोर्स का जेनेटिक्स एक्सपर्ट पर्सी गैलिपोस शामिल हुए थे।

पैटरसन मायूस लग रहा था। उन सभी लोगों के लिए पिछले चौबीस घंटे दुख भरे रहे थे। और, उनके सर्वश्रेष्ठ प्रयासों के बावजूद, दुश्मन उन्हें चकमा दे गया था।

'जिस तरह की गोलीबारी उन्होंने कजाखस्तान में की, उसकी हमें उम्मीद नहीं थी,' वो अभी भी बोल रहा था। 'और अफगानिस्तान में, जैसा विजय ने हमें बताया, वो लोग तालिबान को भी रोके रखने में कामयाब थे जब तक उनका मिशन पूरा नहीं हो गया। हम अभी भी नहीं जानते कि ऑर्डर क्या है या इसके सदस्य कौन हैं। इतिहास में उनका कोई जिक्र नहीं मिलता। किसी तरह, सैकड़ों सालों से उन्होंने अपनी पहचान छिपाए रखने में

कामयाबी हासिल की है। हमारे पास अब कुछ नाम तो हैं, लेकिन ज्यादा कुछ नहीं। हम बस इस बात को पक्के तौर पर कह सकते हैं कि वो ताकतवर हैं और उनके पास संसाधनों की कोई कमी नहीं है। कई देशों में सरकारी दफ्तरों में उनकी पहुंच है, जिनमें आपका और मेरा देश भी शामिल है।'

'और वो प्राचीन हैं,' विजय ने कहा। 'काफी प्राचीन। अगर वान क्लुएक सच कह रहा था, तो यह ऑर्डर ही था जिसने हजारों साल पहले गुफा का निर्माण किया था। और ऑर्डर की अमृत बनाने में भी कोई भूमिका थी।' तभी जैसे उसे कुछ याद आया। 'प्लीज एक्सक्यूज मी? मुझे एक फोन करना है। मुझे अभी—अभी कुछ याद आया है।'

पैटरसन ने इजाजत दी और विजय कमरे से बाहर निकल गया। वो कुछ मिनटों में वापस भी आ गया। उसके चेहरे पर चमक थी।

बाकी लोगों ने उसकी तरफ प्रश्नवाचक निगाहें डालीं। साफ था कि उसके पास बताने के लिए कुछ जरूर था।

'यह उस चीज से संबंधित था जो आपने कही थी,' विजय ने पैटरसन को संबोधित करके बोलना शुरू किया। 'आपने उन्हें दुश्मन कहा था। तभी मेरे दिमाग में एक घंटी बजी थी। पता है, इतिहास में एक जगह पर उनका जिक्र है।' उसने एक छोटी नोटबुक निकाली। 'मैंने अभी एलिस को फोन किया था और उसे एक डायरी पढ़ने को कहा था जो हमें पिछले साल दी गई थी। यह एक जर्मन ब्रूनो बेगर की थी। आप यह कहानी तो जानते ही हैं।'

सभी ने सहमति जताई। जो लोग इस अभियान में शामिल नहीं थे, उन्हें संक्षेप में बता दिया गया।

'उस डायरी में, एक जगह पर कुछ लिखा है, जो सम्राट अशोक के दरबारी सूरसेन के लिखे एक दस्तावेज का अनुवाद है। मैं उसका पहला अनुच्छेद पढ़ता हूं:

'मैं, सूरसेन, गुप्त पुस्तकालय के अंश के तौर पर मेरी एक खोज की बात बताना चाहता हूं, यह खोज नौ अज्ञात पुरुषों की है, उस गौरवशाली भ्रातृ-संघ की जिसका निर्माण हमारे प्रिय सम्राट महान अशोक, देवानामप्रिय प्रियदर्शी ने किया था। मैं यह नहीं कहूंगा कि वो खोज क्या है, क्योंकि सम्राट ने इसका कोई प्रमाण रखने से मना किया है, इसके शत्रु के हाथों में जाने का जोखिम है; क्योंकि यही वो वजह है जिसके लिए नौ लोगों का भ्रातृ-संघ स्थापित किया गया था।'

उसने नोटबुक बंद की और बाकी लोगों की तरफ देखा। 'मुझे पक्का भरोसा है कि ऑर्डर ही वह "शत्रु" है जिससे अशोक उस खोज को छिपाने की कोशिश कर रहा था। और वो दो हजार साल तक इसमें कामयाब रहा। अगर हमें जानना है कि ये लोग कौन हैं, हमें अपनी पौराणिक कथाओं की गहरी छानबीन करनी होगी। यह साफ है कि उनकी उत्पत्ति भारत में हुई थी और तब से अब तक वो एक वैश्विक संस्थान के तौर पर उभर चुके हैं।'

'अब जब तुमने सूरसेन की बात की है, मुझे उस फोन टैप की रिकॉर्डिंग याद आ रही है,

जो ब्लेक ने तब बजाई थी जब मैं उससे पहली बार मिला था। उस बातचीत में भी इस बात का जिक्र था मर्फी भारत में ऑर्डर के एक सदस्य के अधीन रहेगा,' इमरान ने याद किया। 'हम एक अदृश्य दानव से जूझ रहे हैं। दुनिया की कोई खुफिया एजेंसी ऑर्डर के वजूद के बारे में नहीं जानती हैं। फिर भी, उनके पास कैसे संसाधन और ताकत है, हमने देख लिया है।'

'और अब, वो निष्ठुर तरीके से हमारा पीछा करेंगे,' शुक्ला ने गंभीरता से कहा। 'वो जानते हैं कि हम कौन हैं। हम कहां रहते हैं। और हम क्या करते हैं। वो हमारे पीछे आएंगे। उन्होंने हमारे सामने खुद को जाहिर कर दिया है। और वो इस भूल को सुधारने की कोशिश करेंगे। हममें से कोई भी सुरक्षित नहीं है।'

'ये सच है,' पैटरसन ने स्वीकार किया। 'लेकिन वो टास्क फोर्स के बारे में नहीं जानते। यह मत भूलो कि हमारे पास भी संसाधन हैं। हम यह लड़ाई जरूर हारे हैं लेकिन युद्ध तो अभी शुरू हुआ है। इस बार, हम तैयार नहीं थे। अब जब हम उनके बारे में थोड़ा बहुत जानते हैं, हम बेहतर तरीके से खुद को तैयार कर सकते हैं।'

उसने विजय की तरफ देखा। 'और तुम कह रहे हो कि ऑर्डर का ये पूरा मिशन महाभारत के एक मिथक से प्रेरित था?'

विजय ने हामी भरी।

'हमें इस बारे में बताओ।'

विजय ने एक पल के लिए कुछ सोचा। वो कहां से शुरू करे? 'मैं महाभारत के उन श्लोकों को ठीक से नहीं जानता जो इस मिथक को बयान करते हैं,' उसने कहा, 'लेकिन वान क्लुएक ने मुझे कुछ श्लोक और उनके अनुवाद सुनाए थे। यह मिथक समुद्रमंथन कहलाता है।'

उसने शुक्ला की तरफ देखा। 'मुझे लगता है कि आप इस मिथक के बारे में सबसे अच्छे तरीके से बता सकते हैं।'

शुक्ला हिचकिचाए, फिर राजी हो गए। 'मुझे विश्वास है कि हमारी तरफ के सारे लोग इस मिथक के बारे में जानते हैं, लेकिन मैं अपने अमेरिकी दोस्तों के लिए इसका सार बता देता हूं। महाभारत के अनुसार, देवों और असुरों या दानवों ने एक साथ मिलकर अमृत के लिए दूध के महासागर का मंथन किया——अमृत जिसे पीकर कोई भी अमर हो जाता। उन्होंने वासुकी, एक सांप को मंथन की रस्सी की तरह और मंदार पर्वत को मंथन की छड़ी की तरह इस्तेमाल किया। अंत में, सालों के मंथन के बाद, दूध के महासागर से दूसरी चीजों के साथ अमृत भी निकला।'

गैलिपोस की भौंहें तन गईं। 'मैंने इस मिथक के बारे में सुना है,' उसने कहा। 'लेकिन इसका बैक्टीरिया और वायरस से क्या संबंध है?'

'वान क्लुएक से सुने अनुवाद के मुताबिक,' विजय ने जवाब दिया, 'श्लोक में जो बातें

लिखी हैं, वो पारंपरिक व्याख्या से बिलकुल अलग हैं। हजारों साल पहले, एक ऐसे पेय की खोज हुई जो पीने वाले को अमर कर दे। हिंदु कुश की गुफा में, एक विशालकाय भूमिगत झील है जिसमें वही बैक्टीरिया हैं जो हमें आर्यन लेबोरेट्रीज में मिले थे। बैक्टीरिया सिर्फ काफी नमकीन वातावरण में रह सकता है। झील दुनिया के सभी महासागरों से कहीं ज्यादा नमकीन है। और इसमें रहने वाले बैक्टीरिया इसे चांदी की तरह सफेद रंग देते हैं——पानी देखने में दूध की तरह लगता है। इसलिए मिथक में इसे दूध का महासागर बताया गया है।'

'आर्किया बैक्टीरिया की तरह जिन्हें फलने—फूलने के लिए नमक की जरूरत होती है,' रॉयसन बुदबुदाया। पैटरसन की भौंहें तनती देखकर उसने इसमें जल्दी से जोड़ा, 'मृत सागर में रेड ब्लूम्स।'

'तो, ये बैक्टीरिया अपनी प्राकृतिक अवस्था में वैसे विषैले पदार्थ उत्पन्न करते हैं जो इंसानों के लिए जानलेवा हैं,' विजय ने अपनी बात आगे बढ़ाई। 'लेकिन, ऐसा लगता है, सैकड़ों साल पहले उस वक्त, किसी ने रेट्रोवायरस का अस्तित्व ढूंढ़ निकाला जो बैक्टीरिया को संक्रमित करता है।'

'एक बैक्टीरियोफेज,' रॉयसन फिर से बोल पड़ा।

'बिलकुल। आपका धन्यवाद। मैं इस शब्द को भूल गया था। इस रेट्रोवायरस के बारे में दिलचस्प यह है कि एक बार जब यह इन बैक्टीरिया को संक्रमित कर देता है, यह उनका डीएनए बदल देता है और उन प्रोटीन्स में बदलाव ले आता है जो ये उत्पन्न करते हैं। विषैले पदार्थों की जगह वो प्रोटिंस ले लेते हैं जो इंसानों के लिए या तो फायदेमंद हैं या उनसे कोई नुकसान नहीं होता। लेकिन, चूंकि वायरस नमकीन पानी में नहीं रह सकते, और बैक्टीरिया नमकीन पानी के बाहर नहीं रह सकते, संक्रमण की प्रक्रिया कुछ औषधीय पौधों और थोड़ी मात्रा में रत्नों के साथ कराई जाती है। मैं नहीं जानता कैसे, लेकिन यह किसी तरह वायरस पर नमकीन पानी के असर को खत्म कर देती है। महाभारत में इसे ही मंथन के तौर पर वर्णित किया गया है। इसका तात्पर्य मथने से नहीं बल्कि सभी अवयवों को एक साथ मिलाने से हैं। एक बार जब संक्रमण की प्रक्रिया पूरी हो जाती है, अमृत सेवन के लिए तैयार हो जाता है।'

'तुमने कहा था कि ऑर्डर ने गुफा में से सांपों को सैंपल की तरह इकट्ठा किया था,' पैटरसन ने टिप्पणी की। 'मैं इसका यह मतलब निकाल रहा हूं कि उनका विश्वास था कि वायरस ने सांपों को संक्रमित किया है।'

विजय ने कंधे उचकाते हुए जवाब दिया। 'मुझे इस बारे में कुछ नहीं पता। उन्होंने मुझे कुछ नहीं बताया। लेकिन मुझे भी उस वक्त यही ख्याल आया था। हालांकि मैं इसे समझ नहीं पाया। सांपों के अंदर वो वायरस कैसे हो सकता है जो इंसानों को संक्रमित करे?'

'यह संभव हो सकता है,' किसी और के बोलने के पहले ही रॉयसन बोल पड़ा। 'यह ऐसा नहीं है जिसे हम तुरंत खारिज कर दें। कुछ सालों पहले, सैन फ्रांसिस्को में कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी ने एक वायरस ढूंढ़ा था जो अरेनावायरसेज के परिवार से संबंध रखता था। ये

स्तनधारियों को, आमतौर पर चूहे, गिलहरी जैसे जानवरों में संक्रमण फैलाते हैं। ऐसा कोई प्रमाण तो नहीं है कि यह वायरस सांपों से इंसानों में फैल सकता है, इस वायरस समूह का एक जीन उस वायरस परिवार से काफी मेल खाता है जिसमें इंसानों में संक्रमण फैलाने वाला इबोला वायरस भी है। यह खोज ऐसी थी जिस बारे में कोई सोच भी नहीं सकता था। कौन जानता है कि ऐसे वायरस भी हों जो सांपों और इंसानों को संक्रमित कर सकते हों? और यह हजारों सालों तक किसी वायरस को संरक्षित रखने का सबसे अच्छा तरीका है। एक जीवित पोषक में।'

'और वो पौधे कौन से थे जिनका वर्णन छंदों में है?' इमरान ने पूछा।

विजय ने जवाब दिया। 'वान क्लुएक ने मुझे बताया था, जब हम कजाखस्तान पहुंचे थे कि उसकी टीम ने छंद में वर्णित पौधों को ढूंढ़ लिया है। मुझे उनमें से कुछ के नाम याद थे और मैंने इस मीटिंग में आने के पहले किले में उनके बारे में जानकारी जुटाई थी।' उसने फिर से अपनी नोटबुक में देखते हुए कहा, 'बैंगनी फलों वाले पौधे का नाम है प्रांगोस पबुलरिया लिंडल। यह लैटिन नाम है। सच पूछो तो यह उज्बेकिस्तान के चुनिंदा प्रांतों में ही पाया जाता है और इतना स्थानीय है कि इसका कोई अंग्रेजी नाम नहीं है। गहरे जामुनी रंग के फल वाला पौधा प्रुनस सॉग्डियाना वैसिलेज कहलाता है। अंग्रेजी में इसे सॉग्डियन प्लम कहते हैं। इस पौधे की पुरानी शाखाएं गहरे धूसर रंग की होती हैं और नई शाखाएं भूरा लिए हुए हरे रंग की। फूल सफेद या जामुनी रंग के——इसलिए छंद में कहा गया 'ढका हो धूसर और सफेद से और हरे या भूरे से'। यह भी उज्बेकिस्तान और किर्गिजस्तान के चुनिंदा प्रांतों में मिलता है। और, जब मैंने इनके बारे में इंटरनेट पर ढूंढ़ा तो पता चला कि दोनों पौधे एक साथ उज्बेकिस्तान के सिर्फ दो प्रांतों में मिलते हैं: ताशकंद और सुर्खोनदारयो। और, यकीन करें या नहीं, सुर्खोनदारयो करीब—करीब उसी इलाके में है जहां सॉग्डियन पर्वत रहा होगा। यह पर्वत कभी भी ढूंढ़ा नहीं जा सका है। लेकिन सिकंदर दक्षिण दिशा की तरफ जाने के पहले इस इलाके से होकर गया था।'

'और इस पेय से अमरत्व मिलता है?' रॉयसन ने पूछा।

'मिथक के अनुसार, हां।'

'क्या तुम हमें अमृत के बारे में बता सकते हो?' रॉयसन ने पूछा। 'लेकिन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण से। मैं जानता हूं तुमने हमें बताया है कि खोज का मकसद असली बैक्टीरिया और रेट्रोवायरस का पता लगाना था, जिनका प्रोफेज हमें क्लीनिकल ट्रायल के मरीजों में मिला था। लेकिन मैं यह जानने को उत्सुक हूं कि जब पेय का सेवन किया जाता है तो वास्तव में होता क्या है? क्या उन्होंने तुम्हें यह जानकारी दी थी?'

विजय ने सिर हिलाया। 'मुझे सभी वैज्ञानिक शब्द याद नहीं हैं,' उसने स्वीकार किया। 'लेकिन मैं आपको वो बता सकता हूं जो मुझे याद है। दरअसल, रेट्रोवायरस मानव शरीर के लिए अनुकूल बन जाता है और इसे वो अपनी प्रतिकृतियां बनाने के लिए पोषक बना लेता है, इस काम के लिए वो इंसानी जीनोम में अपना डीएनए प्रवेश करा देता है। ऐसा करके, वो

कुछ ऐसे जींस को सक्रिय कर देता है जो उम्र बढ़ने और इससे जुड़ी बीमारियों को नियंत्रित करने वाले प्रोटीन बनाते हैं।'

'दिलचस्प,' गैलिपोस ने टिप्पणी की। 'क्या तुम्हें उन प्रोटीनों के जेनेटिक्स के बारे में कुछ भी याद है?'

विजय ने याद करने की कोशिश की। 'देखते हैं। वान क्लुएक ने कहा था कि उम्र बढ़ने की कई वजहें हैं। उदाहरण के लिए, टेलोमीयर्स का छोटा होना जो कोशिकाओं की मौत और ऊतकों के सिकुड़ने की वजह बनता है। उसने कहा था कि टेलोमीयर्स क्रोमोसोम्स के ऊपरी सिरे पर होते हैं।'

गैलिपोस को जैसे अपनी होशियारी दिखाने का मौका मिला और उसने कहा, 'क्रोमोसोम एक बड़ा और घुमावदार डीएनए मॉलेक्युल होता है। हर क्रोमोसोम के सिरे पर टेलोमीयर होता है जो जेनेटिक दृष्टिकोण से अर्थहीन होता है। यह बिलकुल वैसा ही होता है, जैसे जूते के फीते के अंत में धातु का सिरा लगा होता है जो उसे उधड़ने से बचाता है। हर बार जब एक क्रोमोसोम की प्रतिकृति बनती है, टेलोमीयर का एक छोटा हिस्सा छूटता जाता है। तो आप देख सकते हैं कि कैसे, जब बार—बार प्रतिकृति बनती जाती है, तो टेलोमीयर इतना छोटा हो जाता है कि आगे की प्रतिकृति बनने पर जरूरत वाले जींस बाहर निकलने लगेंगे। इसलिए उस वक्त कोशिकाओं का विभाजन रुक जाता है। दिलचस्प यह है कि जो कोशिकाएं विभाजित नहीं होतीं लेकिन जिंदा रहती हैं, वो उम्र बढ़ाने और कोशिकाओं की मौत के अलावा स्वस्थ कोशिकाओं पर नुकसानदेह असर भी डालती हुई दिखती हैं।'

'हां,' विजय उसकी बात से सहमत हुआ। 'तो, जो जींस सक्रिय होते हैं, उनमें से एक टेलोमरेज के उत्पादन को नियंत्रित करता है जिससे टेलोमीयर्स की मरम्मत में मदद मिलती है। इसलिए कोशिकाएं प्रतिकृति बनाती रहती हैं और कोशिकाओं की मौत नहीं होती, जिससे उम्र बढ़ने की प्रक्रिया उलट जाती है।'

गैलिपोस ने सिर हिलाते हुए कहा, 'दिलचस्प है यह। लेकिन टेलोमरेज का उत्पादन अनियंत्रित कोशिका विभाजन और प्रतिकृति बनाने की प्रक्रिया की वजह बन जाएगा—— जो ट्यूमर कहलाता है। या हम जिसे दूसरे नाम कैंसर से भी जानते हैं। तो यह मदद कैसे करता है?'

'यह काफी दिलचस्प हिस्सा है। होता क्या है कि वायरस एक ऐसे प्रोटीन के उत्पादन को भी प्रभावित करता है जो कोशिकाओं के आत्महत्या की वजह बनता है। यह प्रोटीन बूढ़ी होने वाली और नुकसान पहुंचाने वाली कोशिकाओं को निशाना बनाता है। यानी शरीर में किसी भी तरह की गैर—जरूरी वृद्धि को खत्म कर देता है।'

गैलिपोस के मुंह से सीटी निकल गई। 'यह सुनने में पी53 की तरह लग रहा है। ऐसा प्रोटीन जो कोशिका विभाजन को रोकता है और कोशिकाओं को संकेत देता है कि वो खुद को खत्म कर लें। यह उन कोशिकाओं को निशाना बनाता है जिनमें आनुवांशिक खराबी होती है, कैंसर की कोशिकाएं भी ऐसी ही होती हैं, और इन कोशिकाओं को आत्महत्या करने

को प्रेरित करता है। तो, वायरस बेलगाम कोशिकाओं पर काबू भी रखता है। बेहद दिलचस्प है यह।'

'उसने बताया था कि कुछ और दूसरे जींस होते हैं, जो वैसे प्रोटीन बनाते हैं जिससे दिल की बीमारियां, मधुमेह, उच्च रक्तचाप और यहां तक कि अल्जाइमर जैसे रोग नियंत्रित रहते हैं। ये जीन शरीर की मांसपेशियों के कामकाज को सुधारते हैं या ऊतकों की पुनरोत्पत्ति को बढ़ावा देते हैं। सभी रेट्रोवायरस के द्वारा सक्रिय कर दिए जाते हैं। लेकिन मुझे अब उन सभी का नाम याद नहीं है। हां, वान क्लुएक ने यह भी बताया था कि वो क्लीनिकल ट्रायल इसलिए कर रहे हैं ताकि वो समझ सकें कि वायरस आखिर काम किस तरह करता है। और इसलिए उन्हें असली वायरस की जरूरत थी। प्रोफेज ने उस तरीके से काम नहीं किया था। लेकिन वो अंतिम नतीजों को लेकर काफी उत्साहित था।'

'यह सुनने में चमत्कारी उपचार की तरह लग रहा है,' कोलिन ने अपनी राय रखी।

'यह है,' रॉयसन ने जोर देकर कहा। 'कोई आश्चर्य नहीं कि वो इसे अपने कब्जे में करना चाहते हैं... इस मिश्रण को।' उसने अपना सिर इस तरह हिलाया, जैसे उसे विश्वास नहीं हो रहा हो, जो वह सुन रहा था।

'आप लोग मुझे यह कहने के लिए माफ कीजिएगा,' कोलिन ने कहा। 'मैं जानता हूं कि इस कमरे में सम्मानित वैज्ञानिक हैं और मुझे इस बारे में अपनी आलोचना व्यक्त करने की विशेषज्ञता भी नहीं है। लेकिन फिर भी, मैं ईमानदारी से कहूं तो मुझे यह सब काफी दूर की कौड़ी लगती है। मेरा मतलब है कि ऐसा चमत्कारी वायरस जिसकी वजह से बुढ़ापे को रोकने वाले प्रोटीन का उत्पादन हो, और बैक्टीरिया की प्रकृति बदल जाए और कैंसर की कोशिकाओं को भी निशाना बनाए। यह विश्वास करना थोड़ा मुश्किल है। यह तो विज्ञान गल्प की तरह लग रहा है।'

'वास्तव में नहीं।' बचाव में यह तर्क एक असंभावित स्रोत की तरफ से आया। पैटरसन इसमें कूद गया था। 'मानव जीनोम और वायरसों के बारे में ऐसा काफी कुछ है जो हम अभी तक नहीं ढूंढ़ पाए हैं। हर दिन नई खोज हो रही हैं। उदाहरण के लिए, एडिनो—एसोसिएटेड वायरस टाइप 2 या एएवी2, जो इंसानों को संक्रमित तो करता है लेकिन बीमार नहीं करता। चूहों पर किए गए कई अध्ययनों में पाया गया है कि एएवी2 कैस्पेज नाम के प्रोटीन को सक्रिय कर देता है, जो स्तन कैंसर की 100 प्रतिशत कोशिकाओं को मार देता है। कैस्पेज किसी कोशिका की स्वाभाविक मौत के लिए जरूरी है। एएवी2 से संक्रमित कैंसर कोशिकाओं ने एक और प्रोटीन केआई—67 का भी ज्यादा उत्पादन किया, जो रोग प्रतिरोधक प्रणाली को सक्रिय करता है, साथ ही उस प्रोटीन सी—माइक का ज्यादा उत्पादन किया जो कोशिकाओं की वृद्धि में उनकी स्वाभाविक मौत की प्रक्रिया में मदद करता है।'

'यही नहीं,' रॉयसन ने इसमें जोड़ा, '8 प्रतिशत मानव जीनोम में वायरस के जींस और उनके अवशेष होते हैं। लाखों साल पहले रेट्रोवायरस से संक्रमित हुए उन प्राथमिक मनुष्यों से जो विकसित होते चले गए। और हम उन वायरसों को भी जानते हैं जो उन डीएनए को

सक्रिय कर देते हैं जो सामान्यतया इंसानों में सुप्त होते हैं——मिसाल के लिए एचआईवी वायरस। यह बहुत हद तक मुमकिन है कि रेट्रोवायरस डीएनए से जुड़ने वाले ऐसे प्रोटीन पैदा करते हों जो जींस को सक्रिय कर देते हों और हमें उनके बारे में कुछ पता ही ना हो। इंसानी जीनोम अभी भी एक बड़ा रहस्य है। इसका खाका खींच लिया गया है लेकिन हम अभी भी यह पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं कि इसका बड़ा हिस्सा करता क्या है। लंबे समय तक, जीनोम का एक काफी बड़ा हिस्सा——नब्बे प्रतिशत से ज्यादा——"जंक डीएनए" कहलाता था, क्योंकि यह प्रोटीन के लिए कूटबद्ध नहीं था। आज इस लेबल को हटाया जा रहा है क्योंकि नई खोज सामने आ रही है।'

गैलिपोस ने अब इस कहानी को आगे बढ़ाया। 'यह सही है। एनकोड प्रोजेक्ट से पता चला है कि करीब 70 प्रतिशत डीएनए की नकल आरएनए में होती है, जबकि पहले इससे काफी कम समझा जाता था। यह पूरी तरह मुमकिन है कि करोड़ों जींस वहां हों। बस हम नहीं जानते। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में हुए ताजा अध्ययन ने दिखाया है कि एक जेनेटिक क्लास——लिंकआरएनए——के लिए 83 प्रतिशत से ज्यादा में जगह बदलने वाले तत्व हो सकते हैं। ये "कूदने वाले जींस" कहलाते हैं क्योंकि वो जीनोम के भीतर ही इधर—उधर कूद सकते हैं। और इन "कूदने वाले जींस" में से कई वास्तव में प्राचीन रेट्रोवायरस के वंशज हैं जो पीढ़ी दर पीढ़ी बाकी जींस के साथ चले आ रहे हैं। यह माना जाता है कि कई रेट्रोवायरस के ये अवशेष जींस को सक्रिय या निष्क्रिय बनाने का काम कर रहे हो सकते हैं। इसलिए यह सोचना कि एक रेट्रोवायरस इंसानी शरीर में घुसकर नए जींस को सक्रिय कर सकता है और जिसे हम नहीं जानते, बिलकुल भी अतिशयोक्ति नहीं है।'

'तो फिर सिकंदर अमृत पीने के बाद भी मर क्यों गया?' कोलिन अपनी बात पर अड़ा था। 'अगर उसे यह चमत्कारी उपचार मिल गया था और उसने इसका सेवन कर लिया था, उसे तो अमर हो जाना चाहिए था।' वो कांप उठा। ' हालांकि, मैं भगवान का शुक्रगुजार हूं कि वो अमर नहीं हुआ।'

'मैं बताता हूं क्यों,' विजय ने जवाब दिया। 'कैलिस्थनीज की वजह से।'

'क्या?' गैलिपोस उलझन में दिख रहा था।

कोलिन खिलखिला उठा। 'यूनानी इतिहासकार जिसे सिकंदर ने मौत की सजा दी थी।' उसने विजय की तरफ देखा। 'तो कैलिस्थनीज ने क्या किया था?'

विजय ने अपना सिर हिलाया। 'ऐसा नहीं कि उसने कुछ किया था। ऐसा इसलिए हुआ कि वो कुछ कर नहीं पाया था। जब हम तीन भाई पहुंचे, सांप की मुहर टूटी नहीं थी। जब से कमरे को बंद किया गया था, तब से उसे छुआ तक नहीं गया था। कैलिस्थनीज कमरे में कभी गया ही नहीं। और वो दरवाजे के पार जा भी नहीं पाता, अगर वो चट्टान पर चढ़कर मुहर तोड़ भी लेता। उसे जरूरी पौधे और फल तो मिल गए थे। लेकिन उसे वायरस नहीं मिला था।'

कोलिन के मुंह से सीटी की आवाज निकली। 'तो उसने सिकंदर के मरने देने की योजना

बनाई थी? मेरा मतलब यह है कि छंद में तो साफ—साफ लिखा है। अगर तुम निर्देशों को नहीं मानोगे, तुम्हें कुछ मिलने की संभावना नहीं है। और अब जब हम वायरस के बारे में जो जानते हैं, उसे देखते हुए इसमें आश्चर्य की कोई बात भी नहीं है।'

'नहीं, ऐसा नहीं है,' विजय ने जवाब दिया। 'मुझे नहीं लगता कि कैलिस्थनीज ने कोई योजना बनाई थी। मेरा मानना है उसे सिर्फ यह महसूस हुआ कि कोई तरीका नहीं है जिससे वो चट्टान पर चढ़कर मुहर तोड़ सके। उसने शायद सोचा था कि मुहर के पीछे जो भी हो, वो इतना जरूरी नहीं है। और वो सिकंदर को इस बारे में नहीं बताना चाहता था। और इसमें आश्चर्य इसलिए भी नहीं है कि तब तक सिकंदर बहुत ही असहनशील हो गया था।'

थोड़ी देर के लिए वहां चुप्पी छा गई जब सभी लोग इसे समझने में लगे थे। महाभारत के एक मिथक की वजह से एक विजेता की जान गई। अगर सिकंदर अपने तैंतीसवें जन्मदिन के पहले ही नहीं मरता तो दुनिया आज काफी अलग होती।

'टाइटन का क्या हाल है?' विजय ने पूछा। जब इमरान ने पाया कि आठ गुप्त मंजिलों में क्लीनिकल ट्रायल के मरीज अभी भी बंद हैं, उसने तुरंत उन्हें जयपुर भेजने का इंतजाम कराया था। जयपुर से ही, उसने पैटरसन को फोन किया था और इस बारे में जानकारी दी थी।

'हमने वॉलेस से बात की थी,' पैटरसन ने थके हुए अंदाज में जवाब दिया। 'वो मेडिकल फेसिलिटी के बारे में सुनकर सकते में था। लेकिन उसने इस बात पर ध्यान दिलाया, जिसमें वो सही भी था कि वो भवन टाइटन का नहीं था। ना ही जयपुर की फेसिलिटी किसी तरह से टाइटन से जुड़ी थी। किदवई उसके मालिकों की तलाश में लगा था।'

'वो भागे हुए हैं,' इमरान ने जानकारी दी। 'हमने रेड अलर्ट जारी कर रखा है लेकिन उन लोगों ने खुद को काफी अच्छी तरह छिपा रखा है। यह एक सुनियोजित ऑपरेशन था। उन लोगों ने इस तरह की इमरजेंसी की व्यवस्था कर रखी थी कि कहीं वो ढूंढ़ ना लिए जाएं।'

'क्या आपको वॉलेस पर यकीन है?' कोलिन ने पूछा। 'उसका नाम अजीब—अजीब जगहों पर दिख रहा है। कुछ ज्यादा ही संयोग है यह, जिसे पचा पाना बेहद मुश्किल है। आप लोग इसे देखें। उसने ओलिंपियास के मकबरे की खुदाई के लिए पैसे दिए। उसके ट्रस्ट ने स्तावरोस और पीटर को भर्ती किया, जो हत्यारे निकले। वो टाइटन फार्मास्युटिकल्स का चेयरमैन है। और हमें पता चला कि उसकी कंपनी से संबंधित एक मेडिकल सेंटर पर संदेहास्पद प्रयोग किए जा रहे हैं। भले ही वो सेंटर उनके ठेके पर था, कोई ना कोई संबंध तो जरूर था!'

कुछ देर के लिए फिर चुप्पी थी। तब पैटरसन बोला। 'तुमने जो कहा मुझे उससे कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन हमारे पास कोई सबूत नहीं है। वॉलेस टाइटन का नॉन—एक्जीक्यूटिव चेयरमैन है। इसका मतलब है कि वो कंपनी के रोजमर्रा के फैसले नहीं लेता है। भले ही उन फैसलों में ठेके पर क्लीनिकल ट्रायल कराने का फैसला भी शामिल हो। इस बात की भी संभावना है कि वो जानता ही नहीं हो कि दिल्ली सेंटर ऑर्डर के लिए काम कर

रहा था। और जयपुर सेंटर का तो टाइटन के साथ कोई संबंध था ही नहीं। इतनी वजहें काफी हैं वॉलेस के यह ध्यान दिलाने के लिए कि दोनों सेंटरों का आपस में संबंध हो सकता है और इसका टाइटन से कोई लेना—देना नहीं है।'

'और खुदाई के बारे में क्या?' कोलिन ने पूछा, वो हार मानने को तैयार नहीं था। उसे राधा से बड़ा स्नेह था और वो चाहता था कि किसी को राधा की मौत का जिम्मेदार ठहराया जाए।

पैटरसन ने अपना सिर हिलाया। 'यहां भी कोई सबूत नहीं हैं। वॉलेस का ट्रस्ट सेमूर पार्कर नाम का शख्स चलाता है। पार्कर ही सभी नियुक्तियां करता है। वॉलेस नहीं। उसने कभी स्तावरोस या कूपर के बारे में सुना ही नहीं था। हमने पार्कर के बारे में पता लगाया, उसकी पृष्ठभूमि बिलकुल साफ है। कूपर के दस्तावेज फर्जी थे। बहुत बड़ा फर्जीवाड़ा था। सीआईए की गुणवत्ता के करीब। ये लोग पेशेवर हैं। अगर मैं भी तुम्हारे साथ जाता और पार्कर पर संदेह करता, तो भी ऐसा कोई सबूत नहीं मिलता जिसके आधार पर मैं कह सकता कि उन्होंने जो किया जानबूझकर किया। उनके खिलाफ कोई सबूत नहीं हैं।'

'लेकिन आप उन पर नजर तो रखने जा रहे हैं ना?' कोलिन अभी भी हार नहीं मान रहा था।

'हमें इस बारे में सतर्कता बरतनी होगी,' पैटरसन ने जवाब दिया। 'टास्क फोर्स की तरह अभी हमारा भरोसा इतना पुख्ता नहीं हुआ है कि हम अपने मामले को ऊपर ले जा सकें। पहली बार जब हमने कार्रवाई की, हम नाकाम हो गए। जी हां, हम नाकाम हुए हैं। जो हुआ, इसे बताने का और कोई तरीका नहीं है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि क्या वजहें थीं या क्या बहाने थे, नतीजे पर तो कोई विवाद नहीं है। अगर हम किसी पर आरोप लगाएं तो कौन हम पर विश्वास करेगा? कौन उन लोगों की जासूसी के लिए तैयार होगा जिन पर हम निगरानी रखना चाहते हैं?'

'हम हाथ पर हाथ रखकर उन्हें भागने नहीं दे सकते,' कोलिन ने अपना विरोध दर्ज कराया।

'तुम्हारे जज्बात बोल रहे हैं या तुम्हारे पास कोई तथ्य भी हैं?' पैटरसन ने पलटकर पूछा। 'मैं भी वैसा ही सोचता हूं जैसा तुम। टास्क फोर्स के सदस्य मेरे लिए सबसे महत्वपूर्ण हैं। बाकी सब जाएं भाड़ में। लेकिन मैं जज्बात में बह नहीं सकता। और तथ्य यही बताते हैं कि अभी हम किसी पर आरोप नहीं लगा सकते। अगर हम सबूत जुटाते हैं तो मैं पहला आदमी हूं जो उनके खून का प्यासा होऊंगा। लेकिन अभी नहीं।'

फिर से चुप्पी छा गई। कोलिन इस मुंहतोड़ जवाब के बाद पीछे हट गया और पैटरसन की बात की वास्तविकता को स्वीकार कर लिया। यह कड़वी थी लेकिन वो सही कह रहा था। उसने अभी—अभी जो कहा था उसके खिलाफ कोई तर्क नहीं था।

'सक्सेना का क्या हुआ?' विजय ने जानना चाहा।

'कोई सबूत नहीं,' पैटरसन ने जवाब दिया। 'हम सक्सेना को उस सेंटर से नहीं जोड़ सकते। कोई गवाह नहीं है यह साबित करने के लिए कि वो वहां था भी।'

'आपका मतलब है कि वो खुलेआम घूमेगा?' विजय को भरोसा नहीं हो रहा था। 'इमरान पर जानलेवा हमले और उनके राधा को मारने के बावजूद?' जब उसने राधा का नाम लिया उसका गला भर आया। 'क्या यह साफ नहीं दिख रहा कि वो इसमें शामिल है?'

'हम उसे गिरफ्तार नहीं कर सकते,' इमरान ने नरमी से जवाब दिया। 'तुम और मैं उस पर संदेह करते हैं। लेकिन बिना सबूतों के, हम कुछ नहीं कर सकते। हम उस पर बाज की तरह नजर रखने जा रहे हैं। वो आज नहीं तो कल गलती जरूर करेगा। और तब हम उसे दबोच लेंगे।'

'हमें नियम—कायदों से चलना पड़ेगा,' पैटरसन ने समझाया।

'हम जो भी करें, हम जिस पर भी आरोप लगाएं, हमें उसे अदालत में साबित करना होगा।'

विजय चुप हो गया। उसकी कड़वाहट उसके चेहरे पर दिख रही थी।

'ठीक है, फिर। मुझे लगता है कि मेरे पास अमेरिकी और भारतीय सरकारों को रिपोर्ट देने के लिए सारी जानकारी आ गई है,' पैटरसन ने मीटिंग खत्म करने का संकेत दिया। 'टास्क फोर्स के लिए यह अच्छी शुरुआत नहीं थी। हमारा दुश्मन भाग गया। और उनके पास वायरस है। हमें काफी कुछ करना है। उन्हें वायरस को अलग करने, तरतीब से बिठाने और फिर जो घोल वो विकसित कर रहे हैं, उसे बनाने में ज्यादा समय नहीं लगेगा। हमें उन्हें रोकना है। लेकिन हमारे पास आगे बढ़ने के लिए ज्यादा कुछ नहीं है। हमलोग काम पर जुटें और देखें कि हम क्या निकाल पाते हैं। कोई ना कोई निशानी तो जरूर होगी। इतिहास ने ऑर्डर पर गौर भले ना किया हो, लेकिन उसे पूरी तरह नजरअंदाज तो नहीं किया होगा।'

बाकी सभी ने उसकी बात का समर्थन किया। अभी कोई आराम नहीं है। उन्हें ऑर्डर को ढूंढ़ना था। और उसे रोकना था। इससे पहले कि देर हो जाए।

पैटरसन ने संकेत दिया और सभी बाहर निकलने के लिए खड़े हो गए। उसने विजय की ओर इशारा करते हुए कहा। 'रुको।'

विजय को छोड़कर बाकी सभी कमरे से बाहर निकल गए। पैटरसन भी उस तरफ अकेला था। उसने पहले नीचे देखा और फिर विजय की तरफ।

'मैं इस बात को जानने का ढोंग नहीं कर सकता कि तुम कैसा महसूस कर रहे हो,' उसने कहा। 'लेकिन मैं तुमसे वादा करता हूं, मैं तुम्हारी भावना समझ सकता हूं। मैंने लड़ाई के मैदान में दोस्त खोए हैं। उन लड़कों को, जिनके साथ मैं बड़ा हुआ, घूमा—फिरा, बीयर पी...।' उसने अपना सिर हिलाते हुए कहा, 'जो एक चीज मैंने युद्ध से सीखी है, वो यही है। आशा मत करो। युद्ध आशा नहीं लेकर आता। यह आशा को दूर ले जाता है। यह शांति है जो आशा लाती है। और इसी के लिए हमें काम करना चाहिए। मुझे राधा के लिए दुख है। मैं

सच में दुखी हूं। लेकिन तुम्हें आगे बढ़ना होगा। मेरा अनुमान है कि तुम उसकी मौत का बदला लेने की सोच रहे होगे। यह स्वाभाविक है। लेकिन मैं चाहता हूं कि तुम इस सोच को दबा दो। हमें ऑर्डर को हराने के लिए काम करना है। अगर हम नहीं करेंगे तो अराजकता फैल जाएगी। यह युद्ध है, बेटे। यह राधा के लिए नहीं है। यह दुनिया के भविष्य के लिए है। इसलिए इस बारे में सोचो।'

विजय थोड़ी देर के लिए चुपचाप खड़ा रहा। 'मैं समझता हूं।' वो पैटरसन की आंखों में आंखें डालकर बोला। 'सक्सेना, वान क्लुएक और बाकी सभी; वो इसलिए खुलेआम नहीं घूम सकते कि हमारे पास सबूत नहीं हैं। अगर हम सबूत इकट्ठा नहीं कर सकते तो हमें ज्यादा कुछ करना होगा। और मैं ऑर्डर को हराने के लिए काम करूंगा। सिर्फ यह महसूस करने के लिए नहीं कि मैंने बदला ले लिया है। उन्हें इसलिए भी रोकना होगा ताकि वो दूसरों के करीबियों को ना छीनें। जैसे वो मरीज जो क्लीनिक ट्रायल से गुजर रहे थे। हम ऑर्डर को रोकेंगे। ईश्वर ही जानता है कि हम यह कैसे करेंगे। लेकिन मैं जानता हूं कि हम रास्ता ढूंढ़ लेंगे। हर कीमत पर।'

पैटरसन ने हामी भरी। हर कीमत पर।

कितनी जिंदगी पहले ही दांव पर लग चुकी हैं? और ना जाने इसके खत्म होने तक कितनी और दांव पर लगेंगी?

प्रतिशोध की सोच

जब विजय कॉन्फ्रेंस रूम से बाहर निकला तो वो यह देखकर चौंक गया कि शुक्ला उसके रास्ते में खड़े थे। उनकी आंखें चमक रही थीं और उनके चेहरे पर दृढ़ निश्चय था जिसे नजरअंदाज कर पाना मुश्किल था। विजय शुक्ला के सामने चुपचाप खड़ा रहा। वो जानता था कि शुक्ला उससे अकेले में बात करना चाहते हैं। बाकी सभी जा चुके थे। सिर्फ वो दोनों वहां थे।

शुक्ला बात शुरू करने के पहले थोड़ी देर रुके, जैसे वो अपनी भावनाओं को काबू में रखने की कोशिश कर रहे हों।

आखिरकार वो बोल पड़े। 'मैंने अपनी बेटी का शरीर नहीं देखा है,' वो हर शब्द पर जोर दे रहे थे। 'तुम जानते हो कि एक पिता के लिए बेटी कितनी कीमती होती है?' विजय देख सकता था कि वो अपने आंसुओं को रोकने की कोशिश कर रहे हैं और उसे अपने अंदर ऐसी ही भावना महसूस हुई।

'एक बेटी अपने पिता की जिंदगी होती है। वो दर्द महसूस करता है जब बेटी को दर्द होता है। वो रोता है जब बेटी रोती है। वो उसे हर तरह की खुशी देना चाहता है, जो बेटी चाहती है, भले ही वो उसकी पहुंच से बाहर हो।' वो रुके, साफतौर पर दोबारा खुद को संभाल रहे थे। 'मैं बस उसके लिए जी रहा था। और अब... अब, वो जा चुकी है!'

शुक्ला अब अपने ऊपर संयम नहीं रख सके और आंसू उनके गालों पर बहने लगे। वो अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखने में नाकाम थे। विजय वहां खड़ा रहा, उसकी अपनी भावनाएं उसके मन में बवंडर मचा रही थीं। शुक्ला के शब्दों ने उसे फिर से याद दिला दिया कि उसने क्या खोया है। एक निःस्वार्थ इंसान जिसने उसे प्यार किया, सारी कमियों के साथ, जैसा भी वो है।

उसने शुक्ला की बांहें पकड़ी और उनकी आंखों में झांका। 'मैं उसे वापस लाऊंगा,' उसने शुक्ला को भरोसा दिलाया। 'मैं उसकी मदद के लिए कुछ नहीं कर सका। मैं उसे बचा नहीं सका।' वो जानता था कि उसके मुंह से निकल रहे शब्दों के पीछे उसकी भावनाएं हैं लेकिन वो खुद को काबू में नहीं रखना चाहता था। 'मैं आपसे वादा करता हूं कि आप उसे दोबारा देखेंगे। मैं उसे वापस लाऊंगा। मैं नहीं जानता कैसे, लेकिन मैं उनका पीछा करूंगा और राधा का शरीर ढूंढ़ निकालूंगा। और मैं यह पक्का करूंगा कि उन्हें उनके किए की कीमत चुकानी पड़े।'

विजय जानता था कि वो जो कह रहा है, वह पैटरसन से कुछ समय पहले ही कही हुई बातों का ठीक उलटा है। लेकिन उसे परवाह नहीं थी। वो परवाह करना भी नहीं चाहता था। वो एक नायक नहीं है। वो यहां दुनिया को बचाने के लिए नहीं आया है। यह कहने में बड़ा अच्छा और नेक लगता है कि यह पक्का किया जाएगा कि दूसरे लोग अपने करीबियों को ना खोएं। लेकिन उसका खुद का क्या? राधा का क्या? उसकी वापसी के तो सारे रास्ते बंद थे।

उसने शुक्ला को गले लगा लिया जो अब फूट—फूटकर रो रहे थे।

दोनों कॉन्फ्रेंस रूम के हल्के अंधेरे कमरे में खड़े थे, एक—दूसरे का दुख बांट रहे थे। उस पल, दोनों की सोच और जज्बात एक हो गए थे।

उपसंहार

परेशान करने वाली कॉल

विजय किले के स्टडी रूम में बैठा व्हिस्की पी रहा था। वो अकेला था। कोलिन उसी रात अमेरिका चला गया था। वो टास्क फोर्स की मीटिंग से निकलकर सीधा एयरपोर्ट चला गया था। एलिस भी उसके साथ गई थी। उन दोनों ने एक ही फ्लाइट में टिकटें बुक की थीं। पैटरसन ने इस बात की व्यवस्था की थी एलिस को अमेरिका में सुरक्षा मिले। उसने खुलासा नहीं किया था कि व्यवस्था क्या थी और ना किसी ने पूछा था। यही तरीका सबको बेहतर लगा था।

अपने जीवन में पहली बार, विजय सच में अकेला महसूस कर रहा था। जब उसके माता—पिता की मौत हुई थी, उसके चाचा उसके साथ थे। जब उसके चाचा की हत्या हुई थी, उसके साथ कोलिन था। और, बाद में, राधा।

अभी, कोई नहीं था। यह सच है, वो सोच रहा था कि हर कोई दुनिया में अकेला आता है और अकेला ही जाता है। किसी वजह से, उसकी सोच दुखद और निराशाजनक थी। वो मौत के बारे में सोचने से खुद को रोक नहीं पा रहा था। उसे यह चौंका भी नहीं रहा था, क्योंकि कितनी बार मौत ने उसके करीबियों को उससे छीना है।

उसने मेज पर अपना गिलास रखा। और कुछ नहीं, तो वो खुद को इतना व्यस्त कर लेगा कि उसकी सोच उस पर हावी नहीं हो सकेगी। बेहतर होगा कि वो पांचवीं मंजिल के कमरे में रखे गत्ते के डिब्बों को देख ले, जब तक कि वो थक ना जाए। इसके बाद वो सो जाएगा।

फोन के बजने से उसकी सोच टूट गई। उसकी त्योरियां तन गईं। इस वक्त कौन हो सकता है? उसने अपनी घड़ी देखी। रात के ग्यारह बजे थे। किसी यार—दोस्त के फोन के लिए तो थोड़ी देर हो चुकी थी।

यह एक अपरिचित नंबर था। उसने बात करने का फैसला किया। 'हां?'

'विजय सिंह?'

उसकी भौंहें फिर तन गईं। फोन करने वाले ने गलत नंबर तो नहीं लगाया था। लेकिन आवाज पहचान में नहीं आ रही थी।

'बोल रहा हूं।'

'तुम मुझे नहीं जानते।' आवाज में हिचकिचाहट थी। थोड़ी कांप रही थी। जैसे बोलने वाला निश्चय नहीं कर पा रहा हो कि उसे विजय को फोन करना चाहिए था या नहीं। वो संभलकर बोल रहा था। सतर्क।

'कौन बोल रहा है?'

‘मैं प्रताप सिंह का दोस्त हूं,’ जवाब आया। ‘बेहद करीबी दोस्त।’

विजय उठकर बैठ गया। प्रताप सिंह उसके पिता का नाम था। ‘आपका नाम क्या है?’

‘मैं... क्या हम मिल सकते हैं?’

‘मुझे जानना है कि आप कौन हैं।’

‘हमें मिलने की जरूरत है।’ बोलने वाला अब जोर दे रहा था। हिचकिचाहट जा चुकी थी। ‘मुझे तुम्हें कुछ बताना है। तुम्हारे पिता मरने के पहले मुझे कुछ दे गए थे।’ बोलने वाले ने फिर खुद को सही किया। ‘कार हादसे के पहले।’

‘क्या था वह?’

‘मैं फोन पर नहीं बता सकता। हमें मिलना होगा।’

‘और आपने मुझसे संपर्क करने के लिए पंद्रह साल इंतजार क्यों किया?’

‘मुझे जरूरत नहीं पड़ी। अब, मुझे जरूरत है।’

विजय ने इस बारे में सोचा। आखिर ऐसी क्या जरूरत हो सकती है, जिसने इस रहस्यमय आदमी को पंद्रह साल बाद फोन करने पर विवश कर दिया?

‘मैं कैसे मान लूं कि आप चालबाज नहीं हैं? मेरे पिता को जानने की झूठी कहानी गढ़ रहे हैं?’

‘अपना ईमेल चेक करो।’

‘रुकिए।’ विजय ने लैपटॉप अपनी तरफ खींचा और उसे स्विच ऑन किया। उसने तुरंत अपना ईमेल चेक किया। वास्तव में एक ईमेल था जो कुछ मिनटों पहले ही आया था। एक ऐसे ईमेल एड्रेस से जिससे वो अनजान था। उसने ईमेल पर क्लिक किया।

और वो जम सा गया। उसे विश्वास नहीं हो रहा था जो वो स्क्रीन पर देख रहा था। इसका मतलब तो निकल रहा था। उसके पिता के दस्तावेजों की फाइल। अखबार की कतरनें और लेख। पुरातात्विक खुदाई पर रिसर्च। वो चौंक गया था। लेकिन उसे ज्यादा जानना था।

‘क्या तुम फोन पर हो?’ फोन करने वाले ने थोड़े चिंतित स्वर में पूछा।

विजय अपने ख्यालों से बाहर आया। ‘मैं हूं यहां,’ उसने जवाब दिया। ‘हम कब मिल सकते हैं?’

‘अभी से छह महीने बाद। स्टारबक्स। साइबर हब, गुड़गांव। मैं तुम्हें दो दिन पहले फोन करूंगा और समय बताऊंगा।’

‘इतना लंबा इंतजार क्यों अगर यह जरूरी है?’ विजय को समझ नहीं आया।

‘मुझे तैयारी करने के लिए समय चाहिए,’ यह था छोटा सा जवाब।

फोन कट गया। विजय ने अपना फोन नीचे रखा और सोचने लगा। उसका दिमाग घूम रहा था। कौन था यह रहस्यमय आदमी? साफतौर पर वो जल्दी मिलना चाहता था। फिर

छह महीने तक इंतजार क्यों? उसके स्पष्टीकरण का कोई मतलब नहीं निकल रहा था। उसे क्या तैयारी करनी होगी? और जब वो लोग मिलेंगे तो वो विजय के सामने क्या खुलासा करेगा? कई प्रश्न थे जो अनुत्तरित थे।

आज से छह महीने बाद यह पहली सुलझेगी।

उसे इंतजार करना पड़ेगा।

जारी है...

लेखक की टिप्पणी

प्रिय पाठक,

किताब में आपकी रुचि के लिए धन्यवाद।

यह किताब श्रृंखला की पहली कड़ी है। मेरे पिछले उपन्यास, द महाभारत सीक्रेट की तरह इसकी कहानी यहां खत्म नहीं होती बल्कि आगे भी जारी रहेगी।

अब जब आपने इसे पढ़ लिया है, मुझे यकीन है कि कई प्रश्न होंगे जो आपके लिए अनुत्तरित होंगे और आपके दिमाग में उनके जवाब उमड़ रहे होंगे। इस किताब को पढ़ते वक्त कई ऐसे तथ्य या परिस्थितियां या ऐसे पात्र भी हो सकते हैं, जो आपको पूरी तरह समझ नहीं आए होंगे। यह जानबूझकर किया गया है क्योंकि कहानी इस किताब के खत्म होने के बाद भी जारी रहती है। आप भरोसा रखें कि आपके प्रश्नों का उत्तर मिलेगा और जैसे—जैसे श्रृंखला आगे बढ़ेगी, आपकी उलझनें और संदेह दूर होते जाएंगे।

मैं उम्मीद करता हूं कि असमंजस और संदेह आपको बांधकर रखेंगे और जब कहानी खत्म होगी, आपको आपके जवाब मिल जाएंगे। इसलिए, मेरी गुजारिश है कि आप धीरज बनाए रखें और अपने प्रश्नों के उत्तर के लिए अगली कुछ किताबों की प्रतीक्षा करें।

मैं आपसे वादा करता हूं कि आपकी प्रतीक्षा व्यर्थ नहीं जाएगी।

इस बीच, इसी किताब में कई ऐसे तथ्य हैं जिन पर थोड़े और स्पष्टीकरण की जरूरत है और मैं मानता हूं कि पाठक को समझाने की जिम्मेदारी मेरी है। इसलिए उन तथ्यों को अब मैं समझाने जा रहा हूं।

विज्ञान के पन्नों से

इस किताब के लिए काफी वैज्ञानिक शोध की जरूरत पड़ी है और, वैसे मैंने कोशिश की है कि जहां तक हो सके उसे आसान बनाया जाए, लेकिन मैं जानता हूं कि अच्छे—खासे कठिन शब्दों और तकनीकी विवरण से मैं बच नहीं पाया हूं, जिन्हें देना अनिवार्य था। मैं उन वैज्ञानिक तथ्यों का सीधा स्पष्टीकरण देने जा रहा हूं, जो अब कहानी के आगे बढ़ने में बाधा नहीं बनेंगे।

पीसीआर टेस्टिंग: पोलीमरेज चेन रिएक्शन डीएनए के छोटे सिक्वेंस का विश्लेषण करने की विधि है। पीसीआर डीएनए या आरएनए के हिस्सों की वृद्धि करते हैं मतलब उन्हें फिर से पैदा करते हैं या प्रतिकृति बनाते हैं। डीएनए पोलीमरेज का इस्तेमाल प्रतिकृति बनाने के लिए होता है। जैसे—जैसे पीसीआर की प्रक्रिया आगे बढ़ती है, जन्म लेने वाला डीएनए

प्रतिकृति बनाने के लिए खुद को नमूने की तरह पेश करता है, और इससे एक श्रृंखलाबद्ध प्रतिक्रिया शुरू हो जाती है जो डीएनए की कई नकल बना देती है।

स्टिंगरेः यह निगरानी रखने की नई तकनीक है, एक पोर्टेबल उपकरण जो वाहनों, घरों और अलग—थलग पड़े भवनों में मोबाइल फोन सिग्नलों पर नजर रखने के काम आता है। स्टिंगरे ट्रैकर सेलफोन टॉवर की नकल बना देता है और फिर फोन डाटा मसलन टेक्स्ट मेसेज, ईमेल और उसकी जगह का पता तक जुटा लेता है। इससे इस उपकरण को इस्तेमाल करने वाले को सेल फोन के ठिकाने, किन नंबरों पर फोन किए गए, किन लोगों ने समय बिताया, इत्यादि जानकारी मिल जाती है।

वायरस प्रतिकृतिः सभी कोशिकाएं विभाजन के जरिए प्रतिकृति का निर्माण करती हैं और अपने केंद्रक में रहने वाले डीएनए की वैसी ही नकल बनाती हैं। एक वायरस अपने आप प्रतिकृति नहीं बना सकता। इसे एक पोषक की जरूरत होती है, जो एक सजीव प्राणी हो सकता है, बैक्टीरिया समेत। एक सामान्य वायरस इनके डीएनए को आरएनए में बदलकर प्रतिकृति बनाता है। आरएनए और कुछ नहीं बल्कि एक तरह के निर्देश होते हैं, एक कंप्यूटर प्रोग्राम की तरह, जो प्रोटीन बनाते हैं। ये प्रोटीन एक नया वायरस बनाने में मदद करते हैं। तो, वायरस पोषक कोशिका को संक्रमित करता है, और इसकी प्रतिकृति बनाने वाली प्रणाली वायरस डीएनए को वायरस आरएनए में बदलने में मदद करती है, जो वायरस प्रोटीन बनाकर अंत में एक नया वायरस बनाता है। नए वायरस फिर जमा होते हैं और कोशिकाओं में फट जाते हैं, जिससे कोशिका मर जाती है, और वायरस नई कोशिकाओं को संक्रमित कर देते हैं, और फिर वही प्रक्रिया चलने लगती है। डरावनी है ना?

प्रोवायरसः वायरस का जेनेटिक कोड जब यह एक पोषक के डीएनए में रहता है।

बैक्टीरियोफेजः वैसे वायरस जो बैक्टीरिया को संक्रमित करते हैं और बैक्टीरिया की कोशिका का इस्तेमाल प्रतिकृति बनाने के लिए करते हैं।

वायरियॉनः संक्रामक वायरस पदार्थ

रेट्रोवायरस रिप्लिकेशनः रेट्रोवायरस ज्यादा चालाक, ज्यादा जटिल होता है। इनमें डीएनए की नहीं, बल्कि आरएनए की लड़ियां होती हैं। इसलिए, जब ये किसी पोषक कोशिका को संक्रमित करते हैं, उनके आरएनए को पहले डीएनए में बदलना होता है। यह एक प्रोटीन की मदद से होता है जिसे रिवर्स ट्रांसक्रिप्टेज कहते हैं। एक बार जब वायरस डीएनए बन जाता है, यह पोषक कोशिका के डीएनए में प्रवेश कर जाता है। जी हां, वायरस पोषक कोशिका का हिस्सा हो जाता है, इसलिए इंसानी डीएनए का एक बड़ी हिस्सा रेट्रोवायरस से उत्तराधिकार में मिलता है। तो यकीन करें या नहीं, हमारे डीएनए में वायरस भी हैं। वायरस डीएनए फिर वायरस आरएनए में बदलता है, जो एक नए वायरस को बनाने के लिए वायरस प्रोटीन का निर्माण करते हैं। इस किताब में बताया गया रेट्रोवायरस इसी तरह काम करता है। जब यह झील के बैक्टीरिया को संक्रमित करता है, यह उनके डीएनए को बदल देता है। इससे उन प्रोटीन की प्रकृति बदल जाती है जो बैक्टीरिया बनाते हैं——और

यही असली जिंदगी में भी होता है।

फायदेमंद वायरस: जब रेट्रोवायरस इंसानी कोशिकाओं को संक्रमित करता है, यह उन जींस को सक्रिय कर देता है जो पहले निष्क्रिय थे। यह बिलकुल सच है। किताब में दिए गए उदाहरण असली हैं। रोजाना नई खोज हो रही है कि कैसे वायरस हमारे डीएनए और जींस को प्रभावित करते हैं। जींस मूल रूप से कंप्यूटर प्रोग्राम की तरह हैं——सिर्फ यही प्रोग्राम वैसे प्रोटीन बनाते हैं जिनका शरीर में काफी काम होता है। किताब में बताए गए सभी प्रोटीन, जैसे पी53, वास्तविक प्रोटीन हैं। और उनके सभी काम भी वास्तविक हैं। वायरस निष्क्रिय जींस को सक्रिय बना सकते हैं। इससे वैसे प्रोटीन का उत्पादन शुरू हो सकता है जिनका हर तरह का असर हमारे शरीर पर पड़ सकता है, और हमें इसका पता भी नहीं चलता। और इसलिए आजकल जेनेटिक्स की चर्चा हर जगह होती है। किसी भी बीमारी का जेनेटिक इलाज आज मौजूद किसी भी दूसरे इलाज से ज्यादा असरदार साबित हो सकता है। कई ऐसे प्रोटीन हैं जो हमें कई तरीकों से फायदा पहुंचाते हैं। किताब में वर्णित प्रोटीन पी53 वास्तव में कैंसर की कोशिकाओं को मारता है। और कई ऐसे जींस हैं जो वैसे प्रोटीन बनाते हैं जिनकी मदद से कैंसर, मधुमेह, अल्जाइमर और दिल की बीमारियों पर काबू पाया जा सकता है, जैसा मैंने किताब में भी बताया है। इन जींस में होने वाला उत्परिवर्तन या इनका निष्क्रिय हो जाना ही बीमारियों के हमें अपना शिकार बनाने की वजह होती है। अगर कोई ऐसा तरीका हो (जैसे वायरस) जिससे यह पक्का हो सके कि ये जींस हमारे लिए फायदेमंद प्रोटीन बनाएं, हम सच में बुढ़ापे की प्रक्रिया को धीमा कर सकते हैं। इस बारे में काफी रिसर्च हो रहा है, और कौन जानता है कि अगले बीस सालों में हमें इसका कोई समाधान मिल भी जाए।

प्रोफेज इंडक्शन: वायरस दो तरीके से प्रजनन कर सकते हैं। पहला लाइटिक साइकिल के जरिए, जिसमें वायरस एक पोषक कोशिका पर कब्जा कर लेता है और फिर कोशिकीय प्रणाली का इस्तेमाल कर जनन करता है। वायरस की प्रतिकृतियां कोशिकाओं में भरकर उसे फोड़ देती हैं, जिससे कोशिका मर जाती है और फिर वायरस दूसरी कोशिकाओं को संक्रमित करते हैं। दूसरी प्रक्रिया है लाइसोजेनिक साइकिल। वायरस एक प्रोफेज बनाता है, और इसका जेनेटिक पदार्थ पोषक के जीनोम में प्रवेश कर जाता है। वहां वायरस तब तक सुप्त पड़ा रहा है जब तक कि यह जनन के लिए लाइटिक स्टेज तक ना पहुंचे। प्रोफेज इंडक्शन वो तरीका है जिससे इन सुप्त वायरस को लाइटिक स्टेज तक पहुंचाकर प्रतिकृति बनाने के लिए प्रेरित किया जाता है। इंडक्शन को एक उद्दीपन या स्टिम्युलस की जरूरत होती है जिससे बैक्टीरिया के क्रोमोसोम से प्रोफेज अलग हो जाता है और प्रतिकृति बनाता है।

टेलोमीयर्स और बुढ़ापा: टेलोमरेज, वो प्रोटीन जिसका मैंने किताब में वर्णन किया है, नोबेल प्राइज का विषय रहा है। ऐसा देखा गया है कि टेलोमरेज इस चीज को सुनिश्चित करता है कि टेलोमीयर्स इतने छोटे ना हो जाएं कि कोशिकाएं विभाजन बंद कर दें या मर जाएं। टेलोमरेज के फायदों को लेकर आज वैज्ञानिकों में काफी गरमा—गरम बहस चल रही है। बहस इस बात पर चल रही है कि क्या टेलोमरेज की मौजूदगी से कैंसर की संभावना बढ़

जाती है। जब हम अपनी मां के गर्भ में भ्रूण होते हैं, टेलोमरेज सक्रिय होते हैं, क्योंकि भ्रूण के विकास के लिए कोशिका विभाजन महत्वपूर्ण है। लेकिन, जब हम जन्म ले लेते हैं, तो वो जीन जो टेलोमरेज का उत्पादन करती है, निष्क्रिय हो जाती है और हमारे जन्म के दिन से टेलोमीयर्स छोटे होने शुरू हो जाते हैं। हमारी मौत नियत होती है। लेकिन यह प्रकृति का तरीका भी है यह पक्का करने का कि कोशिकाएं बेलगाम होकर लगातार बढ़ती ना रहें—— जो कैंसर की परिभाषा भी है। इसलिए, टेलोमरेज एक दुधारी तलवार है। एक तरफ यह बुढ़ापे को धीमा करती है, तो दूसरी तरफ कैंसर से मौत की वजह भी बन जाती है।

जींस और रोगाणुओं को लेकर हमारा ज्ञान, विस्तृत तो है, संपूर्ण नहीं। हर दिन, रिसर्च से कोशिकाओं के काम करने के तरीके, जींस के काम या रोगाणुओं के अपने पोषक (इंसान और दूसरे प्राणी भी) को संक्रमित करने के बारे में नई जानकारियां मिल रही हैं। इस किताब में जिन वैज्ञानिक तथ्यों का जिक्र किया गया है, वो उन खोज पर आधारित हैं जो पिछले दो या तीन सालों में हुई हैं।

शुक्र की विशेष घटनाः जो इस किताब के अध्याय 60 में वर्णित है, वो वास्तविक है। ऐसी ही घटना वेल्स के ब्रिन सेलि ड्यु में हुई थी, जहां शुक्र ठीक उसी तरह चमक रहा था जैसा किताब में बताया गया है। इस घटना पर काफी शोध हो चुका है और इसका वर्णन, वैज्ञानिक व्याख्या के साथ, क्रिस्टोफर नाइट और रॉबर्ट लोमस की किताब यूरिल्स मशीन में किया गया है। मैंने हिंदू कुश में इस घटना के बारे में नहीं सुना है, इसलिए वो कल्पना है, लेकिन घटना अपने आप में काल्पनिक नहीं है। लाइटबॉक्स की संकल्पना आयरलैंड में न्यूग्रैंज की पहाड़ी से ली गई है, जहां सूरज (शुक्र की बजाय) गलियारे में चमकता है और अंदर गुफा की दीवार को प्रकाशित करता है। यह घटना भी उसी किताब में वर्णित है।

इतिहास के पन्नों से

किताब में ओलिंपियास, यूमेनीज और कैलिस्थनीज के बारे में काफी कुछ बताया गया है, लेकिन कई दूसरे ऐतिहासिक पात्र भी इसमें आए हैं। मैंने सोचा कि उनके बारे में भी थोड़ी जानकारी दी जाए।

पर्डिकासः सिकंदर के मरने के बाद कई सालों तक वो सिकंदर के पूरे साम्राज्य का शासक था। हालांकि सिकंदर के कई सेनापतियों ने उसके खिलाफ षड्यंत्र किए और आखिरकार उसका वध भी कर दिया गया। उसका मुख्य सहयोगी यूमेनीज था।

एंटीपैटरः जिस पर फिलिप और सिकंदर दोनों को भरोसा था। जब सिकंदर एशिया में अपने अभियान पर था, वो यूनान और मकदूनिया पर सिकंदर के प्रतिनिधि के तौर पर शासन कर रहा था।

पोलीपर्चनः जिसने एंटीपैटर का साथ दिया और उसकी मौत के बाद यूनान और मकदूनिया का शासक बना। अंत में, कैसेंडर ने उसे हराकर साम्राज्य पर कब्जा किया।

कैसेंडरः एंटीपैटर का बेटा था।

टोलेमीः सिकंदर की मौत के बाद मिस्र का शासक नियुक्त हुआ। वो पहले पर्डिकास और बाद में एंटीगोनस के खिलाफ विद्रोह भड़काने का जिम्मेदार था। उसने फराओ का खिताब धारण किया और टोलेमी वंश की शुरुआत की।

एंटीगोनसः मूल रूप से फिर्गिया का शासक था। वह पर्डिकास से अलग हो गया और सीरिया और फारस के लिए यूमेनीज से युद्ध किया। यूमेनीज ने उसे दो बार पराजित किया लेकिन बाद में धूर्तता से उसने यूमेनीज को गिरफ्तार कर लिया और अंत में उसका वध कर दिया।

सिल्टसः भी एक वास्तविक पात्र है और किताब में बताई गई वो घटनाएं, जो उसकी मौत की वजह बनीं, क्लेमसन यूनिवर्सिटी की एलिजाबेथ कार्ने की द डेथ ऑफ सिल्टस और प्लुटार्क की लाइफ ऑफ अलेक्जेंडर से ली गई हैं।

अगर आप इन सबके बारे में ज्यादा जानना चाहते हैं लेकिन उन सभी किताबों, लेखों, वीडियो और वेबसाइटों की मदद नहीं लेना चाहते, जिनसे मैंने मदद ली है, तो दो ऐसे स्रोत हैं जो आपको सिकंदर और ओलिंपियास और सिकंदर की मौत के बाद उत्तराधिकार की लड़ाई में उसके सेनापतियों की भूमिका के बारे में संक्षेप में जानकारी देंगेः

सिकंदरः http://www.ancient.eu.com/Alexander_the_Great/

ओलिंपियासः http://www.historytoday.com/robinwaterfield/olympias-olympias-funeral-games

पौराणिक पन्नों से

समुद्रमंथनः हर कोई इस मिथक को जानता है। इस किताब के लिए मैंने जो दो स्रोत इस्तेमाल किए वो हैं किसारी मोहन गांगुली की द महाभारत ऑफ व्यास (मूल संस्कृत रचना का अंग्रेजी अनुवाद) और सैन सरीन की समुद्रमंथन, जिसमें मूल संस्कृत श्लोक और उनके पारंपरिक अर्थ दिए गए हैं।

समुद्रमंथन की व्याख्या और उसका विज्ञान, जो मैंने प्रस्तुत किए हैं, दोनों ही संभावित परिदृश्य हैं। जो अनुवाद और वैज्ञानिक अवधारणा मैंने किताब में दी हैं, उन्हें संस्कृत भाषा और मेडिकल क्षेत्र के विशेषज्ञों ने सराहा है। क्या यह वास्तव में हो सकता था? यह असंभव नहीं है। इस किताब के पीछे छिपे विज्ञान के बारे में ज्यादा जानकारी और विश्लेषण के लिए आप मेरी वेबसाइट (www.christophercdoyle.com) या मेरे फेसबुक पेज (www.facebook.com/authorchristophercdoyle) पर विजिट कर सकते हैं। अगर आप मुझे लिखना चाहें या आपके मन में विज्ञान से संबंधित कोई प्रश्न हो तो आप मुझे contact@christophercdoyle.com पर ईमेल कर सकते हैं।